Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funded by MoE-IKS
Public Domain. ... Anandamayi ... Collection, ...

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Hindi

2005

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ आनन्दमयी

अमृत वार्ता

VOL.-9 JANUARY, 2005 NO. 1

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

SHREE SHIREE ANANDAMAYEE SANGHA

Branch Ashrams

1. AGARPARA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram.
P.O. Kamarhati Calcutta-700058 (Tel : 25531208)
2. AGARTALA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram.
Palace Compound P.O. Agartala- 799001.
West Tripura (Tel : 0381-2208618)
3. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Patal Devi. P.O. Almora-263602,
(Tel : 05962-233120)
4. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O.Dhaul-China. Almora-263881,
(Tel : 05962-262013)
5. BHIMPURA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Bhimpura. P.O. Chandod, Baroda- 391105,
(Tel : 02663-233208+ 233782)
6. BHOPAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Bairagarh. Bhopal-462030, M.P.
(Tel : 0755-2641227)
7. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kishenpur.P.O. Rajpur, Dehradun-248009
(Phone : 0135-2734271)
8. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kalyanvan, 176, Rajpur Road, P.O. Rajpur,
Dehradun-248009, (Phone : 0135-2734471)
9. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Raipur Ordnance Factory, Dehradun-248010
10. JAMSHEDPUR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Near Bhatia Park, Kadma, Jamshedpur-831005
11. KANKHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Kankhal.Hardwar-249408,
(Tel : 01334-246575)
12. KEDARNATH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Near Himlok. P.O. Kedarnath, Chamoli-246445,
13. NAIMISHARANYA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Puran Mandir.P.O. Naimisharanya,
Sitapur-261402, U.P. (Tel : 05865-251369)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ आनन्दमयी

अमृतवार्ता

श्री श्री माँ आनन्दमयी के दिव्यजीवन
तथा
दिव्यवाणी की वाहिका त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-९ जनवरी २००५ सं. १

सम्पादक मण्डली

✤ डा. श्रीनारायण मिश्र
✤ डा. राममोहन पाण्डे
✤ डा. बीथिका मुखर्जी
✤ डा. गायत्री शर्मा
✤ ब्रह्मचारिणी गुणीता

✤

कार्यकारी सम्पादक
श्री पानु ब्रह्मचारी

✤

वार्षिक चंदा (डाकव्यय सहित)
भारत में — ६० रुपये
विदेशों में — १२ डॉलर/या ४५० रुपये
एक प्रति — २० रुपये

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधारण नियम

यह त्रैमासिक पत्रिका चार पृथक भाषा–हिन्दी, बंगला, गुजराती तथा अंग्रेजी में जनवरी अप्रैल जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होती है। वर्ष का प्रारम्भ जनवरी से होता है।

पत्रिका में मुख्यतया श्री श्री माँ पर आधारित लेखों को ही प्रधानता दी जाती है। इनके अतिरिक्त आध्यात्म पर आधारित हृदयस्पर्शी लेख, किसी भी देश तथा किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के महापुरुषों की उपदेशात्मक शिक्षावलियों का भी पत्रिका में स्वागत है।

जो भक्तगण माँ के सम्पर्क में आये हैं वे एकान्त व्यक्तिगत अनुभवों को छोड़कर ऐसे अनुभवों को आकलित कर सकते है जो कि श्री श्री माँ के लौकिक व्यवहार के प्रति आलोकपात करने वाले हों।

सभी लेख फुलस्केप कागज के एक पृष्ठ पर टंकित या स्पष्ट लिखित होने चाहिये। लेखों की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। मनोनीत न होने पर लेखों को वापस भेजना कार्यालय के लिए असुविधाजनक है। सभी लेख सम्पादक के नाम भेजें।

अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम के "Shree Shree Anandamayee Sangha—Publication A/C".नाम पर भेजें।

पत्रिका सम्बन्धी सभी प्रकार के पत्रादि व्यवहार तथा वार्षिक चंदा भेजने का पता :

कार्यकारी सम्पादक, "माँ आनन्दमयी - अमृतवार्ता"
माता आनन्दमयी आश्रम
भदैनी, वाराणसी -२२१००१

पत्रिका में विज्ञापन देने का नियम :–

सम्पूर्ण पृष्ठ – २०००/- पूरे वर्ष के लिये
आधा पृष्ठ – १०००/- पूरे वर्ष के लिये

अग्रिम शुल्क के साथ विज्ञापन का विषय (Matter) उपर लिखित पते पर भेजें।

स्वामी श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री पानु ब्रह्मचारी द्वारा श्री श्री आनन्दमयी संघ, भदैनी, वाराणसी–२२१००१ (उ. प्र.) से प्रकाशित तथा रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी. २१/४२ कमच्छा, वाराणसी-१० (उ. प्र.) से मुद्रित। सम्पादक–श्री पानु ब्रह्मचारी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विषय-सूची

1.	मातृ-वाणी	... ...	1
2.	श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग — *श्री अमूल्य कुमार दत्तगुप्त*	... ...	3
3.	सन्तानवत्सला माँ आनन्दमयी — *स्वामी नारायणानन्द तीर्थ*	... ...	6
4.	श्री श्री माँ आनन्दमयी लीलाकथा — *डॉ. बीथिका मुखर्जी*	... ...	9
5.	जीवन का लक्ष्य और अर्थ — *डॉ. प्रेम नारायण सोमानी*	... ...	12
6.	वाणी कुसुमाञ्जलिः — *पं. ब्रह्मादीन अवस्थी*	... ...	16
7.	श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन-श्रीकृष्ण प्रश्नोत्तर — *श्री महेन्द्र प्रताप सिंह*	... ...	18
8.	महाराष्ट्र के संत — श्री जनावाई — *श्री अशोक भाई कुलकर्णी*	... ...	21
9.	एक वार्ता — *डॉ. रामनारायण तिवारी*	... ...	23
10.	श्री श्री माँ के आश्रम प्रसंग में — *ब्र. गीता बनर्जी*	... ...	26
11.	श्रद्धाञ्जलि (i) पूज्य श्री नारायणदासजी (ii) श्रीमती एम. एस. सुब्बालक्ष्मी	... ...	30
12.	आश्रम-संवाद	... ...	34

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"हरि कथा ही कथा, और सब वृथा व्यथा"

—श्री श्री माँ आनन्दमयी

अमेरिका के पेन्सीलवेनिया राज्य में स्थायी रूप से पंजीकृत संस्था **माँ आनन्दमयी सेवा समिति (MASS, Inc.)** के स्वयं सेवकों की ओर से परमाराध्या श्री श्री माँ के सभी भक्तजनों को सप्रेम "**जय माँ**" ।

इस संस्था का उद्देश्य श्री श्री माँ की जीवन लीला रहस्य की सेवा, धार्मिक कार्य, सत्संग एवं जनसेवा सहित सनातन धर्म तथा श्रीमद् भागवत्‌धर्मयुक्त प्रक्रिया है ।

अमेरिका सरकार द्वारा इस समिति के लिये सम्पूर्ण कर मुक्ति (Tax - exemption) प्राप्त है, जिसका नम्बर है 23-2967597 जो IRS Code 501 (C) (3) के अनुसार कार्यों के लिये हैं ।

अमेरिका एवं आस-पास के देशों में स्थायी रूप से निवास करने वाले मातृभक्तों से विनती है कि "**माँ आनन्दमयी अमृतवार्ता**" (त्रैमासिक पत्रिका) जो चार भाषाओं (हिन्दी, बंगला, गुजराती एवं अंग्रेजी) में श्री श्री माँ की दिव्य जीवन लीला सम्बन्धी गाथा एवं अमूल्य वाणी के संकलन के रूप में प्रकाशित होती है MASS, Inc. से प्राप्त कर सकते हैं ।

पत्रिका का वार्षिक चन्दा $ 12/- बारह डॉलर मात्र है ।

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये निम्नलिखित पते पर कृपया सम्पर्क करें :-

Mahadev R. Patel
Secretary, Ma Anandamayee Seva Samiti (MASS) Inc.
212, Moore Road, Wallingford, PA 19086-6843
Tel.: 610-876-6862 Mobile : 484-410-4844
Email : matriseva@yahoo.com

जय माँ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Ma standing in the Varanasi ashram compound in early fifties.

Printed in the first issue of the Sangha journal "Ananda Varta" in January, 1952.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मातृ-वाणी

तुम तो अमृत की सन्तान-अन्दर जानने की कोशिश करो ।

*　　　　　*　　　　　*

अज्ञान अच्छा नहीं लगता । ज्ञान लेने की इच्छा होती है । झूठ अच्छा नहीं लगता है । सच बोलना अच्छा लगता है । स्वयं ज्ञान स्वरूप भगवान अन्दर हैं न ।

*　　　　　*　　　　　*

तुम्हारे शरीर में मैला लग गया । ऐसे ही भगवत् क्रिया से ज्ञान उत्पन्न होता है उसी क्रिया से अपने अन्दर का मैला साफ होता है । ज्ञान गंगा से सफा । जिस कर्म से कर्म कटे वह शुद्ध कर्म । सत्य कर्म, भगवत् कर्म करने से क्रिया शुद्ध होती है, सत्य कर्म । सत्य कर्म, सत्य संग भगवत् कथा सुनना जप ध्यान जिस के गुरु जो बतायें इसी से ज्ञान प्रकट होगा, अपने में अपना जो है ।

*　　　　　*　　　　　*

माया मोह के राज्य में मन राज्य, मन राज्य में निवास करता है । जीव जगत् । उस में ऐसा ही है । प्रश्न उठेगा जायेगा कहाँ परमार्थ में चलने से क्या चीज है प्रत्यक्ष (यह प्रकट हो जाता है ।)

*　　　　　*　　　　　*

दो, जहाँ दुःख वहीं है । द्वन्द्व जहाँ है अन्धकार वहीं है, जीव जगत् जहाँ दो है वहीं जन्म है दो से दुःख ।

*　　　　　*　　　　　*

सत्संग — यही तरीका है अपने को जानने के लिये पाने के लिये मैं कौन हूँ । एक बार सत् संग में प्रवृत्ति हो जाय, वासना कामना की नित्य मृत्यु ।

*　　　　　*　　　　　*

जो बन्धन में है वही जीव जगत् । जगत् में गतिशील । अपने को इसी रूप में प्रकट करके, प्रकाशित होकर, अपने में अपने को पाने के लिये रास्ता दिखाने के लिए आप ही तो हैं । जैसे छोटा बच्चा खेलता है । पिता होकर भी खेल सिखाने के लिये खेल खेलता है । इसीलिये तो कहते हैं उनका खेल - लीला ।

*　　　　　*　　　　　*

आत्मा और परमात्मा स्वरूप एक है । मनुष्य साधन करे तो देव लोग बाधा देते हैं । देह दो, दो । महालक्ष्मी - परम धन । ब्रह्मविद्यादायिनी सरस्वती । स्थान स्थिति रहता है । बहुत धन दिया । दुनिया की प्रतिष्ठा खींचती है । बढ़िया बोलना वक्तृता खींचती है । परम स्थिति चाहने वाले

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जो हैं वे इनको विवेक से जला देते हैं वैराग्य से गला देते हैं । तुम्हारे शरीर में सारे सुर असुर मौजूद । तुम्हारे अन्दर मैं और मेरे अन्दर तुम ।

* * *

सूर्य चन्द्र की रोशनी जो देख रहे हो, आत्म ज्योति का एकरूप । नाशवान् रूप । इस ज्योति से महाज्योति का प्रकाश होना, महाज्योति (विकार) विनाश करने वाला । वह शक्ति के सिवाय और कोई नहीं हो सकता ।

* * *

जो परमस्थिति जहाँ निराकार, जल को जैसे पात्र में रखेंगे वही आकार धारण करेगा । आकार निराकार सब मौजूद है । मनुष्य जन्म अज्ञान का पर्दा हटाने के लिये । ज्ञान का दरवाजा खोलने के लिये ।

* * *

जाति भी एक नियम है । जाति रखा तुम्हारे लिये । कल्पना जगत् सृष्टि नियमित स्थिति । इस गुण के प्रकट होने से ब्राह्मण, जहाँ परम स्थिति वहीं सब आ जायेगा । अज्ञान का परदा ज्ञान का दरवाजा, वृक्ष में जल स्थल वही एक मात्र, लड़ाई नित्य, जब तक नित्य स्थिति न हो लड़ाई बन्द नहीं होगी । भगवत् बुद्धि जाग्रत् करना । ऋषितत्त्व सब तुम्हारे में है । तुम्हारे में मैं मेरे में तुम । यह वही जगत्-जगत् अतीत सब एक है । वह जाग्रत न होने से यह तैयारी करते हैं (पूजा), यह तो प्रतीक है । करते-करते एक समय में बात सुन ली । दूसरी बार बात आ गयी सवाल आ गया । वह जो रक्त बीज असुर है जब तक विनाश न हो । सब भगवान है । तुमको क्या करना । मनो राज्य का जब तक भावना नहीं बनाकर यह मन की गति, यह मन में देखें अँधेरा है - अज्ञान है । प्राण की स्थिति ऐसी लानी चाहिये । मेरे सिवाय और कोई नहीं ।

* * *

खूब माँ को पुकारो । वह जो माँ है । और पुत्र कैसा होना चाहिये । अमृत की सन्तान वह प्रत्यक्ष होना चाहिये । पिता को पुकारो माता को पुकारो, वही बात, वह बनते नहीं, वह तो खेल है । खेल के लिये बनता है, वह जो है - वही तुम महात्मा की बात पकड़ना नहीं चाहते । जो है वही - है तो एक ही रास्ता । पिताजी नाम बदलने से है तो वही । वह हर एक रूप में बदलते हैं ।

* * *

नाम रूप जगह में नाम रूप ही है । है तो रस ही । चाहे गन्ना का रस मिसरी का रस । नाम जो बदला वह भी ठीक है । उन में तो सब रस है न । अनन्त रस है न ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग

नवम खण्ड — पूर्वार्द्ध

(पूर्वानुवृत्ति)

— स्व. श्री अमूल्य कुमार दत्त गुप्त

काशी । २४ फाल्गुन (८ मार्च १९५३)

मैं — पहली बार जब ठाकुर जी के श्री विग्रह का आपसे मिलन हुआ तब क्या उन्होंने कुछ कहा था ?

माँ — नहीं आँखों के इशारे से आश्रम की ओर दिखाकर उनके आश्रम में रहने का इंगित किया था ।

मैं — ब्रह्मचारी वेश में आकर उन्होंने क्या बताया ?

माँ — ब्रह्मचारी वेश में आकर उन्होंने कुछ नहीं बताया । उन्हें देखकर मेरे मुख से निकला 'आप कौन हैं, यह मैं जानती हूँ ।' ब्रह्मचारी वेश में आकर उन्होंने यह अवगत कराया कि दो विग्रह तत्वत: एक ही हैं ।

मैं — क्या आपको यह ज्ञात नहीं ?

माँ — ज्ञात अज्ञात की बात नहीं, पहली बार जब मैंने जले हुए श्री विग्रह को देखा तब उन्होंने समझाया कि इस रूप में ही आश्रम में रह रहे हैं अर्थात् श्रीजी एवं बिहारी जी इन दो मूर्त्तियों में । तदुपरान्त ब्रह्मचारी वेश में आकर उन्होंने समझाया कि विग्रह ध्वंस होने के पश्चात वे इस रूप से ही विराजमान हैं अर्थात् दो ही एक होकर हैं बाहर से श्रीजी एवं भीतर से बिहारी जी ।

इन सब कथोपकथनों के उपरान्त श्री श्री माँ ने कहा— "आज मध्याह्न भोजन के अनन्तर विन्ध्याचल में यह शरीर जा सकता है । आज रात वहाँ बिताकर कल फिर लौट सकते हैं ऐसा ठीक हुआ है ।" यह कह कर माँ उठीं ।

कर्मफल एवं नियन्त्रण का मूलसूत्र—
२६ फाल्गुन मंगलवार (१० मार्च १९५३)

कल रात को मैने श्री माँ से पूछा था कि 'माँ, वृन्दावन में आपने जो जली हुई मूर्त्ति को देखा वह तो विग्रह नष्ट होने के पहले ही देखा था अत: यह कहा जा सकता है कि जो पहले से ही सुनियन्त्रित है वही कार्यान्वित होता है । इसके लिए किसी को दोष नहीं देना चाहिए ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ — कर्मफल एवं नियन्त्रण के बीच में अन्तर कितना ? इस प्रश्न के उत्तर में मेरे द्वारा कुछ कहने पर श्री श्री माँ ने कहा — तुम गोपी बाबा से इस प्रश्न का उत्तर पूछना । देखें तुम लोग इसका समाधान कैसे करते हो । बाद में इस शरीर को जो कहना है वह कहेगा ।

आज गोपीबाबा से उपरोक्त प्रश्न को पूछा । उन्होंने मुझसे इसका उत्तर लिखवाया । यह विषय अत्यन्त रहस्यमय तथा जटिल है जो नीचे उद्धृत किया जा रहा है —

साधारणतया हम जगत में जो कार्यकारणभाव देखते हैं वह एक ओर से सत्य प्रतीत होने पर भी पूर्णतया उसे सत्य नहीं कह सकते । कारण — जिस कारण से अथवा जिन कारण समष्टि के रहने से कार्य उत्पन्न होता है बिना प्रतिबन्धक के उन कारणों के रहने से यथा समय अवश्य ही कार्य उत्पन्न होता है । किसी विशिष्ट कारण से किसी कार्य की उत्पत्ति क्यों होती है इसका समाधान लौकिक दृष्टि से करना संभव नहीं होता । लौकिक दृष्टि से केवल यही जान सकते हैं कि जिस कारण में जो कार्य उत्पन्न करने की शक्ति है वह कारण वही कार्य उत्पन्न कर सकता है । उसके द्वारा अन्य प्रकार का कार्य उत्पन्न नहीं होता । कारण में वैसी शक्ति है कि नहीं वह व्यवहार से एवं व्यापक अनुभूति से ज्ञात की जा सकती है किन्तु प्रतिबन्धक के रहने पर कारण में शक्ति होने पर भी कार्य उत्पन्न करने की शक्ति स्तंभित होती है उससे कार्योत्पत्ति नहीं हो सकती है । जैसे अग्नि में दाहिका शक्ति विद्यमान है अतः वह वस्तु को दग्ध करने में समर्थ होती है, किन्तु मन्त्र शक्ति अथवा किसी द्रव्य विशेष के सहयोग से दाहिका शक्ति स्तंभित होने पर अग्नि विद्यमान रहने पर भी वह दहन कार्य नहीं कर सकती । प्रतिबन्धक के हटा देने पर अग्नि की दाहिका शक्ति पुनः चली आती है । अग्नि में दाहिका शक्ति एवं विभिन्न प्रकार की वस्तुओं में विभिन्न प्रकार की शक्ति होने का मूल रहस्य क्या है ? अर्थात् वस्तु शक्ति का मूल स्रोत क्या है ? इस प्रश्न के उत्तर में जड़वादी जो समाधान प्रदर्शन करते हैं वह चरम समाधान नहीं है । कारण उस समाधान के पश्चात् भी प्रश्न के उत्तर की मीमांसा नहीं होती । उदाहरण के लिए वस्तु की शक्ति का कारण वैज्ञानिक मत से वस्तुओं के प्रत्येक अवयवों के परस्पर सन्निवेश को कह सकते हैं । इसे वे लोग Collocation कहते हैं । हमारे देश के प्राचीन शास्त्रकारों ने संस्थान भेद के नाम से इसे सन्निवेश कहा ।

सन्निवेश का उपादान कारण एक होने पर भी सन्निवेश के भेद से शक्ति की अभिव्यक्ति विभिन्न प्रकार से होती है । यह समझा जाता है, किन्तु प्रश्न यही है कि संस्थान अथवा सन्निवेश में अन्तर क्या है ? इसलिये वस्तु शक्ति का मूल कारण के निर्णय में यह सिद्धान्त भी कुछ काम नहीं कर सकता ।

ऋषियों ने कहा सृष्टि के आदि में सत्य संकल्प पुरुष के संकल्प के अनुसार ही सब वस्तुएं विभिन्न प्रकार से शक्तिसम्पन्न रूप में प्रकाशित हुईं । महाकल्प के आदि में संकल्पमय पुरुष का आदि संकल्प ही प्राकृत जगत में वस्तुशक्ति रूप में प्रकृति के नियम रूप से परिचित हुआ । योग वाशिष्ठरामायण में वशिष्ठ देव ने इस प्रसंग पर विस्तृत विवेचन किया है । आदि संकल्प को ही उन्होंने नियति कहा है । वस्तुतः यह आदि संकल्प स्वभाव के अतिरिक्त और कुछ नहीं है । व्यष्टि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एवं समष्टिभूत प्राणियों का प्राक्तन कर्म ही संस्कार बनता है । समय के राज्य में पूर्वापर क्रम प्रकाशित होता है । अर्थात् देश के रूप में काल के रूप में अथवा वस्तु के रूप में एक के बाद और एक अवश्यम्भावी रूप में दिखाई पड़ता है । इसमें पहले को कारण कहने से दूसरे को कार्य कहना पड़ेगा । किन्तु वास्तविक रूप में जिसे कारण कहा जा रहा है वह एक प्रकार से कार्य है क्योंकि उसके बाद भी कोई दूसरा कारण है, एवं जिसे कार्य कहा जा रहा है वह भी एक प्रकार से कारण है, क्योंकि उसके द्वारा भी दूसरी बार कार्य की उत्पत्ति हुई । इस अविछिन्न कार्यकारण में नियत सम्बन्ध विद्यमान, उसी का नाम है भाग्य । यह प्रत्येक कारण में अनुरूप कार्य की उत्पत्ति करने में सहायता करता है । मूल में यह न रहने पर कार्य कारण की श्रृंखला न रहती, एवं इसी प्रकार का बाह्य व्यवहार भी निष्पन्न नहीं होता ।

स्थूल जगत का कार्य कारणभाव कुछ-कुछ समझा जा सकता है । व्यापक एवं सूक्ष्म दर्शन द्वारा लाभ होता हैं क्योंकि साधारण लोगों की दृष्टि में कार्य देखने पर ही कार्य की शक्ति का अनुमान किया जाता है । प्रत्यक्ष रूप में फलोन्मुख शक्ति की सत्ता का बोध साधारण लोग नहीं कर सकते हैं ।

व्यक्तिगत भाव में मनुष्य जीवन की घटना परम्परा एवं बाह्य जगत की घटनाओं की पूर्वापर श्रृंखला साधारणतः इसी नियम के द्वारा नियन्त्रित होता है । जीव अज्ञान में डूबे होने के कारण इसे प्रत्यक्ष देख नहीं सकते, किन्तु यदि प्रकृति के इस माया जाल से अपने को मुक्त कर सकते अर्थात यदि देहात्म बोधसे मुक्त होकर सम्पूर्ण विकारों से ऊपर जा सकते तो यह कार्य-कारण के अनन्त विचित्र माया जाल को देख सकते गे, किन्तु तत्वद्रष्टा होकर एवं अभिमान रहित होकर इसके द्वारा वह विचलित नहीं होता हैं । इसी अर्थ में दार्शनिक लोग कहते हैं सब कुछ पूर्व निर्दिष्ट अथवा पहले से ही नियन्त्रित है । जो होने का है वही होता है, अर्थात् आदि सृष्टिकर्ता का संकल्प ही नाना प्रकार के कार्य रूप में प्रकाशित होता है ।

(क्रमशः)

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सन्तान वत्सला माँ आनन्दमयी

— स्वामी नारायणानन्दतीर्थ

प्रत्येक पूर्णिमा अमावस्या को काशी आश्रम की अधिष्ठात्री देवी अन्नपूर्णा माता एवं काली माता की यथाक्रम विशेष पूजा एवं भोग होता है । पूजा के बाद सभी माँ का प्रसाद पाते हैं । यह नियम ढाका से ही बहुत दिनों से चला आ रहा है । मां के आदेशानुसार रात के नौ बजे के बाद तैयार होकर मैं विरजा मन्दिर में अपने भाव से बैठा रहा ।

इस प्रसंग में एक पुरानी घटना याद आ गयी । किसी एक समय त्याग वैराग्य और साधना में मस्त न होने से वह परमवस्तु प्राप्त नहीं हो सकती है इस विषय को लेकर आलोचना करते करते परमकरुणामयी श्री श्री माँ ने दया करके श्रीमत् स्वामी परमानन्द एवं मुझसे कहा था एक कमरे में तुम दोनों आवरण शून्य होकर जब तक सो न जाओ तब तक हर समय ध्यान व आत्मचिन्तन कर सकते हो या नहीं ? जिस कमरे में तुम लोग रहोगे उस कमरे में पानी का नल एवं शौचालय रहेगा, जिससे तुम लोगों को शौचादि के लिए बाहर न जाना पड़े । भोजन के लिए तुम लोगों को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी यदि इस शरीर का ख्याल हो तो (अपने को लक्ष्य कर) तुम लोगों के शरीर के ऊपर कम्बलादि कुछ भी यह शरीर दे आयेगा । इस प्रकार तुम दोनों रहने को राजी हो ?

स्नेहमयी श्री श्री माँ के इस प्रस्ताव को मैंने सहर्ष स्वीकार किया । स्वामी परमानन्द जी में अत्यन्त अल्प अवस्था से ही तीव्र त्याग वैराग्य एवं तितिक्षा भाव रहने के कारण उन्होंने कहा, एक बार किसी चीज को त्याग देने से फिर उसको नहीं लूंगा । माँ के देने पर भी नहीं । हम दोनों के एकमत न होने के कारण वह प्रस्ताव कार्य रूप से परिणत न हो सका । मेरा अनुमान है यदि माँ के रहने के अनुसार हम जीवन यापन कर सकते तो माँ की असीम कृपा से हम लोगों को विशेष कुछ मिलता । यह मेरी व्यक्तिगत धारणा है । माँ ने इस बारे में कुछ नहीं कहा । माँ अन्नपूर्णा की पूजा के बाद श्री श्री माँ उपस्थित भक्त वृन्द को लेकर आश्रम की छत पर बैठीं । रात के करीब दस बजे मां की विशेष भक्त कई कुमारी कन्याओं द्वारा मां के निर्देश से समवेतस्वर में भजन आरम्भ करने पर दीदी श्री गुरुप्रिया देवी ने विरजा मंदिर से मुझे साथ लाकर आश्रम के प्रांगण में शिव जी के बिल्व वृक्ष के नीचे नवनिर्मित वेदी पर जो संगमरमर पत्थर की थी, उस पर बैठने को कहा । दीदी के निर्देशानुसार मेरे वेदी पर बैठने पर उन्होंने मेरे कपाल पर श्वेतचन्दन का त्रिपुण्ड्र, शरीर पर एक प्रसादी गरम चादर एवं गले में रुद्राक्ष की माला पहना कर पंचप्रदीप एवं चामर द्वारा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आरती कर प्रणाम किया । दीदी को जो कुछ करना था सब समाप्त होने पर कुमारी कन्याओं ने एक स्तोत्र पाठ किया एवं कुछ समय तक मौन रह कर सब अपने-अपने स्थान पर चली गयीं ।

परमाराध्या श्री श्री माँ के आदेशानुसार रात के दस बजे से साढ़े बारह बजे तक स्थिर होकर बैठा रहा । उसके बाद विरजा मंदिर में जाकर सो गया । छत पर विरजा मंदिर जाते समय माँ के भक्तों में से श्री अमूल्य कुमार दत्त गुप्त, श्री भूपतिनाथ मित्र आदि दो चार जनों को देखा था । बाकी सब अपने घरों को चले गये थे । बाद में मैं माँ के आदेशानुसार सात दिन काष्ठ मौन भी था । विशेष आवश्यक कार्यों के बिना विरजा मंदिर के बाहर नहीं गया ।

इस घटना के साथ चिदम्बर के उन महात्मा के महामिलन का क्या सम्बन्ध है वह केवल माँ ही जानती हैं । जहाँ तक मुझे याद आता है, किसी समय मां ने कहा था कि श्री हरिबाबा जी के साथ उन्होंने जैसे उन साधु को मदुरा के मीनाक्षी देवी के मंदिर में प्रवेश के समय स्थूल रूप से देखा था, वैसे ही माँ ने उनका सूक्ष्म रूप धर्मशाला में, द्वारिकाधीश के मंदिर में द्वारका में एवं काशी आश्रम के प्रांगण में शिव जी के पूरब की ओर बिल्ववृक्ष के नीचे शून्य में बैठे हुए देखा था । इसके बाद श्री माँ ने कुछ कहा था पर वह उतना समझ में नहीं आया ।

विरजा होम की पूर्णाहुति के बाद जब तक संन्यास के आनुष्ठानिक क्रियाकलाप चल रहे थे, तब तक श्री श्री माँ मेरे पास बैठ कर सब देख रही थीं । गैरिक वस्त्र एवं कौपीन प्रदान के समय संन्यास के श्री गुरुदेव ने स्वयं वह मुझे न देकर ब्रह्म विद्यास्वरूपिणी श्री श्री माँ के द्वारा मुझे दिलवाया । यहां लक्ष्य करने का विषय है कि सावित्री महायज्ञ के समय श्री श्री माँ ने मुझे जो काषाय वस्त्र दिया था इस सम्बन्ध में वे कुछ भी नहीं जानते हैं । पता नहीं किस अचिन्तनीय शक्ति के प्रभाव से अथवा श्री श्री माँ की प्रेरणा से उन्होंने गेरुआ वस्त्र मुझे श्री श्री माँ से ही दिलवाया । गैरिक वस्त्र देने की विधि उनकी ही है । आश्चर्य तो यह है कि माँ ने भी काषाय वस्त्र देने में तनिक आपत्ति न की या गुरुदेव को वह देने के लिए भी नहीं कहा । इसके बाद दण्ड व कमण्डल भी उन्होंने दिया एवं माँ की सम्मति लेकर योगपाट या संन्यास नाम भी उन्होंने ही रखा ।

संन्यास के पूरे अनुष्ठान माँ ने सामने बैठ कर करवाये । इस प्रकार संन्यास ग्रहण के आनुष्ठानिक क्रिया-कलाप के समय ज्ञानरूपिणी श्री श्री माँ की उपस्थिति कितने के भाग्यों से प्राप्त होती है ? यह जो परमाराध्या श्री श्री माँ की एक विशेष अहैतुकी कृपा ही है इसे मुक्त कंठ से स्वीकार करना ही पड़ेगा । सब कुछ ही माँ ने कैसे ख्याल करके करवा लिया । जीवन में इस प्रकार का एक आमूल परिवर्तन माँ ने कैसे मुझसे करवाया यह मेरी क्षुद्र बुद्धि के परे है ।

विश्वजननी श्री श्री माँ की दया की वर्षा सब जीवों पर समान भाव से सर्वदा हो रही है । मेरे जैसा साधारण जीव भी जब उनकी दया से वंचित नहीं हुआ तब कोई भी उनकी दया से वंचित नहीं होगा ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परम कल्याणमयी माता जगदम्बा अपनी सन्तान की दुर्गति देख अपने दिव्यधाम में न रह कर मातृ रूप धारण कर मर्त्यभूमि में अवतीर्ण हुई हैं । वर्तमान जडवाद के युग में पापी जीव को जननी स्नेह एवं प्यार से उनके उद्धार का मार्ग सरल व सुगम कर दे रही हैं । पारस का स्पर्श पाने पर स्वर्ण बनने में कितनी देर लगती है । मेरे एक मित्र से उनके किसी परिचित ने पूछा था इतने दिन से तुम जो आनन्दमयी माँ के पास जा रहे हो, इससे तुम्हारा क्या हुआ ? उन्होंने थोड़े ही शब्दों में जवाब दिया 'माँ के पास जाने के पहले पशु था अब मानव बनने जा रहा हूँ ।' मेरे मित्र के इस युक्तिपूर्ण उत्तर को सुनकर उसकी प्रशंसा किये बिना न रह सका । श्री श्री माँ की असीम शक्ति एवं कृपा का निदर्शन इस उत्तर में निहित है । मेरे मित्र श्री श्री माँ के विशेष भक्त एवं कृपापात्र हैं ।

(क्रमशः)

रत्न-कण

हे आर्य-उत्साह में बड़ी शक्ति होती है । वास्तव में उत्साह से बढ़कर संसार में दूसरा बल नहीं है । तू इसे सत्य मान कि इस जगत में उत्साह-सम्पन्न मनुष्य के लिए कुछ दुर्लभ नहीं है । ।

— मुनि वशिष्ठ

जो काम हाथ में आवे उसे ही पूरी लगन, पूरी योग्यंता और पूरी शक्ति से करो, तभी सफलता मिलेगी । स्मरण रहे, मनपसन्द काम का मिलना भाग्य या परिस्थितियों के हाथ में है परन्तु हर काम को मनपरसन्द बना लेना स्वयं अपने हाथ में है ।

— डॉ. विधान चन्द्र राय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ आनन्दमयी लीलाकथा

—डॉ. वीथिका मुखर्जी

(अंग्रेजी से भाषान्तर - डॉ. कृष्णा बनर्जी)

(गतांक से आगे)

शुभ विवाह के उपरान्त श्री रमणी मोहन चक्रवर्ती महोदय एवं नववधूवेशिनी निर्मला को साथ लिये बरातियों का जत्था अपने मुखिया की देखरेख में यथासमय आटपाड़ा के लिये रवाना हुआ । रेलयात्रा के प्रारम्भ में उस दिन ऐसी-एक घटना घटी, जो देखने वाले कभी भुला न पाये । साधारण सी परिस्थितियों में असाधारणत्व का विद्युत् प्रकाश, जो आने वाले दिनों में माताजी की मर्त्यलीला की विशिष्टता के रूप में सर्वजन विदित हुआ था, उसी की छोटी सी एक झलक देखने का सौभाग्य प्राप्त कर उस दिन कुशारी महाशय को बड़ा अचम्भा हुआ था । स्टेशन पहुंचकर सबके साथ निर्मला रेलगाड़ी के एक डिब्बे में चढ़ गईं तथा बड़ों के निर्देशानुसार अपना स्थान ग्रहण करके चुपचाप बैठीं । उनके इर्दगिर्द बड़े-बड़े बक्से इत्यादि सामानों की ढेर लगी थी । अचानक पता चला कि वह कमरा उन लोगों के लिये नहीं है, तुरन्त कमरा बदलना पड़ेगा, क्योंकि गाड़ी छूटने में देर नहीं है । कुशारी जी ने निर्मला से तुरन्त कमरे से उतरने को कहा और स्वयं सामान उतारने लगे । इतने में उन्होंने देखा कि विवाह के भारी भरकम वस्त्रों व अलंकार आभूषणों से लदी हुई वह दुबली पतली बालिका वधू स्वयं अपने छोटे-छोटे हाथों से बड़े-बड़े सामान एक कमरे से दूसरे कमरे तक ढो रही है एवं निर्दिष्ट स्थान पर रख रही है । निर्मला की वह पहली रेलयात्रा थी । फिर भी इतनी जल्दी उसने परिस्थिति को समझ लिया एवं विद्युत की गति से भारी सामानों को सही जगह ले जाकर रखा । उससे सभी को अचम्भा हुआ ।

कुशारी जी ने उसदिन पहली बार इस बालिका वधू की असामान्य क्षमता की एक छोटी सी झलक देखी थी । आगे चल के बहुतबार उन्होंने श्री श्री माँ की भक्तमण्डली के समक्ष इस घटना का अत्यन्त श्रद्धा के साथ वर्णन किया था । वे आजीवन श्री श्री माँ को आद्याशक्ति रूपिणी मानकर उनके प्रति भक्तिभाव से समर्पित थे । कुशारी जी की अपनी पोती मरणी शिशुकाल से ही मां के पास लालितपालित हुई थीं तथा स्वयं बाबा भोलानाथ ने उन्हें अपनी दत्तक पुत्री के रूप में स्वीकार किया था । मरणी के भाई दाशू श्री श्री माँ के समस्त भक्तजनों के लिये अत्यन्त परिचित व समादृत हैं, हालांकि बहुत थोड़े लोगों को यह मालूम है कि दाशूदा कुशारी महाशय के पोते हैं ।

उस जमाने की प्रथाओं के अनुसार विवाह के पश्चात् कुछ दिनों तक श्वशुरालय में रहने के बाद बालिका वधू अपने पिता के घर लौट आती थी तथा कुछ वर्ष बाद कैशोरावस्था को प्राप्त कर के पुनः ससुराल जाती थी । अतः आटपाड़ा पहुँचने पर यथारीति वधूवरण, स्वागतसत्कारादि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अनुष्ठानों के उपरान्त निर्मला पुनः खेओड़ा लौट आयीं । वहाँ मातापिता के सान्निध्य में उन्होंने डेढ़ साल बिताये । रमणीमोहन जी ने सुन रखा था कि उनकी पत्नी ने निम्नप्राइमरी की शिक्षा प्राप्त की है । अत: उन्होंने निर्मला को एक पत्र लिखा । उस जमाने में यह एक अकल्पनीय घटना थी । मोक्षदा देवी ने पत्र को ऐसे स्थान पर रख दिया, जहाँ से लेकर निर्मला उसे एकान्त में पढ़ सके । परन्तु देखा गया, उस ओर निर्मला को कोई ख्याल नहीं हुआ; खास कर जिस काम को करने के लिये उसे बड़ों की आज्ञा या उनका स्पष्ट आदेश न मिला हो, वह काम वह भला क्यों करें ? अपनी इच्छा से प्रेरित होकर अपने आप कुछ करना या कोई पड़ी हुई चीज उठा लेना तो उनकी आदत ही नहीं थी ! अन्ततोगत्वा मोक्षदा देवी ने निर्मला की सहेलियों से कहा कि कुछ करें । वे सब बड़े उत्साह के साथ तैयार हो गयीं । उन्होंने निर्मला को साथ लेकर उस पत्र को पढ़ा एवं सबने मिलकर एक जवाबी पत्र भी लिख डाला । फिर जब निर्मला ने अपनी हस्तलिपि में उस पत्र को लिखा, तब उसे रमणी मोहन जी के पते पर भेज दिया गया ।

रमणी मोहन जी का जब विवाह हुआ था, तब वे पुलिस विभाग में काम करते थे । विवाह के बाद कुछ ही दिनों में उनकी यह नौकरी चली गई । श्री श्री माँ प्रायशः लोगों की नौकरी, धन्धा, आदि के बारे में बोलते समय कहती थीं कि कुछ काम ऐसे होते हैं जो मनुष्यों के कर्मबन्धन को आसानी से बढ़ा दे सकते हैं । उदाहरण-स्वरूप, वकील, चिकित्सक, व पुलिस वालों के काम कुछ ऐसे हैं । दूसरों की समस्यायें, दुखदर्द, इनके उपार्जन के स्रोत होते हैं । ऐसा नहीं कि समाज में इन कर्मों के महत्त्व की माँ अनदेखी करतीं, बल्कि उनका इतना ही कहना था कि इस जगत् में कुछ पेशे ऐसे हैं, जिनमें नीतिभ्रष्ट होने का डर, पतन का भय कुछ अन्य पेशे, जैसे अध्यापन इत्यादि की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक होता है ।

सम्भवतः इसी कारण निर्मला के साथ उनके विवाह के उपरान्त उनकी पुलिस विभाग की नौकरी समाप्त हो गयी । कुछ समय के लिये उन्हें बेकारी का जीवन जीना पड़ा । वे अपना गाँव छोड़ कर ढाका चले गये और नौकरी की कोशिश करने लगे । ढाका में वे अपने बहनोई श्री राजेन्द्र कुशारी जी के घर रह कर नौकरी की तलाश कर रहे थे व अस्थायी तौर पर छोटे मोटे काम भी कर रहे थे । आखिर उन्हें एक मनपसन्द काम मिल गया । विवाह के करीब चार साल बाद १९१३ ईसवी में ढाका के नवाब की जमींदारी के सेट्लमेन्ट विभाग में लेखाधिकारी के पद पर उनकी नियुक्ति हुई ।

श्री रमणीमोहन जी से उम्र में थोड़े बड़े भाई श्री सुरेन्द्र मोहन जी का भी विवाह लगभग एक ही समय पर हुआ था । उनकी धर्मपत्नी का नाम प्रफुल्ल था । निर्मला एवं प्रफुल्ल की उम्र करीब-करीब बराबर थी । ये दोनों बहुयें प्राय: साथ-साथ श्वसुरघर पर स्थायी रूप से निवास करने चली आयीं । श्वसुरजी के स्वर्गवास के पश्चात् भाइयों में सर्वश्रेष्ठ श्री रेवती मोहन जी उस समय परिवार के मुखिया थे । सास जी का और भी काफी पहले स्वर्गवास हो चुका था । अत: रेवती मोहन जी की पत्नी प्रमदा देवी उस समय गृहकर्त्री थीं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रेवतीमोहन जी के और दो भाई थे—कामिनी कुमार एवं यामिनी कुमार । कामिनीकुमार अपना घर व गाँव छोड़कर कहीं चले गये थे । बाद में सुनने को मिला कि उन्होंने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया है । यामिनी कुमार सबसे छोटे थे; वे उस समय नितान्त बालक थे । इनकी दो बहनों का उल्लेख पहले ही हो चुका है । उनके अलावा और तीन बहने थीं । इन सबकी चर्चा यहाँ पर इसलिये प्रासंगिक है, क्योंकि यह विशाल परिवार, जो अब तक जगह-जगह बिखरा हुआ था, इसके सदस्यों को आगे चलकर श्री श्री माँ के सान्निध्य में एकत्र होने का पुनर्मिलित होने का, सौभाग्य प्राप्त हुआ था ।

●

सार बातें

मन से भगवान का चिन्तन, वाणी से भगवान के नाम का जप, सबको नारायण समझ कर शरीर से जगज्जनार्दन की नि:स्वार्थ सेवा यही उत्तम से उत्तम कर्म है ।

मनुष्य जीवन के समय को अमूल्य और क्षणिक समझ कर उत्तम से उत्तम काम में व्यतीत करना चाहिए । एक क्षण भी व्यर्थ नहीं बिताना चाहिए ।

जिसका समय व्यर्थ व्यय होता है, उसने समय का मूल्य समझा ही नहीं ।

भगवान का भजन गुप्त रूप से करना चाहिए, नहीं तो कर्पूर की भाँति मान-बड़ाई में उड़ जाता है ।

स्वार्थ को छोड़ कर दूसरे के हित के लिए चेष्टा करनी, यही उसे प्रेम में बाँधने का उपाय है ।

दूसरे को सुख पहुँचाना ही उसे अपना बना लेना है । अपना तन, मन, धन जो कुछ दूसरे के काम में लग जाय वही सार्थक है, बाकी तो सब व्यर्थ जाता है । जो इस बात को ध्यान में रख कर चलता है उसे कभी पछताना नहीं पड़ता ।

—जयदयाल गोयन्दका

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जीवन का लक्ष्य और अर्थ

—डॉ. प्रेम नारायण सोमानी

मानव जीवन का लक्ष्य क्या है ? क्या कभी हमने सोचा है ? इस युग में अधिकतर लोग तो खाने पीने, उसके साधन बनाने में, सन्तान उत्पत्ति से वंश चलाने में और धन एकत्र कर ऐशो आराम की जिन्दगी बिताने भर में ही जीवन का चरमोत्कर्ष समझ कर जीवन की इतिश्री कर लेते है तथा इन सबमें इतने व्यस्त रहते हैं कि जीवन के उद्देश्य के विषय में सोचना ही व्यर्थ समझते हैं । मनुष्य भौतिक कामनाओं एवं महत्वाकाक्षाओं की जंजीरों में जकड़ कर रह गया है और उनकी पूर्ति में ही जीवन व्यतीत कर देता है ।

जीवन के लक्ष्य, उद्देश्य व स्वरूप के विषय में विचारकों ने अलग-अलग अपनी तरह से सोचा है । भारतीय मनीषियों ने खाने पीने, सन्तान उत्पन्न करने, आदि में लिप्त मनुष्य को पशुवत जीवन व्यतीत करने वाला माना है । जिन्होंने अपने अन्दर झाँक कर देखा है उन्हें भौतिक जीवन सन्तुष्ट नहीं कर पाया, उन्हें भौतिक जीवन के चरमोत्कर्ष प्राप्त करने पर भी शान्ति नहीं मिली । संसार के प्रलोभनों में बंधा हुआ व्यक्ति जड़ और शक्ति हीन हो जाता है, अशान्त एवं आकुल व्याकुल ही रहता है । दुखी ही रहता है ।

महा मनीषी टाल्सटाय का मन जीवन के अंतिम दिनों में अतृप्त की कसक से कसकता रहता था । अपूरणीय खालीपन से अंदर बुरी तरह व्याकुल रहता था । संसार में भौतिक सुखों को जितना उन्होंने भोगा शायद ही किसी दूसरे को वह सौभाग्य मिला हो । सब कुछ होते हुये भी उस विचार शील मनीषी का मन पूर्णता को तलाशता रहता था । अतएव साहित्य से विराग लेकर ''जीवन के अर्थ'' की खोज में आध्यात्म की गोद में गये और अपने को परम सत्य के चिन्तन में लीन कर दिया । तब उनके अभिन्न मित्र लेखक तुर्गनेव ने उन्हें पत्र लिखकर अनुरोध किया कि ''ओ सरस्वती साधक ! मेरी अन्तिम इच्छा है कि आप अपनी परिपक्व प्रतिभा के निर्णायक वर्ष धार्मिकता में न बरबाद करें क्योंकि यह वर्तमान दुनिया के लिये निरर्थक और अनुपयोगी है । मेरी बारबार करबद्ध प्रार्थना है कि आप पुनः साहित्य की ओर लौट आवें ।'' टाल्सटाय ने उनकी बिनती सुनी हो या न सुनी हो, परन्तु उसका उत्तर देने के पहले ही तुर्गनेव इस संसार से कूच कर गये थे । टालस्टाय ने इसका उत्तर देना भी उचित नहीं समझा क्योंकि किसी दम्भ या आवेश से प्रेरित होकर वे सत्य चिंतन की ओर नहीं झुके थे । उनकी जीवन दिशा को सत्य चिंतन की ओर मोड़ने में कारक यह अनुत्तरित प्रश्न ही था ''जीवन का क्या उद्देश्य है'' ?

शापेनहावर, प्लेटो, कान्ट, पास्कल के दार्शनिक सिद्धान्त उनके प्रश्न ''मैं क्यों जी रहा हूँ ? और मुझे कैसे जीवित रहना चाहिये'' का उत्तर न दे सके । अन्ततोगत्वा उन्हें अध्यात्म की शरण जाकर उसका उत्तर तलाश करना पड़ा । उन्होंने पाया कि जीने की कला सीखने के क्रम में पहले

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सद्‌गुणी, चिंतनशील एवं स्वाध्यायी बनना चाहिये । अपने विचार दृढ़ बनाने चाहिये । उनके वचन एवं कार्य पवित्र होने चाहिये । दूसरों के सुख दुःख मेरे ही सुख दुःख हैं ऐसी समझ बननी चाहिए । संसार की सभी दिशाओं से मुझे मैत्री और प्यार मिल रहा है । जब ऐसे विचार मन में दृढ़ होंगे तो संसार में दूसरा कोई दिखाई नहीं पड़ेगा । यह हमारी आत्मवत सर्वभूतेषु की भावना हमें वसुधैव कुटुम्बकम् की ओर ले जाने में समर्थ होगी । जीवन की इस परिभाषा ने ही टाल्सटाय के विशुद्ध हृदय को शान्ति प्रदान की । अध्यात्म ने उन्हें वह शक्ति प्रदान की जिससे वह स्वयं सुख – शान्तिमय जीवन व्यतीत कर सकें और दूसरों को सुखी एवं शान्त जीवन जीने में सहायक बनें । उन्होंने सही माने में जीवन का उद्देश्य समझा ।

दूसरी ओर कार्लमार्क्स ने गरीबों की गरीबी और अमीरों की अमीरी देखकर जो सिद्धान्त चलाया उसमें अध्यात्म का नाम निशान नहीं था । वह सम्पन्नता और साधनों की सबके लिये समानता चाहते थे । धर्म को वह मानव मात्र के लिये अफीम का नशा मानते थे । जिसकी पिनक में मनुष्य अपने को भूला रहता है, और धर्मगुरुओं द्वारा प्रचारित कर्मकांडों में लगा रहता है । मार्क्स हर एक के लिए बराबरी का जीवन और बराबरी के साधन व समाज चाहते थे । वह केवल भौतिकता की पराकाष्ठा संसाधनों के समाजीकरण या राष्ट्रीयकरण के माध्यम से चाहते थे । उनकी विचारधारा को रूस तथा चीन ने क्रियान्वित भी किया । वहाँ मनुष्य का अपना वजूद ही खो गया था । उस क्रियान्वयन में न जानें कितनी जानें चली गयीं – कितनी क्रूरतायें बरती गयीं और मनुष्य एक मशीन का पुर्जा बन कर रह गया । इसके खिलाफ बगावत और उदारीकरण की नीति ने कार्लमार्क्स की व्यवस्था को चुनौती ही नहीं दी, ध्वस्त करने में सफल हो गयी । मनुष्य का वजूद इन देशों में फिर से उभर कर सामने आ गया । धर्म और अध्यात्म भी इन देशों में फिर जीवित हो रहा है । इससे यह लगता है कि मनुष्य केवल रोटी, कपड़ा और मकान के लिए ही नहीं जीता है । कुछ और है और वह और क्या है ?

भारत में भी भौतिकवादी चार्वाक का सिद्धान्त बहुत पुराना है तथा प्रसिद्ध है । मौज मस्ती से रहो फिर कुछ भी करो । "यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत् । भस्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनम् कुतः ॥" पूर्ण कश्यप तो दावे के साथ कहता था कि सदाचार न कोई पुण्य है, न अच्छाई और न ही सदाचरता का कोई सत्फल । वह दुराचरण में भी कोई पाप नहीं देखता था । आज संसार का मनुष्य लगता है भौतिकवादी उपभोक्ता प्रवृत्ति को लेकर ही जी रहा है । जीवन का लक्ष्य न सफलता आराम से रहने व जीवन व्यतीत करने तक ही सीमित हो गयी है ।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजी यहूदियों के लिए यन्त्रणा शिविर में पियना का एक मनोरोग चिकित्सक भी था । उसने अपने अनुभव व अनुभूति "Man's search to meaning in Life" में बड़े मार्मिक ढंग से व्यक्त की है । उसने तरह तरह की यंत्रणाओं को झेलते हुए और अपने साथियों को मरते हुए देखा और जीवन के अर्थ को समझने का प्रयास किया । कैसे भीषण सर्दी में, गिरती हुए बरफ में फटे पुराने कपड़ों में एक डबल रोटी के राशन पर ठिठुरते हुए रेल, रोड एवं सड़क का कार्य करते हुए देखा । कैसे मरने का आभास होने पर मरने वाले मरने से पूर्व ही अपने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कपड़े व राशन जीवित कैदियों को दे देते थे । कैसे उन जीवित कंकालों पर क्रूर नाजी सुरक्षा सिपाहियों की बूट की ठोकरें और डंडों की मार पड़ती थी । कैसे उन्हें अपने बीबी-बच्चों की सुधि विचलित करती रहती थी - कैसे वे भी किसी यंत्रणा शिविर में यातनायें भोग रहे होंगे ? जीवित भी हैं या नहीं ? वे कैसे अबोध बच्चों के लिये जीवन की भीख माँगते थे । एक कैदी के शिविर से फरार होने पर शिविर अधिकारी ने क्रोध में भर कर दस कैदियों को चयन कर गोली मार देने का आदेश दिया । उन कैदियों में से एक ने जोर-जोर से विलाप करना शुरू किया - उसने कहा मेरी पत्नी मर चुकी है । मेरे मरने के बाद मेरे अबोध बच्चे अनाथ हो जायेंगे । बच्चों पर दया कर मुझे प्राणों की भीख दें । अफसर क्रूर था, उसने कहा कि तुम्हे अन्य कैदियों के साथ मरना ही पड़ेगा । दस की संख्या तुम्हारे मरने पर ही पूरी होगी । सामने मैदान में खड़े कैदियों में से एक भाग कर वहाँ पहुँचा और बोला दसवाँ कैदी मैं हूँ यह नहीं । आप इसे छोड़े दें । मुझे गोली मार दे मैं इसके अबोध बच्चों को अनाथ होने की दुर्दशा की कल्पना, सहन नहीं कर सकता । इस कैदी ने गोली खाकर दस की संख्या पूर्ण की । उस मनोरोग चिकित्सक ने विश्लेषण कर पाया कि यत्रंणा शिविर से मुक्त होने की आशा की नन्हीं सी किरण उन्हें जीवित रखने का सम्बल थी । केवल अध्यात्म के द्वारा एवं एक दूसरे की सहायता की भावना, उन्हें आत्महत्या करने से बचाती रही । उन दुर्दिनों में भी वह अपने सुरक्षा सिपाहियों के प्रति कृतज्ञ ही नहीं थे वरन् उन्हें अमेरिका के सिपाहियों के आने पर छिपा कर बचाया । निष्ठुर आततायी रक्षा गार्डों के प्रति बदले की भावना की जगह दया की भावना केवल उनकी गहरी आध्यात्मिकता के कारण ही संभव हुई । उन्होंने जीवन का सही अर्थ समझा ।

मानव मानस पुत्र है । उसका काम मनन करना है । सतर्कता, जागरूकता एवं चैतन्य के प्रकाश में मानव शरीर के लक्ष्य को दृष्टिगोचर करना है । यही उसका स्वधर्म है । पशुवत जीवन को ही परधर्म की संज्ञा दी गयी है । तभी - गीता में कहा गया है "स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः" । गीता के काल में केवल मानव धर्म था या पशुधर्म था । भारतीय मनीषियों ने परम सत्य की खोज को ही जीवन का लक्ष्य माना है — स्वधर्म माना है । परम सत्य को भगवान कहें, मोक्ष कहें, निर्वाण कहें उसे प्राप्त करना ही उद्देश्य है जीवन का । मनुष्य स्वयं ही ममता, अज्ञान, अहंकार, भय या लालच वश अपने आप को आंतरिक बन्धनों में बाँध लेता है, जो परम सत्य तक पहुँचने में बाधक होते हैं । इसलिए बंधनों से मुक्ति पाना ही मनुष्य का लक्ष्य हो जाता है । जब यह लक्ष्य निर्धारित हो गया तो उसे सभी कुछ बेकार और निरर्थक लगने लगता है । 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' की अनुभूति होने लगती है । श्रीमद्भागवत् का एक वाक्य "सत्यं च समदर्शनम्" ही सत्य लगता है ।

गांधी जी ने मनुष्य का उद्देश्य भगवद रूप में संसार की सेवा बताया है । संसार को परमात्मा का साकार रूप मानकर उसकी सेवा करना ही भगवत् पूजन है । इसे ही संत तुलसीदास ने "सीय राम मय सब जग जानी" कहा है । मानवता की सेवा ही भगवत् आराधना है । इस प्रकार का दिव्य जीवन ही जीवित रहने का उद्देश्य है । भगवान बुद्ध ने "अविद्या" के नाश को ही जीवन का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लक्ष्य माना है । अविद्या को परिभाषित करते हुये उन्होंने बताया कि मनुष्य को यही नहीं मालूम कि दु:ख है, दु:ख का कारण तृष्णा है, और इसका निवारण हो सकता है, और निवारण का तरीका ही आर्य आष्टांगिक मार्ग है । सम्यक जीवन जीने के लिये इन चार आर्य सत्यों को जानना आवश्यक है तभी दु:ख एवं बंधनों से निकला जा सकता है । अविद्या से निवृत्त होना ही जीवन का अर्थ है, यही उद्देश्य है और यही लक्ष्य है । जब तक मनुष्य को इन आर्य सत्यों का ज्ञान नहीं होता वह अविद्या में ही ग्रस्त रहता है और उसके लिये निर्वाण, मोक्ष का मार्ग गौण रहता है । मनुष्य योनि ही ऐसी है जिसमें वह अपनी अविद्या का नाश कर सकता है, अपने बंधनों को खोज सकता है । इसलिये मनुष्ययोनि को सुर दुर्लभ कहा गया है । हर व्यक्ति को आवागमन के चक्र से मुक्ति को ही अपना लक्ष्य मानना चाहिये और उसे प्राप्त करने के मार्ग शील, सम्माधि एवं प्रज्ञा पर कदम कदम चलना प्रारम्भ करना चाहिये ।

मंगल हो ।

●

वाराणसी में आयोजित नौ दिवसीय श्री मानस हनुमान चालीसा के दूसरे दिन के अपने प्रवचन में राष्ट्र संत श्री मोरारी बापू ने कहा कि वेद में ''हनु'' शब्द का चार बार प्रयोग हुआ है, एवं ''दूत'' शब्द पाँच बार है । ऋग्वेद का पहला मंत्र ही हनुमान की ओर संकेत करता है, रघुवर का परोक्ष अर्थ हनुमान है । अग्नि शब्द का अर्थ हनुमान है । क्योंकि हनुमान के पिता का नाम पवन है । एवं हम अपने सृष्टि क्रम को देखें तो पवन से अग्नि की उत्पत्ति हुई है ।

इसलिये अग्नि शब्द का एक अर्थ हनुमान भी है । हनु शब्द का अर्थ — मृत्यु, गनिका, गति, प्राप्ति एवं कपोल के दोनों भाग है । वेदों में हनु शब्द के द्वारा हनुमान परोक्ष रूप से दिखते हैं । रामचरित मानस का भाष्य सुन्दरकाण्ड है, एवं सुन्दरकाण्ड का भाष्य हनुमान चालीसा है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाणी कुसुमाञ्जलिः

—पं. ब्रह्मादीन अवस्थी

आलस्य भाव परिवर्जितकर्म सत्यं,
स्वेच्छा सदा भवतु ते शुभकर्म हेतोः ।
सेवां परस्य करणे सुखमाशुलभ्यं,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः ॥ २५ ॥

धर्मस्य जीवन पथे नहि यस्य मित्रं,
शक्नोति यः किमपि कर्तुमिहासमर्थः ।
तेषां कृते मम सदा ममता प्रयोज्या,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः ॥ २६ ॥

नानाविधं जगति कर्म कृतं भवद्भिः,
दुःखं तथा सुखमतीव चिरं सुभुक्तम् ।
भूत्वा निराश्रयमतिः शरणं तदीयं,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः ॥ २७ ॥

चिन्ता स्वभावजनिता खलु कर्म सत्यं,
संसारचिन्तनमति किल लाभहानिः ।
यो यादृशंमनसि शोचति भाव मग्नः,
सः तादृशं च लभते फलमाशुलोके ॥ २८ ॥

ज्ञानस्य द्वारमपिसर्वजनाय लोके
स्वस्य स्थितौ भवति सर्व जनः समर्थः ।
अज्ञानयुक्तमनसा नहि लभ्यते सः,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः ॥ २९ ॥

आत्मा तु सर्वसमये कथितः सदैकः,
एतन् ममास्ति तव नास्ति कुभाव नैषा
सर्वेश पाद शरणं कुरु दास भावम्,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभि ॥ ३० ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ईशः सदा बसतु सर्बजनान्तराले
ध्यानं सुचिन्तनमतो न कदापि त्याज्यम्,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं कवीन्द्रैः
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ३१ ॥

आनन्दपूर्णहृदयं निजवस्तु प्राप्तौ
कुत्रापि नास्ति भवतो तदभावजातम् ।
ध्येयं सदा भगवतो चरणारविन्दं,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः ॥ ३२ ॥

सर्वेश्वरः बसति सर्वजनस्य मध्ये
अन्तर्बहिश्च परितः भुवनान्तराले ।
दुर्बुद्धि भावमपि सर्वजनैः न कार्यम्,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः ॥ ३३ ॥

गार्हस्थ्य धर्म परिपालनमेव लोकैः
धर्मानुसारचलनं कथितं मुनीन्द्रैः ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवताप हारम् ॥ ३४ ॥

मार्गः समस्तजन लाभकरः स्व प्राप्तौ
पीड़ाकरो निगदितः रस हीन मार्गः ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं कवीन्द्रैः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ३५ ॥

सर्वत्र तस्य परमेश निवासभूमिः
सृष्टिं करोति प्रलयं च करोति नित्यम् ।
रक्षां करोति सततं शरणागतानाम्,
ज्वालानिवारणमता कुरुते सुखं ते ॥ ३६ ॥

(क्रमशः)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन — श्री कृष्ण प्रश्नोत्तर

(गतांक से आगे)

— श्री महेन्द्र प्रताप सिंह गौर

प्रश्न-3 तीसरा प्रश्न है स्थिर बुद्धि व्यक्ति ''किमासीत्'' अर्थात् कैसे बैठता है । इसका उत्तर भगवान ने श्लोक 58 से 63 तक दिया है । साधक की साधना दो प्रकार की होती है प्रथम स्थिति में वैराग्य प्रारम्भ से नहीं होता है ऐसी स्थिति में साधक विचार पूर्वक साधन में लगा रहता है । जिसके कारण इस साधक की प्रज्ञा प्रतिष्ठित नहीं होती है ।

दूसरी प्रकार की साधना में पूर्ण वैराग्य प्रारम्भ से ही होता है अतः इसमें विषय के प्रति साधक की सूक्ष्म रसबुद्धि भी नष्ट हो जाती है । इससे पूर्व कछुए का दृष्टांत दिया गया है जैसे सामान्यतः चलने पर कछुए के छः अंग दिखाई पड़ते है चार पैर, एक सिर तथा एक पूँछ परन्तु सिकुड़ने पर केवल एक पीठ ही दिखाई पड़ती है उसी प्रकार जब साधक पाचों इन्द्रियों को मन समेत सिकोड़ कर अपने विषयों से हटा लेता है तो स्थितप्रज्ञ हो जाता है । ऐसी स्थिति में उसका इन्द्रियों से किञ्चित मात्र भी सम्बन्ध नहीं रहता है । रसबुद्धि पूर्णतया नष्ट न होने से प्रथम शील इन्द्रियां साधक के मन को कभी कभी बलात् सांसारिक भोगों की ओर खींच ले जाती हैं । इसी स्थिति वाले अनेक गरबियों के उदाहरण हमारे सम्मुख आते हैं जो विषयों के सामने आने पर विचलित हो गये ।

इस रसबुद्धि को दूर कैसे किया जाय 61 वें श्लोक में श्री भगवान बताते हैं इस रसबुद्धि का अन्त ईश्वर परायणता से ही होगा । संयम तथा इन्द्रिय निग्रह का श्रेय साधक को अहंकारी बना देता है अतः इन सबको भगवत कृपा समझ कर ही ईश्वर तन्मय होकर इन्द्रिय नियमन में लगना चाहिए । इस प्रकार अपने अहंकार का नाश करके ईश्वर कृपा से साधक स्थितप्रज्ञ बन जाता है । परन्तु जब साधक इस प्रक्रिया द्वारा स्थित बुद्धि नहीं बनता है तो क्या होता है । यह अगले दो श्लोकों में श्री भगवान बताते हैं । इन दोनों श्लोकों में मनुष्य के विनाश की क्रमवार स्थिति श्री भगवान स्पष्ट करते हैं ।

व्यक्ति के चिन्तन के दो ही आयाम होते हैं संसार अथवा भगवान । ऊपर बताई स्थिति में जब रसबुद्धि का अन्त नहीं होता है तो व्यक्ति का चिन्तन संसार से लग जाता है । यह निरन्तर संसार - चिन्तन सांसारिक पदार्थो से ''राग'' उत्पन्न कर देता है । यह राग शारीरिक -भोग तथा मानसिक -भोग के रूप में किसी भी स्तर पर हो सकता है । अब ''संगात्सजायते कामः'' के अनुसार विषयों में राग उत्पन्न होने से उन विषयों की भोग-कामना उत्पन्न होती है उसके बाद ''कामात्क्रोधोऽभिजायते'' की स्थिति आती है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इसमें कामनानुकूल पदार्थों की प्राप्ति होते रहने पर ''लोभ'' उत्पन्न होता है यदि इस प्रक्रिया (कामानुकूल पदार्थ-प्राप्ति) में कोई बाधक बनता है । तो उस पर ''क्रोध'' आता है । फिर ''क्रोधात्भवति सम्मोहः'' अर्थात क्रोध से सम्मोह होता है मनुष्य में काम, लोभ, तथा मोह के कारण जो सम्मोह पैदा होता है उसमें अपने सुख भोग तथा स्वार्थ की वृत्ति होती है परन्तु क्रोध में दूसरों के अनिष्ट करने की वृत्ति की प्रधानता रहती है । इसी कारण श्री भगवान ने यहां क्रोध को प्रधानता दी है । फिर अगला चरण है ''सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः'' अर्थात् सम्मोह से स्मृति नष्ट हो जाती है फिर ''स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धि नाशः'' अर्थात् स्मृति नाश से बुद्धि में प्रकट होने वाला विवेक नष्ट हो जाता है है । अन्त में ''बुद्धिनाशात्प्रणश्यति'' अर्थात विवेक नष्ट होने से मनुष्य का नाश हो जाता है । वह अपनी स्थिति से गिर जाता है ।

भगवान ने अर्जुन को समझाने हेतु यह प्रक्रिया छः चरणों में बताई है परन्तु प्रयोग रूप से यह सब क्षण भर में ही प्रभावी होकर मनुष्य को अपनी स्थिति से गिरा देती है । यह चरण दर्शाते हैं कि मनुष्य जब ईश्वर का सहारा छोड़ देता है तो कितना असहाय हो जाता है । संसार संग से लगे उसके विकार कितनी जल्दी उसका अन्त कर देते हैं । विकारों का यह सिलसिला इतना स्पष्ट गीता को छोड़कर कहीं और आसानी से नहीं नजर आता । पहले विकार को आधार बनाकर, अगला विकार तुरन्त परिपुष्ट होकर पुनः अगले को जन्म दे देता है ।

प्रश्न-4 चौथा प्रश्न है स्थितप्रज्ञ ''ब्रजेत किम्'' अथवा कैसे चलता है अर्थात् व्यवहार कैसे करता है । इस का उत्तर इसी अध्याय में चौसठवें श्लोक से इकहत्तरवें श्लोक तक भगवान देते हैं ।

भगवत-प्राप्ति में मनुष्य की तीन स्थितियां प्रमुख होती हैं, (1) बाहर से विषयों का त्याग । (2) इन्द्रिय-संयम, (3) इन्द्रियों तथा राग द्वेष से रहित हो जाना । इसमें सूक्ष्म रूप से देखें तो प्रथम की अपेक्षा द्वितीय तथा द्वितीय की अपेक्षा तृतीय विशेष उपयोगी है । इन स्थितियों में उभय - निर्भरता भी है तथा इनका स्वतंत्र अस्तित्व भी है, जैसे बाह्य विषय के त्याग के बिना भी भगवान की पूजा सेवा, जप आदि से भी इन्द्रिय संयम हो सकता है उसी प्रकार बिना बाह्य विषय-त्याग तथा बिना इन्द्रिय निग्रह के भी सत्संग, स्वाध्याय, एवं ईश्वर कृपा से सांसारिक भोग की अनित्यता का भाव होने पर इन्द्रियों के राग द्वेष का नाश हो जाता है । तीनों स्थितियों का क्रमिक विन्यास अधिक सरल होता है ।

पापों के कारण ही मनुष्यों में दु:ख की अनुभूति होती है, कर्मयोग के द्वारा पापों का नाश होने पर अन्तःकरण विशुद्ध होकर अन्तर में आनन्द को जन्म देता है और व्यक्ति अन्दर से प्रसन्न हो जाता है । तब उसकी बुद्धि परमात्मा में प्रतिष्ठित हो जाती है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अगले श्लोकों में जिसका मन, बुद्धि, अविजित है ऐसे व्यक्ति के विषय में बताते हुए कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति निश्चयात्मिका बुद्धि के अभाव से अन्तःकरण में भावना नहीं होती है । अतः उसे शान्ति नहीं मिलती है । ऐसे व्यक्ति का चित्त सदैव विक्षिप्त रहता है । ऐसे व्यक्ति की मनः स्थिति को स्पष्ट करने हेतु जल में संचारित नौका का उदाहरण देता हूँ । जिसे वायु दिशा भ्रमित गन्तव्य पर पहुँचने नहीं देती है । जल में अपने गन्तव्य स्थान की ओर जाती नौका को वायु दो प्रकार से विचलित करती है या तो उसे भ्रमित कर दिशा बदल देती है या फिर नौका को जल में डुबो देती है परन्तु संयमशील प्रबुद्ध नाविक इन दोनो स्थितियों से रक्षा कर नाव को गन्तव्य तक पहुँचा देता है । ऐसे ही इन्द्रियों के अनुगामी मन या तो परमात्मा प्राप्ति के निश्चय को दबाकर भोग वृद्धि उत्पन्न कर देता है या फिर निषिद्ध भोगों में लगाकर पतन करा देता है । यह कृत्य केवल एक ही इन्द्रिय करने में पूर्ण सक्षम है फिर जिसकी सभी इन्द्रियाँ इसमें लगी हों उसे डूबने में क्या विलम्ब होगा । अतः जिसकी इन्द्रियां इन्द्रियों के विषयों से सर्वथा निगृहीत नहीं हैं वही वरेण्य पुरुष स्थिर बुद्धि है ।

आगे श्री भगवान एक सामान्य व्यक्ति तथा परमार्थ पथ पर चलने वाले स्थितप्रज्ञ व्यक्ति का अन्तर स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि सामान्य व्यक्ति के लिए जो रात्रि (ईश्वर से विमुखता) होती है । अर्थात जब उसका मन धन वैभव कमाने में ही लगा रहता है, वही विवेकी व्यक्ति का दिन होता है अर्थात् वह ईश्वर चिन्तन में अपने को निमग्न रखता है । इसी प्रकार सांसारिक व्यक्ति के लिए जब दिन होता है अर्थात जब वह यश, वैभव भोगने में लगा रहता है तो विवेकी व्यक्ति ऐसे में संसार की ओर से निष्क्रिय रहता है । दोनों का उद्देश्य तथा भाव पृथक होने से जागतिक व्यवहार भी पृथक् होता है । जैसे अनेक छोटी-बड़ी नदियां आकर चुपचाप सागर में समाहित हो जाती हैं सागर कभी भी उनके मिलने से प्रक्षुब्ध नहीं होता है, उसी प्रकार कर्मफल के प्रभाव स्वरूप भोग, संयमी व्यक्ति को बिना अशान्त किये हुए आते रहते हैं । ''निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति'' के अनुसार ऐसा निस्पृह व्यक्ति ही शान्ति को प्राप्त होता है ।

(क्रमशः)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महाराष्ट्र के संत-श्री जनाबाई

— श्री अशोकभाई कुलकर्णी

महाराष्ट्र के संत समाज में श्री जनाबाई का स्थान अपनी एक विशेषता रखता है । वे लौकिक दृष्टि से अशिक्षित तथा सामाजिक दृष्टि से अति निम्न स्तर की थीं । लेकिन अपनी अलग ढंग की भक्ति से उन्हें यह स्थान प्राप्त हुआ है ।

अन्य सन्तों के समान जनाबाई की भी जीवन गाथा विस्तृत रूप से उपलब्ध नही है । संत श्री नामदेव महाराजजी के कुछ अभंग तथा स्वयं जनाबाई के अभंगों में उनके जीवन का कुछ अंश प्रतिबिंबित हुआ है । उनके तथा कुछ प्रचलित कथाओं के आधार पर यह लेख है ।

महाराष्ट्र में परभणी जिले में गोदावरी नदी के तट पर गंगाखेड नाम का छोटा सा गाँव है । यह परभणी जिले के अनेक संतों की जन्मभूमि है । स्वभावतः यहाँ के निवासियों पर भगवद्‌भक्ति का संस्कार जन्मतः ही होता है । गंगाखेड में दमा नाम का एक सद्‌गृहस्थ रहता था । अन्दर के संस्कार और भगवद्भाव अत्यंत उच्च किंतु जन्म शूद्र जाति में । दमा बचपन से ही भगवद्भक्त था । आषाढ और कार्तिक महीने में शुक्ल एकादशी के दिन पंढरपुर जाकर विट्ठल दर्शन करना उसका व्रत था । (उसे पंढरपुर की वारी कहते हैं) दमा की पत्नी भी उसके समान भगवद्भक्त और धर्म परायणा थी । "भगवान विट्ठलनाथ की कृपा से सारा विश्व चलता है ।" हमारे जीवन की सब भली बुरी घटनाएँ उन्हें मालूम हैं । उनकी इच्छा ही पूर्ण होती हैं । ऐसा उन दोनों का विश्वास था । पांडुरंग का नाम लेते लेते सब गृहकार्य करना, और जागते सोते समय भावतन्मय होकर उनका स्मरण करना इस प्रकार उनका सारा जीवन भक्तिमय हुआ था ।

दमा वैसा बड़ा धनिक तो नहीं था । किंतु अपने घर खा पीकर सुखी था । शादी के बाद कई साल बीत गये । किंतु अपत्य प्राप्ति नहीं हुई । जीवन के अन्य अभावों की उन्होंने विट्ठलभक्ति के आगे दखल नहीं दी थी । लेकिन यह दुःख वात्सल्य की वजह से नहीं सह पाते थे । ऐसे में एक साल पंढरपुर वारी के लिए दोनों पंढरपुर गये । मन में सन्तान प्राप्ति की अभिलाषा प्रबल हो उठी थी । मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ते चढ़ते आखों में आंसू छलक रहे थे । ऐसी अवस्था में वारी में खड़े रहकर विट्ठलनाथ की तरफ बढ़ रहे थे । मूर्ति के सामने जाते ही आँखें फिर से छलछला उठीं । भावगद्‌गद् हो कर चरणों पर सिर रखा । मन ही मन शुरू हुआ "भगवन् आज तक कुछ मांगा नहीं । जो तुमने दिया उसी में सन्तुष्ट रहे । लेकिन अब एक व्यथा अस्वस्थ कर रही है । अनगिनत सालों से हमारे पुरुखों ने तुम्हारी सेवा अखंड की है । कुल में तुम्हारी भक्ति - सेवा आगे भी अखंड चलती रहे यही तमन्ना है । इसलिए हे पाडुंरंग भगवान एक संन्तान दीजिये ।" गर्भागार से बाहर आकर दमा और उसकी पत्नी करुंड ने एक दूसरे की तरफ देखा इस दृष्टि से ही भगवान के चरणों में एक दूसरे ने क्या निवेदन किया, पूरी तरह समझ गये भगवान ने भी उनकी सुनी । उसी दिन रात में विट्ठल भगवान ने सपने में दमा को दर्शन दिया । गंभीर वाणी में बोले "तेरे कुल का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उद्धार करने वाली कन्या तुझे प्राप्त होगी । आगे चलकर एक दिव्य जीवनधारा सबके सामने रखेगी । लेकिन तू उसका मोह मत करना उसे जितना जल्द हो सके ''नस्सी वामणी'' गाँव के दामाशेर (संत नामदेव जी के पिता) को दे देना । सुबह होते ही दमा ने करुंड से अपना स्वप्न सुनाया । दोनों गगाखेड वापस आ गये । यथासमय एक कन्या ने जन्म लिया । विट्ठलनाथ की आज्ञा से उसका नाम 'जनाबाई' रखा । बहुत प्यारी बेटी थी । लेकिन उसके वियोग की कल्पना से ही करुंड का मन अत्यन्त व्यथित हो जाता था । करीब छः साल बीत गये । दमा पत्नी को बार-बार समझाता था कि इसे दामाशेर के हवाले करना है भगवान की ही वैसी आज्ञा है'' किंतु माँ का अन्तरंग बोल उठता ''और कुछ दिन जाने दो अभी तो बच्ची है ।'' आखिर दमा ने कहा ''देखो, यह विट्ठलनाथ की अमानत हमारे घर में है । उसके पालन पोषण के लिए वह हमें दी गई है । हमें वही करना है जैसा वे चाहते हैं ।

इस प्रकार समझा कर एक दिन जना को दामाशेर के हवाले कर दिया । भगवत् प्रेरणा से उसने जना को स्वीकारा । उसे बिदा करते समय असह्य पीड़ा हो रही थी दमा करुंड को । बार बार उसे चिपकाते थे । दामाशेर देख रहा था मन में सोचता था ''भगवान के आदेश की बात जो बतायी वह सत्य ही होगी । अन्यथा इतनी असह्य पीड़ा ये क्यों सहेंगे । आगे चलकर अपना हाथ दमा के कंधे पर रखकर कहते हैं मैं भी विठ्ठलभक्त हूँ । उनकी ही इच्छा हमें पूर्ण करनी है । तुम जना की चिन्ता मत करना मेरे कुटुंब के समान वह रहेगी । बहुत कष्ट से दमा करुंड वहाँ से निकले । बार बार पीछे मुड़ कर देखते थे दमाशेर की कंधे पर सोयी हुई जना को नैन ओझल करके दोनों चले गये । कुछ दिनों के अंतर में ही प्रथम करुंड और बाद में दमा का वैकुंठ वास हो गया मानों यह विरह व्यथा उनसे सही नहीं गयी ।

किसी विद्वान का कथन है कि करुंड की मृत्यु के बाद दमा जना को विट्ठल भगवान के द्वार पर छोड़ गये । कोई मानते हैं कि किसी ने अपनी कन्या चुपचाप मंदिर की सीढियों पर छोड़ दी । उसे दामाशेर ने अपनाया । इतिहास स्वंय भगवान जाने । इतना तो मानना ही पड़ेगा कि बहुत छुटपन से जना दामाशेर के परिवार में आ गयी । इसके आगे जना का जीवन बड़ा कष्टमय था । माँ बाप का लाड़प्यार भाई बहन का सुखद संग, अन्य आत्मीय जनों की सहानुभूति सपने में भी जना ने अनुभव नहीं किया । इतना भी नहीं आगे चलकर ससुराल जाकर पति प्रेम या कन्या या पुत्र का वात्सल्य इससे भी वह वंचित रही । इस दारुण व्यथा ने उस के भाव में परिवर्तन कर दिया । दामाशेर के घर की एक दासी की हैसयत से दिन भर सारा कामकाज ''झाड़ू पोछा, आटा पीसना, अनाज कूटना, बर्तन माँजना, कपड़ा धोना पानी भरना सूखा गोबर इकट्ठा करना और घर के अन्य सभी काम करने पड़ते थे । इस बेसहारा अवस्था ने जना के मन में एक आर्तभाव को जन्म दिया मेरा अपना कोई नहीं है सिवाय पाडुरंग विट्ठल । वह दिन रात मन ही मन पुकारती थी

''आई मेरी बाप मेला
आता सांभाली बा विट्ठला
मेरे माँ बाप मर गये मेरा प्रतिपालन तुम्हें ही करना है दूसरा कौन करेगा ।''

(क्रमशः)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक वार्ता

[पूज्य स्वामी भास्करानन्द जी के साथ]

— श्री रामनारायण तिवारी

उत्तरकाशी में अपनी दिनचर्या का विवरण सुनाते हुए स्वामी भास्करानन्द जी आगे बढ़े ।
स्वामीजी- यहाँ का जल मिट्टी वाला होता था । अतः माँ ने कहा था उसमें फिटकरी डाल कर शुद्ध कर लेना । हम लोग वैसा ही करते थे । निर्वाणानन्द और मैं दोनों मिलकर खाना बनाते थे । गंगोत्री यमुनोत्री के लिए उत्तर काशी से होकर जाना पड़ता था । हमने यमुनोत्री जाने की सोची । हमारे पास पैसे नहीं थे । निर्वाणानन्द के पास दस रुपये थे । हमने पैदल जाने का सोचा, हम पैदल यात्रा करते हुए यमुनोत्री पहुँचे । वहाँ बहुत ठंड थी । आस पास ठहरने की कुछ व्यवस्था नहीं थी । पुल पर से जाते हुए हमने एक मकान देखा । वहाँ जाकर पूछने पर भी कोई कमरा नहीं मिला । किसी ने कहा कि यमुनोत्री में गर्म पानी का कुंड है वहाँ गुफा जैसा भी है, वहीं जाकर बैठना वहाँ गर्म पानी से भाप आती है । हम लोग कुंड पर पहुँचे और सारी रात वहीं बैठे रहे । वहीं पर बैठ कर अपना भजन सम्पन्न किया । दूसरे दिन वापस आये ।

कुछ दिनों के बाद मैं माँ के साथ कलकत्ता गया । 1962 की बात है । माँ ने हम लोगों को हरिद्वार में पुरश्चरण करने के लिए कहा । केवल कहा ही नहीं अपितु ममतामयी मानवी माँ की तरह तीन वर्ष तक पूरा ध्यान रखते हुए अपने स्नेह छाया में यह कठिन अनुष्ठान सम्पूर्ण कराया । पुरश्चरण में हम तीन थे । मैं, निर्वाणानंद, और निर्मलानन्द । काशी से ढाका से दीप और अग्नि मँगायी थी और कहा कि रोज अखण्ड अग्नि रखना और हवन करना और तीन बार स्नान करना ।

भोजन भी हवन की अग्नि में ही पकाना पड़ता था । एक दीपक में दो ज्योति थी उससे आग जलाते थे । हम तीनों बारी-बारी से खाना पकाते थे । मां ने कहा था एक जन हिसाब रखेगा एक मदद करेगा । ऐसी नियमित जिन्दगी थी । हमलोग उन दिनों प्रातः चार बजे गंगा नहाने जाते थे । तीन बार गंगा नहाते थे । प्रातः दोपहर और शाम । स्थानीय पंडे लोग सब जान गये थे कि बाबा लोग सुबह नहाने आते हैं । हम लोग गरम कुंड पर नहाने जाते थे । वहाँ का ऐसा कठिन नियम था कि किसी माँ बहन का कपड़ा छू जाय तो पुनः स्नान करना पड़ता था ।

माँ तो हर समय रहती नहीं थीं । चैत के नवरात्र में माँ आने वाली थीं । हमलोग बाजार की कोई चीज नहीं खाते थे । सप्तमी अष्टमी नवमी तीन दिन माँ ने अपने हाथ से बनाया । माँ कहती थीं यह लोग बाहर का नहीं खाते । माँ के हाथ का बनाया हुआ साग अमृत जैसा होता था । हमें बहुत खुशी हुई ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पुरश्चरण के तीन साल हम को एक ही स्थान पर रहकर पूरा करना था । कहीं जाना-आना नहीं । हमारे मन में Revolt जैसा हो गया था कि हम लोग सब छोड़कर दूसरी जगह पर चले जायेंगे । हमारी दिनचर्या की छोटी-छोटी सी चीजों को माँ ने नियमवर्तिता में बाँध दिया था । सुबह से हम काम में लग जाते थे । चार बजे उठते झाड़ू-पोंछा करते, फिर स्नान करते । क्या क्या करना कब उठना, जप करना अखण्ड ज्योति देखना इत्यादि । इस प्रकार साढ़े ग्यारह बज जाते थे । जिस दिन पुरश्चरण प्रारम्भ होने वाला था मां ने हमारे दूसरे दिन प्रातः स्नान के लिए कपड़ा तौलिया खुद ठीक करके रख दिया, अंगीठी में कोयला डाल कर रख दिया । चाकू रखा सब्जी आदि टोकरी में सजा कर रख दिया, मिट्टी का तेल भी चूल्हा जलाने के लिए रखा था । जैसे दूसरे दिन हम शुरू करें तो हमें सभी चीजें जगह पर मिल जायें । सोते समय कमरे में एक लाईट जलने की भी व्यवस्था रखी थी । माँ का एक कमरा बना था । हम तीनों जहाँ सोते थे वहाँ माँ का एक तख्ता रखा था । कभी-कभी माँ वहाँ सो जाती थीं । ऐसे माँ बारीकी से हर चीज का ध्यान रखती थीं । राजा हो या सामान्य आदमी, उद्योगपति हो या प्रोफेसर साधु-महात्मा सब के साथ माँ उनके अनुकूल व्यवहार करती थीं । विशेष कोई आये तब भी । इस तरह हम लोगों का भी खूब ध्यान रखती थीं ।

प्रश्न- श्री श्री माँ का सिद्धान्त क्या था ?

स्वामीजी- माँ का सिद्धान्त था । मनुष्य शरीर मिला है तो भगवत् प्राप्ति के लिए । संसार में रहो तो गृहस्थाश्रम के धर्मों का पालन करो उसमें भगवत् प्राप्ति है । यदि साधु हो तो भजन करना गुरु आदेशानुसार । माँ ने यह नहीं कहा कि भगवत् प्राप्ति के लिए घर छोड़ दो यदि कोई योग-संयोग से ऐसा करे भी तो उसको मनाही भी नहीं है । ऐसा भी हुआ कि किसी ने कहा हमको भगवत् मार्ग में जाना है । माँ उसके लिये भी सारी व्यवस्था करती थीं खाने-पीने से लेकर सब । अगर तीन दिन भी इस भाव में वह व्यक्ति रह जायेगा तो यह भाव बीज रूप से उसके अन्दर रहेगा । माँ सबको प्रोत्साहन देती थीं ! जिसकी जैसी भावना उसके साथ वैसा ही व्यवहार करती थीं ।

प्रश्न- आज के युग में माँ के संदेशों का प्रभाव क्या होगा ?

स्वामीजी- प्रभाव ऐसा है कि जो जिसके योग्य कर्म होता है आध्यात्म में उसे गुरु ढूँढ़ना नहीं पड़ता, गुरु खुदबखुद सामने आ जाते हैं । माँ कहती थीं सबके लिये सब नहीं है ।'' जैसे आपको कहें कि आपको सेवा के भाव से कार्य करना है । बस इच्छा न करो । माँ कहती हैं साधु होकर जंगल में रहो तो संसार का सोचो मत । अगर संसार में रहो तो विरक्त भाव से । अतिथि की सेवा करो वही जन्म सफल है ।

प्रश्न- माँ के प्रति लोगों की भावनाओं के सम्बन्ध में क्या कहना चाहेंगे ?

स्वामीजी- बंगला देश में जीवन्तकाली माँ कहलाती थीं । माँ का जन्म पूर्व बंगाल में हुआ था । वहाँ सब लोग माँ के प्रति अतिशय श्रद्धा रखते थे । बंगाल में श्रीरामठाकुर नामक एक सिद्ध महात्मा हुए थे । माँ के सम्बन्ध में उनके भक्तों के द्वारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा- ''माँ स्वयं अन्नपूर्णा हैं'' । उन्होंने माँ को साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया । उनके शिष्यों द्वारा प्रणाम करने का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कारण **पूछे** जाने पर श्री रामठाकुर ने कहा-"जो प्रणाम के योग्य होता है उसी को प्रणाम किया जाता है ।" माँ कहती हैं जब किसी का परिचय पता नहीं हो सके उसे अपना मानना ।

प्रश्न- कोई विशेष घटना

स्वामी जी- हमारे विन्ध्याचल आश्रम में उपेन बाबा नामक एक सज्जन रहते थे । उन्होंने हम को सुनाया । उन्होंने माँ से एक बार पूछा । "माँ विश्वरूप दर्शन" क्या है । माँ ने हँसकर बात को टाल दिया । राजगीर आश्रम की बात थी । उस समय वहाँ कोई शौचागार आदि की व्यवस्था नहीं थी । सभी जंगल में जाते थे । जब एक बार वे जंगल में गये । जब वह शौच के लिए बैठे तो सामने देखा माँ हैं । वे शर्मिंदा हो गये । दूसरी जगह चले गये । सोचा माँ यहाँ कैसे आयीं । दूसरी जगह भी पेड़ के नीचे पेड़ के पत्तों में माँ को देखा । गंगा के जल में देखा तो उसमें भी माँ । पृथ्वी, जल, स्थल सब जगह माँ । आकाश में भी । अखिल ब्रह्माण्ड में हवा चलती है तो उसमें भी श्री माँ का दर्शन हुआ, उसके बाद वे वापस आये तो माँ ने पूछा, "बाबा क्या हुआ । तुम्हारी आँखों में क्या ?" उन्होंने मां को साष्टाङ्ग प्रणाम करके कहा, "आप तो जैसे जानती ही नहीं हो ऐसी बात है । मुझे आज आपके वास्तविक स्वरूप के दर्शन हुए ।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ के आश्रम प्रसंग में

कालकाजी—नई दिल्ली

(गतांक से आगे)

— ब्रह्मचारिणी गीता बनर्ज़ी

दिल्ली आश्रम में सर्वप्रथम श्री माँ की उपस्थिति में नामयज्ञ अनुष्ठित हुआ ७ नवम्बर, १९५४ । इधर गोलाकार नाम ब्रह्म मन्दिर का निर्माण कार्य चल रहा था । सितम्बर, १९५७ में परमानन्द स्वामीजी आये संयम की व्यवस्था करने । स्वामीजी के अथक प्रयास से गोलाकार यह सत्संगभवन बन कर तैयार हो गया था ।

दिल्ली आश्रम में २२ नवम्बर से २८ नवम्बर १९५७ तक सप्तम संयम सप्ताह महाव्रत अनुष्ठित हुआ था । इस समय नाना पताका विभूषित शिविरों से, आलोकमालाओं से, आम्रपल्लव के बन्दनवारों से, फूलों से, फलों से आश्रम एक अभिनव रूप में सुसज्जित हुआ । अनेक लोग आये । श्री श्री माँ तथा महात्मा गणों की उपस्थिति में आनन्दधारा में अवगाहन कर भक्तगण मौन साधना में रत हुए ।

इस संयम में एकदिन ध्यान के समय सूक्ष्म में माँ ने देखा कि एक व्यक्ति अपने सम्पूर्ण शरीर को वस्त्र से आवृत कर ध्यान में बैठा है । उनके मुख का केवल थोड़ा सा अंश दिखाई दे रहा था । माँ उनको देख कर जान गईं । वे स्वयं महावीर जी श्री हनुमानजी हैं । उनके श्री अंग की आभा वस्त्रों के ऊपर से भी भासित हो रही थी । माँ ने और एक दीर्घकाय महापुरुष को देखा, उनके केश घुंघराले तथा परिधान में श्वेतवस्त्र है । एक महिला के माथे पर हाथ रख कर आशीर्वाद दे रहे हैं । माँ ने एक छोटी सी अपूर्व सुन्दरी कन्या को देखा, उनके साथ और भी कई कन्याएँ हैं । और एक सुन्दर बालक एकटक माँ को देख कर, मधुर हँस रहे हैं । श्री श्री माँ ने बाद में इन दर्शनों के विषय में कहा है । इससे प्रतीत होता है कि दिल्ली आश्रम की यह भूमि विशेष है ।

संयम सप्ताह के अन्तिम दिवस इस सत्संग भवन का नामकरण हुआ "नामब्रह्म मन्दिर ।" संगमरमर के एक फलक में "नाम ब्रह्म मन्दिर" तथा "हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे । हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।" यह महानाम मन्त्र अंकित थे । इस प्रस्तर लिपि का विमोचन किया गया श्री श्री माँ की उपस्थिति में श्री हरिबाबा तथा अन्यान्य महात्मा गणों के द्वारा । नाम यज्ञ के द्वारा उत्सव की समाप्ति हुई ।

धीरे-धीरे आश्रम के कलेवर में वृद्धि होने लगी । १९६० ई.. में ८ जुलाई को गुरु पूर्णिमा के दिन आश्रम के ऊपर हरिबाबा के लिए निर्मित घर का उद्घाटन हुआ । ८ मई १९७० ई. को दिल्ली आश्रम में नूतन रन्धनागार तथा भोजनागार का विमोचन हुआ । इसके बाद अक्षय तृतीया के दिन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महासमारोह के साथ माँ के भवन का शिलान्यास किया गया । १३ फरवरी, १९७२ ई. में दिल्ली आश्रम में पञ्चायतन शिव मन्दिर तथा छोटे से हनुमान मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई । शिवमन्दिर में तीन शिवलिङ्ग, गणेश, पार्वती तथा सूर्यनारायण की प्रतिष्ठा हुई । शिव मन्दिर के सामने नन्दी भगवान विराजित हैं । हनुमान मन्दिर में हनुमान जी प्रतिष्ठत हुए । पञ्चवटी तथा पूजा मण्डप की स्थापना पहले ही हुई थी । साधु कुटिया की स्थापना भी पहले ही हो चुकी थी ।

दिल्ली के भक्तों के विशेष आग्रह से १९७० तथा १९७६ ई. में श्री श्री दुर्गा पूजा, लक्ष्मी पूजा तथा कालीपूजा श्री श्री माँ की उपस्थिति में दिल्ली आश्रम में अनुष्ठित हुई है । दोनों बार ही पारितोषिक समिति की ओर से सबसे सुन्दर प्रतिमा तथा सुनिपुण पूजा के आयोजन के लिए आश्रम को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

१९७२ ई. में श्री माँ का जन्मोत्सव दिल्ली आश्रम में हुआ था । इस बार माँ के लिए एक अपूर्व रमणीय भवन का उद्घाटन हुआ २ मई, १९७२ ई. में । पञ्चवटी से नारायण शिला तथा श्रीपद्मनाभ के श्री विग्रह के साथ कीर्तन करते हुए आश्रम के संमस्त साधुगणों के साथ श्री माँ ने शोभायात्रा के बाद मातृ-भवन में प्रवेश किया । दिल्ली आश्रम की वर्तमान रूपरेखा को साकार करने में स्वामी स्वरूपानन्दजी का नाम अविस्मरणीय है ।

जहाँ शिव हैं वहीं शक्ति हैं । शक्तिभिन्न शिव शवतुल्य हैं । शिव मन्दिर के सामने काली मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई । भक्त गिरिजी का भी माँ के साथ दर्शन करना चाहते हैं कारण वे परम गुरु हैं । उनके कारण ही हमें माँ प्राप्त हुई हैं । कालीमन्दिर तथा गिरिजी के मन्दिर की प्रतिष्ठा २९ अप्रैल, १९७८ ई. में हुई । रोगरूपी जनजनार्दन की सेवा के लिए निःशुल्क चिकित्सालय की स्थापना हुई । इस चिकित्सालय का उद्घाटन २६ फरवरी, १९८२ ई. में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के करकमलों द्वारा हुआ है ।

नवनिर्मित मन्दिर में श्री श्री माँ विराजित हुई हैं जन्मशताब्दी के वर्ष में । १८ अप्रैल, १९९६ से प्रतिष्ठाकार्य प्रारम्भ हुआ । २१ अप्रैल, १९९६ ई. में विद्यानन्दजी की उपस्थिति में मातृमूर्ति की प्रतिष्ठा हुई । आश्रम का पुष्पोद्यान पुष्पों से सुसज्जित है भगवान के चरणों में समर्पित होने के लिए ।

दिल्ली के इसी आश्रम में करुणामयी माँ ने आलौकिक रूप से दो बालिकाओं की प्राणरक्षा की थी । २६ जुलाई, १९७७ श्री श्री माँ दिल्ली आश्रम में अपने शयन घर में लेटी हुई थीं । अपराह्न में माँ के घर का दरवाजा बन्द था । अचानक माँ जोर-जोर से बोलने लगीं "जल-जल" बाहर से सेविका ने सोचा माँ को जल चाहिए । अतः वे तुरन्त एक गिलास जल लेकर माँ के कमरे में गईं . माँ ने देख कर कहा, "नहीं नहीं, चारों ओर जल देख रही हूँ ।" सेविका स्तम्भित रह गईं ।

उस दिन सुबह एक महिला अपने दो शिशु पुत्रों के साथ माँ के दर्शन के लिए आई थीं । मातृ दर्शन से तृप्त होकर वे घर गईं दोपहर को दोनों बालक खेल रहे थे । पास ही एक बड़ी सी जल की टंकी थी । खेलते-खेलते दोनों बालक जल में गिर गये । जल में गिर कर दोनों छटपटाने लगे । इतने में उन लोगों ने देखा एक अपूर्व सुन्दरी महिला ने तैरती हुई आकर उन्हें जल से बाहर निकाल दिया । बालकों ने देखा कि इसी महिला के पास ही वे आज अपनी माँ के साथ दर्शन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करने गए थे । इन्होंने गले में माला पहना दी थी । इसके बाद दोनों बालकों ने अपने मकान में प्रवेश किया ।

बालकों की माँ जल झरते हुए पोषाक में अपने बच्चों को देख कर आश्चर्यचकित रह गई । तब बच्चों ने अपनी माँ से कहा कि खेलते-खेलते वे जल में गिर गये थे । तब सुबह देखी गई माताजी जिन्होंने उन्हें गले में माला पहनाई थी, उन्होंने सफेद वस्त्र में तैरती हुई आकर उन्हें जल से निकाल दिया है । उसी समय माँ ने अपने कमरे में 'जल-जल' कहा था ।

भारत का सौभाग्य है कि इस पुण्य भूमि में पराशक्ति, महाशक्ति जगज्जननी श्री श्री माँ अवतीर्ण हुई थीं । श्री श्री माँ के पूतपादस्पर्श से धन्य हुई थी सम्पूर्ण भारत की भूमि । राजधानी दिल्ली में माँ के आश्रम होने से भारत सरकार के राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री आदि देश के कर्णधारगण अपने कर्ममय व्यस्त जीवन में भी माँ के दर्शनों से धन्य हुए । श्री श्री माँ का पादस्पर्श से धन्य हुआ है राष्ट्रपति भवन तथा प्रधानमंत्री भवन ।

दिल्ली आश्रम की आत्मा है कीर्तन नाम यज्ञ । दिल्ली के भक्तों ने कीर्तन के द्वारा ही माँ को प्राप्त किया था । श्री श्री माँ ने एकबार किसी भक्त से कहा था, ''तुमलोग जो जप करते हो वह मेरी ओषधि का डोज है, जो कीर्तन करते हो वह इन्जेकशन है, तथा तुमलोगों का शुद्धभाव ही मेरा आहार है ।''

श्री श्री माँ विश्वजननी हैं । सभी जाति, सभी धर्म, सभी वर्गों की वे समान रूप से माँ हैं । वे भावों को ग्रहण करती हैं । एक बार हरिद्वार में नामयज्ञ हो रहा था । श्री श्री माँ का शरीर ठीक नहीं था । संकीर्तन गगन भेदी नाद से शब्दायमान हो रहा था । बाहर प्रबल वर्षा हो रही थी । मानों दोनों की प्रतिद्वन्द्विता हो रही थी । अचानक स्खलित चरणों में श्री श्री माँ रुद्धद्वार की ओर अग्रसर हो गईं । सब चिल्लाने लगे ''छाता कहाँ? माँ भीग गईं'' इत्यादि । एकजन दौड़ कर जाकर दरवाजा खोलने लगे । जगज्जननी एकदम बाहर जाकर पास के चबूतरे पर बैठे हुए वारिसिक्त एक वृद्ध मुसलमान से कहने लगीं, ''भीग गया, पिताजी । आ जाओ ।'' वृद्ध चकित होकर पहले उस कर्दम से युक्त राजपथ पर माँ के चरणों में लोट गये । बाद में माँ के पीछे-पीछे उन्होंने भीतर प्रवेश किया मातृस्नेह से अभिसिञ्चित समुन्नत सिर से । अब सबने उनको पहचाना । मातृभक्त वृद्ध देहरादून वासी नाम श्री तालाक होसेन, एक सेवानिवृत्त सरकारी अफसर । श्री श्री माँ को जानते हैं । नमाज पढ़ने के समय माँ का दर्शन प्राप्त करते हैं 'ताज' में । श्री श्री माँ की अस्वस्थता की खबर सुनकर कुछ ही पहले देहरादून से हरद्वार पहुँचे थे । अनुसन्धान से उन्हें ज्ञात हुआ कि श्री श्री माँ 'पीतकुटीर' में हैं । वे चलने लगे तथा उन्हें 'पीतकुटीर' से कीर्तन ध्वनि सुनाई पड़ी । वे भाव विह्वल हो उठे । रास्ते में ही वर्षा प्रारम्भ हुई । किन्तु वर्षा में वे रुके नहीं, कीर्तन ध्वनि से आकृष्ट होकर द्वार पर आकर रुक गये । उस समय किसी ने मुसलमान देख कर उन्हें प्रवेश करने से मना किया तथा अत्यधिक सावधानता से भीतर से दरवाजा भी बन्द कर दिया । अतः उपायान्तर रहित होकर वर्षा के अविरल स्रोत को अग्राह्य कर निमीलित नयन में कीर्तन ध्वनि को श्रवण करते हुए वे आनन्द से डोलने लगे । पुत्र स्नेहातुर जननी का हृदय-कन्दर झंकृत हो उठा उनकी भाव-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माधुरी से अतः उपेक्षित सन्तान को माँ ने अपने हृदय में स्थान दिया । अन्तर्यामिनी श्री श्री माँ स्वयं द्वार खोल कर अपने परम भक्त को भीतर ले आईं । नाम संकीर्तन से वृद्ध महा आनन्दित थे । ऐकान्तिक अनुराग से नामध्वनि में लीन होकर सबके साथ ऊर्ध्व बाहु होकर नाचते हुए मंच परिक्रमा करने लगे । नाम ब्रह्म है । नाम रस से नाम मयी चिदानन्दमयी माँ की प्राप्ति होती है । नाम-नामी अभिन्न ।

युग-युग तक श्री श्री माँ का यह दिल्ली आश्रम नाम-ब्रह्म-ध्वनि से सबको परमानन्द में लीन कर नाम गुण-गान की महिमा गान करते रहे-यही मातृ चरणों में प्रार्थना है ।

●

जीवन दर्शन

कहा गया है कि विनम्र व्यवहार और मन की कोमलता किसी भी हथियार से अधिक शक्तिशाली सिद्ध होती हैं । जहाँ कठोरता का जल्दी नाश होता है, वहीं कोमलता लंबे समय तक रहती है । सत्य भी है कि कठोर से कठोर वस्तु को काट देने वाली तलवार भी रुई के ढेर को काटने का सामर्थ्य नहीं रखती । महाभारत का प्रसंग है । भीष्म पितामह अपने अंतिम समय में शर शय्या पर पड़े थे । धर्मराज युधिष्ठिर का आग्रह था कि पितामह ऐसे समय में कुछ जीवन के लिए उपयोगी शिक्षा दें । भीष्म ने इस प्रकार कहा कि नदी जब समुद्र तक पहुँचती है, तो अपने पानी के संग बहुत सी चीजों, बड़े-बड़े पेड़ों तक को बहा कर ले जाती है । एकदिन समुद्र ने नदी से प्रश्न किया, "तुम बड़े-बड़े पेड़ों को अपने प्रवाह में ले आती हो, लेकिन क्या कारण है कि छोटी-सी घास, कोमल बेलों व नरम पौधों को क्यों नहीं ला पाती?" नदी का उत्तर था, "जब-जब मेरे पानी का बहाव आता है तब-तब बेलें झुक जाती हैं और उसे रास्ता दे देती हैं, लेकिन वृक्ष अपनी कठोरता के कारण यह नहीं कर पाते ।" भीष्म ने युधिष्ठिर को आगे समझाते हुए यही उपदेश दिया कि जीवन में कोमल व्यक्ति का ही अस्तित्व सदैव बना रहता है । यही मेरी शिक्षा सदैव मन में रखना ।"

(दैनिक भास्कर से साभार)

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रद्धाञ्जलि

१. पूज्य महन्त श्री नारायण दास जी महाराज

गुजरात के जिले के अन्तर्गत 'नाडियाद' एक ऐसा शहर है जो सम्पूर्ण "जय महाराज" के रंग में रंगा हुआ है । इस नगरी का सुप्रभात संतराम मंदिर के प्रांगण में आठवें महन्त पूजनीय श्री नारायणदास जी के पुण्यमय दर्शन से होता है और सूर्यास्त भी मंदिर प्रांगण में ही पूज्य महाराज श्री के सान्निधय में सत्संग भजन द्वारा ही होता है । बालक से वृद्ध पर्यन्त स्त्री पुरुष सभी की इस प्रकार की आस्था का केन्द्र रहे महन्त श्री नारायणदास जी ।

२७ अक्टूबर २००४ संतराम मंदिर के इस धीर स्थिर मृदुभाषी महान् संत के ब्रह्मलीन होने के संवाद से केवल नाडियाद ही नहीं अपितु सम्पूर्ण सौराष्ट्र मर्माहत हो गया, होना स्वाभाविक ही था, गुजरात के किसी भी प्रान्त में भूकम्प हो या अकाल, महामारी का प्रकोप हो या अन्य कोई विडम्बना, संतराम मन्दिर के सुदूर प्रसारी हाथ सभी का सहारा था । महन्तश्री के इशारे मात्र से कहीं तो नगर बस गया तो कहीं अन्न का ढेर लग गया । आज अपने हितैषी इस महान् विभूति को खोना सामान्य बात नहीं थी ।

श्री श्री माँ के साथ आपका आन्तरिक-सम्बन्ध था । श्री श्री माँ के साक्षात् दर्शन के पूर्व से ही आप माँ के प्रति अत्यन्त श्रद्धा रखते थे । गुजरात के पुराने भक्त श्री मुलजी भाई पटेल का संतराम मंदिर के साथ अत्यन्त प्राचीन सम्बन्ध है पटेल परिवार मूल रूप से नाडियाद के ही हैं अत: इनका तो बाल्यकाल से ही मंदिर से सम्बन्ध है । मुलजी भाई के माध्यम ही माँ को संतराम मन्दिर एवं महन्त जी की बात बतायी गयी । इस मन्दिर के महन्तों के लिए विशेष नियम रहते हैं जिसके अन्तर्गत मन्दिर की चहरदीवारी के बाहर उनका जाना निषिद्ध है साथ ही किसी सभा समिति में भी जाने पर भी प्रतिबन्ध है यहाँ तक कि आश्रम परिसर के मध्य हो रहे सभा में भी वे भाग नहीं ले सकते । श्री श्री माँ के दर्शनों की अभिलाषा उन्होंने प्रकट की । श्री श्री माँ वहाँ पधारीं, प्रतिदिन हजारों की संख्या में जिनके दर्शनों को लोग आते हैं आज वे ही बालक वत् श्री श्री माँ को प्रणाम कर रहे थे । यही थी उनकी महानता । माँ के साथ आये भक्त वृन्दों में से किसी को भी कोई असुविधा न हो इस ओर उनका विशेष ध्यान था ।

श्री महन्त जी महाराज के आग्रह पर 1978 में माँ की उपस्थिति में नवम्बर में होने वाले वार्षिक संयम सप्ताह का आयोजन किया गया । माँ के भक्तों की संख्या तो शताधिक थी ही साथ ही अनेक संत महात्मा एवं विद्वद्गण भी इस अनुष्ठान में पधारे थे । अनुष्ठान की तो अपनी अलग शोभा थी पर महन्त जी के निर्देश पर जो सेवा की व्यवस्था हुई थी वह उनकी साधना की सफलता की ओर संकेत करती थी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सामूहिक सत्संग सभा में भी जाना निषिद्ध होने के कारण वे प्रतिदिन एकान्त में श्री श्री माँ के पास आते एवं मातृ-वाणी का अमृत स्वाद ग्रहण करते थे । श्री श्री मां भी प्रतिदिन आपके भोजन के लिए विविध प्रकार के भोज्य पदार्थ तैयार करके भिजवाती थीं । माँ के मधुर मातृवात्सल्य का यह एक अनूठा दृष्टान्त था ।

अवसर पाते ही पूज्य महन्त महाराज श्री नाराण दास जी माँ की सेवा में अपरिमित द्रव्य सँभार भेंट हेतु भेजने में कभी नहीं चूकते थे । श्री मां भी महन्त जी को विविध प्रकार के आश्रम निर्मित सुस्वादु भोज्य सामग्री भिजवाया करती थीं ।

श्री श्री मां की शारीरिक अनुपस्थिति में भी नाडियाद संत राम मंदिर के साथ आनन्दमयी आश्रम का सम्बन्ध नहीं टूटा । आश्रम के साधु ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी, भक्तगण जब कभी भी वहाँ गये उनके आतिथ्य का गुणगान करते हुए ही लौटे । विशेषतः माँ आनन्दमयी कन्यापीठ की कन्याओं के प्रति आपकी विशेष स्नेह भावना थी, आपः पुनः पुनः कन्याओं को वहाँ आने का आग्रह करते थे, केवल इतना ही नहीं वहाँ जाने पर जिस तरह देख भाल की जाती थी उसे शब्दों में बांधा नहीं जा सकता ।

सन्तराम मन्दिर की विराट् चहर दीवारी के भीतर ३५ वर्षों तक तपोमय जीवन व्यतीत करने वाले इन महासाधक के अन्तिम दर्शनों के लिए गुजरात का जन सैलाब उमड़ पड़ा था । श्री श्री माँ के आश्रम की ओर से भी दो वरिष्ठ संन्यासी उपस्थित हुए थे अपनी हार्दिक श्रद्धा निवेदन करने के लिये ।

एक महान् व्यक्तित्व के धनी इन महापुरुष का शारीरिक अभाव तो हम सबके लिये अपूरणीय क्षति है, पर आपके उदार व्यक्तित्व की झलक जो सहस्त्र-सहस्त्र मानसपटल पर सदा अंकित रहेगी वह अजर अमर है ।

परमतपस्वी यशोधन महामना महन्त श्री नारायण दास जी के प्रति हमारी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि समर्पित है ।

२. श्रीमती. एम.एस. सुब्बालक्ष्मी

देवभूमि भारत की दैवी आत्मा, देव पुजारिन देवस्तुति गायिका भारतरत्न श्रीमती एम. एस. सुब्बालक्ष्मी के दैवी स्वर में आज भी गा रही है एवं भविष्य में भी गाती रहेगी, "ब्रह्मामुरारिस्त्रि पुरान्तकारि भानु शशि भूमि पुत्र बुधश्र्च । गुरुश्र्च शुक्र शनि राहुकेतुः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ।"

यह स्वर नैसर्गिक है अजर अमर है । यही अशोच्य आत्मा का प्रत्यक्ष प्रमाण है । सुब्बालक्ष्मी के भौतिक रूप से गिने चुने लोग ही परिचित हैं पर उनकी भक्तिभाव भीने स्वर से कौन परिचित नहीं है । देश का शायद ही कोई देव मन्दिर ऐसा होगा जो "भज गोविन्दम् भज गोविन्दम् गोविन्दम् भज मूढ़मते" के गुंजन से गुञ्जित न हुआ हो । उत्तराखंड की बर्फीली गुफाओं में "यस्य स्मरण मात्रेण जन्म संसार बन्धनात्, विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे" का मधुर संगीत गूँजता है, तो कन्याकुमारी में सागर की इठलाती लहरें "मीनाक्षी कुरु मम सुप्रभातम्" के सुमधुर ध्वनि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तरंगों से अछूती नहीं रहती । सोमनाथ के अथाह अरब सागर की **ऊँची लहरें सुप्रभात की मंगल** वेला में ''सौराष्ट्रे सोमनाथञ्च श्री शैलेमल्लिकार्जुनम्'' के दिगन्तव्यापी **स्तुतिगान मेंताललय सहित** सहयोग देती नजर आती हैं । बंगाल की खाड़ी की लहरें ''जगन्नाथ स्वामी नयन पथगामी भवतु मे'' की संगीत ध्वनि पर नर्तन करती हैं । चारों दिशाओं में एक **ही स्वर गूँजता है विविध** नामों के गुणगान से यह संगीत देने वाली साधिका कौन है—''भारतरत्न एम.एस. **सुब्बालक्ष्मी ।**'' शरीर के साथ सम्बन्ध नहीं उनके अजर अमर संगीत में कण्ठ स्वर में भारत की आत्मा सदैव गूँजती रहेगी । एवं प्रभात की सुमंगल वेला में निद्रातुर जनमानस को जगा कर उसे भगवन्नामामृत से सिंचित करती रहेगी यह क्रिया युगों तक चलती रहेगी । यही है उस शाश्वत आत्मा की महिमा जिसे श्रीमद्भगवद्गीता ने गाया है ।

''न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो-
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥

अर्थात् यह न जन्म लेता है न मरता है, यह भूत भविष्य वर्तमान से परे है, अजन्मा है नित्य है शरीर के हनन या नष्ट होने से यह नष्ट नहीं होता है । आगे पुराने कपड़े का दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए कहा है जैसे पुराने वस्त्रों को छोड़ कर व्यक्ति नये कपड़ों को धारण करता है उसी प्रकार इस शरीर में रहने वाला जो जीव है वह अन्य नये शरीर में जाता है । गुणगान या दुर्नाम तो शरीर में रहने वाले जीव का होता है । अतः दुर्लभ मानव जन्म सफल करो का समुद्घोष सभी महापुरुषों ने किया है । मानव देह ही जीव को अजर अमर बनाने का एक मात्र बृहद्विद्यालय है । आज श्रीमती सुब्बालक्ष्मी के नश्वर शरीर के न रहने पर यही सत्य बार-बार सामने आ रहा है ।

श्री श्री माँ के सान्निध्य में सुब्बालक्ष्मी—सन् १९५२ में श्री श्री माँ के दक्षिण भ्रमण के दौरान तिरुवन मलाई के संत श्री रमण महर्षि की पारसी शिष्या श्रीमती तालियार खाँ माँ के सान्निध्य में आयीं एवं श्री श्री माँ के मधुर प्रेम पाश में इस प्रकार बँधीं कि वह अटूट बन्धन हो गया । सन् १९५६ में श्री श्री माँ की हीरक जयन्ती आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्रीमती तालियार खाँ इन महीयसी साध्वी भजन साम्राज्ञी को माँ की सन्निधि में लायी थीं । तब से श्री श्री माँ के दिव्य प्रेम में यह भक्त गायिका भी भाव विभोर हो गयीं ।

सन् १९७२ में त्रिवेन्द्रम के प्रसिद्ध लक्षदीपम् उत्सव के अवसर पर पद्मनाभमन्दिर के सेवक एलियाराजा मार्तण्ड वर्मा के सादर आमन्त्रण पर श्री श्री माँ का संक्रान्ति पर त्रिवेन्द्रम् में रहने का कार्यक्रम निश्चित हुआ था । इसी दौरान ७ जनवरी से ९ जनवरी पर्यन्त श्री श्री माँ ने ''कल्कि स्वराज्य परिवार'' का आतिथ्य स्वीकार किया था । कल्कि स्वराज्य परिवार के मुखिया स्वर्गीय श्री टी. सदाशिवम् ने देवनर्तकी श्रीमती सुब्बालक्ष्मी को धर्मपत्नी के रूप में ग्रहण किया था । श्री श्री माँ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री टी. सदाशिवम् एवं सुब्बालक्ष्मी के भक्ति पूरित आवाहन पर भक्त मंडली सहित वहाँ विराजी थीं ।

मद्रास की (अंग्रेजी) "स्वराज्य" पत्रिका, जनवरी २२ सन् १९७२ के अंक में उक्त प्रवास का उल्लेख निम्न प्रकार से किया गया है जिसमें श्री श्री माँ के चरणों में इनकी असीम श्रद्धा झलकती है । (हिन्दी रूपान्तर)

श्री श्री माँ ने लक्षदीपम् उत्सव त्रिवेन्द्रम् यात्रा के दौरान ७ जनवरी से ९ जनवरी तीन दिवसीय आवास से कल्कि स्वराज्य परिवार पर अपनी अहैतुकी कृपा वर्षण की ।

कल्कि गार्डन में आपकी ६० घन्टे की उपस्थिति ने सम्पूर्ण वातावरण को असीम अनुकम्पा, प्यार, शान्ति एवं दिव्य विचार धारा से उर्जान्वित कर दिया था । हजारों ने हजारों समस्याओं से मुक्त होकर श्री माँ के नैसर्गिक दिव्य सुधावारि का दिव्य स्वाद ग्रहण किया जो सर्वथा अविस्मरणीय है ।

माननीय टी. सदाशिवम् द्वारा पूर्ण कुम्भ लेकर श्री माँ के स्वागत करने के क्षण से श्री माँ के विदा लेने तक अविरल धारा की भाँति भक्तजनों का श्री श्री माँ के चरणों में भक्ति पुष्पाञ्जलि प्रणामाञ्जलि अर्पण का सिलसिला चलता रहा । वैदिक विद्वानों द्वारा वेदमन्त्रों का निरन्तर उच्चारण किया जा रहा था । साथ ही श्रीमती सुब्बालक्ष्मी के भजन भी चल रहे थे । अन्तरात्मा को रोमाञ्चित करने का यह अनुभव हृदय को पूर्णतया मोहित या मूक कर देता था जब बीच-बीच में श्री माँ स्वयं सामूहिक कीर्तन को संचालित करती थीं ।

व्यापक सूर्य प्रभा के समान असीम अनुग्रह से जब विशाल जनसमूह आप्लावित हो रहा था तब कल्कि स्वराज्य के कार्यकर्ताओं ने उनके आशीर्वाद एवं अतिरिक्त अनुकम्पा का अनुभव किया जब श्री श्री माँ अपने ही ख्याल से नये ऑफसेट रोटरी प्रेस में पधारीं तथा प्रत्येक एवं प्रति कर्मचारी को प्रसाद वितरण किया ।

श्री श्री माँ की उपस्थिति के दौरान अपूर्व शान्ति और वह प्यार जो कि चारों ओर बहा उसका वर्णन करने में शब्दभंडार असमर्थ है । वह शान्तिमय आँखें एवं करुणाभरी मधुर मुस्कान हमारे स्मृति पटल पर सर्वदा अंकित रहेगी । हम उनके श्रीचरण कमलों में अपना प्रणाम अर्पण करते हैं ।"

इन्हीं शब्दों के साथ दिवंगत दिव्य आत्मा श्रीमती सुब्बालक्ष्मी जिनका स्वर्गवास बिगत ११ दिसम्बर, २००४ को हुआ, उन्हें श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जाती है ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आश्रम-संवाद

१) कनखल—

इस बार कनखल के श्री श्री माँ के आश्रम में १९ नवम्बर से २५ नवम्बर तक संयम सप्ताह महाव्रत अनुष्ठित हुआ । संयम सप्ताह की पूर्वसंध्या के १८ नवम्बर को संयम के उद्‌घाटन समारोह में महानिर्वाणी अखाड़े के महन्त श्री १०८ गिरिधर नारायण पुरीजी महाराज, ऋषिकेश के कैलासपीठाधीश्वर महामण्डलेश्वर स्वामी विद्यानन्दगिरिजी महाराज, राष्ट्रसन्त पूज्य मोरारी बापू जी, गरीबदासी अखाड़े के महामंडलेश्वर डॉ. श्यामसुंदर दासजी साधना आश्रम के महामंडलेश्वर स्वामी परमेश्वरानन्दजी आदि वरिष्ठ महात्मागणों की उपस्थिति से मंच की शोभा वृद्धि हुई । सभी ने संयम की व्याख्या करते हुए व्रतियों को आशीवर्चन दिये । अनुष्ठान प्रारम्भ होने से पूर्व श्री श्री माँ का मुखनिःसृत गान 'हे भगवान हे कृपाल' के पदों को ब्रह्मचारिणी विशुद्धाजी ने गाया । आनन्दमयी संघ के प्रधान सचिव स्वामी भास्करानन्दजी ने संक्षिप्त स्वागत भाषण दिया । परम श्रद्धेय मोरारी बापू जी ने अपने भाषण में कहा—साधक वही है जो किसी का बाधक न हो । उन्होंने साधक शब्द की व्याख्या इस प्रकार से की — 'सा' अर्थात् सावधान । कहाँ सावधान होना ? 'ध' अर्थात् धर्म में । कैसा धर्म ? 'क' अर्थात् कल्याणकारी । अर्थात् कल्याणकारी धर्म में साधक को सावधान होना चाहिए ।' इसके उपरान्त उन्होंने बताया—'रात को यदि एक घर में एक प्रदीप जलता है तो उसमें चोर प्रवेश नहीं करता उसी प्रकार हृदय मंदिर में संयम रूपी प्रदीप जले तो उसमें काम, क्रोध रूपी चोरों का प्रवेश नहीं हो सकता । पिता नियम की शिक्षा देते हैं पर माता संयम की शिक्षा देती है ।' उनका कहना था कि 'श्री श्री माँ के इस पवित्र आश्रम प्रांगण में यदि कोई चुपचाप बैठा भी रहे तो उसका संयम स्वतः हो जाता है ।' इसके पश्चात डॉ. श्यामसुन्दर दासजी के प्रवचन के उपरान्त प्रणाम मंत्र के द्वारा उद्घाटन अनुष्ठान का समापन हुआ ।

१९ ता. से संयम सप्ताह के नियमों के अनुसार, उषा कीर्तन, सत्यं ज्ञानं अनन्तं ब्रह्म आदि पदों का कीर्तन मौन, गीता चण्डी पाठ आदि यथा समय हुए । इस बार कैलास मठ में रामकथा के कारण व्यस्त रहते हुए भी श्री श्री माँ के प्रति श्रद्धा के कारण स्वामी विद्यानन्द जी ने ग्यारह से बारह बजे तक उपनिषद् पर प्रवचन दिया । इस बार उन्होंने बृहदारण्यक उपनिषद् की मधुविद्या पर सारगर्भित प्रवचन दिया । बृहदारण्यक उपनिषद के तीन काण्ड हैं । मधुकाण्ड, मुनिकाण्ड, एवम् खिलकाण्ड । इस मधुकाण्ड को ही मधुविद्या कहते हैं । जैसे मधुमक्खियाँ एक साथ छत्ता तैयार करती हैं उसी प्रकार ब्रह्म पंच महाभूत, जीवों का अदृष्ट, एवम् माया के द्वारा इस जगत की सृष्टि करते हैं । अनेक व्यक्तियों के द्वारा जिसका सृजन होता है उसे मधुविद्या कहते हैं । केवल अन्तिम दिन स्वामी विद्यानन्दजी की अनुपस्थिति में स्वामी परमेश्वरानन्दजी ने उपनिषद् पर प्रवचन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दिया । गीता चण्डी पाठ के उपरान्त १० बजे से ११ बजे तक प्रतिदिन प्रकाशानन्दजी का ईशोपनिषद् पर प्रवचन होता था ।

सांयकाल स्वामी परमेश्वरानन्दजी ने शिव महापुराण के मार्मिक व्याख्यान के अवसर पर कहा—"मनुष्य जीवन का अन्तिम लक्ष्य है भगवत्प्राप्ति । साधना के पूर्व लक्ष्य स्थिर करना अनिवार्य है ।" डा. श्यामसुन्दर दास जी ने अपने प्रवचन में कहा—

i) मानव शब्द से उन्हें ही जानना चाहिये, जो अपने सुख के लिए दूसरों को दुखी न करें । ii) दानव वह है जो अपने सुख के लिए दूसरे को दुखी करते हैं । iii) देवता वही है जो दूसरों के सुख के लिए स्वयं दुःख सहते हैं । चार प्रकार के मानवों की व्याख्या भी उन्होंने इस प्रकार की iv) वदरिकाकार— अर्थात् वेर फल की तरह । ऊपर से नरम एवं मीठा भीतर गुठली अर्थात् शुष्क एवं नीरस । v) पाषाण की तरह कठोर ह्दय वाले व्यक्ति vi) नारियल की तरह बाहर से नीरस होने पर भी भीतर रस से परिपूर्ण । vii) अंगूर के जैसे भीतर बाहर रस से पूर्ण रसीले ह्दय वाले ।

महामण्डलेश्वर स्वामी गुरुशरणानन्दजी ने संयम में दो दिन अपने प्रवचन के द्वारा सबको आनन्दित किया । उन्होंने कहा—"श्री श्री माँ के चरणों में प्रेम ही सार वस्तु है । यदि श्री श्री माँ के चरणों में प्रीति होगी तो प्रतीति अवश्य ही आयेगी । (प्रतीति) अर्थात् विश्वास, किन्तु प्रीति एवं प्रतीति के साथ भीति की भी आवश्यकता है । तभी माँ के निर्देश ठीक ठीक से पालन हो सकते हैं" । महामण्डलेश्वर ज्योतिर्मयानन्दजी ने कहा—"हमारे जीवन में श्रेय की प्राप्ति के लिए ही संयम सप्ताह की आवश्यकता है ।" स्वामी सत्यमित्रानन्दजी ने कहा—अपने ह्दय रूपी पात्र को भक्तिरूपी माटी से माँज कर स्वच्छ करें" । भोला गिरि आश्रम के महामण्डलेश्वर स्वामी देवानन्दजी अस्वस्थ होने के कारण संयम सप्ताह में योगदान नहीं कर पाये, तथापि चिकित्सकों के निषेध करने पर भी उन्होंने संयम में एक दिन आकर व्रतियों को अपने उपदेश के द्वारा प्रोत्साहित किया । उनसे जब पूछा गया कि आपका शरीर कैसा है? उन्होंने कहा—"शरीर ठीक नहीं है, किन्तु मैं ठीक हूँ" । फिर उन्होंने कहा—"हम सब माँ की सन्तान हैं । हमारे ऊपर माँ की कृपा अनन्त धारा में वर्षित हो रही है । माँ की कृपा को अनुभव करने के लिए ही संयम सप्ताह है ।"

आनन्द ज्योतिर्पीठम् मन्दिर में आरती के बाद सन्ध्या कीर्तन तथा मातृप्रसंग के बाद माँ की आरती के साथ ही प्रतिदिन कार्यक्रम की समाप्ति होती थी । २५ नवम्बर को रात्रि में संयम सप्ताह के अन्तिम दिन महानिशा का ध्यान, प्रसाद ग्रहण, तथा दूसरे दिन प्रातः रासपूर्णिमा के दिन होम का टीका लगाने के साथ ही संयमव्रत का समापन हुआ । साधु भण्डारे में १२५ साधुओं को भोजन कराया गया । रात को नामयज्ञ का अधिवास करके महिलाओं ने रात भर कीर्तन किया । २७ नवम्बर दिनभर हरिनाम संकीर्तन के उपरान्त सायंकाल नगर भ्रमण, कुंज भंग एवं महन्तविदाय के साथ नामयज्ञ की एवं संयम सप्ताह की भी परिसमाप्ति हुई ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

२) वाराणसी—

वाराणसी आश्रम में १९ सितम्बर से २६ सितम्बर तक भागवत जयन्ती धूमधाम से मनायी गई । इस बार मूल भागवत के साथ और ८ छोटी भागवत की चौकी भी लगायी गयी थी । महाराष्ट्र के प्रसिद्ध भागवत वक्ता मातृभक्त श्री अशोक भाई कुलकर्णी जी ने भागवत की सुललित व्याख्या की थी । भागवत की कथा के साथ श्री श्री माँ की मधुर लीलाओं को भी कहने से सब भाव विभोर हो उठते थे । भागवत में यथासमय श्रीकृष्ण का जन्म, गोपाल काला आदि का उत्सव गोवर्द्धनधारण लीला सभी सुन्दर ढंग से हुआ । २७ सितम्बर को होम तथा ब्राह्मणों को दान के पश्चात भागवत जयन्ती की समाप्ति हुई ।

शारदीय नवरात्रि में १५ अक्टूबर से २२ अक्टूबर तक आश्रम के स्मृति मंदिर में ४ कलश की स्थापना करके चंडीपाठ हुआ । मातृमंदिर में सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी के दिन श्री श्री माँ की षोडशोपचार से पूजा हुई । नवमी के दिन गोपाल मंदिर के हाल में १८ कुमारियों की पूजा एवं भोजन संपन्न हुआ । २७ अक्टूबर को श्री श्री लक्ष्मीपूजा एवं ११ नवम्बर को श्री श्री कालीपूजा, १३ नवम्बर को महाधूमधाम से अन्नकूट संपन्न हुआ । १९ दिसम्बर से प्रारंम्भ होकर २२ दिसम्बर तक एकादशी में पार्थसारथी एवं गीता की पूजा के उपरान्त गीता जयन्ती पर्व की समाप्ति हुई ।

३) आगरतला—

विगत ३० अगस्त झूलन पूर्णिमा के दिन श्री श्री माँ के आश्रम में झूलन उत्सव सुन्दर ढंग से अनुष्ठित हुआ । सायंकाल आश्रम के हाल में सत्संग का आयोजन किया गया था । ६ सितम्बर जन्माष्टमी के दिन सरस्वती मंदिर में श्री श्री माँ की विशेष पूजा हुई । शाम को सत्संग हुआ । २२ सितम्बर 'ताल नवमी' के दिन श्री श्री माँ की विशेष पूजा एवं भंडारा हुआ । १४ अक्टूबर स्वामी चिन्मयानन्दजी की निर्वाणतिथि में श्री श्री माँ की पूजा एवं भंडारा अनुष्ठित हुआ ।

शारदीय नवरात्र में कलश स्थापन करके दूर्गापूजा भली भाँति संपन्न हुई । महाष्टमी के दिन प्रायः ५०० भक्तों ने महाप्रसाद पाया । ११ नवम्बर को कालीपूजा सुसंपन्न हुई । मध्याह्न में प्रायः दो हजार भक्तों को प्रसाद बाँटा गया । इस बार श्री श्री आनन्दमयी संघ के प्रधान सचिव स्वामी भास्करानन्दजी ७ नवम्बर से बारह नवम्बर तक अर्थात् काली पूजा में आश्रम में उपस्थित थे । अनेक भक्तों की दीक्षा काली पूजा के दिन हुई । दीपावली के दिन आश्रम के सभी मंदिर आलोक मालाओं से आलोकित हो रहे थे ।

४) आगरपाड़ा—

श्री श्री माँ के आगरपाड़ा आश्रम में १९ अक्टूबर से २३ तक विशेष समारोह के साथ श्री श्री दुर्गापूजा अनुष्ठित हुई । पूजा में प्रतिदिन पूजा के उपरान्त पुष्पाञ्जलि तथा प्रातःकाल से मध्याह्न काल तक भोग आरती पर्यन्त स्तव, समवेत चण्डी पाठ, सत्संग एवं भजनादि होते थे । २७ अक्टूबर को श्री श्री लक्ष्मीपूजा एवं श्री श्री सत्यनारायण पूजा हुई । ११ नवम्बर को श्री कालीपूजा एवं १३ नवम्बर को अन्नकूट महोत्सव अनुष्ठित हुए । १९ नवम्बर से २५ नवम्बर तक संयम सप्ताह

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नियमानुसार अनुष्ठित हुआ । संयम में प्रतिदिन महानिशा का ध्यान होता था । १९ दिसम्बर से २२ दिसम्बर तक गीताजयन्ती उत्सव, २५ दिसम्बर तथा २६ दिसम्बर को वात्सरिक नामयज्ञ समापन हुआ । प्रतिदिन शाम को ४ बजे से ६ बजे तक सत्संग चलता रहता है । यह कार्यक्रम प्रति सोमवार से शनिवार तक चलता है ।

प्रति रविवार को गंगातट स्थित जपकुटीर में उदयास्त जप चलता रहता है । पूर्णिमा की रात्रि में श्री श्री सत्यनारायण की पूजा एवं अमावस्या की रात में श्री श्री माँ की पूजा एवं भोग होता है । महीने के द्वितीय रविवार को दिनभर कीर्तन तथा शाम को आनन्द ध्यानपीठ में चार से ६ बजे तक सत्संग चलता है । इस समय वरिष्ठ साधु स्वामी जगदीश्वरानन्दजी के आगरपाड़ा के आश्रम में रहने के फलस्वरूप सत्संग नियमित रूप से चल रहा है ।

५) उत्तरकाशी—

उत्तरकाशी काली मंदिर में ११ नवम्बर को श्री श्री काली माँ की विशेष पूजा संपन्न हुई । कालीपूजा के दिन भजन, कीर्त्तन, कुमारी पूजा साधु भंडारा इत्यादि हुए । दूसरे दिन साधु भण्डारा हुआ ।

६) दिल्ली—

दिल्ली में श्री श्री माँ के आश्रम में १८ अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक श्री श्री शारदीय दुर्गापूजा अनुष्ठित हुई । प्रतिदिन, मंगलारती, विशेष पूजन, पुष्पांजलि, भोग संध्यारती, भजन कीर्त्तन प्रभृति महा समारोह के साथ हुए । देवी प्रतिमा के विसर्जन के बाद विजया दशमी मनाई गई । २७ अक्टूबर श्री श्री लक्ष्मीपूजा, ११ नवम्बर श्री श्री कालीपूजा, १३ नवम्बर को अन्नकूट महोत्सव बड़े धूमधाम से अनुष्ठित हुए ।

७) भीमपुरा—

श्री श्री माँ की विशेष कृपा से माँ के भीमपुरा आश्रम में श्री श्री लक्ष्मी पूजा, श्री श्री कालीपूजा, १३ नवम्बर को अन्नपूर्णा पूजा अनुष्ठित हुई ।

८) राँची—

राँची में श्री श्री माँ के आश्रम में १९ अक्टूबर से २३ अक्टूबर तक दुर्गापूजा, काली पूजा, अन्नकूट आदि महोत्सव सुंदर रूप से मनाया गया । पूजा के समय भजन कीर्त्तन, पाठ आदि चलता रहता था ।

९) बैरागढ़ (भोपाल)-

श्री श्री माँ के इस छोटे आश्रम में २ जुलाई गुरु पूर्णिमा के पुण्य अवसर पर प्रात: श्री श्री माँ की पूजा एवं सत्यनारायण कथा के अनन्तर ४५ दिन के लिये अखण्ड रामायण प्रारम्भ की गयी, जिसकी समाप्ति पुरुषोत्तम माह के साथ १७ सितम्बर को हुई । यह माँ की ही असीम अनुकम्पा से सम्भव हुआ । इस कार्यक्रम में मोहल्ले के लोगों का पूर्ण सहयोग रामायण पाठ में प्राप्त हुआ । पुरुषोत्तम माह के प्रारम्भ में श्रीमद्भागवत का सप्ताह पारायण हुआ । यह सप्ताह जिला शिक्षा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विभाग की पूर्व प्राचार्या सुश्री अनिला बनवारी ने अपने माता-पिता के कल्याणार्थ करवाया था। कथा व्याख्या आश्रम के पुजारी श्री अशोक शर्मा (शास्त्री) द्वारा की गयी । इस अवसर पर बैरागढ़ निवासी सिंधी भाई बहनों ने पूर्ण श्रद्धा से कथा सुनी । समाप्ति पर विशाल भण्डारे का आयोजन एवं आश्रम स्कूल के ४०० बच्चे व भक्तों को भोजन कराया गया । इस अनुष्ठान में सपरिवार सुश्री पद्मा शुक्ला, श्रीमती प्रभा पटेल, प्रज्ञा मुखर्जी आदि भक्तों का भी सहयोग रहा ।

सावन एवं पुरुषोत्तम महीने का संयोग अपने में एक महान् पर्व था । प्रति सोमवार को दोनों समय बिल्ववृक्ष के नीचे विराजमान शंकर जी का रुद्र अभिषेक होता था । प्रति सोमवार प्रातः रुद्राभिषेक तो होता ही है । साथ ही आश्रम स्थित श्री हनुमान जी महाराज को प्रति मंगल एवं शनिवार को चोला चढ़ाया जाता है तथा सायं काल सन्ध्या आरती एवं कीर्तन के उपरान्त सुन्दरकाण्ड का पाठ होता आ रहा है । १७ सितम्बर को ४५ दिन के अखण्ड रामायण पाठ की समाप्ति पर हवन एवं ब्राह्मण भोजन कराया गया । पाठ में मुख्यरूप से सहयोग देने वाले भक्तों में श्री कैलास तिवारी, श्री उपाध्याय, श्री पाराशर, श्रीमान् दुर्गाशंकर तिवारी, श्री राजेश, श्री विनय, श्रीमान् कुलदीप कपूर, श्रीमान् मनोज शर्मा एवं श्री प्रेम नारायण, आश्रम वासी श्री दिनेश पाठक, श्री अरविन्द दीक्षित, श्री मौजीराम ठाकुर प्रमुख रहे । पुजारी श्रीमान् रविशंकर शर्मा ने कार्यक्रम को सुव्यवस्थित ढंग से निभाया ।

स्थानीय परम्परा अनुसार दो वर्षों से गणेश उत्सव का आयोजन सामान्य विधि से किया जाता है । दस दिन पर्यन्त विविध वस्तुओं से अर्चना की जाती है । अनन्त चतुर्दशी को विसर्जन किया जाता है । नयी मूर्ति को रखकर गत वर्ष की मूर्ति विसर्जित की जाती है ।

२४ सितम्बर को आश्रमवासिनी श्रीमती साधना कुमारी (शोभापुर, राजकुमारी) का देहावसान हो गया । आप कैंसर से पीड़ित थीं । श्री माँ की असीम अनुकम्पा का प्रत्यक्ष दृष्टान्त उक्त घटना में प्रतिफलित होता नजर आया, जिसका विस्तृत विवरण पृथक् से प्रकाशित करने की अभिलाषा रखते हैं ।

१५ अक्टूबर से नवरात्र प्रारम्भ हुआ । प्रतिवर्ष की भाँति अष्टभुजा सिंहवाहिनी देवी का आवाहन कर प्रतिदिन चण्डीपाठ एवं सामान्य पूजन सम्पन्न हुआ । नवमी को नव कन्याओं का भोजन एवं भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया । भोपाल के श्री सत्येन बनर्जी ने नवरात्र पूजन का व्ययभार स्वतः निभाया । शरद पूर्णिमा को विधिवत् सत्यनारायण पूजा सम्पन्न हुई । दीपावली के अवसर पर स्थानीयविधि से महालक्ष्मी पूजन एवं दूसरे दिन गोवर्द्धन पूजन एवं अन्नकूट का आयोजन किया गया । इस अवसर पर स्थानीय अग्रवाल समाज के प्रमुख श्री प्रेम नारायण गर्ग राजेन्द्र गर्ग, सपरिवार श्री विष्णु बंसल, श्री गोविन्द गोयल एवं अन्यान्य मान्यजनों ने भाग लिया ।

१९ नवम्बर से संयम व्रत का अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ जिसमें आश्रमवासियों ने ही भाग लिया । १९ दिसम्बर से गीता जयन्ती का अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ, जो २२ दिसम्बर एकादशी को सम्पूर्ण गीता पाठ पूजन एवं आरती से सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर भोपाल से प्रभा पटेल एवं प्रज्ञा मुखर्जी सहित लायन्स क्लब की महिलायें उपस्थित रहीं । यू. एस. की श्रीमती मीना भट की ओर से उनकी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दिवंगत माताजी की पुण्य स्मृति में श्री श्री माँ आनन्दमयी शिक्षा उपवन के प्रायः ५०० बच्चों को भोजन दिया गया ।

आश्रम की ओर से श्री श्री माँ आनन्दमयी शिक्षा उपवन नाम से विद्यालय चलाया जाता है जहाँ जाति धर्म निर्विशेष आस-पास के झुग्गी झोपड़ी के करीब ५०० बच्चे पढ़ने आते हैं । नर्सरी से दो तक प्रातः सत्र होता है । दोपहर १२ से ५ बजे तक पहली से आठवीं तक के बच्चे रहते हैं । इस विद्यालय का सम्पूर्ण संचालन एवं इसकी प्रगति के लिए सम्पूर्ण व्यवस्था युवाप्राचार्य श्रीमान् रामनारायण तिवारी अपनी युवा सहयोगियों के साथ करते आ रहे हैं । यह श्री श्री माँ की असीम कृपा के बिना अकल्पनीय है । आदरणीय भास्करानन्दजी का इस कार्य में पूर्ण उत्साह एवं पूर्ण सहयोग रहता है । पूज्य भास्करानन्द जी की प्रेरणा से कुछ भक्तगण यहाँ अपना अर्थ सहयोग प्रदान करते हैं । गतवर्ष दिसम्बर में संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता ब्रह्मचारी श्री पानु महाराज जी अपने एक दिन के प्रवास में यहाँ आये एवम् स्कूल के बच्चों को देखते हुए उन्हें मेरिट के आधार पर मासिक छात्रवृत्ति प्रदान करने की व्यवस्था की । श्री श्री माँ की ही कृपा है ऐसा हमारा मानना है । बच्चों को विद्यालय का गणवेश, पुस्तक, कापी, शीतकालीन वस्त्र निःशुल्क दिया जाता है । मध्यान्ह स्वल्पाहार की भी परियोजना है पर वह इस वर्ष सम्भव न हो सकी । इसकी विशेषता यह है कि आपस में अभिवादन का शब्द "जय माँ" है । प्रार्थना बच्चों के लिए कही माँ की पाँचवाणी से प्रारम्भ होती है । रास्ते चलते सभी बच्चों की तोतली बोली में "जय माँ" ध्वनि माँ के चरणों में पुनः पुनः प्रणत होने को बाध्य करती है ।

सम्प्रति एक महीना पूर्व मुख्यमन्त्री श्री बाबूलाल गौर पधारे थे एवं उन्होंने विद्यालय को मुख्यमन्त्री कोष से एक लाख की धनराशि देने की घोषणा की थी ।

श्री श्री माँ की कृपा से यह स्थान-विद्या दान अन्नदान एवं सत्संग रूपी सेवा से परिवर्द्धित होता हुआ श्री श्री माँ के पादपद्मों की पवित्र रज से यहाँ आने वाले सभी को पवित्र करता हुआ जन-जनार्दन की सेवा में अग्रणी बने । श्री श्री माँ के चरणों में यही प्रार्थना है ।

जय माँ ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोक-संवाद

स्वर्गीय श्रीमती शकुन्तला गुप्ता
28.02.1936—01.02.2004

"हरि कथा ही कथा और सब वृथा" —श्री श्री माँ

सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलख कहेहु मुनि नाथ ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ ॥

हमारी माँ श्रीमती शकुन्तला गुप्ता धर्मपत्नी श्री चन्द्रभान गुप्ता 9 फरवरी 2004 को श्री श्री माँ का परिवार सहित गुणगान करते हुए श्री श्री माँ के चरणों में विलीन हो गई हैं । 1950 से अपनी जन्मदात्री माँ श्रीमती बसंती देवी के साथ वह आत्मा श्री श्री माँ के साथ अनेकों बार मिलना, सत्संग, स्पर्श माँ का प्यार उन्हें मिलता ही रहा । उनकी अन्तिम इच्छा 30 वर्ष पहले श्री श्री माँ के द्वारा दिया गया तौलिया मुझे मस्तक पर ओढ़ाया जाए, और श्री माँ की दी हुई साड़ी में मुझे लपेटा जाय । इसी इच्छा को पूरा करके उन्हें श्री श्री माँ को सौंपा गया । सिर्फ कुछ दिन बुखार से पीड़ित रहकर और श्री माँ का स्मरण पूरे परिवार ने दिन भर किया पता भी नहीं चला कि शाम 4-15 पर वह कब चली गईं । दिल्ली, वृदांवन, राँची कनखल देहरादून, उत्तरकाशी और नौमिषारण्य आश्रमों में हमारी माँ को श्री श्री माँ का सान्निध्य प्यार, प्रसाद मिलता रहेगा । यही श्री माँ के चरणों में निवेदन है । वृदांवन और कनखल आश्रमों में श्री माँ की कृपा से एक-एक फ्लैट का निर्माण भी सम्भव हो सका ।

हमारे पूरे गुप्ता परिवार पर श्री श्री माँ की इतनी विशेष कृपा और इतने अनुभव हैं कि लेखनी बद्ध कर पाना मुश्किल है । स्वामी भास्करानन्दजी, ज्योतिर्मयानन्द जी अच्युतानन्दजी, चेतनानन्दजी वासुदेवा नन्दजी और अन्य सभी महात्माओं और दीदीयों का पूरा प्यार हमें मिलता रहेगा । यही श्री माँ के चरणों में निवेदन के साथ गुप्ता परिवार का नमन "ॐ माँ श्री माँ जय जय माँ" —ॐ शान्ति

अश्रुपूर्ण विदाई

श्री चन्द्रभान गुप्ता	— पति
भारतभूषण गुप्ता, राजेश गुप्ता	— पुत्र
साधना गुप्ता, अनिता गुप्ता	— पुत्रवधू
चेतन, हर्ष, नितिन, कार्तिक	— पौत्र

125— विवेकानन्द पुरी सराय रोहिल्ला — दिल्ली- 7

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोक-संवाद

१. श्री जगदीश भाई कापड़िया

श्री श्री माँ के भीमपुरा आश्रम से जुड़े हुए तथा गुजरात के प्राचीन मातृभक्त श्री जगदीश भाई कापड़िया का दिनांक १५ मई, २००४ को सूरत में देहावसान हो गया ।

माँ की श्री वाणी "राजपिपला के तीन लाल" उनमें से एक स्व. माणेकलाल के ज्येष्ठ पुत्र श्री जगदीश भाई को बाल्यकाल में ही मातृकृपा मिली थी । इन्होंने पूज्य माँ के प्रथम दर्शन ई. सन् १९३६ में अपने पिताश्री के साथ चांदोद में किये थे । पूज्य भोलानाथ जी; पूज्य स्वामी अखण्डानन्द जी तथा श्री अभय जी के साथ ई. सन् १९३८ में पूज्य माँ राजपिपला में दो-तीन दिन के लिए पधारी थीं, तब माँ की कृपा का विशेष अनुभव हुआ था । एकबार श्री जगदीश भाई के घर पर तथा व्यवसाय स्थल पर भी माँ पधारी थीं तब इनके यहाँ भोजन भी ग्रहण करने की कृपा की थी । इनके ज्येष्ठ पुत्र के जन्म के पूर्व मिला आशीर्वाद ऐसा था कि इस पुत्र का नाम भी माँ के द्वारा प्राप्त हुआ था ।

स्व. श्री जगदीश भाई की आश्रम सेवा अत्यन्त सराहनीय थी । जब से पूज्य माँ के सर्म्पक में आये तभी से वे आश्रम सेवा में लग गये थे । भीमपुरा आश्रम के प्रारम्भिक वर्षों में जब स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी, श्री तन्मयानन्द जी आदि ने आश्रम में निवास किया था तब श्री जगदीश भाई आश्रम सेवा में थे । भीमपुरा आश्रम में मातृनिवास के नीचे सत्संग भवन का निर्माण इन्हीं के निरीक्षण में हुआ था । १९६० से १९७७ तक भीमपुरा आश्रम की जो जिम्मेदारी राजपिपला के भक्तों ने उठाई थी उसका सम्पूर्ण संचालन श्री जगदीश भाई का ही था । १९७७ से १९९८ तक वे आश्रम की प्रबन्ध समिति के सदस्य थे, इस अरसे में आश्रम को स्वनिर्भर बनाने का इन्होंने यथाशक्ति प्रयत्न किया था । श्री श्री माँ से प्राप्त पादुका का पूजन आज भी इनके यहाँ नित्य होता है । श्री श्री माँ के विशिष्ट भक्त श्री जगदीश भाई को माँ के चरण कमल में स्थान प्राप्त हो यही प्रार्थना है ।

२. श्री अयोध्या प्रसाद दीक्षित—

श्री श्री माँ के अति पुरातन भक्त, देहरादूनवासी, अवकाशप्राप्त, आई. ए. एस., श्री अयोध्याप्रसाद दीक्षित विगत १७ जून, २००४ को श्री श्री माँ के दिव्य चरणों में सदा के लिए विलीन हुए हैं ।

आप एक उच्चपदस्थ राजकर्मचारी के रूप में वाराणसी, इलाहाबाद, देहरादून आदि विभिन्न स्थानों में अवस्थान करते थे । जगह-जगह अवस्थान करते समय ही आपको श्री श्री माँ की कृपा प्राप्त हुई । मातृ निर्देश से श्री श्री माँ के ख्याल से अपने जीवन को चलाने के लिए आपने आजीवन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रयत्न किया । १९८२ सन् में देहरादून में जिलाधिकारी के पद से अवकाशप्राप्त होकर आपने स्थायीरूप से देहरादून में निवास किया । देहरादून आश्रम की प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष के रूप में आश्रम की उन्नति के लिए आपने अनेक सेवाएँ प्रदान की । आश्रम स्वनिर्भर होकर चल सके इसके लिए भी आप निरन्तर कोशिश करते रहे ।

'श्री माँ भगवत् गीता' नाम से आपने एक नये कार्यक्रम का आरंभ किया । प्रत्येक महीने के प्रथम रविवार को कल्याणवन आश्रम में यह कार्यक्रम अनुष्ठित होता है । भक्तगण श्रीमद्भगवत् गीता पर लिखी विद्वानों की व्याख्या का पाठ करते थे अन्त में आप गीता के साथ मातृवाणियों की तुलना करके भक्तों की शंका का समाधान कर देते थे ।

दीक्षित जी उच्चशिक्षित, प्रज्ञावान मृदुभाषी, निरभिमानी, हिन्दी साहित्य के प्रेमी थे । उनके मधुर व्यवहार के कारण उनसे मिलकर सभी आकृष्ट होते थे । साधु सन्तों के प्रति भी उनकी श्रद्धा थी । उनकी धर्मपत्नी, एवं एकमात्र पुत्र के प्रति भी श्री श्री माँ की कृपा थी । उनके प्रयाण से आश्रम की अपूरणीय क्षति हुई है ।

हम उनकी अमर आत्मा की चिरशान्ति, एवं परिवार वर्गों की सान्त्वना के लिए श्री श्री माँ के चरणों में प्रार्थना करते हैं ।

३. कर्नल अजय नारायन मुशरान —

श्री श्री माँ के देहरादून के कश्मीरी भक्तों में श्री मुशरानजी की दादी भी एक थीं । तीस के दशक में देहरादून एवं फैजाबाद की कश्मीरी महिलायें श्री श्री माँ के मधुर आकर्षण में भलीभांत बन्ध गयी थीं इसका प्रभाव उनकी चली आ रही दो तीन पीढ़ियों तक रहा । मध्य प्रदेश के कांग्रेस शासन के वित्तमन्त्री श्री अजय नारायन मुशरान इसका प्रत्यक्ष प्रमाण थे । आपके पिता जब वित्तमन्त्री थे श्री श्री माँ उन दिनों बैरागढ़ भोपाल पधारी थीं । माँ की उपस्थिति का समाचार पाते ही वे अपनी कार्यव्यस्तता को एक तरफ रख कर माँ के दर्शनों को आया करते थे । श्री अजयनारायन मुशरान जी ने अपने पूर्वजों की इस मातृ श्रद्धा को बखूबी से निभाया माँ के बैरागढ़ आश्रम को वित्तीय अनुदान देकर । श्री अजय मुशरान जी प्रतिवर्ष बजट सत्र में धर्मस्व विभाग के अन्तर्गत इस अनुदान की स्वीकृति अवश्य कराते थे । बैरागढ़ आश्रम को हर प्रकार से सहयोग देने में आप अग्रणी रहते थे । **२४ जुलाई २००४** में उनके आकस्मिक निधन से श्री श्री माँ आनन्दमयी आश्रम बैरागढ़ ने एक हितैषी एवं कर्मठ महानुभाव सहयोगी को खो दिया । उनकी जगह सदा अपूरणीय रहेगी । श्री श्री माँ के चरणों में उनकी दिवंगत आत्मा को माँ के श्री चरणों में परम शान्ति मिलें एवं शोकाकुल परिवार को सान्त्वना । श्री श्री माँ के शोकसंताप दूरितकारि अभय चरणों में हमारी यही प्रार्थना है ।

४. श्रीमती साधना कुमारी —

श्री श्री माँ के बैरागढ़ स्थित आश्रम में आज प्रायः ६ वर्ष पूर्व १९९९ जुलाई में मध्य प्रदेश के शोभापुर स्टेट की कनिष्ठ राजकुमारी साधना जी आश्रम वास के लिए आयी थीं । पति के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देहावसान प्रायः सोलह वर्ष पूर्व हो चुका था एक मात्र सन्तान को भाइयों की देख-रेख में रखकर माँ की सेवा में समर्पित होने को आयीं थीं । कौन जानता था कि यह माँ का ही आह्वान है जो उन्हें मुड़कर अपने प्रपञ्चित जीवन में जाना न पड़ा, माँ ने उन्हें सदा के लिए स्वीकार किया ।

सन् १९७० में श्री श्री माँ जब भोपाल स्थित बैरागढ़ आश्रम में आयी थीं तो शोभापुर की महारानी साहिबा ने माँ की पू. माता श्री १०८ मुक्तानन्दगिरि जी (दीदी माँ) से दीक्षा ली थी । उस समय नौ वर्ष की साधना अपनी माँ के साथ आयी थीं । कौन जानता था कि यहीं उनका अन्तिम पड़ाव होगा ।

साधना कुमारी ने आश्रम की सेवा में अपने को समर्पित कर दिया था । अक्षर ज्ञान से परिचित नहीं थीं । जप ध्यान में एकाग्र होकर बैठना उनको सुहाता नहीं था । चलते फिरते दौड़-दौड़ कर वह सब प्रकार की देख-रेख अतिथि सत्कार करती थीं । अतिथि सेवा में उनकी त्रुटि नहीं थीं । प्रातः गरम पानी से लेकर रात्रि भोजन पर्यन्त सभी व्यवस्था वह अपने हाथों से करतीं । अकसर कहा करती थीं । "माँ मैं तेरे पास आयी हूँ तू ही मेरी लाज रखना ।" वर्ष भर बाद उनको Breast Cancer की संभावना दिखाई दी । जवाहर लाल कैंसर चिकित्सालय में उनकी चिकित्सा करायी गयी । कैंसर विशेषज्ञ एवं चिकित्सालय के संचालक डॉ. सान्याल की देख-रेख में उनका ऑपरेशन किया गया । एक दो महीने बाद वे सामान्य होने लगीं एवं पुनः सेवा में संलग्न हो गयीं ।

इसी वर्ष उनके कमर में दर्द होने लगी । प्रति माह उन्हें चेक अप के लिए.अस्पताल जाना पड़ता था । यह श्री श्री माँ की ही अनुकम्पा थी कि डॉ. सान्याल ने उनकी प्रतिमाह की हजारों की औषधियों को निःशुल्क कर दिया था । इस दर्द ने उनका पीछा नहीं छोड़ा तो आपने भी सेवा नहीं छोड़ी किसी प्रकार कमर पकड़ कर चलते हुए आश्रम एवं गोशाला की देख रेख करती थीं । आश्रम में आयोजित ४५ दिन की अखण्ड रामायण एवं श्रीमद्भावत् सप्ताह में भी उन्होंने सामर्थ्यानुसार सेवा की । सितम्बर में जन्माष्टमी के उपरान्त ज्वराक्रान्त होकर आप ने शय्या ग्रहण की । डॉ. के अनुसार उक्तरोग हड्डियों में पहुँच चुका था । आश्चर्य की बात तो यह थी कि उनके हाव भाव से यह प्रतीत नहीं होता था । केवल भोजन की इच्छा नहीं होती थी पर सभी काम स्वयं ही करती थी । माँ को केवल कहती थीं "माँ मेरी रक्षा करना" । गणेश चतुर्थी का दिन था यद्यपि शनिवार था । उनके बढ़ते हुए साँस की परेशानी को देखते हुए उन्हें अस्पताल में दाखिल कराया गया । देख रेख की व्यवस्था आश्रम की ओर से होती रही । डॉ. सान्याल के निदर्शन में चिकित्सा होने लगी । आपके परिवार के कतिपय सदस्य आकर थोड़ी देर के लिए कुशल मंगल पूछ गये । **२४ सितम्बर** को एकादशी थी, मध्यप्रदेश में इसको डोल ग्यारस के नाम से जाना जाता है । मान्यता ऐसी है इस दिन जो इस धराधाम को त्यागते हैं उनको भगवान् का दरवाजा खुला मिलता है । अतः इस दिन जगह-जगह विमान भी निकाले जाते हैं । साधना जी को कुछ बैचेनी ज्यादा हो रही थी । आश्रम के सभी सेवा कर्मी जो अब तक नहीं गये थे आप से मिलने गये । नाम लेकर सबका हाथ पकड़ कर सिर पर रखकर मानो अन्तिम विदा माँगीं । बार-बार केवल यही कह रही थीं मुझे बचा लो । आपसे कहा "माँ आपको बचायेंगी ।" माँ का चित्र सामने रख दिया गया । माँ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को प्रणाम करके कहने लगीं "माँ बचा लो - बचा लो" बैठ रही थीं एवं उठ रही थीं । कोई नली आदि नहीं थी । थोड़ा सा सेब लिया । पूछा "मेरी माला कहाँ हैं" माला लेकर बैठीं । देखकर यह नहीं लगा कि आज ही आखिरी दिन है । रात्रि को आश्रम के पंडितजी उनको देखने गये पैरों पर हाथ लगाया तो कहने लगीं, "आप पंडित हो मेरा पैर मत छुओ", फिर उन्हें प्रमाण किया । मध्यरात्रि को भूख लगने की बात कही, थोड़ा सा फल लिया एवं यह कहकर लेट गयीं कि मुझे नींद आ रही है । दिन भर की थकी सेविकाओं ने भी थोड़ी झपकी ली । थोड़ी देर बाद सेविकाओं की आँख खुली तो ५ बजे थे, बिस्तर पर साधना कुमारी का शरीर मात्र ही रखा था । माँ ने पुकार सुनकर अत्यन्त प्यार से सबके अनजान में दुनिया की दृष्टि में असहाय असमर्थ अबला को अपनी प्यार भरी गोद में उठा लिया । समाचार पाकर केवल एक ही शब्द सबके मुख से निकला "माँ ने स्वीकार किया ।" यह है माँ की करुणा, करुणा ही माँ का स्वरूप है ।

विकट कैंसर की रोगिणी का अन्त समय पर्यन्त पूरा ज्ञान एवं अन्त तक माँ की पुकार वास्तव में ही एक आश्चर्यकारी घटना थी जो माँ की प्रतिक्षण उपस्थिति का प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

"माँ" के ही शब्दों में "माँ हैं किसकी चिन्ता ।"

जय माँ ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"मैं तो सब समय तुमलोगों के साथ साथ ही हूँ, तुम लोग देखना नहीं चाहते हो तो मैं क्या करूँ।"

— श्री श्री माँ

● जय माँ श्री माँ जय जय माँ ●

DIAMOND SPRAYERS for plant Protection

SPRAYERS TM

DIAMOND

Gupta Agro Company

Manufacturers & Suppliers of :

AGRICULTURAL SPRAY PUMPS & SPARE PARTS FOR PLANT PROTECTION

Office : P-31, Alipur Road, Narela, Delhi-110040

ESTD - 1984

(O) 011 - 27280187
(R) 011 23693348
(M) 9811236809

BHARAT BHUSHAN GUPTA

RAJ PACKAGING COMPANY

• Manufacturers of Corrugated boxes •

(O) 011 25631628
Ph. (R) 011 23691814
(M) 98107-15320

Rajesh Gupta

A-109, Bhagawati Vihar, Uttam Nagar, New Delhi- 110059

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

• जयजयमाँ ॐ माँ जयजयमाँ •

''हरि कथा ही कथा और सब बृथा व्यथा ।''

—श्री श्री माँ

श्री श्री माँ के श्री चरणों में गुप्ता परिवार
की तरफ से बार बार प्रणाम ।

श्री चन्द्रभान गुप्ता
स्वर्गीय श्रीमति शकुन्तला गुप्ता

भारत भूषण गुप्ता	राजेश गुप्ता
साधना गुप्ता	अनिता गुप्ता
चेतन गुप्ता	नितिन गुप्ता
हर्ष गुप्ता	कार्तिक गुप्ता

125, विवेकानन्दपुरी, सरायरोहिला, दिल्ली - 110007

Res. 011 - 23693348, Res. 011 - 23691814
Off. 011 - 27280187, Off. 011 - 25631628

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments From :

ॐ माँ

"Endeavour to go through life leaving your burdens in His hands."

—Ma Anandamayee

Service with Smile

UE

Since - 1974

UNIQUE ELECTRONICS (Regd.)

16, Central Market,
Lajpat Nagar
New Delhi—110024
Phone : 29839349, 29834559

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Complements From :—

"None can foretell at what particular moment circumstances will co-operate to bring about the Great Moment for you."

—Ma Anandamayee

UNIQUE ENTERPRISES

Authorised dealer of all products of Sony, Samsang, LG., Whirlpool, Aiwa, National Panasonic, Philips, IFB, Electrolax.

D-79, Malviya Nagar,
New Delhi-110017
Phone : 26671210, 51831110-1062

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकाशन-सूची

श्री श्री आनन्दमयी संघ द्वारा प्रकाशित श्री श्री माँ से सम्बन्धित हिन्दी भाषा में कुछ अमूल्य प्रकाशन संघ के प्रायः सभी शाखा आश्रमों में उपलब्ध हैं ।

१. **आनन्दज्योति (शताब्दी स्मारिका)**– यह एक उच्च कोटि का संस्करण है, जिसमें विभिन्न भाषाओं – संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में श्री श्री माँ की पवित्र जीवनानुक्रमणिका (१८९६ से १९८२), १०० अमूल्य वाणियों एवं श्री श्री माँ के विभिन्न आश्रम एवं संस्थाओं का इतिहास, साथ ही स्वनामधन्य विद्वानों के लेख, श्रद्धाञ्जलि सहित श्री श्री माँ के कतिपय मूल्यवान चित्रों का संकलन है । अति उत्तम कागज पर छपा है । मूल्य रु. १००/- केवल हिन्दी खंड – मूल्य रु. ३०/-

२. **श्री श्री माँ आनन्दमयी**– परम श्रद्धेया दीदी गुरुप्रिया द्वारा लिखित श्री श्री माँ की अपूर्व लीला कहानी । २० भागों में सम्पूर्ण । प्रथम भाग पुनर्मुद्रित । पेपर बैक, मूल्य रु. ४०/-

३. **मातृ दर्शन**– श्रद्धेय ज्योतिष चन्द्र राय (भाईजी) द्वारा मूल बंगला में लिखित श्री श्री माँ के ऊपर अतुलनीय पुस्तक । हिन्दी संस्करण, पेपर बैक, मूल्य रु. २५/-

४. **माँ आनन्दमयी**– डॉ. पन्नालाल, आई. सी.एस. (रिटायर्ड) द्वारा लिखित श्री श्री माँ का अपूर्व जीवन चरित । पेपर बैक. मूल्य रु. ३०/-

५. **सद्वाणी**– हिन्दी में अनूदित श्री श्री माँ की मूल्यवान वाणियों का संग्रह । श्री ज्योतिषचन्द्र राय द्वारा संकलित । पेपर बैक, मूल्य रु. १५ ।

६. **माँ आनन्दमयी दिव्यालोक वार्ता**– ब्र. गुणीता द्वारा लिखित श्री श्री माँ की जीवन-कथा का संक्षिप्त चित्रण तथा शतवाणी । पेपर बैक, मूल्य १०/-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from

RAM PANJWANI & COMPANY

Timber Merchants & Financiers
1—Birla Road
Hardwar—249401

☎ 2427266, 2428672, Fax. 01334-2426001

Suppliers of :
Best Quality Himalayan Pine Timbers

Branches :

Jammu (J & K) **Yamuna Nagar (Haryana)**
Parwanoo (H.P.)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ Branch Ashrams ❁

14. NEW DELHI	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kalkaji, New Delhi-110019 (Tel : 011-26826813)
15. PUNE	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ganesh Khind Road, Pune-411007, (Tel : 020-5537835)
16. PURI	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Swargadwar, Puri-752001, Orissa. (Tel [illegible]-223258)
17. RAJGIR	:	Shre[illegible]a Anandamayee Ashram, P.O.Rajgir, Nalanda-803116, Bihar (Tel : 06112-255362)
18. RANCHI	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Main Road,P.O. Ranchi- 834001 (Tel : 0651-2312082)
19. TARAPEETH	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Chandipur-Tarapeeth, Birbhum-731233,
20. UTTARKASHI	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kali Mandir, P.O. Uttarkashi-249193,
21.VARANASI	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhadaini, Varanasi-221001, U.P. (Tel : 0542-2310054+2311794)
22. VINDHYACHAL	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ashtabhuja Hill, P.O. Vindhyachal, Mirzapur-231307, (Tel : 05442-242343)
23. VRINDABAN	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Vrindaban, Mathura-281121 U.P. (Tel: 0565-2442024)

*

IN BANGLADESH	:	
1. DHAKA	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, 14, Siddheshwari Lane, Dhaka- 17 (Tel _ 8802-9356594)
2. KHEORA	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Kheora, Via-Kasba, Brahmanbaria.

*

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF NEWSPAPERS
FOR INDIA AS NO. 65432/97

श्री श्री आनन्दमयी संघ
ॐ माँ
मातृ शरणं

रत्ना ऑफसेट्स लिमिटेड कमच्छा, वाराणसी, फोन- २३१२८२०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ आनन्दमयी

अमृत वार्ता

VOL.-9 APRIL, 2005 NO. 2

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

SHREE SHREE ANANDAMAYEE SANGHA

❁ Branch Ashrams ❁

1. AGARPARA	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram. P.O. Kamarhati Calcutta-700058 (Tel : 25531208)
2. AGARTALA	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram. Palace Compound P.O. Agartala- 799001. West Tripura (Tel : 0381-2208618)
3. ALMORA	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Patal Devi. P.O. Almora-263602, (Tel : 05962-233120)
4. ALMORA	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O.Dhaul-China. Almora-263881, (Tel : 05962-262013)
5. BHIMPURA	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhimpura. P.O. Chandod, Baroda- 391105, (Tel : 02663-233208+ 233782)
6. BHOPAL	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Bairagarh. Bhopal-462030, M.P. (Tel : 0755-2641227)
7. DEHRADUN	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kishenpur.P.O. Rajpur, Dehradun-248009 (Phone : 0135-2734271)
8. DEHRADUN	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kalyanvan, 176, Rajpur Road, P.O. Rajpur, Dehradun-248009, (Phone : 0135-2734471)
9. DEHRADUN	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Raipur Ordnance Factory, Dehradun-248010
10. JAMSHEDPUR	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Bhatia Park, Kadma, Jamshedpur-831005
11. KANKHAL	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Kankhal.Hardwar-249408, (Tel : 01334-246575)
12. KEDARNATH	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Himlok. P.O. Kedarnath, Chamoli-246445,
13. NAIMISHARANYA	:	Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Puran Mandir.P.O. Naimisharanya, Sitapur-261402, U.P. (Tel : 05865-251369)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ आनन्दमयी

अमृतवार्ता

श्री श्री माँ आनन्दमयी के दिव्यजीवन
तथा
दिव्यवाणी की वाहिका त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-९ अप्रैल २००५ सं. २

सम्पादक मण्डली

- डा. बीथिका मुखर्जी
- डा. श्रीनारायण मिश्र
- डा. गायत्री शर्मा
- ब्रह्मचारिणी गीता बनर्जी
- ब्रह्मचारिणी गुणीता

कार्यकारी सम्पादक

श्री पानु ब्रह्मचारी

वार्षिक चंदा (डाकव्यय सहित)

भारत में — ६० रुपये
विदेशों में — १२ डॉलर/या ४५० रुपये
एक प्रति — २० रुपये

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधारण नियम

यह त्रैमासिक पत्रिका चार पृथक भाषा–हिन्दी, बंगला, गुजराती तथा अंग्रेजी में जनवरी अप्रैल जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होती है। वर्ष का प्रारम्भ जनवरी से होता है।

पत्रिका में मुख्यतया श्री श्री माँ पर आधारित लेखों को ही प्रधानता दी जाती है। इनके अतिरिक्त आध्यात्म पर आधारित हृदयस्पर्शी लेख, किसी भी देश तथा किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के महापुरुषों की उपदेशात्मक शिक्षावलियों का भी पत्रिका में स्वागत है।

जो भक्तगण माँ के सम्पर्क में आये हैं वे एकान्त व्यक्तिगत अनुभवों को छोड़कर ऐसे अनुभवों को आकलित कर सकते है जो कि श्री श्री माँ के लौकिक व्यवहार के प्रति आलोकपात करने वाले हों।

सभी लेख फुलस्केप कागज के एक पृष्ठ पर टंकित या स्पष्ट लिखित होने चाहिये। लेखों की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। मनोनीत न होने पर लेखों को वापस भेजना कार्यालय के लिए असुविधाजनक है। सभी लेख सम्पादक के नाम भेजें।

अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम के "Shree Shree Anandamayee Sangha—Publication A/C".नाम पर भेजें।

पत्रिका सम्बन्धी सभी प्रकार के पत्रादि व्यवहार तथा वार्षिक चंदा भेजने का पता :

कार्यकारी सम्पादक, "माँ आनन्दमयी - अमृतवार्ता"
माता आनन्दमयी आश्रम
भदैनी, वाराणसी -२२१००१

पत्रिका में विज्ञापन देने का नियम :–

सम्पूर्ण पृष्ठ – २०००/- पूरे वर्ष के लिये
आधा पृष्ठ – १०००/- पूरे वर्ष के लिये

अग्रिम शुल्क के साथ विज्ञापन का विषय (Matter) उपर लिखित पते पर भेजें।

स्वामी श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री पानु ब्रह्मचारी द्वारा श्री श्री आनन्दमयी संघ, भदैनी, वाराणसी–२२१००१ (उ. प्र.) से प्रकाशित तथा रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी. २१/४२ कमच्छा, वाराणसी-१० (उ. प्र.) से मुद्रित। सम्पादक–श्री पानु ब्रह्मचारी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विषय-सूची

1.	मातृ-वाणी	... ...	1
2.	श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग — *श्री अमूल्य कुमार दत्तगुप्त*	... ...	3
3.	जीवन दर्शन	... ...	6
4.	श्री श्री माँ आनन्दमयी लीलाकथा — *डॉ. बीथिका मुखर्जी*	... ...	7
5.	पं. श्री रामशर्मा जी का माँ आनन्दमयी का प्रथम दर्शन — *डॉ. प्रेम नारायण सोमानी*	... ...	10
6.	काशी मुक्ति माहात्म्य — *दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती*	... ...	12
7.	श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन-श्रीकृष्ण प्रश्नोत्तर — *श्री महेन्द्र प्रताप सिंह गौर*	... ...	16
8.	वाणी कुसुमाञ्जलिः — *पं. ब्रह्मादीन अवस्थी*	... ...	20
9.	महाराष्ट्र की संत श्री जनाबाई — *श्री अशोक भाई कुलकर्णी*	... ...	23
10.	नाम महिमा — *ब्र. जया भट्टाचार्य*	... ...	25
11.	पूजनीय गंगा हजूर के स्मरण पुष्प — *'सीताराणी'*	... ...	29
12.	श्री श्री माँ के बैरागढ़ आश्रम में संत मोरारी बापू	... ...	33
13.	आश्रम संवाद	... ...	35
14.	श्रद्धाञ्जलि (i) *पद्मभूषण पं. विद्यानिवास मिश्र जी*	... ...	39
	(ii) *माननीय प्रो. विष्णुकान्तशास्त्री जी*	... ...	40

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP & OTHER PARTICULARS ABOUT NEWSPAPER ENTITLED "MA ANANDAMAYEE AMRIT VARTA" AS REQUIRED TO BE PUBLISHED U/S 190 OF THE PRESS AND REGISTRATION ACT. FORM IV (RULE 8)

1. Title of Newspaper	:	**Ma Anandamayee Amrit Varta**
2. Place of publication	:	**Shree Shree Anandamayee Sangha, Bhadaini, Varanasi-1**
3. Periodicity of publication	:	**Quarterly**
4. Printer's Name	:	**Panu Brahmachari**
Whether citizen of India	:	**Yes**
Address		**Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhadaini, Varanasi-1**
5. Publisher's Name	:	**Panu Brahmachari**
Whether citizen of India	:	**Yes**
Address	:	**Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhadaini, Varanasi-1**
6. Editor	:	**Panu Brahmachari**
Whether citizen of India	:	**Yes**
Address	:	**Shree Shree Ma Anandamayee Ashram Bhadaini, Varanasi-1**
7. Name & address of the owner,	:	**Shree Shree Anandamayee Sangha**
who owns the Newspaper	:	**(Regtd) H.O., Kankhal, Hardwar-249408**

I, Panu Brahmachari, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

March, 1 , 2005

(Sd) PANU BRAHMACHARI
Publisher.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

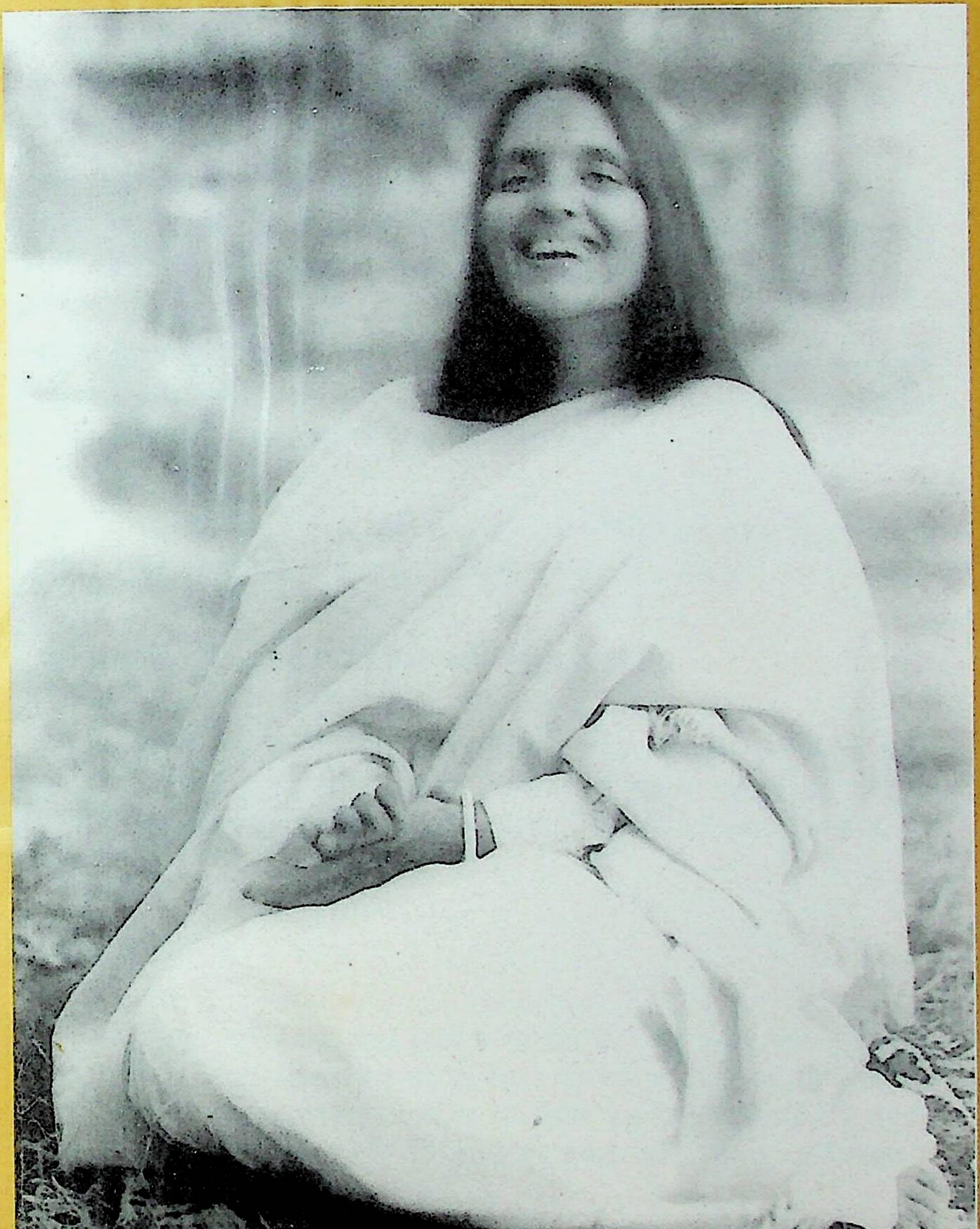

Ma in an ecstatic mood, sitting on dried grass in front of the Varanasi ashram *Havanshālā* in the early fifties.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मातृ-वाणी

ज्ञान स्वरूप प्रकाश जब होता है, परम धन, अभाव नहीं रहता । जिस धन से धनी होने पर निर्धन नहीं रहता । तुम्हारे पाने के अभाव से (यह सब) । अमरत्व जाग्रत करना । भगवान से सदा प्रार्थना । तुम ही मेरा आश्रय तुम तुम्हारे प्रकाश होने का रास्ता खोल दो ।

*　　　　*　　　　*

प्रार्थना सबकी रहनी चाहिये । देओ देओ जो देह बुद्धि है, देह भाव है अभाव का अभाव चला जाता है और स्वभाव आता है । स्वभाव में स्थित होने के लिये सच बोलना, सत्यनिष्ठा, सत्संग, गुरु जो बोले उसी को लेकर चलना जीव मात्र का कर्तव्य ।

*　　　　*　　　　*

जिससे दुःख चला जाय । दो से क्षरित दुःख । तेरा मेरा जिससे द्वन्द्व उत्पन्न होता है । एक आत्मा विश्वव्यापक उसकी प्राप्ति के लिए रास्ते में चलने का यात्री होना (बनना)

*　　　　*　　　　*

भगवान के रास्ते में जब तक न चले प्रश्न जायेगा नहीं उनकी लीला ।

*　　　　*　　　　*

जैसा बीज बोओगे वैसी मिट्टी होनी चाहिये । मिट्टी के साथ योग । भगवान के लिये एक संयोग (भगवान का) नाम लेने पर भगवान के साथ योग (सम्बन्ध) बन जाता है । उनका तत्त्व जानने के लिये । बीज-जैसा बीज होगा वैसा प्रकाश । बीज (अर्थात्) नाम । नाम (अर्थात्) आमि ना (मैं नहीं) ना - म ।

*　　　　*　　　　*

प्रश्न- क्यों परिवर्तन नहीं हो रहा है ?

*　　　　*　　　　*

माँ- समझ लिया एक बात है एक बोझा उठाता है एक लेता है । बोझ उतारने वाला (भगवान) जीव जगत के अन्दर नाशवान क्यों नहीं हो रहा - यह भाव यदि सदा बना रहे । भगवान का स्मरण हो जायेगा । विचार का तरीका आ जायेगा । क्यों नहीं हो रहा है ? (ऐसी व्याकुलता की स्थिति) जब स्थिति आ जायेगी तब प्रकाश नहीं होकर रह नहीं सकेगा । Point पर आने से ।

*　　　　*　　　　*

प्रश्न- देश की बहुत खराब हालत है । रास्ता बताइये ।

*　　　　*　　　　*

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ- बात जो बाद हो जाता है । अबाद बाद के ऊपर । देश दस को लेकर । स्वयं स्वरूप देह देओ देओ अभाव रूप । सत्य बोलो । सत्संग करो सत्पथ पर रहो, जिससे सत् प्रकाश और शान्ति । इस रूप में भगवान अपने को लेकर खेल कर रहा । मन राज्य में मन-मानी । मन में रखते हैं । भगवान तुम इसी रूप में तुम हो देश । अपने मन को भगवान की तरफ रख के शान्ति की तरफ (अग्रसर होना ।)

* * *

भगवान का नाम नित्य पवित्र करे । सब कार्य में भगवान का नाम स्मरण । कोई दिखावटी नहीं । अन्दर में रखना । तुम्हारे हाथ का यन्त्र तुम करा रहे । तुम ही ग्रहण कर रहे हो । यह कोशिश करो । जितनी गंभीर कोशिश होगी उतना ही (अच्छा) जहाँ रहे- जैसे रहे - (अखण्ड स्मरण)

* * *

भगवान को प्राप्त होने की क्रिया अविनाशवान अप्राप्त होने की क्रियानाशवान । मैं करूँगा मैं कर रहा यह जो अक्षर तुम्हारे पास है यह अहंकार । असली अहंकार मैं-कौन है - क्रिया जब तक है तरीका है । यह तरीका भगवान को प्राप्त करने के लिए । भगवान को पाने से अपने को पाना । अपने को पाने से भगवान को पाना । यह प्रश्न जो आया अपने को जानने के लिए । यह प्रश्न उनकी कृपा से जाग्रत हुआ । इस लाईन में चलोगे तो मेरे को पाओगे । उस लाईन (मैं कर रहा) में चलोगे चक्कर खाओगे जिस लाईन में चलोगे पूरण आग पाओगे । नाशवान का तरीका नाशवान मृत्यु देंगे । अविनाशी की ओर चलोगे तुम मेरे को पाओगे । मेरे को पाने का तरीका चक्कर नष्ट हो जायेगा । नाशवान तरीके में चलोगे तो चक्कर खाओगे ।

* * *

जीव-आत्मा परमात्मा । जल शुद्ध कर लो Filter कर लो । उसके सिवाय और है नहीं । आवरण परदा पर द्वार । भगवान कहाँ नहीं । कल्पना मात्र जगत् सृष्टि कर लिया । उनकी लीला है खेल है । जब तक मन राज्य में वास कल्पना बिना कुछ नहीं कर सकता भगवान की लीला में । महान् महान् ऋषि महान् महान् मन्त्र-ऋषित्व मुनित्व सब में मौजूद है । क्रिया सृष्टि स्थिति लय । आवरण-भगवान जहाँ लीला खेल के अन्तर्गत बात उनके मंगल के लिए । भगवान नौकर के रूप में अपने को लेकर खेल कर रहा । ऋषि मुनि रखा । मन्त्र में शक्ति दिया । मन त्राण के लिए ।

* * *

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग

नवम खण्ड - पूर्वार्ध

— स्व. श्री अमूल्य कुमार दत्त गुप्त

कर्मफल एवं नियन्त्रण का मूलसूत्र- (परम श्रद्धेय पं. गोपीनाथ कविराजजी का कथन)

१३-३-५६ मंगलवार (२५ फाल्गुन)

यह याद रखना पड़ेगा कि यह आदि स्रष्टा भी मेरा ही एक रूप है । मेरे सिवाय और कोई नहीं है । एक रूप में मैं ही नियम्य अर्थात् नियम के अधीन, एवं दूसरे रूप में मैं ही नियामक । मेरा संकल्प ही जहाँ नियति । अर्थात् संकल्प भी मेरा और उस संकल्प का पात्र भी मैं एवं वह संकल्प भी वास्तव रूप में मेरी ही शक्ति । मैं ही नियामक, मैं ही नियन्त्रित एवं मेरी इच्छा ही नियम । सूक्ष्म तौर पर विचार करने पर देखा जाता है कि एक तरह से यह इच्छा पूर्व कर्म संस्कारों के विपक्व अवस्था में समष्टिभाव की स्फूर्ति मात्र है । अतः यदि इसीको आदि कारण मान लिया जाय तो वह भी आदि नहीं है, क्योंकि उसकी भी एक प्राक्तन अवस्था है । कल्पान्तर का संस्कार इस आदि संकल्प का बीज रूप है ऐसा कहा जा सकता है । इसी प्रकार एक कल्प से अन्य कल्प में मूल कारण के अन्वेषण का प्रयास चलता रहता है । इस प्रकार इस अनादि आवर्त (चक्र) में भी मूल सूत्र को ढूँढ़ निकालने का उपाय नहीं है । यह विराट् आवर्त (चक्र) काल का ही आवर्त है । अतः मूलसूत्र की खोज करने पर काल के भीतर न खोजते हुए कालातीत महासत्ता पर दृष्टिपात करना पड़ेगा ।''

''काल की अतीत सत्ता नित्य वर्तमान है, क्योंकि वहाँ, अतीत, वर्तमान एवं भविष्य इस प्रकार काल विभाग नहीं है । यथावस्तु यह है कि वह स्वयं प्रकाश होने के कारण वहाँ अतीत व भविष्य नाम की कोई सत्ता नहीं रह सकती । वहाँ केवल नित्य वर्तमान प्रकाश खण्डित न होने पर अतीत व भविष्य रूप विभाग सम्भव नहीं हो सकता । अखण्ड प्रकाश यह तो महाक्षण मात्र । वहाँ पहले और बाद में, दूर और पास या एक और अन्य प्रकार भेद नहीं है । सब आप ही आप । एक मात्र स्वातन्त्र्य का उल्लास । उस दृष्टि से देखने पर नियति नाम की कोई वस्तु है ही नहीं । नियन्त्रण या पराधीनता अस्तित्व रहित शब्दमात्र है । एक मात्र स्वातन्त्र्य का खेल ही नित्य लीला रूप में प्रकाशित हो रहा है । परन्तु द्रष्टा की ओर से साक्षी की ओर से लीला ही कहाँ है ? एक बहु होकर अपने ही अपने साथ खेल करते हैं यही तो लीला ? पर ऐसी भी एक स्थिति है जहाँ इस अनन्त लीला में भी अनिमेष (पलकहीन) स्थिर दृष्टि के समान लीलातीत परम प्रकाश अपने में आप ही प्रकाशमान हैं ।''

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अत: इस विचार से नियति नाम की कोई वस्तु नहीं है – यह जैसे सत्य है वैसे ही कर्म एवं कर्मफल नाम का कोई पदार्थ नहीं है यह भी वैसे ही सत्य है । कारण आदि संकल्प के दृष्टिकोण से जो नियति है, कर्तृत्वाभिमानसम्पन्न जीव की दृष्टि में वही कर्म और कर्मफल है । जिस महास्थिति की बात कह रही हूँ वहाँ आदि संकल्प के केन्द्र स्वरूप ईश्वर भाव नहीं है एवं कर्तृत्वाभिमान के केन्द्रस्वरूप जीवभाव भी नहीं है । जीव और ईश्वर दोनों के अतीत पर दोनों में आत्मभूत चैतन्यमात्र विराजमान है । इसीलिए वह स्थिति नियति और कर्मफल दोनों के मूलभूत चिदानन्दमय लीला होकर भी परम शक्ति के साथ अभिन्न है ।''

''पूर्ण में यह सब स्थिति अपने अपने वैशिष्ट्य के साथ विद्यमान रहकर भी एक और अखण्डभाव से विराजमान है ।''

''किसी कर्मफल के लिये दायित्व का प्रश्न तब तक उठता है जब तक द्वैत भाव विद्यमान रहता है । जब तक कर्ता में कर्तृत्वाभिमान रहता है, जब तक सीमाबद्ध भाव रहता है । इससे समझा जाता है कि घटना की परम्परा एक ओर पहले से निश्चित रहने पर भी कर्ता और भोक्ता के अपने-अपने सीमाबद्ध अभिमान के अनुसार ही कर्म और कर्मफल के रूप में प्रकाशित होती है । जो अपने को कर्ता समझता है एवं उसके ऐसा सोचने के कारण ही उसको कर्म करना पड़ता है अर्थात् किये हुए कर्म के लिए दायित्व ग्रहण करना पड़ता है एवं तदनुसार भोक्ता बनकर सुख-दुःख रूप फल ग्रहण करना पड़ता है । प्रकृति के कार्यों में उदासीन रह सकने पर अपना अभिमान न रहने के कारण कर्म और कर्मफल के साथ अपना कोई योग (सम्बन्ध) ही नहीं रहता । द्रष्टा होकर प्रकृति का खेल देखा जा सकता है ।''

''किसी-किसी के मन में यह प्रश्न आ सकता है कि जो नियत या नियन्त्रित है उसे बदला जा सकता है या नहीं । इसका उत्तर यह है । बदला जा सकता है यह भी सच है और बदला नहीं जा सकता यह भी सच है । जिस स्थिति से संकल्प बनकर नियति रूप धारण करता है, उस स्थिति से अभिनव संकल्प के उदय होने पर परिवर्तन असम्भव नहीं है । बद्धजीव की ओर से यह कहा नहीं जा रहा है । उस आदि संकल्प की ओर से यह परिवर्तन परिवर्तन के रूप में गृहीत नहीं होगा कारण स्थिति तो एक ही है । इसीलिए यह भी आदि संकल्प रूप में गृहीत होगा । कारण जिस स्थिति में आदि संकल्प का उदय होता है वहाँ से दूसरे संकल्प का उदय हो ही नहीं सकता । हजारों बार नये-नये संकल्पों का उदय होने पर भी उनको उसी आदि संकल्प के ही रूप में ग्रहण करना पड़ेगा । अत: एक ओर जहाँ परिवर्तन के रूप में गृहीत होता है दूसरी ओर वहाँ परिवर्तन हो ही नहीं सकता । एक ओर जहाँ त्रिकाल का खेल है दूसरी ओर वहाँ नित्य वर्तमान स्वातन्त्र्य का उल्लास । दृष्टिभेद के साथ-साथ प्रतीति का भेद हो सकता । पर अखण्ड पूर्ण में वह भी कहाँ ? वहाँ अनन्त भेद और अभेद का विलास मात्र ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वातन्त्र्य का उल्लास-

आज प्रात: गीता पाठ के बाद डॉ. पन्नालाल ने माताजी से कहा, ''माताजी, आपके साथ हमलोगों की बातचीत का समय कम होता जा रहा है, अत: मेरा सुझाव है कि दिन के साढ़े दस बजे से साढ़े ग्यारह एवं शाम के पाँच बजे से साढ़े पाँच तक आपके साथ बातचीत का समय निर्दिष्ट रहे । डॉ. पन्नालाल की बात को सुनकर माताजी ने हँसते हुए कहा, ''पिताजी, इस शरीर को किसी ने भी कुछ करने को कहा तो इस शरीर ने घड़ी की सुई के अनुसार उसी प्रकार किया । ऐसा दो एकदिन ही हुआ है ऐसी बात नहीं महीने पर महीने एवं सालों के साल ऐसा चला है । पर ऐसा भी हो सकता है कि जैसे पिताजी से कहा, पिताजी आप लोग बैठो मैं आ रही हूँ, ''इतना कहकर चली गयी तो लौट कर आना नहीं हुआ । या तो कहा गया । ''पिताजी चलिये घूम कर आयें, ''इतना सुनकर पिताजी कपड़ा आदि लाने गये इधर यह शरीर पिताजी की प्रतीक्षा न करते हुए मोटर लेकर घूमने निकल गया । इसीलिये पहले से ही बता दे रही हूँ कि इस शरीर के साथ समय का बन्धन रखने पर समय के अनुसार काम हो जायगा ऐसा कहा नहीं जा सकता । किसी किसी दिन ऐसा भी हो सकता है कि यह शरीर पाठ में आया ही नहीं ।

डॉ. पन्नालाल-ठीक है । यदि ऐसा कभी होगा तो होगा । फिर भी बात करने का एक निश्चित समय रहे ।

(क्रमश:)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जीवन दर्शन

गोस्वामी तुलसीदास और अब्दुर्रहीम खानखाना अकबर (1542-1605) के समकालीन थे । भक्त शिरोमणि तुलसी महान राम भक्त कवि थे । रहीम तो योद्धा, राजनयिक और कवि की त्रयी थे । उनकी कविता में भारतीय संस्कृति रची-बसी थी । वे अपनी जिज्ञासा दोहों के रूप में लिख कर गोस्वामी जी के पास भेजा करते थे और गोस्वामी जी भी उसका उत्तर दोहे में ही लिखकर उनको भिजवा देते थे । जो हरकारा रहीमका संदेश लेकर आता उसी के हाथ तुलसी अपना संदेश भेज देते । रहीम के मन में जिज्ञासा हुई कि कोई व्यक्ति गृहस्थी के जंजाल में फंसा रहकर भी भगवद् भक्ति कैसे कर सकता है । उन्होंने सुन रखा था कि गोस्वामी तुलसीदास विवाहित थे और बाद में घर-गृहस्थी त्याग कर राम भक्ति को समर्पित हो गए । उनका सीधा प्रश्न था कि सांसारिक चलन में चलकर भी उस करतार से मिलने का प्रयास करना क्या दो घोड़ों की सवारी नहीं है जिसे निभाना स्वयं सवार के लिए असंभव है । उन्होंने तुलसी को जो कि उस समय चित्रकूट में निवास कर रहे थे अपने दूत की मार्फत यह दोहा लिख भेजा:— "चलन चहत संसार की मिलन चहत करतार । दो घोड़े की सवारी कैसे निभे सवार ?" संदेशवाहक घुड़सवार रहीम का यह संदेश लेकर आगरे से चला और चित्रकूट पहुँच कर गोस्वामी जी के चरणों में दंडवत हो गया । गोस्वामी जी ने पहले तो रहीम की पाती माथे से लगाई और फिर छाती से स्पर्श करके उसका उत्तर तुरंत लिखने बैठ गए । उन्होंने दोहे का उत्तर दोहे में ही लिखा और संदेशवाहक सवार को दे दिया :-

"चलन चलत संसार की हरि पर राखो टेक ।
तुलसी यूं निभ जाएंगे दो घोड़े रथ एक ॥"

गोस्वामी जी का संदेश था गृहस्थ रहकर भी हरि भक्ति की जा सकती है । मीरा भी तो गृहस्थ ही हैं ।

(दैनिक भास्कर से साभार)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ आनन्दमयी लीलाकथा

—डॉ. वीथिका मुखर्जी

(अंग्रेजी से भाषान्तर - डॉ. कृष्णा बनर्जी)

(गतांक से आगे)

श्री रमणी मोहन जी की सबसे छोटी बहन के साथ उन्नीस वर्षों की लम्बी अवधि तक आना जाना नहीं हुआ था; श्री श्री माँ के ही आग्रह से उन्हें भी ढाका के घर पर बुलाया गया व सबके साथ मुलाकात हो सकी । जो भाई ईसाई पादरी बने थे, रेवरेण्ड के. के. चक्रवर्ती कहलाते थे, वे भी अपनी गैर-बंगाली पत्नी के साथ ढाका आये थे तथा अपने अन्य भाई बहनों के साथ पुनर्मिलित हुए थे । श्री श्री माँ भी कई बार कलकत्ते में उनके घर पर ठहरी थीं ।

वैसे ये सारी घटनायें उस जमाने में घटी थीं जब समय बीतने के साथ-साथ माँ की महिमा जनसाधारण में व्याप्त हो चुकी थी; जब माँ का दिव्य व्यक्तित्व केवल एक परिवार के सदस्यों के लिये ही नहीं, अपितु उनके अनगिनत भक्तों के क्रमवर्धमान विशाल परिवार के लिये भी जीवन का केन्द्रबिन्दु बन चुका था । यहाँ जिन दिनों की चर्चा हो रही है, उन दिनों छोटी-सी निर्मला अपनी जेठानी प्रफुल्ल के साथ रेवती मोहन महाशय व प्रमदा देवी के संसार में नववधू की भूमिका निभाने आयी हुई थी । रेवतीमोहन जी उस समय वहाँ पर ढाका-जगन्नाथगञ्ज रेलवे लाइन में स्टेशनमास्टर के पद पर नियुक्त थे ।

प्रमदा देवी अपनी दोनों छोटी देवरानियों के घर आने पर प्रसन्न थीं । प्रफुल्ल थी निर्मला की "मेजदी", क्योंकि वह मझले भाई की पत्नी थी -; इधर निर्मला को प्रफुल्ल 'सेजदी' कहकर पुकारती थीं, क्योंकि निर्मला तीसरे भाई की पत्नी होने पर भी उम्र में प्रफुल्ल से थोड़ी बड़ी थीं । इसी तरह से प्रमदा देवी ने उन दोनों के बीच उम्र और सम्बन्ध की गुत्थी को सुलझाया था । १९१० ईसवी में जब निर्मला पहली बार ससुराल आयीं तब माता मोक्षदा देवी यह सोचकर चिन्तित थीं कि न जाने उनकी अत्यन्त भोलीभाली बेटी ससुराल जाकर सबके साथ राजीखुशी की जिन्दगी जी सकेगी या नहीं, अचानक इस नयी परिस्थिति में पड़कर निभा पायेगी कि नहीं । पर मोक्षदा देवी की सारी चिन्तायें सारी आंशकायें गलत साबित हुईं । देखा गया कि निर्मला नयी गृहवधू के रूप में साधारण बहुओं से कहीं अधिक दक्षता का परिचय दे रही हैं । वह मधुर स्वभावा, बड़ों की हर आज्ञा का पालन करने वाली कन्या इस समय समस्त गृहकार्यों में पारंगत, सेवापरायण, सदासन्तुष्टचित्त, हँसमुख (एक) किशोरी वधू के रूप में प्रकट हुईं । घर के प्रात्यहिक कामकाज काफी कठिन एवं ढेरों समय लेने वाला था । इस विषय में भी देखने को मिला कि एक एकान्नवर्ती परिवार के अन्दर सुखशान्ति व व्यवस्था को बनाये रखने के लिये घर की बहू को जो जो करना

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उचित है, निर्मला उन सारे कर्तव्यों को आशातीत रूप से किये जा रही है । प्रमदा देवी की देखरेख में सारी बहुयें मिल बाँट कर घर का कामकाज संभालती थीं । रसोई का काम निर्मला करती थीं, कारण उसके द्वारा पकाया हुआ भोजन जितना स्वादिष्ट होता था, वैसा प्रफुल्ल के यहाँ तक कि प्रमदा देवी के हाथ का व्यंजन भी नहीं होता था । घर के सभी लोग निर्मला का बनाया हुआ खाना सबसे अधिक पसन्द करते थे । वैसे गृहकर्म के बँटवारे में कोई विषमता या पक्षपात का प्रश्न नहीं था । परिवार के बच्चे-सबसे पहले कालीपद एवं क्रमशः आशु तथा लावण्य भी—निर्मला को इतना चाहने लगे थे कि उसके संग-संग यूँ फिरते थे कि उनके पालन पोषण देखभाल का भार भी निर्मला के ही ऊपर आ पड़ा ।

रेवतीमोहनजी एवं प्रमदा देवी के परिवार में निर्मला के अवस्थानकाल की ढेर सारी रोचक घटनायें हैं । उस जमाने की सामाजिक प्रथा के अनुसार नयी बहू के पालनीय कर्तव्यों में से एक था सास, ससुर, जेठ आदि एवं अन्य गुरुजनों के समक्ष घूँघट से सिर व मुंह ढक के रखना । साधारणतया बहूबेटियाँ इस नियम का पालन हल्के तौर पर करती थीं, तथा असुविधा होने पर मौका देख के घूँघट खोल कर या नाममात्र रखकर घर का कामकाज चला लेती थीं । परन्तु निर्मला बिल्कुल भिन्न स्वभाव की थी; बड़ों का आदेश अक्षरशः पालन करने की ही उसे आदत थी । अतः लम्बे-घूँघट के कारण उसे अपने पैरों के पास की थोड़ी सी जमीन ही दीखती थी । इस असुविधा के कारण चलने फिरने में, गृहकर्म आदि करने में उसकी स्वाभाविक गति विघ्नित होती थी । घर के बड़े लोग जब कहते थे, ''वह ले आओ'', या ''इसको यहाँ से ले जाओ'', तब उनकी आँखों के या उँगली के इशारे को वह कुछ भी देख नहीं पाती थीं । ''यह'', ''वह'' आदि क्या है । यह भी वर्णन करके समझाना पड़ता था । शुरू में उसके हावभाव के साथ भलीभाँति परिचित न होने के कारण बड़े लोगों को थोड़ी सी झुँझलाहट होती थीं । धीरे-धीरे जब लोगों को समझ में आया कि वस्तुतः निर्मला गुरुजनों के आदेश की अवहेलना करना सोच भी नहीं सकती थीं, वरन् अक्षरशः आदेशपालन की उसकी कोशिश के ही कारण इस तरह की व्यावहारिक असुविधायें होती थीं, तब उनके मन की झुँझलाहट दूर होकर उसके स्थान पर निर्मला के प्रति उनका अपार स्नेह प्रकट हुआ ।

जिन्होंने निर्मला को घरेलू कामकाज करने वाली गृहवधू के रूप में देखा था, वे सभी कहते थे कि इतने सुन्दर ढंग से, इतनी जल्दी-जल्दी, परिपूर्ण सौष्ठव के साथ काम करते और किसी को उन्होंने नहीं देखा । उसकी फुर्तीली चाल, पलक झपकते सारे कामों को कर डालना, सबकुछ सुन्दर तरीके से यथास्थान सँभाल के रखना, कहीं भी कुछ अस्तव्यस्त न होने देना, इत्यादि विषयों में उसकी असाधारण दक्षता देखने वालों को विस्मित और मुग्ध करती थी । रसोईखाने में रन्धन कार्य सम्पन्न होने के उपरान्त सबको खिलापिला कर तुरन्त चौके की सफाई हो जाती थी, ऐसा कभी नहीं हुआ कि सफाई का काम कुछ बाकी रह गया हो । नौकर अन्तू यदि किसी दिन न आया हो, तो उसके द्वारा किये जाने वाले सारे कामों को भी निर्मला अनायास, प्रसन्न मुद्रा में स्वयं कर डालती थीं । किसी भी काम को वह भारस्वरूप नहीं समझती थीं । वस्तुतः जिस विपुल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कार्यभार का निर्वाह रोजाना वह करती थीं, वह किसी भी युग के, किसी भी समाज के मानदण्ड के अनुसार अतिशय अधिक था । परन्तु इसके लिये प्रमदा देवी को भी जिम्मेवार ठहराना ठीक नहीं होगा, क्योंकि सदा प्रफुल्लचित्त निर्मला इस आत्यन्तिकता का पता किसी को चलने नहीं देती थीं, तथा उसके खिले हुये चेहरे में या उसकी मधुर वाणी में कभी क्लेश की कोई अभिव्यक्ति नहीं होती थी । उसके हावभाव पर दैनन्दिन जीवन की कठोरता का तनिक भी छायापात नहीं होता था ।

थोड़े ही दिनों में रेवती मोहन जी व प्रमदा देवी ने निर्मला को अपनी परम प्रिय पुत्री की दृष्टि से देखना आरम्भ किया । निर्मला की सेवा परायणता में जो आन्तरिकता का सम्पुट रहता था, वह बार-बार प्रकट होकर लोगों को विमोहित करता था । एक बार प्रमदा देवी को चर्मरोग हो गया था । रोगाक्रान्त स्थान पर हाथ फेरने से आराम महसूस होता था । निर्मला अपनी कोमल ऊँगलियों के मृदु स्पर्श से पीड़ित त्वचा को सहला देती थी । परन्तु उपचार के तुरन्त बाद वह हाथ नहीं धोती थी । साधारणतया किसी का शरीर सहलाने के बाद, विशेषत: रूग्ण त्वचा की परिचर्या के बाद हाथ धो लेने का ही नियम है । एकदिन प्रफुल्ल पूछ बैठी, ''तुम जो हाथ नहीं धोती हो, क्या तुम्हे कुछ भी नहीं लगता है ?'' इसके जबाब में निर्मला बोलीं, ''देखो, वे मुझे तुरन्त हाथ धोते नहीं देखती हैं, इसीलिए मुझे सहलाने को कहते उन्हें संकोच नहीं होता है । यदि मेरे बर्ताव से उन्हें लगता कि मुझे घिन होती है, तो वे मेरी सेवा लेने से इन्कार कर देतीं ।''

रमणी मोहन महाशय की एक बहन, जो माँ के भक्तों के पास मटरी पिशिमाँ (बुआ) के नाम से परिचित थीं, वे माँ की समवयस्का थीं । कुछ समय के लिये जब निर्मला व मटरी एक साथ थीं, तब दोनों के बीच सौहार्द का सम्बन्ध बन गया था । चालीस वर्षों की लम्बी अवधि के पश्चात् वाराणसी में जब मटरी बुआ का देहावसान हुआ, उस समय तक दोनों के बीच सख्यता का सम्बन्ध बरकरार था । कैशोर्यावस्था में छोटी-सी नाटी सी हँसमुख मटरी की आँखें शरारत से सदा चमकती थीं । उसके दिमाग में शरारत की नयी-नयी तरकीबें सूझती थीं, जैसे चोरी-चोरी अचार, चटनी (बगैरह) खाना इत्यादि । गृहकर्त्री प्रमदा देवी जब दोपहर के भोजन के उपरान्त दिवानिद्रा में मग्न रहती थीं, उस मौके पर मटरी का अचार चखने का गुप्त अभियान चलता था । पर छोटी कद के कारण वह ऊँची जगहों से अचार के पात्रों को उतार नहीं सकती थी तथा इस काम के लिये उसे लम्बी कदवाली निर्मला की मदद चाहिये होती थी । उसके अनुरोध पर निर्मला अचार उतार अवश्य देती थीं, पर लाख मनाने पर भी स्वयं अचार नहीं खाती थीं । मिथ्याचार न करना ही जो उसके इस असाधारण आत्मसंयम का एकमात्र कारण था, यह बात शायद उसकी आश्चर्यचकित सहेलियों को समझ में नहीं आयी होगी ।

(क्रमशः)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पं. श्री राम शर्मा जी का माँ आनन्दमयी का प्रथम दर्शन

—डॉ. प्रेम नारायण सोमानी

अपने काशी प्रवास के दौर में गायत्री परिवार के संस्थापक श्री राम शर्मा जी हिन्दू विश्व विद्यालय परिसर में बराबर आते-जाते थे । परिसर में जहाँ-तहाँ राजनीति एवं सम सामयिक स्वतंत्रता आंदोलन की चर्चायें चलती थीं उनकी दिशाधारा से वह अवगत होते रहे । मालवीय जी के गिरफ्तार हो जाने से विश्वविद्यालय के वातावरण में व्याकुलता, चिन्ता और आवेश के भाव घुले थे । वहीं आते-जाते किसी ने श्री राम शर्मा जी को बताया कि विश्वनाथ की नगरी में एक माता जी आई हैं वे समाधि अवस्था में रहती हैं । उनके दर्शन की उत्कण्ठा उनके मन में जागी। उन्होंने माँ का पता पूछा । वे रामापुरा में किसी भक्त के यहाँ उस समय ठहरी हुई थीं । उनके साथ उनके पतिदेव भी थे । लोगों का कहना था कि सामान्य गृहस्थ जीवन में उनकी प्रवृत्ति ही नहीं थी । विवाह के समय भी वे शायद भाव समाधि में ही थीं । उनके पति भी उन्हें माता जी कहकर पुकारते थे ।

श्रीराम शर्मा ने उनसे मिलने का निश्चय किया और रामापुरा में बताये पते पर चल दिये । माँ, जिनका नाम "निर्मला देवी" था, मकान की दूसरी मंजिल पर ठहरी हुई थीं । उनके दर्शन के लिये पच्चीस तीस लोग बाहर खड़े थे । जिस समय श्रीराम पहुँचे, माता जी समाधि में थीं । उनके सेवकों ने बताया कि अभी दर्शन नहीं हो सकते । समाधि खुलने पर वे स्वयं बाहर आयेंगीं और दर्शन देंगी । श्रद्धालु देर तक बैठे रहे । कोई दो घंटे बाद समाधि खुली । वे बाहर आयीं । श्री राम को लगा कि इतनी तेजस्वी महिला उन्होंने पहले कभी नहीं देखी । प्रथम दर्शन से ही आभास हुआ कि निर्मला जी के व्यक्तित्व में दिव्य आभा विशेष प्रकट हुई है ।

श्री राम के मन में माँ से बातचीत करने की आकांक्षा जगी । उस दिन तो अवसर नहीं मिला। दूसरे दिन 10-11 बजे के लगभग माँ के निवास पर फिर पहुँचे । संयोग से उस समय ज्यादा लोग नहीं थे । माता जी जाग्रत अवस्था में थीं । आसानी से भेंट हो गयी । उपस्थित लोगों के सामने ही उन्होंने चर्चा की अनुमति दे दी ।

श्री राम ने पूछा — "माँ ! आप कौन हैं ?

उन्होंने कहा — "मैं क्या कहूँ, तुम लोग जो समझते हो — वही"

अगला प्रश्न था — लोग कहते हैं कि आप निरंतर समाधि में रहती हैं । यह समाधि सविकल्प है या निर्विकल्प ?

इसके उत्तर में माँ ने कहा — "मैं पढ़ी लिखी तो हूँ नहीं । इसलिये जिस भाव में रहती हूँ, उसके बारे में कुछ नहीं कह सकती ।"

वहाँ बैठे एक साधक ने माँ से पूछा — "माँ क्या इस युग में भी सिद्ध पुरुष हैं ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ ने तुरंत कहा—"क्यों इस युग में क्या हो गया, सिद्ध पुरुष सभी युगों में होते हैं । यह जगत ब्राह्मी भाव को प्राप्त हुए लोगों के कारण ही स्थिर है । वे न हों तो जगत का अन्त हो जाय ।"

उन्हीं सज्जन ने कहा—'उनके होते हुए भी हमारा देश पराधीन क्यों है ?

माँ ने उत्तर दिया —"उनकी इच्छा है । वे अपनी लीला के तमस गुण का आनन्द ले रहे हैं । अब रजस जागा है तो स्वतंत्रता की चाह उठी है । कुछ वर्षों में स्वतंत्र हो जायेगा ।"

इस पर श्री राम ने पूछा — "इसके लिये क्या उद्योग नहीं करना पड़ेगा, माँ ! स्वतंत्रता अपने आप मिल जायेगी ?"

माँ ने उत्तर दिया — "प्रयत्न तो करने ही पड़ेंगे । न चाहते हुए भी देशवासी प्रयत्न करेंगे, क्योंकि भगवान अपनी माया का रजस भाव जाग्रत कर रहे हैं । आलस्य और प्रमाद तमस के भाव हैं । उसमें जाने के लिये किन्हीं प्रयत्नों की आवश्यकता नहीं होती ।"

"और हमारा देश कभी सत्य में भी स्थित होगा या नहीं ?" इस जिज्ञासा का समाधान करते हुए माँ ने कहा— "होगा और अवश्य होगा । इस अवस्था में चारों ओर दिव्यभाव की प्रतीति होगी । देश अपने गौरव को पुनः प्राप्त कर लेगा । उस गौरव को जिसके लिये भगवान ने चुना है ।" चर्चा के इस क्रम में माँ की पुनः समाधि लग गयी । लोग वहीं बैठे रहे । समाधि अवस्था में वे आँखें बन्द कर बैठ गयीं । उनके मुखमण्डल पर अद्भुत ज्योति छलकने लगी । लगता था, जैसे उनका रोम-रोम भगवत् मय हो गया हो । आधे घण्टे तक वे उसी अवस्था में रहीं । जाग्रत हुईं तो उनकी दृष्टि श्री राम पर पड़ी । माँ ने कहा — "अपना देश कब जा रहे हैं ? आगे हरिद्वार में भेंट होनी है । तब आप गंगातट पर दिव्य भाव की स्थापना कर रहे होंगे ।"

सुनकर श्री राम चकित रह गये । माँ यह क्या कह रही हैं ? फिलहाल तो हरिद्वार के सम्बन्ध में कोई संकल्प विकल्प का भाव ही न था । माँ ने विस्मय वचन का स्वयं ही समाधान किया । संत-महात्माओं की लीला निराली होती है । श्री राम को इस प्रश्न की अपेक्षा नहीं थी । वे सोचने लगे कि क्या उत्तर दें, फिर कहा "दो-तीन दिन में ही ।" उनके काशी में एक माह रहने के संकल्प में अभी आठ-दस दिन बाकी थे । लेकिन श्रीराम तब से ही सोचने लगे थे कि जल्दी घर लौट जायें । काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आते-जाते देश काल की स्थितियों के बारे में जो पता लगा उससे उनका मन वापस जाने के लिये मचलने लगा । मन में प्रेरणा उठने लगी थी कि चारों तरफ जब वातावरण गरमा रहा हो देश में राष्ट्रीय भावनाओं का उभार आ रहा हो तो यहाँ तीर्थ सेवन का कोई औचित्य नहीं है । माँ के सामने ही उनका निश्चय व्यक्त हो गया ।

दो दिन वाराणसी के कुछ और क्षेत्रों का भ्रमण कर, फिर सारनाथ होते हुए वे आँवल खेड़ा आ गये । समय से पहले ही आ गया देख, ताई जी चकित हुईं । तीन सप्ताह बाद अपने बेटे को देख ताई जी हर्ष विभोर हो गयीं । उन्होंने सिर पर हाथ रखा और पीठ को थपथपाया ।

ऐसी थी शान्ति कुंज हरिद्वार के संस्थापक वेदनिष्ठ श्री राम शर्मा आचार्य की माँ आनन्दमयी से पहली भेंट ।

—अखण्ड ज्योति से साभार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

काशी मुक्ति माहात्म्य

—दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती

काशीति नाम जपतां शिवनामतुल्यं
विन्ध्याद्रिपापनिचयो विलयं प्रयाति ।
किं तत्कथाश्रवणकीर्तनवासदानैः
सम्यक् प्रदक्षिणवतामशुभस्य नाशः ॥

— का० रह० ९/१०५

भगवान् सदाशिव के नाम के समान केवल ''काशी—काशी'' का जप करने वाले नर-नारियों के विन्ध्याचल के समान पापों के ढेर होने पर भी पाप नष्ट हो जाते हैं तथा जो विद्वान काशीमाहात्म्य की कथा कहते हैं और जो श्रद्धा से श्रवण करते हैं (सुनते हैं) एवं काशी में निवास, ब्रह्माणों को दान देते हुए काशी की प्रदक्षिणा (पञ्चक्रोशो की यात्रा) करते हैं, उन विद्वानों को धर्म अर्थ काम और मोक्ष चारों पदार्थ हस्तामलक होते हैं ।

बहुनात्र किमुक्तेन वाराणस्या गुणान् प्रति ।
नामापि गृणतां काश्याश्चतुर्वर्गो न दूरतः ।

—नारद पुराण

वाराणसी के गुण कहाँ तक कहें जाय, इसके नाम मात्र के उच्चारण से चतुर्वर्ग फल प्राप्त होता है ।

स्थितिः काश्यां येषां परमसुखसन्तानसुखिनाम् ।
सतां सङ्गान्नित्यं हरिहरकथास्वादनजुषाम् ॥

—का. रह. २१/९२

जो लोग काशीवास कर रहे हैं, उन्हें नाना प्रकार के सुख प्राप्त हो रहे हैं, नित्य सन्तों को सत्सङ्ग मिल रहा है तथा भगवान् शिव एवं विष्णु की कथाओं का आस्वादन प्राप्त हो रहा है । यह सब पुण्यात्माओं को ही प्राप्त होता है ।

सतां सङ्गाद् धर्मकथा भवन्ति हितकारिकाः ।
महापुण्यप्रदा तत्र भोगमोक्षैकशेवधिः ॥

—वहीं १२/१२०

सन्तों की सङ्गति से प्राप्त धार्मिक कथाएँ कल्याणकारक होती हैं, साथ ही अत्यधिक पुण्य प्राप्त होता हैं । काशी भोग और मोक्ष की खान है, अर्थात् काशी भोग तथा मोक्ष प्रदान करती है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यत्पुण्यं लभ्यते मर्त्यैस्तदेतच्छ्रवणाद् ध्रुवम् ।
श्रवणादस्य खण्डस्य लभते तन्न संशयः ॥

—का. ख. १००/१०१

दान और यज्ञ करने से जो पुण्य प्राप्त होता है, वही पुण्य काशी— माहात्म्य के श्रवण से प्राप्त होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

कल्याणः प्राप कल्याण काशीमरणमात्मनः ।
निस्तीर्णो दानबलतः काश्यां काशीकथाश्रयः ॥

का. रह. २५/१०८

काशी में मरने से अपना कल्याण होता है, अतः उसे (काशी को) प्राप्त करना चाहिए । काशी में रहकर काशी का माहात्म्य सुनते हुए दान देने वाला व्यक्ति (दान के बल से) मुक्त हो जाता है ।

य इमां श्रृणुयान्नित्यं कथां पापप्रणाशिनीम् ।
त्यक्तपापो विशुद्धात्मा रुद्रसामीप्यमाप्नुयात् ॥

—पदम पुराण ३५/४९

जो इस पापनाशिनी काशी की कथा को नित्य सुनता है, उसके पाप छूट जाते हैं, आत्मा निर्मल हो जाता है और वह व्यक्ति रुद्र की सामीप्यमुक्ति प्राप्त करता है ।

श्रवणेन परा सिद्धिः श्रवणेन परं सुखम् ।
श्रवणेन परं ज्ञानं धर्मादिः श्रवणेन च ॥

—का. ख. ६०/१४२

काशी में वेद—पुराणादि की कथा सुनने से सिद्धि, सर्वश्रेष्ठ सुख, सर्वश्रेष्ठ ज्ञान तथा धर्म आदि की प्राप्ति होती है और धर्म द्वारा मुक्ति प्राप्त होती है ।

महापातकयुक्तोऽपि श्रृणुयाद्यः कथामृतम् ।
स मुक्तो मुक्तिमाप्नोति पुण्यसम्भारदुर्लभाम् ॥

—ब्रह्मवैवर्त पुराण

महापातक से युक्त मनुष्य भी यदि काशी—माहात्म्य की कथा का श्रवण करता है, तो वह पुण्याधिक्य से भी न प्राप्त होने वाली मुक्ति को प्राप्त करता है ।

प्रवर्त्तते काशिकायां मिलत्यात्मा जनार्दनः ।
सर्वे श्रृण्वन्ति सद्वृन्दे स्थित्वा काशिकथां मुहुः ॥
कथन्न साक्षाद्भवति भगवान् मधुसूदनः ॥

—का. रह. १९/२६

काशी के माहात्म्य की कथा को सुनने के लिए सभी के बीच में स्वयं भगवान् मधुसूदन भी उपस्थित रहते हैं । अतः कथा—श्रवण के साथ-साथ उनका साक्षात्कार भी सभी को प्राप्त हो जाता है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सूतः काशीकथां श्रुत्वा येऽलं बुद्धिमुपासते ।
तेऽलं सुखाय मोक्षाय धर्माय हि गुणसंयुताः ॥

—वही २२/१

जो लोग काशी के माहात्म्य की कथा सुनकर अपनी बुद्धि से ज्ञान प्राप्त करते हैं, वे गुणयुक्त होकर अत्यधिक धर्म, सुख एवं अन्त में मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं ।

श्रृण्वन्तु मुनयः सर्वे कथां सर्वाङ्गमाश्रिताम् ।
ममापि परमानन्ददायिनी दुःखनाशिनीम् ॥

—वही २४/२

सूत जी कहते हैं—हे मुनियों ! आप सभी लोग सम्पूर्ण वेद—वेदाङ्ग आश्रित काशी के माहात्म्य की कथा का श्रवण करें, जो परम दुःखनाशक होने के साथ ही मुझको भी परमानन्द दायक है ।

काश्यां परां कथामेतां गङ्गामाहात्म्यसंयुताम् ।
श्रृणोति श्रावयति यः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

—वही २१/२२

गङ्गा जी के माहात्म्य से संयुक्त काशी की इस उत्कृष्ट कथा को जो सुनता है अथवा सुनाता है, वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है ।

काश्यामेवं ये मनुष्या वसन्ति ते,
वै काश्याः प्राप्नुवते सुखं स्वम् ।
स्नानं दानं गुर्वर्चनं च नित्यं,
भक्त्या कुर्वतां कुत्र बन्धः ॥

—वहीं २४/१०

जो मनुष्य काशी में निवास करते हैं, वे निश्चित ही सुख प्राप्त करते हैं । काशी में भक्तिपूर्वक गङ्गास्नान, दान एवं गुरु का पूजन करने वाले मनुष्य बन्धनमुक्त हो जाते है, अर्थात् उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जाता है ।

ये तु व्याकुलचित्तदेहवचसोऽसोऽसत्सङ्गयुक्ताः परम् ।
तेषां अत्र सुखं मृता यान्त्येव भोगादनु ॥

—वहीं २३/१०५

जो मनुष्य चित्त, देह एवं वाणी से व्याकुल हैं और सत्सङ्ग से युक्त हैं, उन्हें सर्वदा सुख प्राप्त होता है तथा संसार का भोग कर मरणोपरान्त शिवपद को प्राप्त करते हैं, ऐसी काशी की महिमा है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सूतास्माभिः श्रुताः पुण्याः कथाः काश्याः सुदुर्लभाः ।
पुरीणां सङ्गमो यत्र तत्र मोक्षो न संशयः ॥

—वहीं १३/५७

श्रीशौनक जी कहते हैं— हे सूत ! हम लोगों ने अत्यन्त दुर्लभ तथा पवित्र काशी की कथा सुनी । जहाँ समस्त पुरियों का सङ्गम है, ऐसी काशी में मोक्ष प्राप्त होता है, इसमें कोई सन्देह नहीं ।

अल्पेन कालेन समस्तमेव सार्धं पुना रुद्रपिशाचरुद्रैः ।
भवप्रसादेन कृतोपदेशः पिशाचयोनेरपि मुक्तिरपि ॥

—त्रिस्थली सेतु पं. ३०१

काशी में जो पापी मरते हैं, उनको विश्वनाथ जी कृपा करके थोड़े समय में भयङ्कर रुद्रपिशाचों (ब्रह्मराक्षस आदि) के साथ तारक मन्त्र का उपदेश देते हैं, जिससे पिशाचयोनि से भी मुक्ति मिल जाती है ।

सर्वेभ्यः काशिसंस्थेभ्यो मोक्षभिक्षां प्रयच्छति ।
त्रिपुरारिः पुरद्वारि कदास्यां मोक्षभिक्षुकः ॥

—लिंग पुराण

काशी में निवास करने वालों को मोक्ष-भिक्षा देने के लिए भगवान् त्रिपुरारि (विश्वनाथ जी) सदा प्रतीक्षा करते रहते है कि हमारे द्वार पर यह मोक्ष-भिक्षुक कब आयेगा और मैं कब मोक्ष की भिक्षा दूँगा ।

अमरा मरणं सर्वे वाञ्छन्तीह प्रसूतये ।
देवा मुनीन्द्रा राजानो वाञ्छन्त्यनुदिनं भुवि ॥

—का. मू. रह.

देवतागण, मुनिलोग एवं राजा, सभी अपनी मृत्यु इसलिए चाहते हैं कि पुनः काशी में जन्म लेकर एवं काशी में कैवल्य (मोक्ष-पद) की प्राप्ति कर सकें । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं वर्णसंकर, स्त्री, म्लेच्छ और अन्य सङ्कीर्ण पापयोनि के लोग, कीट, चींटी, पशु, मृग तथा पक्षी काशी में शरीर-त्याग करने से चन्द्रमौलि शिव के ललाटाक्ष वृषध्वज शिवरूप में परिणत हो जाते है, इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

तीर्थार्थी न बहिर्गच्छेन्न देवार्थी कदाचन ।
सर्वतीर्थानि देवाश्च वसन्त्यत्राविमुक्तके ।
अविमुक्तं समासाद्य न त्यजेन्मोक्षकामुकः ॥

—ब्रह्मवैवर्त पुराण

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तीर्थाटन तथा देवदर्शन के लिए भी काशी के बाहर कभी भी नहीं जाना चाहिए; क्योंकि सम्पूर्ण तीर्थ एवं दर्शन काशी में ही विराजमान हैं । मोक्ष चाहने वाले लोगों को कभी भी अविमुक्त—क्षेत्र (काशी) का त्याग नहीं करना चाहिए ।

तीर्णोऽहं कर्मपाशाद्धि कृच्छ्रात्प्रारब्धसंक्षयात् ।
संसारादपि तीर्णोहं काशीवासफलाश्रयः ॥

— का. रह.

मैं कर्मपाश से छुटकारा पा गया हूँ; क्योंकि मेरे प्रारब्ध का क्षय हो गया है । मैं संसार से भी पार हो गया हूँ; क्योंकि मेरे पास काशीवास का फल है । अर्थात् काशीवास करने से समग्र कर्मपाशों से मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त होती है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन-श्रीकृष्ण प्रश्नोत्तर

(गतांक से आगे)

—श्री महेन्द्र प्रताप सिंह गौर

प्रश्न-५. दूसरे अध्याय में भी भगवान ने अर्जुन को बताया कि परमात्मा प्राप्ति में बुद्धि दृढ़ निश्चय वाली होना अनिवार्य है । बुद्धि पर समता के द्वारा नियंत्रण करने का प्रश्न तभी तक है जब तक बुद्धि संसारी रहती है, उसमें संसार के प्रति आकर्षण रहता है । निश्चयात्मक होने से बुद्धि में समता का गुण स्वतः आ जाता है । इसी अध्याय में श्री भगवान ने 'दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनञ्जय' में अर्जुन से कहा 'इस समत्व रूप योग से सकाम कर्म निम्न है' । अर्जुन के मन में युद्ध न करने का आग्रह पहले ही था अतः उन्होंने उपर्युक्त बुद्धि योग को ज्ञान का रूप देकर अपना तर्कयुक्त प्रश्न भगवान के सम्मुख रख दिया—

'ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन ।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥
व्यामिश्रेण वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे ।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् ॥
(गीता ३/१-२)

अर्थात् अर्जुन बोले हे जनार्दन यदि आप कर्म से बुद्धि (ज्ञान) को श्रेष्ठ मानते हैं तो फिर हे केशव हमें घोर कर्म में क्यों लगाते हैं । आपके अपने वचन मेरी बुद्धि को मोहित सी कर रहे हैं अतः आप निश्चय करके एक बात कहिए जिससे मैं कल्याण को प्राप्त हो जाऊँ । उपर्युक्त 'बुद्धियोगाद्धनञ्जय' में बुद्धि योग ज्ञान योग का वाचक नहीं है वह ऐसी बुद्धि का वाचक है । जिसमें कामना, अहंता, समता आदि का त्याग हो जो परमात्मा की प्राप्ति में पूर्ण सहायक हो । सकाम कर्म का फल नाशवान कर्म (कर्म योग) की प्राप्ति परमात्मा है । यहाँ अर्जुन 'बुद्धिर्जनार्दन' में बुद्धि को ज्ञान समझ कर ही प्रश्न कर रहे हैं । यदि बुद्धि को समबुद्धि (कर्मयोग) समझते तो यह प्रश्न ही नहीं करते । अर्जुन यह समझ ही नहीं पा रहे हैं कि श्री भगवान उनको युद्ध करने की आज्ञा देकर कर्म योग में प्रवृत्त कराना चाहते हैं अथवा उनसे समस्त कर्मों का त्याग कराना चाहते हैं । इसीलिये उन्होंने 'व्यामिश्र' शब्द का प्रयोग किया । इस पर उत्तर देते हुए श्री भगवान कहते हैं—

श्री भगवान उवाच—

'लोकेऽस्मिन्द्विविधानिष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥ (गीता ३/३)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अर्थात् श्री भगवान बोले हे निष्पाप इस लोक में मेरे द्वारा पहले दो प्रकार की निष्ठा कही गई है उनमें साख्ययोगियों की निष्ठा तो ज्ञानयोग से तथा योगियों की निष्ठा कर्मयोग से होती है ।

प्रधानतः साधन की स्थिति से दो भेद होते हैं । प्रथम में मनुष्य आत्मा तथा परमात्मा का भेद मिटाकर अपने को ब्रह्मरूप मानकर कर्तापन के अहंकार को मिटाकर 'गुणा गुणेषु वर्तन्ते' के विचार को मान्यता देता है यह ज्ञान-योग-निष्ठा है । दूसरे में परमेश्वर को ही सम्पूर्ण जगत् का धर्ता-अपहर्ता मानकर अपने को उनका सेवक मात्र मानता है यह कर्मयोग-निष्ठा है । दोनों निष्ठायें अन्योन्याश्रित नहीं हैं वरन् पूर्ण स्वतन्त्र हैं । इनकी विशेषता यह है कि दोनों एक व्यक्ति में एक साथ नहीं रह सकती है ।

ज्ञान योग के साधन से सांख्य निष्ठा होती है तथा कर्मयोग से योग-निष्ठा होती है । श्री भगवान 'स्वरूपतः कर्तव्य कर्मों का त्याग किसी भी निष्ठा का हेतु नहीं होता' यह स्पष्ट करते हुए कहते हैं

'न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते ।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥

(गीता ३/४)

अर्थात् मनुष्य न तो कर्मों का आरम्भ किये बिना निष्कर्मता यानी योगनिष्ठा को प्राप्त होता है और न कर्मों के केवल त्याग मात्र से सिद्धि यानी सांख्य निष्ठा को प्राप्त होता है ।

मनुष्य जीवन में श्वास-प्रश्वास के समान कर्म भी अनिवार्य है । अनभिज्ञ रहकर भी हम सोते हुए श्वास लेते रहते हैं । स्वप्न देखते रहते हैं आदि । कर्मों का आरम्भ किये विना निष्कर्मता की स्थिति प्राप्त नहीं हो सकती है । सांख्य-योग में भी कर्मों का स्वरूपतः त्याग नहीं होता है । जैसे अपने शरीर की रक्षा हेतु ज्ञानी व्यक्ति भी भोजन एवं नित्य कर्म करता है । परन्तु उसको कर्तापन की अहंता, ममता, आसक्ति व कामना का त्याग अनिवार्य है । विना इसके निष्कर्मता की सिद्धि उसे नहीं मिलती । ज्ञान-योग में सत-असत विवेक की प्रधानता रहती है ।

गीता दोनों स्थितियों (सांख्य एवं योगनिष्ठा) में कर्म करने की प्रेरणा देती है । श्री भगवान ने दोनों प्रकार के साधनों में अर्जुन को कर्म करने की आज्ञा दी यथा—

'योगस्थः कुरु कर्माणि' - गीता २/४८ - कर्म योग में
'तस्माद्युद्धस्व भारत' - गीता २/१८ - सांख्य योग में

अतः स्पष्ट है श्री भगवान गीता-सुनाकर अर्जुन को कर्म में प्रवृत करना चाहते थे कर्मों से विरत नहीं । वास्तव में साधक में पदार्थ तथा व्यक्ति के प्रति आसक्ति का त्याग ही प्रमुख है जो सांख्य-योग में उत्कट वैराग्य के विना सम्भव नहीं है । सम्मुख आया कर्म साधक तत्परता से तभी कर सकता है जब उस कर्म में उसका राग नहीं होगा तथा कर्म जन कल्याण हेतु किया जायगा । मनुष्य जब तक अपना सम्बन्ध शरीर से मानता है तब तक वह अपने को क्रियाहीन नहीं कह सकता है । मनुष्य जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि किसी भी अवस्था में विना कर्म के नहीं रह सकता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है । कारण कर्म-फल स्वरूप प्रकृति के परवश होकर उसे कर्म करना ही पड़ता है । गीता शारीरिक, वाचिक तथा मानसिक हर क्रिया को कर्म मानती है । इसी कारण गीता की भाव शुद्धि अन्यत्र कहीं दृष्टिगत नहीं होती है ।

जैसे नींद स्थूल शरीर की क्रिया है । चिन्तन सूक्ष्म शरीर की क्रिया है तथा समाधि कारण-शरीर की क्रिया है । यह सभी कर्म के ही रूप हैं । कुछ होश में होने वाले तथा कुछ बेहोशी में होने वाले कर्म हैं । शरीर से सम्बन्ध रखने वाली प्रत्येक क्रिया कर्म है क्योंकि शरीर प्रकृति का अंश है तथा प्रकृति कभी अक्रिय नहीं रह सकती है । गुण प्रकृति से बनते हैं । गुणों से वृत्तियाँ बनती हैं तथा वृत्तियों से स्वभाव बनता है । यही क्रम निरन्तर प्रक्रियारत रहता है ।

प्रकृति की दो अवस्थाएं होती हैं एक सक्रिय जैसे चलना, फिरना आदि दूसरी अक्रिय जैसे सोना, स्वप्न देखना आदि । प्रकृति अपनी अक्रिय अवस्था में भी निष्क्रिय नहीं होती है जैसे किसी निद्राभिभूत व्यक्ति को नींद से पूर्व जगा दिया जाय तो जागने पर वह कहता है 'मुझे कच्ची नींद से क्यों जगा दिया' । सोते समय भी इस व्यक्ति को नीद की परिपक्वता का ज्ञान रहता है । इस निद्रित अवस्था में भी नींद पकती रहती है । क्रिया के इसी स्वरूप के आधार पर हम मान सकते हैं कि प्रलय अथवा महाप्रलय में सूक्ष्म क्रिया होती रहती है । बाल्यावस्था, यौवन, पाचन क्रिया तथा श्वास-प्रश्वास आदि क्रियायें स्वाभाविक रूप से हो रही हैं परन्तु जब जीवात्मा अपने को इन्हीं का कर्ता मान लेता है तभी वह बन्धनयुक्त होता है । यदि कर्ता नहीं मानता है तो बन्धनमुक्त रहता है अर्थात् अपने स्वरूप में रहता है जिसे अर्जुन ने आगे गीता में 'स्थितोऽस्मि' कहकर प्रकट किया है ।

प्रश्न - ६

अगला छठवां प्रश्न हमारे जीवन का अत्यन्त ज्वलन्त प्रश्न है । अर्जुन पूछते हैं—

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः ।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥

(गीता ३/३६)

'अर्थात् अर्जुन बोले हे वार्ष्णेय फिर यह मनुष्य न चाहता हुआ भी जबरदस्ती लगाये हुए की तरह किससे प्रेरित होकर पाप का आचरण करता है'

भगवान श्री कृष्ण ने यदुकुल के वृष्णि-वंश में अवतार लिया था इस कारण वह वार्ष्णेय कहलाए । स्वधर्म कुल तथा वंश का होता है इसी भाव की प्रधानता के कारण अर्जुन ने भगवान को कुल (वंश) के नाम से सम्बोधित किया । पाप का अन्त दुःख, पाप तथा कष्ट में होता है । इस कारण कोई भी व्यक्ति पाप करना नहीं चाहता है पर न चाहते हुए भी उसे बलपूर्वक पाप करने के लिए कौन प्रेरित करता है यह जानने की इच्छा अर्जुन की थी सांसारिक सुख-भोग की कामना ही हमारी पाप वृत्ति का मूल कराण है मनुष्य इस 'कराने वाले' को अपने से पृथक मानता है जैसा कि महाभारत में दुर्योधन कहता है—

'जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः ।
केनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि'

(अश्वमेध गर्ग संहिता ५०/३६)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अर्थात्—मैं धर्म को जानता हूँ पर उसमें मेरी प्रवृत्ति नहीं होती है । मैं अधर्म को भी जानता हूँ पर उससे मेरी निवृत्ति नहीं होती है । मेरे हृदय में स्थित कोई देव है जो मेरे से जैसा करवाता है मैं वैसा ही करता हूँ । उपर्युक्त कथ्य का देव काम अर्थात् भोग और संग्रह की इच्छा ही है, अन्य कुछ नहीं है । यह 'देव' कौन है जो पाप काम में बलपूर्वक लगा देता है यही अर्जुन का प्रश्न है । यह ज्वलन्त प्रश्न हम सबका भी है कि हम कलियुग में साधनरत हैं फिर भी पाप की यह बलाद् प्रवत्ति कहां से आ जाती है ।

इसका उत्तर देते हुए श्री भगवान कहते हैं । श्री भगवान उवाच—

'काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ॥
(गीता ३/३७)

अर्थात् - श्री भगवान बोले रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है । यह बहुत खाने वाला और महा पापी है । इस विषय में तू इसका ही वैरी जान । प्रत्येक इन्द्रिय के विषयों में रहने वाले राग-द्वेष ही कामना का आधार है । यह दोनों काम-क्रोध का ही स्थूल रूप है । काम ही क्रोध का मूल है । पहले किसी पदार्थ को पाने की कामना आती है फिर उसमें बाधक बनने वाले निर्बल व्यक्ति पर क्रोध आता है । यदि बाधक हमसे सबल है तो उससे भय जाग्रत होता है । काम की उत्पत्ति रजोगुण से इसलिये होती है क्योंकि रजोगुण ही 'राग' का जन्मदाता है । कामना को 'महाशनो महापाप्मा' इसलिये कहा गया है क्योंकि कामना का स्वरूप ही अन्तहीन है । एक कामना पूर्ण होते होते दूसरे को जन्म दे जाती है जैसे किसी व्यापार में यदि वर्षान्त में एक हजार रुपये का लाभ होता है तो व्यापारी उसी समय दो हजार वाले लाभ की रूपरेखा बनाने लगता है ।

कामनाओं के दो रूप होते हैं सांसारिक तथा पारमार्थिक । सांसारिक कामनाओं का अन्त इस कारण नहीं होता है क्योंकि संसार स्वयं अन्तहीन परिवर्तन ही तो है । बनता है नष्ट होता है । चूँकि पारमार्थिक कामना का उद्देश्य परमात्मा की प्राप्ति होता है तथा परमात्मा अचिन्त्य, सनातन, अविनाशी तथा पूर्ण है अतः वहाँ पहुँचकर कामना भी पूर्ण हो जाती है फिर शेष नहीं रहती । उसका अस्तित्व स्वंय मिट जाता है ।

कामना पापात्मा इस कारण है कि कहीं मनुष्यों के कर्म की उत्तरदायी है । मनुष्य को बिना अपनी इच्छा के पाप कर्मों में प्रयुक्त करने वाला न ईश्वर है और न उसका प्रारब्ध । पापकर्म में उसे कामना ही लगाती है अतः उसका समूल नाश ही असम्भव है । कामना को नष्ट करने का मुख्य उपाय है दूसरों की सेवा करना । कर्मयोगी स्थूल शरीर से होने वाली क्रिया सूक्ष्म शरीर से होने वाला चिन्तन तथा कारण शरीर से होने वाली स्थिरता का प्रयोग सदैव अपने लिये न करके संसार के लिये करता है । यही वास्तविक सेवा का स्वरूप भी है ।

(क्रमशः)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाणी कुसुमाञ्जलिः

—पं. ब्रह्मादीन अवस्थी

संन्यासरेव पुरुषस्य परं सुलाभः ।
सर्वस्य त्यागसहितं भवतीति लोके ।
संन्यासभाव ग्रहणं परमं सुभाग्यम्,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः ॥

शून्यं स्वरूपमखिलं भगवत्स्वरूपम् ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथिंत गुणज्ञैः ॥ ३८ ॥

सर्वेश्वरस्य मिलनं निजमेव ज्ञानं ।
स्वस्थ्यज्ञानमपि तस्यसुलाभरेवम् ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं कवीन्द्रैः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ३९ ॥

चिन्ता सदा भवति तस्य पराङ्मुखत्वे ।
चिन्ता न स्यात् भगवतः परिचिन्तयाते ॥
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः ।
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ४० ॥

स्मर्तव्यमेव परमेश्वर पादपङ्कजम् ।
देहं च तस्य परमेशसुलाभहेतोः ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः ।
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ४१ ॥

पूर्णाहुतिः सकलकर्म समाप्ति जाता
त्यागः स्वयं भवति नास्ति पदार्थ त्यागः
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ४२ ॥

दुःखं विनश्यति तदाश्रयणे जनानां
कष्टं भवेच्च यदि कर्मफलेन गण्यम् ।
कल्याण हेतु भगवतः कृपया हि जातम्
मातुः मुखाब्जकथनं कथितं कवीन्द्रैः ॥ ४३ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सत्यं सदा भवति ते यदि दर्शनेच्छा
दातुं सदा प्रभवतीह परस्वभावः ।
सत्यं सदा विजयते परमेशदृष्ट्या
सर्वेश्वरोपि निजदर्शन मात्र दृष्टया ॥ ४४ ॥

सत्यस्वरूपं परमेश्वर प्राप्तिचित्तं,
सत्यसंगमेव प्रवदन्ति नराः सुविज्ञाः ।
तस्याश्रयेण नहि भवन्ति गुणैर्विहीनाः,
माता-पिता परिजनस्य सखा सुबन्धुः ॥ ४५ ॥

सत्सङ्गः सदा गृहकर्मरतैर्विधेयः
गन्तव्यमेव हरिकीर्तनमेवनित्यम् ।
औदार्यभाव सहितः त्यज भेद बुद्धिम्,
सर्वेश एव जगतः तव सर्व पूज्यः ॥ ४६ ॥

सत्यं च रक्षति नरः परिपाति सत्यम्
बाधा भवन्ति बहुधा खलु सत्यमार्गे ।
अन्यस्य दोष कथनं परिहाय नित्यम्
सन्मार्गमेव ग्रहणं शरणं तवेशः ॥ ४७ ॥

(क्रमशः)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महाराष्ट्र की संत श्री जनाबाई

—श्री अशोकभाई कुलकर्णी

(गतांक से आगे)

आखिर स्वयं विट्ठलजी को इस अनाथ बालिका को प्रसाद देना पड़ा । अपने अभंगों में जनाबाई लिखती हैं— "हाथ में कंघी लेकर मेरे बाल संवारने के लिए भगवान विट्ठल रुक्मिणी जी से कह रहे हैं । रुक्मिणी माता ने बड़े प्यार से मेरे जूड़े बाँधे । मुझे नहलाया ।" सिर्फ इतने से नहीं बना, हर क्षण सब समय पांडुरंग का संग जनाबाई, अनभूत करती थीं । अपने एक अभंग में कहती हैं—

"झाडं लोट करी जनी । कर भरी चझपाणी"

मैं झाड़ू लगाती थी और विट्ठलजी कूड़ा-कचरा लोटकी में भरकर दूर फेंक आते थे । मैं सूखा गोबर इकट्ठा करने के लिए वन में घूमती फिरती तब वे अपने उत्तरीय से गठरी बांधकर माथे पर रख लेते थे । मैं अनाज पीसने के लिए चक्की चलाती और जब थक जाती थी, तब पुकारती थी

"शिणल्या ब्राह्या बा आता ।
येवोनिया लावी हाता ॥"

"पाडुरंग मैं थक गई । हाथ दूखने लगे हैं । जरा आकर चक्की में हाथ लगा दो ना ।" और वे तुरन्त आकर मेरा हाथ बटाते थे । पसीने से तर हो जाते । मैं रुकने के लिए कहती किंतु वे रुकते नहीं थे ।

मैं बर्तन माँजने लगती तो वे स्वयं बर्तन धो देते । मैं कपड़ा धोने लगती तब धुले हुए कपड़े निचोड़कर फैला देते थे ।

मानो दास का साथ देकर स्वयं दास बन जाते थे ।

जनाबाई की विशेषता यह थी कि उन्होंने किसी प्रकार से विशेष साधना जप, तप अनुष्ठान कुछ नहीं किया । दिन रात काम-काज करते-करते वह एकमात्र भगवान का नाम प्रेम से गाती थीं । यही उनकी साधना थी । और भगवान भी स्वयं गाना गाते-गाते काम में सहायता करते थे । कोई-कोई आश्चर्य से पूछता भी था ।" जनाबाई तुम्हारे साथ में दूसरा कौन गाता है? एकमात्र श्री नामदेव महाराज के अलावा इस गायक का दूसरा कोई दर्शन तो क्या अनुमान भी नहीं लगा सकता था ।

इस प्रकार दिन व्यतीत होते होते जनाबाई के जीवन में एक कसौटी का प्रसंग आ गया . एक बार कई मेहमान आये थे । इसलिए अनाज पीसने का काम अधिक था । रात में बहुत देर तक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जना अनाज पीस रही थीं विट्ठलनाथ रोज के जैसे दौड़कर आये अपने गले की रत्नमाला और उत्तरीय उतारकर अपने पास में रखकर उसका साथ देने लगे । जैसे रात चढ़ने लगी, दोनों ऊँघने लगे । दोनों लुढ़क कर वहीं सो गये । जब मंगल आरती का समय हुआ कि अचानक जना की नींद खुल गयी । विठ्ठलजी को उसने आवाज देकर जगाया "उठो उठो । मंगलआरती का समय हो गया है यहीं सो जाओगे और पुजारी तुम्हें मन्दिर में न देखें तो गजब हो जायेगा" ।

भगवान तुरंत जाग उठे । उतावली में रत्नमाला वहीं छोड़कर, तथा अपने उत्तरीय के बदले जनाबाई की फटी पुरानी चादर ओढ़कर शीघ्रता से मंदिर में अपने स्थान पर जा कर खड़े हो गये। मन्दिर का द्वार खोलकर पुजारी जैसे अंदर आये । भगवान को देखकर चौंक गये । एक दूसरे की तरफ देखने लगे । एक दूसरे को पूछने लगे "भगवान का रत्नहार कहाँ गया? और दुशाला की जगह जना की फटी चादर कैसे आयी?" मन की आशंका मिटाने के लिए तुरन्त दौड़ कर नामदेव जी के घर आ गये । जनाबाई को धमकाकर कहते हैं "भगवान का हार तुमने चुराया है । उसे तुरंत वापस करो ।" गिडगिडाकर जना कहती है "मैंने चोरी नहीं की ।" उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं करता हैं । अंदर घुसकर तलाशी लेने लगे तब पता चला कि भगवान का रत्नहार और शाल चक्की के पास ही है । अब तो सब मिलकर जना की पिटाई करने लगे जो वस्तु हाथ लगे उसी से पीटते थे । जनाबाई करुण क्रन्दन कर रही थीं और कह रही थीं मैंने चोरी नहीं की लेकिन उसकी बात पर कौन विश्वास करता ? अंत में उसकी चिल्लाहट सुनकर स्वयं नामदेवजी वहाँ आये । जनाबाई से पूछते हैं "क्यों चोरी की तुमने ।" जनाबाई कहती हैं विठ्ठलनाथ की सौंगध मैंने चोरी नहीं की सब घटना उन्हें सुनायी तब नामदेव जी जान गये कि यह भगवान की लीला है । लेकिन रत्नहार और दुशाला के रूप में सबूत सामने रखने वाले लोगों को समझाना कठिन था । अंत में भगवान की लीला भगवान जानें, ऐसा मन में निश्चय करके लोगों से कहा "मुझसे कुछ मत पूछो । जो तुम्हारे "मन में आये वही करो ।" अब सब मुखिया के पास फरियाद ले गये । जनाबाई को अपराधी साबित किया गया और सूली पर चढ़ाने की सजा सुनाई गयी । अब तक जनाबाई पूर्णरूप से शांत हो गयी थीं । कहती हैं "जो सजा देना चाहते हैं दे दो। परन्तु सजा देने से पहले एक बार मंदिर ले चलो ।" ये बात सबने मान ली । जनाबाई को रस्सी से बाँधकर मंदिर ले गये । भगवान के सामने खड़ी होकर जनाबाई कहती हैं "द्रौपदी ने तुम्हें पुकारा । तब एक ही क्षण में तुम द्वारका से दौड़ आये और दुर्योधन की राज्यसभा में आ धमके। मैं इतनी देर से पुकार रही हूँ तो भी क्यों नहीं आते हो? अब तक सोते जागते हर पल मेरे साथ रहते थे । अब कहाँ छिप गये हो? सब मुझे चोर कहते हैं । उन्हें सत्य घटना बताओ ना क्या मेरे लिए तुम्हें बहुत कष्ट उठाने पड़े इसलिए रूठ गये हो इन सब हीन कामों से छुटकारा पाने के लिए तुमने मुझे ही नष्ट करने की सोची नहीं? कैसे भी हो । भगवान मेरे सारे अपराधों को क्षमा करो। अब तुमसे कभी भी कुछ काम नहीं कराऊंगी । सिर्फ एक बार दर्शन दो । मैं सूली पर चढ़ जाऊँगी कुछ नहीं मागूँगी तुमसे । सिर्फ एक बार दर्शन दो ।" लेकिन कुछ नहीं हुआ । शोक विह्वल जनाबाई आंसू पोछकर पुलासों तथा अन्य भक्त, अभक्त लोगों के साथ चंद्रभागा नदी के तट पर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आर्यी । अपार भीड़ में कोई रो रहा था । कोई उपहास कर रहा था । सूली खड़ी कर दी गयी तब छल करने वाले कोलाहल करने लगे "कितनी देर लगा रहे हो । जल्दी करो शीघ्र इसे सूली पर चढ़ाओ ।" जना को उसी क्षण सूली पर चढ़ाने के लिये सिपाही तैयार हो गये । अत्यन्त आर्त होकर जनाबाई ने कहा "जनी भृणे विठ्ठल मेरठा"

"दिन रात प्रतिक्षण मेरे साथ रहने वाले, मेरे मना करने पर भी मेरे साथ काम करने वाले मेरे एकमात्र माता, पिता, बन्धु सखा इतना पुकारने पर भी तुम दर्शन नहीं देते हो । मुझे झूठा साबित करना चाहते हो, यह सब सुनकर अनसुना कर रहे हो । इसका अर्थ यह है कि अब मर गया है, जिन्दा नहीं है ।"

उसी क्षण सूली वृक्ष बना बाद में वृक्ष का पानी बन गया । सिपाहियों के हाथ के स्पर्श से भी पानी बन गया अब सब जनाबाई में मानो पूर्ण परिवर्तन हो गया सगुण साकार विट्ठलरूप देखनेवाली जना अब अंतर्यामी साक्षात्कारी हो गयी । उसकी अनुभूति स्वयं कहती हैं "देव येथे देव सेये । देवार्पण नाही रिंते ॥"

यहाँ वहाँ सब जगह मेरा विठ्ठल भगवान ही है मैं भगवान ही खाती हूँ । भगवान ही पीती हूँ मेरी शय्या भी भगवान है । जो कुछ लेती हूँ, वह भी भगवान ही । ऐसी कोई जगह नही जहाँ मेरा भगवान नहीं है । मानो यह एक अज्ञ अशिक्षित दासी "सर्वं खल्विदं ब्रह्ममय" हो गयी है अपनी इस अनुभूति के साथ अहर्निश काम करते करते भगवान नामस्मरण करने का दिव्य संदेश देनेवाली जनाबाई ईस्वी सन् १३५० में भगवान के चरणों में लीन हो गयीं सन्त सम्प्रदाय में यह माना जाता है कि जनाबाई के अभंग विठ्ठल भगवान लिखकर रखते थे । श्री नामदेवजी की यह शिष्या विठ्ठल भक्ति का जागृत प्रकाश ही है ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नाम महिमा

—ब्रह्मचारिणी जया भट्टाचार्य

श्रीमद्‌भागवत में द्रुमिल ऋषि कहते हैं कि भगवान के अनन्त नाम और अनन्त गुण हैं जिनका वर्णन कोई नहीं कर सकता भले ही पृथ्वी के रजकण को गिन ले । इसी प्रकार माँ के विषय में कुछ कहना, किसी भी व्यक्ति की सामर्थ्य से परे हैं क्योंकि माँ अनन्त हैं उनकी कथा भी अनन्त है । हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता ।

दिल्ली आश्रम की स्वर्ण जयन्ती के समय माँ के विषय में कहने का अवसर मिला यह माँ की असीम अनुकम्पा है । मेरा सौभाग्य है कि उन लोगों ने उक्त अवसर प्रदान किया इसलिये मैं आभारी हूँ ।

आश्रम में प्रवेश करते ही नाम ब्रह्म मन्दिर का दर्शन होता है । जहाँ लिखा है —

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥"

नाम ही ब्रह्म है । ब्रह्म के सहारे सारा संसार चल रहा है । एक क्षण भी उनके नाम के बिना नहीं चलता, श्वास-श्वास में भगवान का नाम लेना चाहिये ।

एकबार माँ के साथ देहरादून से दिल्ली जा रहे थे । रास्ते में मेरठ में मोटर से एक छोटी बच्ची को धक्का लग गया और उसके दाँत टूट गये । असन्तुष्ट लोगों ने माँ की मोटर को घेर लिया । माँ मोटर से निकलकर एक बेल के पेड़ के नीचे जाकर बैठ गयीं और कीर्तन करने लगीं । थोड़ी देर में सम्पूर्ण वातावरण बदल गया । असन्तुष्टों का असन्तोष श्रद्धा में बदल गया, मैं अवाक् हो गयी उस मोटर में मैं भी माँ के साथ थी ।

नाम का महत्व मैं क्या सुनाऊँ । नाम का इतना महत्व है कि अभी भी दिल्ली आश्रम में नाम ब्रह्म मन्दिर में हर महीने के आखिरी रविवार को हरे कृष्ण नाम कीर्तन सूर्योदय से सूर्यास्त तक होता है । सूर्यास्त के बाद अर्थात् कीर्तन समाप्त होने के बाद भी रात भर वही नाम हाल में गूँजता रहता है । नाम की यही महिमा है । वैसे भी देखा नामयज्ञ में माँ भोग में बैठी हैं पर हाथ ऊपर उठाकर कीर्तन कर रही हैं । भोग में माँ का मन नहीं है, भाव विभोर होकर माँ कीर्तन कर रही हैं ।

माँ ने कहा "बन्धु-बान्धवों को लेकर सर्वदा कीर्तन करना । इसकी सुविधा न होने पर जहाँ कीर्तन हो वहाँ जाना, नाम स्मरण करते-करते कीर्तन का भाव आता है और कीर्तन करते-करते जप ध्यान धारणा आती है" । "पूजा अर्चना में जैसे निष्ठा लेकर कर्मादि का विधान है, कीर्तन भी उसी प्रकार करना आवश्यक है । एक सुर एक ताल होना ही अच्छा है । जिसके लिए कीर्तन करते हो उसका स्मरण करो, नहीं तो वाद्योत्सव होगा, नाम कीर्तन नहीं ।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"शहर में चौबीस घण्टे जल पहुँचाने के लिए जैसे दिन रात पानी के इंजन को चलाना आवश्यक है, उसी प्रकार हृदय को भगवद् रूप से पूर्ण करना हो तो अविराम भजन आवश्यक है, तत्त्वविचार, जप, ध्यान, लेकर रह सको तो बहुत ही अच्छी बात है । और यदि न रह सको तो कीर्त्तन, पूजा, यज्ञ पाठ देवदर्शन, साधुसंग, तीर्थभ्रमण और अन्यान्य सत्कार्यादि लेकर लगातार ईश्वर की चिन्ता मन में रखने की चेष्टा करो ।"

१९५५ में दिल्ली में काली बाड़ी में संयमसप्ताह हुआ था । किसी ने पूछा —"माँ, संयमसप्ताह में हम लोग क्यों आते हैं ?" माँ ने उत्तर दिया, "अपने आप आ गये, कोई रस्सी से बाँधकर तो नही लाया । अपने आप अपने स्थान पर बैठे हैं, अपने पास अपने स्थान पर, क्योंकि अखण्ड प्रकाश नहीं है, सो उस अखण्ड प्रकाश के होने के लिए बैठे हैं । एक है! अपने पास अपने ही भगवान की सेवा और दूसरा है अपने में आप ही यानी एक आत्मा । इसी कारण स्वाभाविक है कि आनन्द पाने के लिए कोशिश करना । अपने खेल में मग्न है जो नाम रूप में है उन्हें वे पसन्द नहीं करते । इसलिए यहाँ आते हैं । यह शरीर तो कहता है कि हे भगवन् यह सब तुम्हारा ही विग्रह है सब । अपने प्रकाश के लिए कोशिश करना ।"

संयम सप्ताह में ९ से ९.३० तक सत्संग होता था । माँ के साथ प्रश्न उत्तर होता था । उस समय किसी भक्त ने माँ से प्रश्न किया था कि संसार में कर्त्तव्य करें तो भजन में विघ्न आता है और भगवान का भजन करने से संसार के काम में विघ्न आता है । क्या करें ? माँ ने बहुत ही सरल और मधुर भाषा में उत्तर दिया ।

"यह शरीर तो सदा ऊटपटांग बातें करता है । महात्माओं से तुम लोग हमेशा सुनते रहते हो कि जहाँ रहो वहाँ तत्बुद्धि से रहने की कोशिश करो । बालक के रूप में कौन है ? साक्षात् बाल गोपाल का ही रूप समझो । पत्नी को देवी का रूप समझो । पति को नारायण का रूप समझो । सब रूप में हैं भगवान ! हे भगवान! तुम ही हो । व्यक्त रूप में । अव्यक्त रूप में तुम ही हो । तुम सेवक बन जाओ । ठाकुर घर के सब कार्यक्रम करो । केवल सेवा भाव रखो ।"

२६ नवम्बर १९५७ में दिल्ली में संयम सप्ताह महाव्रत हुआ था । कथा प्रसङ्ग में माँ ने कहा — "आज सुबह ध्यान में ८ से ९ बजे के बीच किसी ने कहा कि आज ध्यान बहुत अच्छा हुआ । कई व्यक्तियों को ध्यान में विशेष आनन्द का अनुभव हुआ । उस समय इस शरीर ने देखा, यहाँ नाम ब्रह्म मन्दिर के मध्यभाग में हरि बाबाजी की ओर मुख करके हनुमान जी लम्बा चौड़ा जिनका शरीर है । और मुँह सफेद है । दूसरी ओर एक पुरुष को देखा, जिसके बाल घुंघराले तथा गौरवर्ण है वह खड़ा है एवं किसी के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दे रहा है सिर पर पगड़ी पहने एक ग्वाल बालक भी वहाँ बैठा है । उसके बाद एक गौरवर्ण बालिका को देखा और फिर देखा खेलता हँसता हुआ एक बालक ने पिताजी हरिबाबाजी से कहा कि आप रामअर्चना करते हैं, एक बार यहाँ भी करें । पिताजी ने कहा कि यहाँ महावीर जी को देखा, लेकिन महावीर जी की कोई तस्वीर हॉल में नही हैं । चन्दन से द्वादशाक्षर मन्त्र लिखे हुए तुलसी पत्र कमला को जड़वाने के लिए दिया था । दूकान में उसने महावीर जी की तस्वीर देखी और उसके मन में ऐसी प्रेरणा हुई

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कि यह तस्वीर ले चलें, इस शरीर ने इस विषय में उससे कुछ कहा नहीं था, महावीर जी ऐसे अपने आप प्रकट हो गये थे ।'' ''फिर किसी ने प्रश्न किया आपने जिस बालिका को देखा था, उसका स्वरूप कैसा था ?'' ''माँ ने उत्तर दिया गौरवर्ण की बालिका जैसे किसी गाँव की होती है बड़ी खिली हुई ।'' किसी ने कहा — ''आज मंगल का दिन है ।'' माँ ने कहा — ''मंगलवार को हनुमानजी प्रकट हो गये ।'' किसी ने प्रश्न किया — ''आप आश्रम बनाती हैं । सुना है कि आपने इस आश्रम का नक्शा बनवाया है ?'' माँ ने कहा ''यह शरीर कभी आश्रम नहीं बनाता। यह शरीर जब शिमला में था, तब रोज कीर्त्तन होता था, भक्त लोग भी इस शरीर को कीर्त्तन में ले जाते थे । उन लोगों ने कहा ''माँ एक आश्रम होना चाहिये ।'' ''इस शरीर ने कहा आश्रम वाश्रम तुम जानो । भगवान का घर बनाओ । इस बात को लगभग २० साल हो गये । असली आश्रम तो (सबको दिखाकर) सब के अन्दर में है ।''

३ मई १९५८ सन् में कलकत्ते में संयम सप्ताह हुआ था माँ ने कहा — ''नाम लेते लेते नाम हो जायेगा । नाम लेना एक चीज है । और नाम होना दूसरी । नाम जब तक प्रगट न हो नाम लेना मत छोड़ना । कहते हैं न

बनत बनत बन जाई ।''

किसी सन्त ने कहा है —

पीया नहीं हरिनाम सुधा रस,
श्रवण किया गुण ग्राम नहीं
दिया न दान कभी दीनों को
लिया ज्ञान गुरु धाम नहीं
जिया व्यर्थ आकर फिर जग में, हुआ जो
रसिया राम नहीं, छूट जाय सब कुछ, पर छूटे
रसना से हरिनाम नहीं

१९५७ सन् में दिल्ली आश्रम के संयम सप्ताह में माँ ने कहा — ''भगवान का नाम लो पाठ करो, जप करो, ध्यान करो तत् ज्ञान से सबको प्रणाम करो । सुबह उठते समय पृथ्वी माता को स्पर्श करके प्रणाम करो और प्रार्थना करो हे पृथ्वी माँ तुम कितनी सहनशील हो । हमको भी सुख दुःख सहने की ताकत दो, हमें गुस्सा आकर कभी न सताये । इससे मन में श्रद्धाभाव आयेगा । सूर्य क्या है? ज्ञान का प्रतीक सूर्य है, ऐसे सूर्य को प्रणाम करो इसी तरह सारा दिन भगवद्भाव को लेकर काटना अच्छा है । तुम में से कोई-कोई ८ बजे उठते होंगे । मगर यहाँ संयमव्रत में तुम लोग अपने आप उठने लगे । अब कष्ट नहीं होता आदत हो गई है । रात को जल्दी सोकर ब्राह्ममुहूर्त में उठ जाना चाहिये । ऐसा करने से सात्विक गुण की वृद्धि होती है । सब काम भगवद सेवा भाव से करो । भगवान के मन्दिर में सेवा करो । सारा विश्व भगवान का मन्दिर है । मैनेजर बन कर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रहो । मालिक न बनो । सबको सोते समय ध्यान जप करके नमस्कार करके सारे दिन में जो गलतियाँ हुई हैं, उनके लिए क्षमा प्रार्थना करो । जिसके प्रति अपराध किया है उससे मन ही मन क्षमा माँगो । ऐसा करने से श्रद्धा भक्ति की लाईन खुल जाती है । सोते समय ऐसा सोचो कि भगवान के चरणों में सिर रखकर सोये हैं । नाम के महत्व का वर्णन करते हुए तुलसीदासजी कहते हैं ।

भाय कुभाय अलख आलसहूँ
नाम जपत मंगल दिसि दस हूँ
नाम प्रसाद संभु अविनाशी
साजु अमंगल मंगल रासी
सुमिरि पवनसुत पावन नामू
अपने बस करि राखे रामू
जपतु अजामिल गजु गनिकाऊ
भर सुकृत हरि नाम प्रभाऊ,
कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई
राम न सकहिं नाम गुण गाई

श्री चैतन्य महाप्रभु ने नाम का प्रचार किया । कलियुग में नाम ही महासागर को पार करने का एक मात्र सहारा है —

हरेर्नामैव हरेर्नामैव हरेर्नामैवकेवलम् । कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा

अतः श्री श्री माँ का यह वाक्य हमें सदैव ध्यान में रखना चाहिये ।

"हरि कथा ही कथा और सब व्यथा वृथा"

जय माँ

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'पूजनीय गंगा हजूर के स्मरण पुष्प'

— सीतारानी

मातेश्वरी नर्मदा से सिंचित मेरी ससुरालय के पुण्य क्षेत्र भर में "हर नर्मदे" के उद्गारों के अतिरिक्त जगत-पावनी गंगा भी बहुत उच्च स्थान में विराजित हैं । घर-घर में पूजनीय निकट जन 'गंगा' स्मरण के साथ पुकारी जाती है गंगा, गंगावऊ, गंगा हजूर । जिस शाब्दिक उच्चारण के साथ अवचेतन शुद्ध होने की आशा लगाये रखता है जन-मानस ।

मेरी 'गंगा हजूर' (रानी सासजी) धर्म-परायण, भाग्य-शालिनी, कुलवधू थीं । अपनी 'चोखी-हड्डी' होने का बहुत नाज था उन्हें ।

भूख-थकान की सहनशीला, उपवास परायणा, मेरे स्वर्गीय पूज्य पतिदेव युवराज श्री देवी शाहजी की जननी मकड़ाई की यह रानी उमा कुंवर साहिबा तीन-तीन दिन की तीर्थ यात्रा के राह में जल भी न ग्रहण करके भी 'दीप्त' दिखती थीं । लगातार उपवास व रात्रि जागरण के बाद भी 'उज्जवल भोर का तारा, बनी रहती थीं । वर्ष भर का कोई उपवास नहीं छूटा उनसे । साधारण से साधारण कार्य में भी उनकी लगन व अंगुली संचालन विधि कलात्मकता लिये दृष्टि मुग्धकारिणी होती थी । सुरुचिपूर्ण ढंग से कार्य निपटाते उनके भाव, दूसरों के लिए प्रेरणादायक बनते थे । वैदिक कर्मकाण्डों से उनका शौर्य दमकता था । पुराने बड़ा पैसा के आकार का माथे की आभा बिखेरती काँच की 'टिकुली' में उनकी वृद्धावस्था तक के सोहाग का राज समाया रहता । सदा सुहागोचित वस्त्राभूषणों से मंडित विराजमान रहती थीं । जीवन के उत्तरार्ध में जाकर पुत्र शोक ने आधी रख दिया उनको । पुत्रवधू के सिंगार उतरने के साथ उनकी देह में मात्र जरूरी सोहाग-चिन्ह रह गये थे । महल में अनुष्ठित पूजा-महोत्सव के प्रसादी कुंकुम ग्रहण करने के समय मुझ निराभरणा के बगल में मेरी सास को अपने आप को संभालने में मुश्किल पड़ते मेरी आखों ने देखा है ।

आज तो वे अनंतलोक की यात्रा को निकल पड़ी हैं । उनके नैपथ्य यात्रा का ६ माह का पड़ाव आने ही वाला है । उनके 'पथ श्रम' कम कर पावे, यह (स्मरण-पुष्प, इसी आकांक्षा से 'पथ' में सुमन बिछाते जल सींचते हुये उद्वेग का यह सत्योन्मुखी जत-किंचित प्रयास है ।

उनके विशाल परिवार के सकल आबाल वृद्ध उनके चरण-प्रताप से 'सत्य-प्रतिष्ठित जीवन वहन कर रहे हैं । सबको शान्ति सम्पन्न एवं ऊर्द्धचेता देख जाना उनका भी सौभाग्य है ।

उनके स्मृति चिन्ह स्वरूप 'अंतिम कुछ वर्ष की यादें एवं उनसे पाये कुछ मधुर-क्षण को 'ऊर्द्धपथ में गतिमान' उनके श्री चरणों में चढ़ाकर, विश्व भरण-पोषणरत विभु को पूजा अर्पण करती हूँ ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उत्तरार्धं के कुछ अंतिम वर्ष लगते ही उनकी स्मरण शक्ति क्षीण हो चली थी । जो सोच-विचार जीवन में बहुबार दोहराये गये थे यानी वृत्ति (आदत) में शुमार होकर विराजमान थे, उसके सिवाय और कोई बात याद नहीं आती । नैहर/सागर म.प्र./ होने के कारण वहाँ की लालियत भरी बोली ही बोलती थीं । अपने माता पिता, मामा-पति-सास याद आते तो उन्हें जीवित ही मानतीं । अपनी संतानों की विशेष याद नहीं । अपने सामने असमय प्रस्थान कर गये बाल-बच्चेदार प्रथम पुत्र का भी स्मरण विधाता ने उन्हें कलपते दिन न बिताये इसलिये शायद स्मृति की ओट कर दिये थे । मैं काफी देर से गर निकटी बनी रही तो 'बहू' है सोचती हैं तो भी आत्मा में थोड़ा सा मधुर आभास के अतिरिक्त सारी बातें नदारत उम्र की लम्बी सीमा तक 'अहिभांती' रहीं । स्मरण न आने के कारण, अपने आप को सोहागिन ही मानकर कांच की चूड़ी, टिकुल, रंगीन साड़ियों की फरमाइश द्वारा मस्तिष्क के उर्वरकता को संतोषित करती थी । तारनहार सब के ईश्वर हैं इस बात की विस्मृति नहीं देखी गई । एक बात उनकी वाक्य धारा में वर्षों से रह आयी थी ''करबद्ध दोई हाथ अपने 'भाल' से सटाकर कहा करती थीं ।

''सबको भली करियो प्रभुजी
ता पीछे हमरो करियो ।''

होशंगाबाद में रहते, अपने से अतिदूर सदा दिन कागज-कलम में व्यस्त 'नीरव' मुझे देखकर कहती 'कम्मर टेढ़ी हो जायेगी बेटा ! कुछ कम्मर को भी आराम देउ, दिनरात ही लिखत् हो ! और एक दिन मुझसे बोलीं ''का लिखत हो सो हमें भी सुनाओ ।'' मैं उल्लास में बोली ''अहो भाग्य मेरी, मेरी सासजी ने मेरी लिखी सुनना चाही । पर कविताएं (तव मुझे गद्य लिखने की स्फुरण नहीं जागा था । आपको समझ न आए शायद . ''वे दृढ़ता पूर्वक जोर गले से बोलीं ''हम नहीं समझे तो का, भगवान तो समझत् है ।'' उनसे इस ज्ञान-सिंचन की फुंहार पाकर बड़ा ही गर्व व हर्ष मुझको व्याप्त हुआ । मैंने कई कविताएँ अर्थ सहित सुनाई, । बाद उनको अनमनी देखकर 'सरल-सुबोध में ध्यान लौटाने के उद्देश्य से' सहज समझ में आने वाली ईश्वर-वन्दनाएँ याद कर के गाने लगीं । सुनती रहीं वे कभी मौन रहकर कभी ताली बजाकर । बड़ी देर बाद ईश्वर के प्रति श्रद्धा चढ़ाती हुई विनीत-उसाँसों में भरके बोलीं ''तुम्हरो मन में राम बैठो है बेटा! सो लिखत् हो । इसे तो कच्छू नाई यों जो भगवानजी महाराज की इच्छा'', कहके दोनों हाथ जोड़ माथे से लगाई ।

बाल-सरूप होती जाती मेरी सासजी को मैंने देखा इस वक्त सतसंग के अभाव से उनका बाल-अबाध्य' मन 'साड़ी-टिकी' की चिन्तना' को ही खिलौना बना, दिन भरने लग गया । उनके खाली मन को ईश्वर-चिन्तन में मोड़ने के अभिप्राय से खण्डवा में मैं फर्श पर 'दरी' परं बैठ, उनसे आज्ञा लेकर, भजन सुनाने लगी । बहुत देर भजन सुनाके, यहाँ वहाँ टहल के विराम लेने के बाद भी उसी स्थल लौट के, जिससे उनके 'ध्यान केन्द्रस्थ ही रहे मैं अपनी गायन-अभिसार में ही लगी रही । रागों के तन्तुओं में गुँथे हरिनाम के रस में मेरा चित्त उत्फुल्ल डूबा जा रहा था, और मैंने देखा जो मेरी 'केन्द्र' थीं, वह भी केन्द्रस्थ होती जा रही थीं, तब लगा 'क्या अपूर्व-संयोग है' मेरा व उनका

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मन-अखिलात्मा के श्री-चरणों में आज काफी समय से जुड़ा हुआ है । आकाश-गंगा के अस्नान में मैं तो मंत्र-मुग्ध हो समय पार कर रही थी, सासजी की चेतना-चुहलमय-रसिकता में भीगा हुआ लौटा । एकाएक मुस्कान भरे प्रफुल्लता से बोलीं'' यह इत्तो जो गावत हो, भगवानजी के पास फीर का निकरो?'' वाक्य की गहनता ने मुझे रोमांचित किया । अपनी अतृप्त श्रवणेन्द्रिय को ''तृप्ति देने मैंने फिर प्रश्न किया ''क्या हजूर!'' वे बोलीं ऐ'' इत्तो जो तबसे (और भी हँसती हुई) मुंह फाड़ रही हो, हम केहेत् हैं कि फिर भगवान जी महाराज के पास का निकरो ?'' सुनके मैं तो दंग रह गई । बेसुध जानी जा रही मेरी सासजी की आत्मा में अमोघ पुण्य एकत्रित है । धन्यमारा हुई-मैं जानकर कि सत को समर्पित सेवा'' यथा स्थान पा गई' । सासजी की चित्त को 'मनोयोग से सुनने की जागरूकता देखकर, मूल्यवान समय को सद-उपयोग में लाने/ ईश्वरीय वातों की आवृति' जो भी ईश्वरानुग्रह से बन पड़ा, अपने को बडभागी समझते हुए उन्हें अन्जलि चढ़ाती रही, 'उन अशक्त माननीया को जो बिछावन में ईश्वरीय दिश में बैठी मेरी ओर हर्षातिरेक से टकटकी लगाए थीं । यही निवेदन करती रही कि ''उनको पुकारने से बहुत कुछ समझ उत्पन्न होता है हजूर ! हम कहां से आएं, कहां जाऐंगे, जीवन क्या है, कैसे बिताना चाहिए । पर-उपकार करना, किसी से डाह ईर्ष्या न करना, सबको अपना देखना, क्षमाशील होना, सबकी भलाई में अपनी भलाई देखना, और जीवन देने वाले जिस बात से राजी रहें वही बात करते हुए अन्त में बहुत हलकान्-चित्त से शरीर छोड़, उनके श्री पद में स्थान पा जाने की बात समझ में आने लगती है हजूर आपका आशीर्वाद रहेगा गंगापुर । मैं भी हलकान होकर ईश्वर के चरण रेणु में थोड़ा स्थान पा सकूं'' कहके उन्हें मैंने धरणी में माथा टेक प्रणाम किया ।'' हाँ.. बेटा! काय नहीं । सबको भलो करे ईश्वर, सबको सबको ।'' और उन्होंने ईश्वर के उद्देश्य से दोनों कर बद्ध हाथ बहुत देर तक माथे से लगाये रखे ।

मंझली बहूरानी ने हम सास बहू की पहली बार जीवन में फोन से बातचीत कराईं । 'मैं भोपाल में वे खण्डवा में । मैं बोली ''गंगा हजूर! पाव लागूंजी ।'' वे बोली ''काय .... अरे राम, राम, राम, राम मैं ही लागूँ तुम्हारे पायँ ।'' मैं अपदस्थ । मैं बोली अपन ने मुझे पहचानी नहीं शायद आवाज में ।'' तो पौरूषता पूर्वक बोली काय नइ पहचानी, तुम तो उते की हो के रह गईं, आवो तो सही, मैं ही तुम्हारे पाव लागलु'' मैं अचम्भित । दो एक दिन में ही पहुंचती हूँ कहने पर बोलीं '' हाँ जल्दी अईयों ।''

मकड़ाई के हम पंक्षि के जोड़ेन, सदा, राजा-श्वसुर एवं रानी-सासजी के भवन के 'आलो में ही बच्चे बड़े किये, घोंसला बुने ही नहीं । संतानों के उच्च शिक्षा के लिए अलग-अलग वृक्षों में बसेरा बदलते रहे । जिसे जगत 'सेवा कहता है, वह शायद नहीं बन पाया होगा । पर वैसे भी माता-पिता के ऋण का भार कौन उतार सकता है, हम तो जन्म-जन्म तक उनके ऋणी हैं ।

यही तो लेखन में ईश्वर-अर्चन करने का चाव जागा है, क्या अखिलात्मा बिथू के सङ्ग-सङ्ग, उन पुजनियों के आशीर्वाद 'फलित नहीं हैं?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

न तो यह सब आख्यान अपनी आत्म-प्रशंसा को लिखा गया है, न पूर्वजों के रिकार्ड नत्थी करने के उद्देश्य लेकर, ना ही लेखन शैली के गर्व बटोर ने । लिखा है केवल जगत-नियंता की पूजा को जो उन्हीं के सिरजाये भाव सुमन से उन्हीं को अर्घ्य समर्पण करने के उपक्रम में ।

सास एवं ससुराल की जितनी महिमा गाऊं थोड़ी है । महामहिमों के श्रीमुख से कभी सुनने का अवसर मिला था कि 'हमारे आदर्श-पुरुष राम के मुख से महाकवि वाल्मीकि जी ने कहलवाया है, भाई लक्ष्मण के साथ अयोध्या को याद करते हुए 'राजीव-नयन' कहते हैं,—

अपि स्वर्णमयी लंका, नमे रोचते लक्ष्मण
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।
राम रमापति रमे रहो प्रभु रमणीय चित करि मोर
रम्य ये तब भवमंच मांहि हे ! रहित कलुष चित होय ।
रमू न भव-वारिध महि हरिजी, राह सत्य की त्यागी
राही तो नांदानी-अकिंचन, रखिय चरणः मंह वाधि ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ के बैरागढ़ आश्रम में संत मोरारी बापू

श्री श्री माँ आनन्दमयी आश्रम बैरागढ़ के लिए १ अप्रैल २००५ एक अविस्मरणीय दिन के साथ ऐतिहासिक दिवस के रूप में परिणत हुआ । भोपाल के सुविख्यात संवाद पत्र दैनिक भास्कर परिवार द्वारा आयोजित २६ मार्च से ३ अप्रैल २००५ तक श्री रामकथा महोत्सव के महान् कथा वाचक राष्ट्रीय संत पूज्य श्री मोरारी बापू उनके सादर निमन्त्रण पर २५ मार्च २००५ को पहली बार मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल पधारे थे ।

अपनी इस पहली भोपाल यात्रा के दौरान अत्यन्त व्यस्त कथा कार्यक्रम के चलते हुए भी आप थोड़े समय के लिए अपने निवास स्थल से प्रायः १५ किलोमीटर की दूरी पर स्थित माँ के इस आश्रम में पधारे यह आपकी सहज सुन्दर श्रद्धा का द्योतक है जो कि एक सच्चे संत का स्वाभाविक परिचय होता है ।

पूज्य बापू कथा के लिये पहली बार भोपाल पधार रहे हैं इस संवाद से अवगत होने पर संघ के मुख्य साधारण सचिव स्वामी भास्करानन्द जी ने अपने महुआ प्रवास के दौरान बापू से मुलाकात होने पर उन्हें यहाँ पर आने का निमन्त्रण दिया था,

पूज्य. बापू के साथ कथा सुनने के लिए आयी मुंबई की श्री श्री माँ की भक्त सुश्री माधवी बदियानि का भी अत्यन्त आग्रह था कि पूज्य बापू यहाँ आये, साथ ही बैरागढ़ आश्रम वासियों की वर्षों की यह कल्पना थी कि पूज्य बापू कभी भोपाल आयें तो माँ के चरणपूत इस स्थान पर सर्वप्रथम पधारें, आज श्री श्री माँ की कृपा से यह वर्षों की कल्पना के साकार होने पर आनन्द की सीमा नहीं थी । सन् १९९५ में श्री श्री माँ की शताब्दी समारोह पर दिसम्बर महीने में दिव्य जीवन संघ के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द जी का यहाँ पदार्पण हुआ था, और आज दस वर्ष के अन्तराल में सच्चे अर्थों में एक महान् संत का यहाँ पदार्पण श्री श्री माँ की दिव्य महिमा को प्रकट करता है । सन् १९६५ से १९७७ पर्यन्त कुल ६ बार श्री श्री माँ का यहां पदार्पण हुआ था ।

श्री श्री मां के पदार्पण से यह स्थान तीर्थ रूप में परिणत हो चुका है तभी तो महान् संत केवल मात्र माँ के नाम से यहाँ आते हैं "तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि—

श्री रामचरित मानस की यह पंक्तियाँ भी यहाँ उचित बैठती हैं "प्रभु सर्वज्ञ सर्वत्र समाना प्रेम ते प्रगट होहिं मैं जाना ।" श्री श्री माँ ने यहाँ के लिए सर दातार सिंह जी के उद्देश्य से कहा था, "पिताजी ने प्यार से बुलाया था इसलिए यह शरीर वहां गया ।" श्री श्री माँ की करुणा अपार है ।

पूज्य बापू सन्ध्या की वेला में पधारे स्कूल के बच्चे एवं आस पास के श्रद्धालु जन काफी संख्या में उपस्थित थे । पूज्य बापू के आने के मार्ग में दोनों ओर कनातों पर "ओम माँ श्री माँ जय जय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ तथा श्री राम जय राम जय जय राम के पोस्टर लगे हुए थे । पूज्य बापू के गाड़ी से उतरने पर शंख ध्वनि एवं वैदिक मंत्रों से उनका स्वागत किया गया । पूज्य बापू को श्री श्री माँ के कमरे में ले जाया गया, बापू ने माँ के चित्र पर पुष्प माला अर्पित की, तदनन्तर श्री हनुमान जी के मन्दिर में पुष्पमाला अर्पण कर सामने संगमरमर के चबूतरे पर बिछाये हुये आसन को पूज्य बापू ने स्वीकार किया । पूं. अशोक शात्री ने आश्रम की ओर से चन्दन तिलक एवं फल पुष्प भेंट किया, इस अवसर पर आश्रम संचालिका कृपाल कौर जी उपस्थित थीं ।

पत्रकारों द्वारा पूज्य बापू को कुछ कहने के लिए आग्रह करने पर पूज्य बापू ने कहा "मैं तो दिन भर बोलता ही रहता हूँ, विनोबा जी कहा करते थे बच्चे दिल के सच्चे और सब कच्चे" पूज्य बापू की जिज्ञासा पर आनन्दमयी शिक्षा उपवन के प्राचार्य श्रीमान् राम नारायन तिवारी ने स्कूल की गतिविधियों पर सामान्य प्रकाश डाला । बच्चों ने प्रतिदिन कही जाने वाली बच्चों के लिए कही हुई श्री श्री माँ की पाँच बातें एवं प्रार्थना सुनाई ।

अत्यन्त व्यस्त कार्यक्रम के कारण पूज्य बापू ने अब विदा लेने की इच्छा प्रकट की । आश्रम की ओर से दी गयी फलपुष्प की भेंट को माँ का प्रसाद कहते हुए बापू ने प्रेम से स्वीकार करते हुए अपनी गाड़ी में रखने को कहा और बापू ने इस प्रकार विदा ली ।

थोड़े समय के लिए ही क्यों न हो "सत्य प्रेम करुणा" के इन महान् उपासक ने अपनी संत सुलभ सहज सादगी से सब को मोह लिया एवं साथ ही श्री श्री माँ की अपार अपरिसीम करुणा ने सबको आप्लावित कर दिया ।

जय माँ

●

उत्सव-तालिका

१.	श्री श्री वासन्ती पूजा	—	१५-१९ अप्रैल
२.	श्री श्री माँ का शुभ जन्मदिवस	—	३ मई
३.	अक्षय तृतीया	—	११ मई
४.	श्री श्री माँ की शुभ जन्म तिथि	—	२६ मई रात्रि में
५.	बाबा भोलानाथ की निर्वाण तिथि	—	१७ मई
६.	गंगा दशहरा	—	१७ जून
७.	गुरु पूर्णिमा	—	२१ जुलाई

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आश्रम-संवाद

१. कनखल : —

कनखल में श्री श्री माँ के आश्रम में विगत १३ फरवरी को श्री सरस्वती पूजा सुष्ठुरूप से संपन्न हुई । यथावत् महाशिवरात्रि व्रत पूजन अनुष्ठान भी ८ मार्च को विशेष समारोह के साथ मनाया गया । प्रसिद्ध पर्व होली पर भी भली भांति पूजा हुई । आगामी १४ अप्रैल महाविषुव संक्रान्ति की पवित्र तिथि में श्री श्री मुक्तानन्द गिरिजी की पूजा एवं साधुसेवा अनुष्ठित होगी ।

२. वाराणसी : —

अंग्रेजी वर्ष के प्रथम मास १४ जनवरी के पौष संक्रान्ति के दिन सावित्री यज्ञ के प्रारंभ एवं पूर्णाहुति के उपलक्ष में उदयास्त महानाम संकीर्तन एवं सब मन्दिरो में मिष्टान्न आदि का भोग हुआ ।

२३ जनवरी को नेताजी के जन्मदिवस पर उनके देशसमर्पित जीवन के प्रति भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई । राष्ट्रीय पर्व २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस का अनुष्ठान भी तिरंगा झंडा फहराकर, देशगान, कवितापाठ, शहीदों के प्रति श्रद्धाञ्जलि ज्ञापन कर मनाया गया ।

कन्यापीठ के विद्यामंदिर हॉल घर में विद्याधिष्ठात्री देवी सरस्वती का पूजन संपन्न हुआ । नाना प्रकार के फूलपत्तियों वस्त्रालंकारों से मंडप सजाया गया । रक्त वर्ण के रेशमी वस्त्रों के बीच शुभ्र पर्वत के मध्य सरस्वती की प्रतिमा बड़ी आकर्षक लग रही थी । सफेद बेले की लरियों से तथा बन्दनवारों से मंडप सुसज्जित कर पूजा संपन्न हुई । रात को एक प्रसिद्ध वायलिन वादक ने वायलिन बजाया । इस दिन भोग के उपरान्त कुछ विदेशी भक्तों ने भी प्रसाद पाया, २३ फरवरी सायंकाल वार्षिक माघी पूर्णिमा के दिन चण्डीमंडप में श्री सत्यनारायण की पूजा की गई ।

साक्षात् शिवलोक काशी में शिवचतुर्दशी की रात में सभी लोग शिवाराधन में तत्पर दीखते हैं । आश्रम में भी सर्वत्र गोपाल मंदिर में, विपिनेश्वर में, पंच शिवजी के मंदिर में, अन्नपूर्णा मंदिर में चण्डीमंडप में, कन्यापीठ में सामूहिक शिवपूजा हुई । लाउडस्पीकर से मन्त्रध्वनि एवं कीर्तनध्वनि चारों ओर गूँज रही थी । इसके उपरान्त २८ मार्च को होली आयी । होली की पूर्व संध्या में कन्यापीठ के प्राङ्गण में श्रीनारायण जी का अधिवास एवं होलिका दहन हुआ । दूसरे दिन प्रातः काल नारायण का षोडशोपचार से पूजन एवं गोपाल जी को गुलाल चढ़ाने के उपरान्त गोपालजी का अभिषेक, नवीन पोशाक धारण कराकर स्वणलिंकारों तथा कलकत्ते से लाए गए फूलों के गहनों से श्रृंगार एवं पूजन संपन्न हुआ ।

१४ अप्रैल संक्रान्ति के दिन श्री श्री गिरिजी का विशेष पूजन एवं भंडारा संपन्न हुआ ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

३. आगरतला : —

त्रिपुरा की राजधानी आगरतला के श्री श्री माँ के आश्रम में आश्रम की अधिष्ठात्री वाग्देवी सरस्वती की पूजा १३ फरवरी को भक्तों ने बड़ी अच्छी तरह से की । भजन कीर्तन के उपरान्त सबने प्रसाद पाया । श्री श्री आनन्दमयी संघ आगरतला शाखा की ओर से सुनामी लहरों से पीड़ितों के लिए सहायता प्रदान की गई ।

४. तारापीठ : —

तारापीठ आश्रम में २४ फरवरी गुरुवार को माघी पूर्णिमा की पुण्य तिथि में श्री श्री माँ की षोडशोपचार पूजा एवं वार्षिकोत्सव अनुष्ठित हुआ । इस अवसर पर दो दिन का कार्यक्रम इस प्रकार बना :—

२३ फरवरी सायंकाल अधिवास एवं आरती के पश्चात ८:३० पर्यन्त सत्संग एवं भक्तिगीत के उपरान्त मौन के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया । २४ फरवरी श्री श्री तारा माँ के मंदिर में पूजा के अनन्तर नगर भ्रमण एवं कीर्तन, श्री श्री मां की पूजा, कुमारी पूजा, चण्डी पूजा, शिवमंदिर में शिवपूजा, गीताचण्डी पाठ, एवं विष्णु सहस्रनाम पाठ, कीर्तन,भोग, आरती के पश्चात होम हुआ । हवन के पश्चात साधुभंडारा, ब्राह्मण भोजन, एवं प्रसाद वितरण किया गया । शाम को रामायण पाठ, सायं आरती, माँ नाम कीर्तन, सत्संग एवं मातृप्रसंग के पश्चात उत्सव की समाप्ति हुई ।

इस उत्सव के उपलक्ष में आश्रम के सदस्यों के उत्साह एवं उद्यम के फलस्वरूप कुछ लेखों को संकलित कर एक लघु पुस्तिका का प्रकाशन किया गया ।

५. नैमिषारण्य—

पुराणों की जन्मभूमि पवित्र तीर्थ नैमिषारण्य के श्री श्री माँ के आश्रम में १३ मार्च से २० मार्च पर्यन्त भागवत सप्ताह का आयोजन किया गया । महाराष्ट्र के प्रसिद्ध कथावाचक श्री अशोक कुलकर्णी जी ने भागवत की सुललित व्याख्या की । इस उत्सव में अनेक भक्त सम्मिलित हुए थे । कन्यापीठ की कन्याओं ने भी इसमें योगदान किया । काशी की महाराज कुमारी जी भी भागवत तीर्थ नैमिषारण्य में भागवत कथा श्रवण के लिए उपस्थित हुई थीं । जनविरल अरण्य में भी अनेक लोगों के आगमन से उत्सव साफल्यमंडित हुआ ।

६. पूना —

गणेश खिंड रोड पर अवस्थित श्री श्री माँ के आश्रम में १३ फरवरी को श्री श्री सरस्वती पूजा भलीभाँति संपन्न हुई । पूर्वाह्न में पूजन भजन के उपरान्त वेद भगवान की पूजा, पुष्पाञ्जलि भोग आरती के पश्चात सबने प्रसाद पाया ।

१३ फरवरी से २२ फरवरी तक आश्रम में श्रीराम कथा का आयोजन हुआ था । प्रवक्ता थे मथुरा के सन्त श्री राजाबाबा भागवताचार्य । दिनांक २२ को पूर्णाहुति के पश्चात भंडारा हुआ एवं सबने प्रसाद पाया ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

७. भीमपुरा : —

श्री श्री माँ के भीमपुरा आश्रम में ३१ जनवरी से ६ जनवरी तक संयम सप्ताह महाव्रत अनुष्ठित हुआ । इसमें आनन्दमयी संघ के प्रधान सचिव स्वामी श्री भास्करानन्दजी उपस्थित थे । इस अनुष्ठान में अनेक विद्वानों ने भी उपस्थित होकर अपनी मधुर अमृत वाणी द्वारा श्रोताओं को आध्यात्मिक मार्ग में उन्मुख होने के लिए प्रेरित किया । प्रतिदिन शाम को अशोक भाई भागवती कथा एवं मातृप्रसंग सुनाते थे ।

गुजरात में विगत सन् २००१ को जो भयंकर भूकंप हुआ उसके क्षतिपूरण के लिए भूकंप पुनर्वास कार्यक्रम के अन्तर्गत, माँ आनन्दमयी आश्रम भीमपुरा द्वारा नवनिर्मित "माँ आनन्दमयी प्राथमिक आरोग्य केन्द्र," इस प्रतिष्ठान के 'इगलैंड काउंटी हेल्थ सेंटर कलोरीडा यू. एस. ए. तथा अन्य भक्तों की आर्थिक सहायता से निर्मित, को विगत १२ मार्च को लोकार्पण किया गया ।

इस समारोह के मुख्य अतिथि थे परिवार कल्याण मन्त्री श्री आई. के. जडेजा । माननीय संसद सदस्य श्री शोभाभाई, एवं गांगभाई पटेल, माननीय विधानसभा सदस्य श्री धनराज केला, एवं माननीय जिला पंचायत प्रमुख श्री कनुडा गुलार सिंह परमार आदि विशिष्ट अतिथि के पद पर समासीन थे । इस समारोह में अनेक भक्तगण भी सम्मिलित थे ।

१३ फरवरी को सरस्वती पूजा भी यथारीति मनायी गई ।

८. राजगीर : —

राजगीर आश्रम में श्री श्री माँ का घर, सत्संग भवन, मातृमंदिर, शिवमंदिर आदि को रंग आदि से परिमार्जित करके उसमें निम्न प्रकार के सत्संग नियमित रूप से प्रारम्भ हुए । विगत २ जुलाई को गुरुपूर्णिमा का उत्सव भी भक्तों के आगमन से सुचारु रूप से संपन्न हुआ । १३ नवम्बर को पहली बार आश्रम में अन्नकूट महोत्सव मनाया गया । इस दिन करीब ३०० भक्तों ने प्रसाद प्राप्त किया ।

२२ दिसंबर गीताजयन्ती के दिन ५० भक्तों ने सामूहिक रूप से गीतापाठ किया । प्रतिदिन प्रातः काल शिवमंदिर एवं मातृ मंदिर में पूजा, श्री श्री माँ के आवासगृह में मौन एवं जप होता है । सत्संग भवन में विष्णु सहस्त्रनाम पाठ, गीता चंडीपाठ, शिवमहिम्न स्तोत्रपाठ, एकअध्याय श्रीमद्भागवत पारायण एवं सायंकाल आरती, एवं सन्ध्या कीर्तन, यथासंभव नियमित रूप से अनुष्ठित होता है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रद्धाञ्जलि

१. पद्मभूषण पंडित विद्यानिवास मिश्र जी

१४ फरवरी सन् २००५ को कार दुर्घटना में पदमभूषण पंडित प्रवर विद्यानिवास जी का आकस्मिक निधन हो गया । इस दर्दनाक संवाद के सुनते ही सबके दिल में चोट लगी आश्रम के लोग, एवं कन्यापीठ की छात्राएं भी स्तब्ध रह गईं ।

श्री श्री माँ के साथ भी पंडित जी का दीर्घकालीन संबन्ध था आप आश्रम के एवं कन्यापीठ के हर अनुष्ठान में उपस्थित होकर अनुष्ठान को सफल बनाते थे । विशेषतः कन्यापीठ के वार्षिकोत्सव में अवश्य ही योगदान कर छात्राओं का उत्साह वर्धन करते थे । गत वर्ष भी पंडित जी वार्षिकोत्सव में उपस्थित हुए थे । इसलिए उनकी स्मृति में इस बार का वार्षिकोत्सव स्थगित रखा गया ।

श्री श्री माँ के आर्शीवाद से पवित्र नैमिषारण्य स्थित "पौराणिक वैदिक अनुसंधान संस्थान" के अवैतनिक निदेशक के रूप में करीब दस वर्ष तक आप जुड़े हुए थे । इस प्रतिष्ठान की उन्नति के लिए आपका अवदान चिरस्मरणीय रहेगा ।

काशी के गौरव महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज जी के आप विशेष अनुरागी एवं अनुयायी थे । कविराज जी की शताब्दी के समय शतवार्षिकी समिति की ओर से हिन्दी राष्ट्रीय संग्रहालय एवं वाराणसी के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अनुष्ठित अनुष्ठान में आपका प्रमुख योगदान रहा ।

वरिष्ठ विद्वान पंडित जी के निधन का संवाद सुनते ही नैमिषारण्य अनुसंधान संस्थान के अध्यापकों ने तत्काल शोक प्रस्ताव घोषित किया । कन्यापीठ में भी प्रधानाचार्या जी की उपस्थिति में सब छात्राओं एवं अध्यापिकाओं ने दो मिनट मौन रह कर एवं उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना कर शोक सभा की ।

मणिकर्णिका घाट पर आश्रम एवं कन्यापीठ की ओर से पंडित जी के पार्थिव शरीर पर माल्यार्पण किया गया ।

हिन्दी साहित्य के प्रमुख साहित्यकार लेखक के रूप में गिने जाते हुए भी आपका संस्कृत भाषा पर अगाध पांडित्य था । आप दो बार सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति बने। आप काशी विद्यापीठ के कुलपति रह चुके थे । एवं राज्यसभा के सदस्य भी थे ।

आपकी मृत्यु के साथ-साथ हिन्दी साहित्य के विशिष्ट प्रबन्ध रचना के एक युग का समापन हुआ ।

आज हम सब आपको पुनः पुनः श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(२) माननीय प्रो. विष्णुकान्तशास्त्री जी

१७ अप्रैल, २००५ शाम को आचार्य डॉ. विष्णुकान्तशास्त्री जी के आकस्मिक निधन का समाचार सुनते ही माँ आनन्दमयी आश्रम तथा माँ आनन्दमयी कन्यापीठ के सभी सदस्यगण स्तम्भित हो गये ।

२ मई १९२९ को कलकत्ते में आपका जन्म हुआ । बाल्यकाल से ही आप राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की रीति नीति से प्रभावित थे और आजीवन संघ से जूड़े हुये थे । १९५२ में आपने कलकत्ता प्रेसीडेंसी कॉलेज से एम. ए. की परीक्षा विशेष सफलता के साथ उत्तीर्ण की और १९५३ में ही आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया । १९७७ में आप पश्चिम बंगाल विधान सभा के सदस्य बने एवं बाद में १९९२ से १९९८ तक आप राज्य सभा के सदस्य थे । दिसम्बर १९९९ में आप हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल एवं तत्पश्चात् २ जुलाई २००४ तक उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के पद पर आसीन रहे ।

प्रो. विष्णुकान्त शास्त्री जी के आकस्मिक और अप्रत्याशित निधन से काशी के साहित्यिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन में जो न्यूनता आई है उसकी पूर्ति सरल नहीं दिखाई पड़ती । उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के गरिमामय दायित्व का निर्वाह करते हुए भी शास्त्री जी ने काशी के साथ जो आत्मीयता निभाई यह उनके पैतृक संस्कार का प्रमाण है । काशी की शिक्षण संस्थायें, मन्दिर, गङ्गा, संत-महात्मा, विद्वान और विशिष्ट जन शास्त्री जी के आत्मीय थे और किसी भी गोष्ठी, उत्सव, आयोजन और व्याख्यान में वे प्राथमिकता से उपस्थित हो जाते थे । उनका प्रकृष्ट पाण्डित्य, अनुपम वाग्मिता और सूक्ष्म मेधा शक्ति किसी भी उत्सव और आयोजन के लिये अलंकरण थे । काशी की जिस संस्था ने जब भी शास्त्री जी को स्मरण किया वे सभी कठिनाइयों को दरकिनार कर आत्मीय भाव से उपस्थित होते थे और अपनी अनुपम वाक्शक्ति से श्रोताओं के हृदय को तृप्त कर देते थे । उत्कृष्ट पाण्डित्य के साथ भावुक हृदय शास्त्री जी के वैशिष्ट्य थे ।

प्रो. शास्त्रीजी भागवत् सम्राट परमपूज्य स्वामी अखण्डानन्द सरस्वतीजी के विशेष अनुयायी रहे एवं उन्हीं के साथ नैमिषारण्य में ७० के दशक में श्री श्री माँ के सम्पर्क में आये, और वाराणसी आश्रम में आप महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराजजी के विशेष श्रद्धाशील थे । माता आनन्दमयी आश्रम के प्रति आपका व्यक्तिगत विशेष स्नेह था और माँ आनन्दमयी कन्यापीठ या माता आनन्दमयी अस्पताल के विभिन्न कार्यक्रमों में, आप हमेशा उपस्थित रहते थे । आश्रम या कन्यापीठ या अस्पताल से सम्बन्धित कार्यक्रमों के अवसर पर आप सर्वदा सुलभ रहते थे ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रामनवमी के शुभदिन प्रो. शास्त्री जी का महाप्रयाण उनकी रामभक्ति का विशेष प्रमाण है । यह कुछ नियति का विधान ही रहा कि काशी के तीनों महापण्डित—पं. विद्यानिवास मिश्र, पं. सीताराम चतुर्वेदी और पं. विष्णुकान्त शास्त्री जी ''चरैवेति'' की वैदिक परम्परा को चरितार्थ करते हुये मार्ग में ही महाप्रयाण किये । प्रो. शास्त्री जैसे विद्वान तथा कुशल प्रशासक के अकस्मात् निधन से भारत की अपूरणीय क्षति तथा माता आनन्दमयी आश्रम ने भी अपना एक विशिष्ट हितैषी भक्त को सर्वदा के लिए खो दिया !

ऐसे विद्वान अत्यन्त सरल तथा सबके कुशलक्षेम के आकांक्षी पुरुष को हम अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोक-संवाद

१) श्री सुनीलकान्ति मजुमदार : —

विगत ६ नवम्बर २००४ शनिवार को दोपहर १:३० मिनट में श्री सुनीलकान्ति मजुमदार श्री श्री माँ के चरणकमलों में सदा के लिए लीन हुए । उनके आकस्मिक प्रयाण से मातृभक्त गण शोक सन्तप्त हुए । श्री श्री आनन्दमयी संघ के मूलकेन्द्र कनखल के एवं अन्यान्य आश्रमों की उन्नति के लिए आपका गठनमूलक अवदान सभी मातृभक्त सदा के लिए स्मरण करेंगे ।

ऋजुदेह, सदाजाग्रत, कर्मठ, मातृसेवक, उन पवित्र आत्मा की शान्ति एवं परिवार वर्गो की सान्त्वना के लिए हम श्री श्री माँ से पुनः पुनः प्रार्थना करते हैं ।

२) श्रीनिर्मलकान्त मित्र : —

श्री श्री आनन्दमयी संघ आगरपाड़ा शाखा के प्राक्तन सचिव श्री निर्मलकान्त मित्र जी विगत ११ दिसम्बर शनिवार प्रात: काल ९:३ मिनट पर श्री श्री माँ के दिव्य चरणों में समा गए ।

आप श्री श्री माँ के पुरातन भक्त थे । आगरपाड़ा समिति को तरह-तरह से अच्छी सलाह देते हुए उसे सहायता प्रदान में लगे रहते थे । आप श्री श्री माँ के भावों को अक्षुण्ण रखने में तत्पर तथा कर्तव्यपरायण थे । ऐसी अमर आत्माकी शान्ति की प्रार्थना हम श्री श्री माँ के चरणों में बारम्बार करते हैं ।

३) श्री चिन्मय गांगुली : —

कोलकातावासी मातृभक्त श्री चिन्मय गागुली गत २९ दिसम्बर सन् २००४ को श्री श्री माँ के चरणकमलों का ध्यान करते हुए उन्हीं में विलीन हो गए । सन् १९७३ में प्रथम मातृदर्शन के पश्चात श्री श्री माँ के प्रति लगाव के कारण आप निरन्तर मातृसान्निध्य में आते रहे । आप सदा प्रसन्नचित्त धर्म कर्म एवं सेवाकार्य में अपने आप को व्यस्त रखते थे । लंदन विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग परीक्षा में उत्तीर्ण होकर वहीं पर पठन पाठन, में व्यस्त रहे । इसके उपरान्त भारत में आकर विदेशी कम्पनी में आपने योगदान किया । सन् १९७८, ७फरवरी को अपनी पत्नी छविदी के साथ आपको काशी में दीक्षा प्राप्त हुई । उसी वर्ष उन्होंने कनखल में श्री श्री माँ की सन्निधि में अपने माता-पिता के कल्याण के लिए श्रीमद्भागवत सप्ताह का अनुष्ठान कराया ।

आप अपने आवास भवन में प्रतिवर्ष गुरुपूर्णिमा का उत्सव एवं नामयज्ञ कराते थे । इस अवसर पर अनेक भक्त एकत्रित होते थे । अन्तिम साँस तक पूर्णज्ञान होते हुए भी आपको श्री श्री माँ की कृपा से शारीरिक कष्ट का बोध नहीं हुआ । श्री-श्री मां आपको चिर शान्ति प्रदान करें यही प्रार्थना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

४) स्वामी प्रेमानन्द गिरि : —

२९ दिसम्बर को स्वामी प्रेमानन्दगिरि (श्रीमती सरोज पालिवाल) श्री राधा कृष्ण के चरणों में लीन हुईं । अवकाशग्रहण के पश्चात ही आप वृन्दावन आश्रम में एक कुटिया का निर्माण करके वही पर स्थायी रूप से निवास करने लगीं । आप मातृभक्त परमाविदुषी मथुरा के एक विशिष्ट कॉलेज की प्राधानाचार्या थीं । लेखन एवं भाषण दोनों में ही आप विशेष पटु थीं आप ने कई किताबें भी लिखीं श्री श्री माँ के ऊपर स्तोत्र रचना भी की । कीर्तन भजन, आदि भी सुन्दर तरीके से गाती थीं । श्री श्री माँ के चरणों में उनकी अमरआत्मा की शान्ति की कामना हम सदा करते हैं ।

५) श्रीमती कान्ति दत्त : —

श्री श्री माँ के एकनिष्ठ भक्त श्रीमती कान्तिदी बहुत दिनों से रोगाक्रान्त रहने के पश्चात विगत २ जनवरी सन् २००५ को स्नेहमय, शान्तिमय श्री श्री माँ के चरणों में सदा के लिए समा गईं ।

आप रामकृष्णमिशन के प्रथम प्रेसिडेंट स्वामी ब्रह्मानन्दजी की भाँजी एवं मातृभक्त स्वर्गीय श्री जितेन्द्र नाथ दत्त की धर्मपत्नी थीं । सन् १९३५ में शिमला कालीबाड़ी में आपकी श्री श्री माँ से प्रथम भेंट हुई । श्री श्री माँ प्राय: कहती थी— जितेन का घर आश्रम ही है । आश्रमवासियों ने भी आपके घर में बहुत समय निवास किया ।

आप सब कार्यो में निपुण थीं । शिक्षिता, बुद्धिमती, मृदुभाषिणी एवं सबकी प्रिय थीं । श्री श्री माँ कई बार आपको एक ही वस्त्र में अपने साथ ले जाकर आपको सेवा का अवसर प्रदान किया ।

१९७० में एकबार आप आपरेशन के लिए दिल्ली अस्पताल में भर्ती थीं उस समय अचानक श्री श्री माँ के दाहिने हाथ की उँगली से एक नील ज्योति ने आकर आपके हृदय में प्रवेश किया । उसके उपरान्त आप स्वस्थ हो गयीं ।

उसी वर्ष दिल्ली में दुर्गापूजा । कालीपूजा, अन्नकूट हुआ । अन्नकूट के पश्चात पंचवटी के घर में श्री श्री माँ ने जितेनदा एवं कान्तिदी को बुलाकर दोनों को हाथ फैलाने को कहा— लाल गमछे में बँधी हुई पोटली को हाथ में देते हुए माँ बोलीं— "जितेन ने तुम्हारी प्राणों की भिक्षा माँगी थी, तुम्हारा दूसरा जन्म हुआ है । अभी से सोचना कि आश्रम में रहते हो एवं आश्रम का खाते हो । काली पूजा की रात में जो कुछ प्रणामी श्री श्री माँ को दी गई थी वहीं सब पोटली में थी।

जितेन दा की मृत्यु के पश्चात आप कनखल में ही निवास करती थीं । तबीयत खराब होने पर आपको दिल्ली ले जाया जाता था ।

हम आपकी अमर आत्मा की शान्ति की कामना श्री श्री माँ से करते हैं ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोक-संवाद

१) श्री सुनीलकान्ति मजुमदार : —

विगत ६ नवम्बर २००४ शनिवार को दोपहर १:३० मिनट में श्री सुनीलकान्ति मजुमदार श्री श्री माँ के चरणकमलों में सदा के लिए लीन हुए । उनके आकस्मिक प्रयाण से मातृभक्त गण शोक सन्तप्त हुए । श्री श्री आनन्दमयी संघ के मूलकेन्द्र कनखल के एवं अन्यान्य आश्रमों की उन्नति के लिए आपका गठनमूलक अवदान सभी मातृभक्त सदा के लिए स्मरण करेंगे ।

ऋजुदेह, सदाजाग्रत, कर्मठ, मातृसेवक, उन पवित्र आत्मा की शान्ति एवं परिवार वर्गों की सान्त्वना के लिए हम श्री श्री माँ से पुनः पुनः प्रार्थना करते हैं ।

२) श्रीनिर्मलकान्त मित्र : —

श्री श्री आनन्दमयी संघ आगरपाड़ा शाखा के प्राक्तन सचिव श्री निर्मलकान्त मित्र जी विगत ११ दिसम्बर शनिवार प्रातः काल ९:३ मिनट पर श्री श्री माँ के दिव्य चरणों में समा गए ।

आप श्री श्री माँ के पुरातन भक्त थे । आगरपाड़ा समिति को तरह-तरह से अच्छी सलाह देते हुए उसे सहायता प्रदान में लगे रहते थे । आप श्री श्री माँ के भावों को अक्षुण्ण रखने में तत्पर तथा कर्तव्यपरायण थे । ऐसी अमर आत्माकी शान्ति की प्रार्थना हम श्री श्री माँ के चरणों में बारम्बार करते हैं ।

३) श्री चिन्मय गांगुली : —

कोलकातावासी मातृभक्त श्री चिन्मय गागुली गत २९ दिसम्बर सन् २००४ को श्री श्री माँ के चरणकमलों का ध्यान करते हुए उन्हीं में विलीन हो गए । सन् १९७३ में प्रथम मातृदर्शन के पश्चात श्री श्री माँ के प्रति लगाव के कारण आप निरन्तर मातृसान्निध्य में आते रहे । आप सदा प्रसन्नचित्त धर्म कर्म एवं सेवाकार्य में अपने आप को व्यस्त रखते थे । लंदन विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग परीक्षा में उत्तीर्ण होकर वहीं पर पठन पाठन, में व्यस्त रहे । इसके उपरान्त भारत में आकर विदेशी कम्पनी में आपने योगदान किया । सन् १९७८, ७फरवरी को अपनी पत्नी छविदी के साथ आपको काशी में दीक्षा प्राप्त हुई । उसी वर्ष उन्होंने कनखल में श्री श्री माँ की सन्निधि में अपने माता-पिता के कल्याण के लिए श्रीमद्भागवत सप्ताह का अनुष्ठान कराया ।

आप अपने आवास भवन में प्रतिवर्ष गुरुपूर्णिमा का उत्सव एवं नामयज्ञ कराते थे । इस अवसर पर अनेक भक्त एकत्रित होते थे । अन्तिम साँस तक पूर्णज्ञान होते हुए भी आपको श्री श्री माँ की कृपा से शारीरिक कष्ट का बोध नहीं हुआ । श्री-श्री मां आपको चिर शान्ति प्रदान करें यही प्रार्थना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

४) स्वामी प्रेमानन्द गिरि : —

२९ दिसम्बर को स्वामी प्रेमानन्दगिरि (श्रीमती सरोज पालिवाल) श्री राधा कृष्ण के चरणों में लीन हुईं । अवकाशग्रहण के पश्चात ही आप वृन्दावन आश्रम में एक कुटिया का निर्माण करके वही पर स्थायी रूप से निवास करने लगीं । आप मातृभक्त परमाविदुषी मथुरा के एक विशिष्ट कॉलेज की प्राधानाचार्या थीं । लेखन एवं भाषण दोनों में ही आप विशेष पटु थीं आप ने कई किताबें भी लिखीं श्री श्री माँ के ऊपर स्तोत्र रचना भी की । कीर्तन भजन, आदि भी सुन्दर तरीके से गाती थीं । श्री श्री माँ के चरणों में उनकी अमरआत्मा की शान्ति की कामना हम सदा करते हैं ।

५) श्रीमती कान्ति दत्त : —

श्री श्री माँ के एकनिष्ठ भक्त श्रीमती कान्तिदी बहुत दिनों से रोगाक्रान्त रहने के पश्चात विगत २ जनवरी सन् २००५ को स्नेहमय, शान्तिमय श्री श्री माँ के चरणों में सदा के लिए समा गईं ।

आप रामकृष्णमिशन के प्रथम प्रेसिडेंट स्वामी ब्रह्मानन्दजी की भाँजी एवं मातृभक्त स्वर्गीय श्री जितेन्द्र नाथ दत्त की धर्मपत्नी थीं । सन् १९३५ में शिमला कालीबाड़ी में आपकी श्री श्री माँ से प्रथम भेंट हुई । श्री श्री माँ प्राय: कहती थी— जितेन का घर आश्रम ही है । आश्रमवासियों ने भी आपके घर में बहुत समय निवास किया ।

आप सब कार्यो में निपुण थीं । शिक्षिता, बुद्धिमती, मृदुभाषिणी एवं सबकी प्रिय थीं । श्री श्री माँ कई बार आपको एक ही वस्त्र में अपने साथ ले जाकर आपको सेवा का अवसर प्रदान किया ।

१९७० में एकबार आप आपरेशन के लिए दिल्ली अस्पताल में भर्ती थीं उस समय अचानक श्री श्री माँ के दाहिने हाथ की उँगली से एक नील ज्योति ने आकर आपके हृदय में प्रवेश किया । उसके उपरान्त आप स्वस्थ हो गयीं ।

उसी वर्ष दिल्ली में दुर्गापूजा । कालीपूजा, अन्नकूट हुआ । अन्नकूट के पश्चात पंचवटी के घर में श्री श्री माँ ने जितेनदा एवं कान्तिदी को बुलाकर दोनों को हाथ फैलाने को कहा— लाल गमछे में बँधी हुई पोटली को हाथ में देते हुए माँ बोलीं— "जितेन ने तुम्हारी प्राणों की भिक्षा माँगी थी, तुम्हारा दूसरा जन्म हुआ है । अभी से सोचना कि आश्रम में रहते हो एवं आश्रम का खाते हो । काली पूजा की रात में जो कुछ प्रणामी श्री श्री माँ को दी गई थी वहीं सब पोटली में थी।

जितेन दा की मृत्यु के पश्चात आप कनखल में ही निवास करती थीं । तबीयत खराब होने पर आपको दिल्ली ले जाया जाता था ।

हम आपकी अमर आत्मा की शान्ति की कामना श्री श्री माँ से करते हैं ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"हरि कथा ही कथा, और सब वृथा व्यथा"

—श्री श्री माँ आनन्दमयी

अमेरिका के पेन्सीलवेनिया राज्य में स्थायी रूप से पंजीकृत संस्था **माँ आनन्दमयी सेवा समिति (MASS, Inc.)** के स्वयं सेवकों की ओर से परमाराध्या श्री श्री माँ के सभी भक्तजनों को सप्रेम **"जय माँ"** ।

इस संस्था का उद्देश्य श्री श्री माँ की जीवन लीला रहस्य की सेवा, धार्मिक कार्य, सत्संग एवं जनसेवा सहित सनातन धर्म तथा श्रीमद् भागवत्धर्मयुक्त प्रक्रिया है ।

अमेरिका सरकार द्वारा इस समिति के लिये सम्पूर्ण कर मुक्ति (Tax - exemption) प्राप्त है, जिसका नम्बर है 23-2967597 जो IRS Code 501 (C) (3) के अनुसार कार्यों के लिये हैं ।

अमेरिका एवं आस-पास के देशों में स्थायी रूप से निवास करने वाले मातृभक्तों से विनती है कि **"माँ आनन्दमयी अमृतवार्ता"** (त्रैमासिक पत्रिका) जो चार भाषाओं (हिन्दी, बंगला, गुजराती एवं अंग्रेजी) में श्री श्री माँ की दिव्य जीवन लीला सम्बन्धी गाथा एवं अमूल्य वाणी के संकलन के रूप में प्रकाशित होती है MASS, Inc. से प्राप्त कर सकते हैं ।

पत्रिका का वार्षिक चन्दा $ 12/- बारह डॉलर मात्र है ।

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये निम्नलिखित पते पर कृपया सम्पर्क करें :-

Mahadev R. Patel
Secretary, Ma Anandamayee Seva Samiti (MASS) Inc.
212, Moore Road, Wallingford, PA 19086-6843
Tel : 610-876-6862 Mobile : 484-410-4844
Email : matriseva@yahoo.com

जय माँ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

● जयजयमाँ   ॐ माँ   जयजयमाँ ●

"हरि कथा ही कथा और सब बृथा व्यथा ।"

—श्री श्री माँ

ॐ

श्री श्री माँ के श्री चरणों में गुप्ता परिवार की तरफ से बार बार प्रणाम ।

श्री चन्द्रभान गुप्ता
स्वर्गीय श्रीमति शकुन्तला गुप्ता

भारत भूषण गुप्ता
साधना गुप्ता
चेतन गुप्ता
हर्ष गुप्ता

राजेश गुप्ता
अनिता गुप्ता
नितिन गुप्ता
कार्तिक गुप्ता

125, विवेकानन्दपुरी, सरायरोहिला, दिल्ली - 110007

Res. 011 - 23693348,
Off. 011 - 27280187,

Res. 011 - 23691814
Off. 011 - 25631628

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments From :

ॐ माँ

"Endeavour to go through life leaving your burdens in His hands."

—Ma Anandamayee

Service with Smile

UE

Since - 1974

UNIQUE ELECTRONICS (Regd.)

16, Central Market,
Lajpat Nagar
New Delhi—110024
Phone : 29839349, 29834559

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"मैं तो सब समय तुमलोगों के साथ साथ ही हूँ, तुम लोग देखना नहीं चाहते हो तो मैं क्या करूँ।"

— श्री श्री माँ

● जय माँ श्री माँ जय जय माँ ●

DIAMOND SPRAYERS for plant Protection

SPRAYERS DIAMOND TM

Gupta Agro Company

Manufacturers & Suppliers of :

AGRICULTURAL SPRAY PUMPS & SPARE PARTS FOR PLANT PROTECTION

Office : P-31, Alipur Road, Narela, Delhi-110040

ESTD - 1984

(O) 011 - 27280187

(R) 011 23693348

(M) 9811236809

BHARAT BHUSHAN GUPTA

RAJ PACKAGING COMPANY

• Manufacturers of Corrugated boxes •

(O) 011 25631628

Ph. (R) 011 23691814

(M) 98107-15320

Rajesh Gupta

A-109, Bhagawati Vihar, Uttam Nagar, New Delhi- 110059

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

"The pilgrimage to the goal
of human existence is the
only path to Supreme happiness."

—Sri Ma

M/s. Sugam Parivahan Ltd.
43, Lekh Ram Road
Daryaganj, New Delhi-110002
Ph. 23257581/2326849 Fax : 3267462

With best compliments from :

**"Abandaon yourself to God
in all matters without exception."**

—Sri Ma

M/s Anandamayee Forgings (Pvt) Ltd.
A-5, Site-IV, Industrial Area
Sahibabad, Ghaziabad-201010
Ph. : 2770064 - Fax : 770427

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Complements From :—

"None can foretell at what particular moment circumstances will co-operate to bring about the Great Moment for you."

—Ma Anandamayee

UNIQUE ENTERPRISES

Authorised dealer of all products of Sony, Samsang, LG., Whirlpool, Aiwa, National Panasonic, Philips, IFB, Electrolax.

D-79, Malviya Nagar,
New Delhi-110017
Phone : 26671210, 51831110-1062

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from

RAM PANJWANI & COMPANY

Timber Merchants & Financiers
1—Birla Road
Hardwar—249401

☎ 2427266, 2428672. Fax. 01334-2426001

Suppliers of :
Best Quality Himalayan Pine Timbers

Branches :

Jammu (J & K) **Yamuna Nagar (Haryana)**
Parwanoo (H.P.)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ Branch Ashrams ❁

14. NEW DELHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kalkaji, New Delhi-110019 (Tel : 011-26826813)

15. PUNE : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Ganesh Khind Road, Pune-411007,
(Tel : 020-25537835)

16. PURI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Swargadwar, Puri-752001, Orissa.
(Tel : 06752-223258)

17. RAJGIR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O.Rajgir, Nalanda-803116, Bihar
(Tel : 06112-255362)

18. RANCHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Main Road,P.O. Ranchi- 834001
(Tel : 0651-2312082)

19. TARAPEETH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Chandipur-Tarapeeth, Birbhum-731233,

20. UTTARKASHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kali Mandir, P.O. Uttarkashi-249193,

21. VARANASI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Bhadaini, Varanasi-221001, U.P.
(Tel : 0542-2310054+2311794)

22. VINDHYACHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Ashtabhuja Hill, P.O. Vindhyachal,
Mirzapur-231307, (Tel : 05442-242343)

23. VRINDABAN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Vrindaban, Mathura-281121 U.P.
(Tel: 0565-2442024)

*

IN BANGLADESH :

1. DHAKA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
14, Siddheshwari Lane, Dhaka- 17
(Tel _ 0880-9356594)

2. KHEORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Kheora, Via-Kasba, Brahmanbaria.

*

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF NEWSPAPERS
FOR INDIA AS NO. 65432/97

रत्ना ऑफसेट्स लिमिटेड कमच्छा, वाराणसी, फोन- २३१२८२०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ आनन्दमयी

अमृत वार्ता

VOL.-9 JULY, 2005 No. 3

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

SHREE SHREE ANANDAMAYEE SANGHA

Branch Ashrams

1. AGARPARA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram. P.O. Kamarhati Calcutta-700058 (Tel : 25531208)
2. AGARTALA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram. Palace Compound P.O. Agartala- 799001. West Tripura (Tel : 0381-2208618)
3. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Patal Devi. P.O. Almora-263602, (Tel : 05962-233120)
4. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O.Dhaul-China. Almora-263881, (Tel : 059620-262013)
5. BHIMPURA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhimpura. P.O. Chandod, Baroda- 391105, (Tel : 02663-233208+ 233782)
6. BHOPAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Bairagarh. Bhopal-462030, M.P. (Tel : 0755-2641227)
7. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kishenpur.P.O. Rajpur, Dehradun-248009 (Phone : 0135-2734271)
8. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kalyanvan, 176, Rajpur Road, P.O. Rajpur, Dehradun-248009, (Phone : 0135-2734471)
9. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Raipur Ordnance Factory, Dehradun-248010
10. JAMSHEDPUR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Bhatia Park, Kadma, Jamshedpur-831005
11. KANKHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Kankhal.Hardwar-249408, (Tel : 01334-246575)
12. KEDARNATH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Near Himlok. P.O. Kedarnath, Chamoli-246445,
13. NAIMISHARANYA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Puran Mandir.P.O. Naimisharanya, Sitapur-261402, U.P. (Tel : 05865-251369)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ आनन्दमयी

अमृतवार्ता

श्री श्री माँ आनन्दमयी के दिव्यजीवन
तथा
दिव्यवाणी की वाहिका त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-९ जुलाई २००५ सं. ३

सम्पादक मण्डली

✤ डा. बीथिका मुखर्जी
✤ डा. श्रीनारायण मिश्र
✤ डा. गायत्री शर्मा
✤ ब्रह्मचारिणी गीता बनर्जी
✤ ब्रह्मचारिणी गुणीता

✤

कार्यकारी सम्पादक
श्री पानु ब्रह्मचारी

✤

वार्षिक चंदा (डाकव्यय सहित)
भारत में — ६० रुपये
विदेशों में — १२ डॉलर/या ४५० रुपये
एक प्रति — २० रुपये

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधारण नियम

यह त्रैमासिक पत्रिका चार पृथक भाषा–हिन्दी, बंगला, गुजराती तथा अंग्रेजी में जनवरी अप्रैल जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होती है । वर्ष का प्रारम्भ जनवरी से होता है ।

पत्रिका में मुख्यतया श्री श्री माँ पर आधारित लेखों को ही प्रधानता दी जाती है । इनके अतिरिक्त आध्यात्म पर आधारित हृदयस्पर्शी लेख, किसी भी देश तथा किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के महापुरुषों की उपदेशात्मक शिक्षावलियों का भी पत्रिका में स्वागत है ।

जो भक्तगण माँ के सम्पर्क में आये हैं वे एकान्त व्यक्तिगत अनुभवों को छोड़कर ऐसे अनुभवों को आकलित कर सकते है जो कि श्री श्री माँ के लौकिक व्यवहार के प्रति आलोकपात करने वाले हों ।

सभी लेख फुलस्केप कागज के एक पृष्ठ पर टंकित या स्पष्ट लिखित होने चाहिये । लेखों की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें । मनोनीत न होने पर लेखों को वापस भेजना कार्यालय के लिए असुविधाजनक है । सभी लेख सम्पादक के नाम भेजें ।

अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम के "Shree Shree Anandamayee Sangha—Publication A/C".नाम पर भेजें ।

पत्रिका सम्बन्धी सभी प्रकार के पत्रादि व्यवहार तथा वार्षिक चंदा भेजने का पता :

कार्यकारी सम्पादक, "माँ आनन्दमयी - अमृतवार्ता"
माता आनन्दमयी आश्रम
भदैनी, वाराणसी -२२१००१

पत्रिका में विज्ञापन देने का नियम :–

सम्पूर्ण पृष्ठ – २०००/- पूरे वर्ष के लिये
आधा पृष्ठ – १०००/- पूरे वर्ष के लिये

अग्रिम शुल्क के साथ विज्ञापन का विषय (Matter) उपर लिखित पते पर भेजें ।

स्वामी श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री पानु ब्रह्मचारी द्वारा श्री श्री आनन्दमयी संघ, भदैनी, वाराणसी–२२१००१ (उ. प्र.) से प्रकाशित तथा रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी. २१/४२ कमच्छा, वाराणसी-१० (उ. प्र.) से मुद्रित । सम्पादक–श्री पानु ब्रह्मचारी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विषय-सूची

1. मातृ-वाणी 1

2. श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग
— *श्री अमूल्य कुमार दत्तगुप्त* 3

3. श्री श्री माँ आनन्दमयी लीलाकथा
— *डॉ. बीथिका मुखर्जी* 7

4. जीवन दर्शन 11

5. बुद्ध जयन्ती पर विशेष
— *डॉ. प्रेम नारायण सोमानी* 12

6. काशी मुक्ति माहात्म्य
— *दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती* 13

7. वाणी कुसुमाञ्जलिः
— *पं. ब्रह्मादीन अवस्थी* 19

8. श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन-श्रीकृष्ण प्रश्नोत्तर
— *श्री महेन्द्र प्रताप सिंह गौर* 21

9. आनन्द छलिया
— *'सरोज'* 26

10. भीमपुरा आश्रम में अनुष्ठित संयम सप्ताह
— *अनुराधा जोशी* 27

11. गज़ल
— *श्री रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र''* 31

12. ''जस की तस धर दीन्ही चदरिया''
— *श्री विवेक चौरसिया* 32

13. आश्रम-संवाद 34

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoF-IKS

प्रकाशन-सूची

श्री श्री आनन्दमयी संघ द्वारा प्रकाशित श्री श्री माँ से सम्बन्धित हिन्दी भाषा में कुछ अमूल्य प्रकाशन संघ के प्राय: सभी शाखा आश्रमों में उपलब्ध हैं ।

१. आनन्दज्योति (शताब्दी स्मारिका)— यह एक उच्च कोटि का संस्करण है, जिसमें विभिन्न भाषाओं - संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में श्री श्री माँ की ५वित्र जीवनानुक्रमणिका (१८९६ से १९८२), १०० अमूल्य वाणियों एवं श्री श्री माँ के विभिन्न आश्रम एवं संस्थाओं का इतिहास, साथ ही स्वनामधन्य विद्वानों के लेख, श्रद्धाञ्जलि सहित श्री श्री माँ के कतिपय मूल्यवान चित्रों का संकलन है । अति उत्तम कागज पर छपा है । मूल्य रु. १००/- केवल हिन्दी खंड - मूल्य रु. ३०/-

२. श्री श्री माँ आनन्दमयी— परम श्रद्धेया दीदी गुरुप्रिया द्वारा लिखित श्री श्री माँ की अपूर्व लीला कहानी । २० भागों में सम्पूर्ण ।

३. मातृ दर्शन— श्रद्धेय ज्योतिष चन्द्र राय (भाईजी) द्वारा लिखित श्री श्री माँ के ऊपर अतुलनीय पुस्तक । पेपर बैक, मूल्य रु. २५/-

४. माँ आनन्दमयी— डॉ. पन्नालाल, आई. सी. एस. (रिटायर्ड) द्वारा लिखित श्री श्री माँ का अपूर्व जीवन चरित । पेपर बैक, मूल्य रु. ३०/-

५. सद्वाणी— हिन्दी में अनूदित श्री श्री माँ की मूल्यवान वाणियों का संग्रह । श्री ज्योतिषचन्द्र राय द्वारा संकलित । पेपर बैक, मूल्य रु. १५/-

६. माँ आनन्दमयी दिव्यालोक वार्ता— ब्र. गुणीता द्वारा लिखित श्री श्री माँ की जीवन-कथा का संक्षिप्त चित्रण तथा शतवाणी । पेपर बैक, मूल्य १०/-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Ma—just before taking her bath in the seas in front of the ashram in Puri (Orissa) in 1954.

— Courtesy : Km. Chitra Ghosh

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मातृ-वाणी

उन्हे पुकारना, उन पर निर्भर रहना । जहाँ भी रहो उनकी गोद में । जगत में सुख पाना चाहते हो तो उनको पाने की इच्छा करो ।

*　　　*　　　*

प्रत्येक के जीवन में संयम आवश्यक है, सबसे पहले शरीर के प्रति यथासाध्य शासन दृष्टि से संयम का अभ्यास करना चाहिए ।

*　　　*　　　*

कर्तव्य पालन करते जाओ, वे ही सब करा रहे हैं । इसे याद रखो । वे जो कराएंगे, वही ठीक है । उनके हाथ में यन्त्रवत् अपने को रखने की चेष्टा करो चिन्ता मत करो ।

*　　　*　　　*

शुद्ध पवित्र फूल ही भगवान पर चढ़ता है । अपने को भगवान के चरणों में अंजलि देनें के लिए सर्वदा शुद्ध, पवित्र भाव को बनाए रखो ।

*　　　*　　　*

मनुष्य का कर्तव्य मनुष्यत्व का जागरण, पशुभाव का त्याग । श्रेय ग्रहण, प्रेय का त्याग ।

*　　　*　　　*

संसार यात्रा में कभी कोई सुखी नहीं होता, परमार्थ यात्रा ही परमसुख का मार्ग है । उसी अपने मार्ग पर स्वयं चलने की चेष्टा करो, जहाँ सुख-दुःख का प्रश्न नहीं है । अभिमान शून्य परमानन्द की ओर ।

*　　　*　　　*

गृहस्थ का कर्तव्य है सत्संग । जहाँ पर भी भगवत् आलोचना, उनका प्रसंग, भजन कीर्तन हो वहीं जाना । भेद बुद्धि मत रखना, उदार भाव से लेना । तुम्हारे गुरु जगत के सभी के गुरु हैं । सभी के गुरु तुम्हारे गुरु हैं ।

*　　　*　　　*

सत्य ही सत्य की रक्षा करता है । सैकड़ों कामों में सैकड़ों बाधाएँ हैं । बाधा की ओर न देखकर यदि हम लोग सत्य पालन की दिशा लेकर कोशिंश करें तब किसने क्या कहा, उसकी सत्यव्रतियों को परवाह नही होनी चाहिए । जो सच बातें कहते हैं और सत्य परिवेश में रहेंगे, भगवान स्वयं ही उनके रक्षक हैं ।

*　　　*　　　*

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust Foundation, MoE-IKS

प्रार्थना साधना का विशेष अंग है, प्रार्थना की शक्ति अमोघ है, एवं प्रार्थना में जीव और जगत् के प्राण अवस्थित हैं । जब जो प्राण में आए उनको निवेदन करना, साथ ही सरल और व्याकुल होकर उनके प्रति शरणागति की प्रार्थना करना ।

* * *

प्रश्न—गुरु शिष्य को किस रूप में दर्शन देते हैं ? जिस रुप में उन्होंने कृपा की थी उस मूर्ति में या दीक्षा के समय उन्होंने शिष्य को जो स्वरुप दिया था उस स्वरुप में ? और एक बात यह भी है, दीक्षा प्राप्त करने के बाद यदि शिष्य साधन भजन न करे तो भी गुरु के दर्शन मिलेंगे ?

माँ— गुरु ने शिष्य को आश्रय दिया है अत: वे उसे दर्शन देते हैं । साधन भजन द्वारा यदि शिष्य कुछ ऊँचाइयों को प्राप्त किया हो तो उसे स्थिति प्राप्त हुई है यह देख भी गुरु उसे दर्शन दे सकते हैं । यदि उसने साधन भजन नहीं भी किया है तो गुरु उसे दर्शन देते हैं । क्योंकि उन्होंने उसे आश्रय दिया है । उन्होंने उसका पूरा भार लिया है न, इसलिए उसे दर्शन देते हैं और जिस रुप में दर्शन देने से शिष्य उन्हें पहचानेंगे उसी रूप में वे उसे दर्शन देते हैं ।

* * *

जगद् गुरु कौन ? जगत् तो गतागति । इस गतागति के ऊपर जो हैं वे ही जगद्गुरु, आचार्य । गतागति उन्हीं के लिए सब कुछ करना सम्भव है । एम.ए. पास करके, क, ख, पढ़ाने से शिक्षक की विद्या क्षीण तो नहीं होती । आचार्य गतागति के ऊपर रहते हुए भी गतागति में आकर दीक्षा दे सकते हैं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग

नवम खण्ड

— स्व. अमूल्य कुमार दत्तगुप्त

स्वतन्त्रता की खुशी—

१२-३-५३ वृहस्पतिवार (२८ फाल्गुन)

माताजी हंसने लगीं । बाद में कहा, किसी को प्रतीक्षा करने के लिए कहा पर लौट कर आना नहीं हुआ, किसी को कहा गया कि घूमने जाते समय साथ ले जाया जायेगा पर उसे भी ले जाया नहीं गया, इन सब में गलती या विस्मृति (भूलने) का कोई प्रश्न ही नहीं है । स्मृति रहने से ही विस्मृति रहेगी, जैसे कहा जाता है कर्म एवं अकर्म । यहाँ अकर्म भी एक प्रकार का कर्म है । जैसे कहा जाता है जप एवं अजपा; अजपा शब्द सुनकर यह नहीं समझना कि जप का न होना । अजपा भी जप की एक अवस्था है । अत: जहाँ विस्मृति, भूल, अकर्म इत्यादि हैं वहाँ थोड़ा सा बीज अर्थात् संस्कार है; पर मैं जिस स्थिति की बात कह रही हूँ वहाँ यह सब कुछ भी नहीं है । वह सत्य-हैं मिथ्या की अतीत अवस्था, (जहाँ मिथ्या का प्रश्न नहीं) । इस अवस्था में सत्य मिथ्या कुछ भी नहीं हैं, कारण यहाँ तो दो नहीं है । जागतिक (संसार की) दृष्टि से ही वस्तु को सत्य मिथ्या के दो भाँगों में बाँटा जाता है । हाँ, ऐसा भी हो सकता है कि यदि कोई बात इस शरीर के मुख से निकलती है तो वह सत्य होने को बाध्य है । भगवान् सत्य स्वरूप हैं । । ऐसी भी स्थिति है जहां सत्य मिथ्या का कोई प्रश्न ही नहीं है । वहाँ केवल अपने को लेकर खेलना । दूसरा कुछ रहने पर ही तो सत्य मिथ्या का बँटवारा होगा । जैसे शरीर के कुछ भाग में खुजलाना है ऐसा सोच कर यदि खुजलाना न हो तो पूर्व संकल्प को जैसे झूठ कहा नहीं जा सकता उसी तरह किसी को प्रतीक्षा करने को कहकर यदि आना न हो सके तो वह भी मिथ्या नहीं है । कारण जो प्रतीक्षा करने को कह रहा है और जिसे प्रतीक्षा करने को कहा जा रहा है - वे एक ही व्यक्ति हैं ।

मैं— इस प्रकार के व्यवहार को क्या हमलोग भी स्वतन्त्रता की खुशी कह सकते हैं ।

माताजी— (हँसकर) यह तुमलोग जानते हो । शास्त्र में कौन सी अवस्था को क्या कहा गया है वह तुमलोग भी कह सकते हो । इस शरीर ने तो शास्त्र नहीं पढ़ा है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्थिति के अनुसार लोगों की प्रार्थना होती है —

(२९ फाल्गुन), (१३-३-५३, शुक्रवार)

प्रात: काल आश्रम में पहुँचकर माताजी को डा. पन्नालाल के साथ बात करते हुए सुना, बात ही बात में डा. पन्नालाल ने माताजी से पूछा "भगवान् को प्रणाम करने पर उनसे कौन सी प्रार्थना करनी चाहिये ?

माताजी— कुछ भी प्रार्थना नहीं करनी चाहिये कुछ प्रार्थना करने पर कुछ मिलता है । वे इतने दयालु हैं कि जो जो माँगता है वे उसको वही दे देते हैं । वे तो अपने को भी दे देते हैं । जागतिक (संसार की) वस्तु अर्थात् अभाव का कुछ माँगने पर वे अभाव के रुप में ही दर्शन देते हैं । प्रार्थना न करने पर भी उनको पूर्ण भाव से पाया जा सकता है । कारण जहां कुछ नहीं है वहाँ एक मात्र वे ही हैं ।

डा. पन्नालाल— ऐसा होने पर तो कुछ प्रार्थना ही नहीं करना है ।

माता जी— ऐसा भी कह सकते हो "तुम्हारी इच्छा पूरी होवे" यहाँ भी कुछ प्रार्थना रही । यदि कहो भगवान् मैं तुमसे कुछ भी नहीं माँगता, वह भी एक तरह की प्रार्थना ही है । असली बात तो यह है लोग जिस स्थिति में रहते हैं स्थिति अनुसार उनकी प्रार्थना अपने आप ही आ जाती है । इस शरीर में जब साधना का खेल चल रहा था तब यह देखा गया था । उस समय भोलानाथ इस शरीर को आकर लाड़ से "यह कर दो, वह कर दो" ऐसा कहते थे । तब साधक बन कर बैठी थी न अत: भोलानाथ की बात सुनकर ख्याल होता था, क्या भगवान् से ऐसी प्रार्थना करनी पड़ेगी; पर इस बात के ख्याल आने के साथ ही साथ बिजली का करंट लगने पर लोगों की जैसी हालत होती है इस शरीर की भी वैसी ही हालत हो जाती थी । इस प्रकार भोलानाथजी की सभी बातें एकदम डूब जाती थीं, और कोई भी प्रार्थना नहीं आती थी ।

मानो कहीं जा रही हूँ इसी समय रास्ते में आँधी आयी, रास्ते में आँधी आने से नाना प्रकार की प्रार्थनायें आती हैं परन्तु इस अवस्था में देखा कि अचानक मन की ऐसी हालत हो गयी है जिस के फल स्वरूप कोई प्रार्थना ही ख्याल में आती नहीं । इसीलिए कह रही थी कि लोगों की या साधकों की अपनी अपनी स्थिति के अनुसार प्रार्थना अपने आप ही होती है।

संन्यासी वेश में आपताप मित्र—

१४-३-५३- शनिवार (३० फाल्गुन)

आज प्रात: काल आश्रम जाकर श्रीयुत आपताप मित्र महोदय को देखा । उन्होंने माताजी को कहा, "मौनी बाबा को रखकर आज आश्रम आया ।"

माताजी— कहाँ रख आये ?

आपताप मित्र— काशी में ही रख आया हूँ ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माता जी— हँसते हँसते हम लोगों से कहने लगीं, कल ये ही साधु के वेष में आये थे । यह जब जाने लगे तब एकबार ख्याल आया कि इन्हें पकड़ लिया जाय । सोचा जब यह अपने को छुपाना चाहते हैं तो ऐसा ही हो । फिर भी इनको पहचान ही लिया इसके प्रमाण स्वरूप तभी साधन ब्रह्मचारी से कहा, ''इस साधु का नाम पूछकर तो आओ ।'' साधन ने आकर कहा, ''साधु मौनी'' है पिताजी का बहुत कुछ प्रेमानन्दसे मिलता जुलता था'', यह कहकर माता जी हँसने लगीं ।

कल सायं सन्ध्या के समय आश्रम में जाकर देखा कि एक संन्यासी, जिसके चेहरे पर लम्बी-लम्बी मूँछे, दाढ़ी और माथे पर एक फटका बँधा हुआ है । माता जी के चरणों पर एक माला रखकर धरती पर सिर रखकर प्रणाम किया और आश्रम से चले गये । संन्यासियों को इस प्रकार प्रणाम करते हुए देखा नहीं जाता । साधु को इस प्रकार चले जाते देख माताजी ने अत्यन्त व्यग्रता के साथ साधन दादा को कहा, ''साधन, उस साधु का नाम तो पता कर लो ।'' मैंने सोचा साधु शायद बहुत सच्चे हैं इसलिए शायद माताजी ने उनका नाम जानना चाहा । आज समझ में आया यह साधु हम लोगों के आपताप मित्र के सिवाय और कोई नही हैं । आज वे दाढ़ी मूँछ साफ करवाकर आये हैं । अतः उन्होंने माताजी से कहा, मौनी बाबा को आज वे रखकर आये हैं । इस घटना को उपलक्ष्य करके कुछ देर तक हँसी का माहौल बना ।

वटपत्रशायी नारायण का अपने अँगूठे को चूसने का रहस्य—

विशुदादा ने मेरे माध्यम माता जी से एक प्रश्न किया । प्रश्न यह था चित्र में देखा जाता है कि महाप्रलय के समय श्री कृष्ण बालरुप में वटपत्र पर लेटे हुए अपने पैर के अँगूठे को खुद ही चूस रहे हैं इसका अर्थ क्या है । ?

माता जी— तुम लोगों के शास्त्र में क्या कहते हैं ?

डा. पन्नालाल— शास्त्र की बात सुनना नहीं चाहता हूँ । आप की जबानी सुनना चाहते हैं ।

माताजी— शास्त्र में जो हैं वह सुना जाय । यदि इस शरीर को कोई बात आये तो कहना हो जायगा । पर शास्त्र की बात उपस्थित कोई नहीं बता सका ।

माताजी— अच्छा, तुमलोगों को क्या लगता है ?

डा. पन्नालाल— श्री कृष्ण के चरणरज से बहिर्जगत का उद्धार हो जाने पर उन्होंने उस चरण धूलि से अन्तर्जगत् का उद्धार किया ।

माताजी— पिताजी श्री कृष्ण का अन्तर्जगत् मलिन था अतः उन्होंने अपनी ही चरणधूलि लेकर उसे पवित्र किया इस प्रकार का अर्थ बड़ा ही विचित्र है (सभी की हँसी)

सोलन के राजा साहब— मैने इस प्रकार का अर्थ करते सुना है कि सभी को श्रीकृष्ण के चरणामृत का माहात्म्य एवं अपूर्वता का वर्णन करते सुनकर श्रीकृष्ण स्वयं ही उसकी परीक्षा करने के लिये अपने चरणामृत का आस्वादन करते हैं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माताजी— (हँसकर) हाँ, लीलारूप से इस प्रकार का अर्थ किया जा सकता है । इस संसार में जो कोई भी जो भी चरणामृत ग्रहण करते हैं वह उनका अपना ही चरणामृत है । कारण जगत् में एक के सिवाय दूसरा कुछ नहीं है । अतः श्रीकृष्ण अपने पैर के अँगूठे को चूसकर इसी सत्य को प्रकाशित करते हैं कि वे अपने में अपने हैं । रसास्वादन आदि जोभी कहा जाता है वह अपने ही अपने को लेकर होता है ।

इतने में बाटुदा के आने पर माताजी ने उनसे पूछा, "तुमने कितनी बार भागवत् का पारायण किया है ?

बाटुदा— तिरानब्बे बार ।

माताजी— ठीक है, उसे १०८ बार करने की कोशिश करना यदि परमायु में संभव हो सके । अब यह बताओ श्री कृष्ण वट पत्र पर लेटे हुए अपने अँगूठे को क्यों चूस रहे थे ?

बाटुदा— हाथ एवं पैरों की उँगलियों से शक्ति प्रवाह निर्गत (निकलता) होता है । इसी शक्ति प्रवाह से सृष्टि होती है । श्री कृष्ण जब वटपत्र पर लेटे थे तब महा प्रलय का समय था अतः उस समय सृष्टि की आवश्यकता नहीं थी । अतः श्री कृष्ण पैर का अँगूठा चूसते हुए अपनी ही शक्ति को अपने में उपसंहृत कर रहे थे ।

डा. पन्नालाल— पर आपने कौन सा अर्थ किया वह तो सुन नहीं सके ।

माताजी— पिताजी, आपको एक बात बता दूँ, राम, कृष्ण, आदि अवतारों एवं महात्माओं के आचरण के सम्बन्ध में यह शरीर अक्सर कुछ कहता नहीं है, यदि बातों ही बातों में कुछ प्रसंग आ जाय तो कुछ कहना हो जाता है, ऐसा न होने पर उक्त सम्बन्ध में यह शरीर कुछ कहता नहीं है । इसके अलावा तुमलोग भी देखते हो कि भगवान ने जो कुछ लीला की है उसका अर्थ उन्होंने स्वयं कुछ नहीं कहा है । वे क्या अपनी लीलाओं का अर्थ नहीं बता सकते थे ? उसके न कहने का कारण यह भी हो सकता है कि भक्तों के दिलों में उनकी लीलाएँ किस प्रकार एवं कितने भावों में प्रस्फुटित होती है इसी को देखकर वे आनन्दित होते हैं । भक्तगण अपनी अपनी स्थिति अनुसार एक लीला का ही तरह-तरह का अर्थ कर सकते हैं एवं उन्होंने यह किया भी है । अतः किसी को भी मिथ्या कहा नहीं जा सकता । भगवान् भक्त हृदय में विहार करके अपनी लीलाओं के अनन्त माधुर्य का आस्वादन करते हैं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ आनन्दमयी लीलाकथा

— डा. वीथिका मुकर्जी

(अंग्रेजी से भाषान्तर — डॉ. कृष्णा बनर्जी)

(गतांक से आगे)

ससुराल में माँ जो अथक परिश्रम करती थीं । हमेशा प्रसन्न मुद्रा में, बिना किसी शिकायत के साथ कामकाज निभाती थीं, इस में कितनी ही कहानियाँ हम लोगों ने सुन रखी थीं । परन्तु एक बार हमें ऐसा अवसर मिला जब उसी विषय में एक ऐसी गवाह से चर्चा सुनने को मिली जिनका जीवन वधूरूपिणी माँ की दिनचर्या के साथ ओत प्रोत रूप से जुड़ा था । बात सन् १९४८ की है । उस वर्ष श्री श्री दुर्गापूजा के उपलक्ष में श्री श्री माँ कलकत्ता आयी हुई थीं । एकडालिया रोड पर स्थित माँ के आश्रम में दर्शनार्थियों की भीड़ उमड़ रही थी । माँ भी अनगिनत छोटे बड़े कामों में व्यस्त थीं । हम सब किसी तरह दूर से ही माँ की एक झलक मात्र पाने की कोशिश में थे । एक बड़े हॉल के अन्दर हम में से बहुतों को ठहरने का स्थान मिला था । उसी हॉल के एक कोने में एक वृद्धा महिला को विशेष आदर सत्कार के साथ ठहराया गया था । हमने देखा कि उन अतिशय वयोवृद्धा महिला का सभी आश्रमवासी विशेष सम्मान के साथ देखभाल कर रहे हैं । पर वे कौन थीं, हमें पता नहीं था ।

एक दिन देर रात को हमने देखा कि माँ धीरे-धीरे अपने कमरे से निकलीं । तब तक, दर्शनार्थियों की भीड़ छँट चुकी थी; बाहर से आये हुये सारे लोग वापस प्रस्थान कर चुके थे । आश्रम के चारों ओर निस्तब्धता और शान्ति छायी हुई थी । अधिकतर आश्रमवासी सो गये थे । माँ बस केवल दो परिजनों के साथ हॉल में प्रवेश कर आहिस्ता-आहिस्ता चलके क्रमशः उन बुजुर्ग महिला की तख्त के पास आयीं और अत्यन्त मृदु, कोमल स्वर की पुकार से उन्हे जगाने लगीं । वृद्धा की नींद खुली । माँ को देख उनका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा । माँ उनके पास तख्त के ऊपर बैठ गयीं और उनके दोनों हाथ अपने हाथों में लिये परम उल्लास के साथ अपने गाँव की बोली में उनसे वार्तालाप करने लगीं । हॉल के अन्दर हम में से जो जाग रहे थे; चकित होकर इस दृश्य को देखने लगे, पर उनके कथोपकथन का एक भी शब्द हमारी समझ में नहीं आया । फिर हमें ज्ञात हुआ कि वे वृद्धा और कोई नहीं, स्वयं प्रमदा देवी थीं, जिनके परिवार में खेओड़ा छोड़ने के बाद नव विवाहिता माँ ने चार वर्षों तक वास किया था । तब से लेकर अब तक परिस्थितियों में जिस तरह का परिवर्तन हो चुका था, किसी जमाने में प्रमदा देवी के लिये वह बिल्कुल ही अकल्पनीय था । दिनरात अनगिनत भक्तों के द्वारा घिरी हुयी श्री श्री माँ का निकट सान्निध्य पाना उनके लिये असाध्य प्रतीत हो रहा था । अब अचानक माँ को एकान्त रूप से अपने पास पाकर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रमदा देवी कुछ सहम-सी गयीं । परन्तु शीघ्र ही उनका आत्मविश्वास लौट आया और उनका मुखमण्डल अकृत्रिम खुशी से उज्वल हो गया । अब तके शायद वे अपनी देवरानी से मन खोल कर दो चार घरेलू बातें कर पाने के विषय में हताश हो चुकी थीं । पर माँ को खुद अपने पास उपस्थित होते देख उनकी सारी कुण्ठा दूर हो गयी एवं उनके अति निकट बैठी हुई उस महान् गरिमामण्डित व्यक्तित्व के अन्दर उन्होंने जल्दी ही बीते दिनों की उस अपनी परमप्रिय निर्मला को ढूँढ़ पाया, वही नन्ही सी बहू जो किसी जमाने में बड़ी निष्ठा के साथ उनके घर का कामकाज किया करती थीं । दोनों के बीच अतीत के दिनों की बातें हो रही थीं । माँ ने जो सब कुछ याद रखा है, अतीत की छोटी बड़ी बातें, कितने मजेदार प्रसंग, कितने पुराने संगीसाथी, अपने परिवार के, पड़ोस के व अन्य परिचित लोग— किसी को वे भूली नहीं है, यह देख कर प्रमदा देवी अत्यन्त प्रसन्न हुई । माँ को ग्रामीण भाषा में बात करते सुन हमें बड़ा कौतुक का अनुभव हो रहा था । हम सब की जोर जोर की खिलखिलाहट सुनकर जल्दी ही बाकी लोग भी जाग गये । देखते-देखते कौतूहल भरी महिलाओं की भीड़ हॉल में इकट्ठा हो गयी । उस महिलामण्डली की ओर इंगित कर माँ प्रमदा देवी से बोलीं, 'देखो दीदी, ये सभी गृहिणियां अपने को गृहकर्म में बड़ी निपुण समझती हैं । इनसे जरा बोलो इस शरीर ने भी तुम्हारे यहाँ घर गृहस्थी का काम कैसे किया था।" माँ की इस कौतुकपूर्ण बातों को सुनकर प्रमदा देवी ने उन्हे गम्भीरता के साथ लिया और उपस्थित महिलाओं से जी खोलकर कहने लगीं, 'घर की बहू के रुप में तुम लोगों की इस माँ का आचरण कितना प्यारा था, कितना मधुर था, तुम लोग इसकी कल्पना भी नहीं कर सकोगी । जितने दिन यह हमारे पास थी, घर के सारे कामकाज सदैव प्रसन्नता के साथ करती रही । खाली यही नहीं, इसका हर एक काम इतना बढ़िया होता था, कि मुझे कभी भी किसी बात के लिये इसे टोकना नहीं पड़ा। किसी को भी इसने कभी असन्तुष्ट होने का अवसर ही नहीं दिया । ऐसा सेवा भाव सचमुच दुर्लभ है ।''

मुझे (लेखिका को) प्रमदा देवी की इस स्वतः स्फूर्त, निश्छल प्रशंसावाणी से भी जो अधिकतर आश्चर्य जनक लगा, वह था अपनी जेठानी के मुँह अपनी प्रशंसा सुनकर बिलकुल साधारण व्यक्ति की तरह माँ का खुश होना । उनकी-सेवा से जो प्रमदा देवी को इतना सुख और सन्तोष प्राप्त हुआ था, यह उन्हीं की जबानी सुनकर माँ यथार्थ ही आनन्दित हुईं । श्री श्री माँ की अपूर्व अलौकिक लीला का यह भी एक पहलू है । किसी भी विषय में उनका कोई पूर्वाग्रह नहीं था । जब जिस भूमिका में थीं, उसी के अन्दर स्वाभाविक पूर्णता का प्रकाश देखा गया । कृत्रिम अभिनय का प्रश्न ही नहीं । जब जैसा रूप, तब वैसा ही भाव । गृह वधू का रूप व भाव भी वैसा ही । लौकिक जगत् ने स्थान-काल के हिसाब से उनसे जब जो चाहा, उसी का पूर्ण मर्यादित, सुन्दर रूप प्रकाशित हुआ । यहीं श्री श्री माँ के दिव्य जीवन के मूल छन्दों में से एक है । उदाहरण स्वरूप, जिस समय उनके जीवन में साधना का 'खेल' चल रहा था, तब उन्होने पूर्णतया एक साधिका के भाव में अवस्थान किया । सम्भवतः इसे लीला के अलावा और कुछ कहा नहीं जा सकता ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लीलाकथा की मुख्य धारा में लौट आयें । श्री रमणी मोहन महाशय बीच-बीच में अपने कर्मस्थल से वापस लौटते थे । उस दौरान परिवार के लोगों के साथ मिलना होता था । आते वक्त जैसे भतीजे भतीजियों के लिये छोटे-मोटे उपहार लाते थे, उसी प्रकार वधू निर्मला के लिये भी पुस्तकें आदि ले आते थे । इस प्रसंग में श्री श्री माँ के ही श्रीमुख से विवृत एक मजेदार कहानी याद आ रही है । अतीत-स्मृतियों की बातें करते-करते अपने स्वाभाविक विनोदपूर्ण ढंग से एकदिन माँ बोलीं, 'भोलानाथ बीच-बीच में इस शरीर के लिये दो एक किताबें ले आता था । एकबार मुझसे कहा पढ़ के सुनाने के लिये । इस शरीर के भाव से हाँफते-हाँफते (खड़ीपाई का वह सवाल तब भी था !) दो चार पंक्तियाँ सुनाने के बाद वह बोला, 'बस, बस काफी है ।' फिर दूसरी तरफ मुँह फेर कर धीरे-धीरे कहा, 'बिलकुल निम्न प्राइमरी !'

पास-पड़ोस में रहने वाले सभी से श्री श्री माँ का सम्बन्ध बड़ा ही मधुर था । दैनिक गृहकार्य के सिलसिले में जब-जब थोड़ा बहुत व्यवधान मिलता था, पड़ोस की बहूबेटियाँ बड़े प्यार से निर्मला को बुला लेती थीं और उस थोड़े समय के लिये निर्मला का साहचर्य पाकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी । उनके घर स्वल्पकाल के लिये खुशियों का मेला लग जाता था । उन्हीं छोटी-छोटी विरतिओं में माँ ने अपनी उन सहेलियों से नाना प्रकार की शिल्पकलायें सीखी थीं, जैसे सूत कातना, बेत के सामान बनाना, आदि । उस इलाके के स्टेशनमास्टरों में से एक मुसलमान सज्जन थे । उनकी बहन के साथ निर्मला की अच्छी मित्रता हुई थी । वह निर्मला के साथ धार्मिक विश्वास आदि प्रसंगों पर मन खोल कर बातें किया करती थीं । केवल धार्मिक भेद-विभेद के पक्षों को आलोचना से दूर रखती थीं । वस्तुतः उनके साथ बात करते समय पता ही नहीं चलता था कि वे दोनों अलग-अलग सम्प्रदायों को मानने वाले परिवारों में से थीं ।

उस समय श्री माँ एकबार खेओड़ा अपने मायके आयी थीं । वहाँ अपने भाई बहनों को साथ लिये माँ ने पड़ोस के घर-घर जाकर सबसे भेंट की । वहीं पर एक मुसलमान पड़ोसी के घर एक बुजुर्ग व्यक्ति ने माँ के सोने के कड़े देखना चाहा । माँ ने हाथों से कड़े निकाल कर उन्हें दे दिये । काफी देर तक बातचीत चलती रही और फिर बिदा लेने का समय हुआ । माँ जब उठ के जाने के लिये प्रस्तुत हुईं तब वे सज्जन भागे-भागे आये और उलाहना देकर कहा, 'तुम तो अजीव लड़की हो ! अगर मैं तुम्हारे कड़े नहीं लौटाता, तो तुम उन्हें वापस लिये बगैर ही यहाँ से रवाना हो जाती ! कैसी भुलक्कड़ हो !' जागतिक विषयों के प्रति माँ की सम्पूर्ण उदासीनता उनकी चिरकालीन निरासक्ति उन सज्जन को ज्ञात होने की कोई सम्भावना नहीं थी । बाद में माँ का यह भाव क्रमशः सर्वजन विदित हो गया था । बहुत बार ऐसा देखा गया कि लोग भेंटस्वरूप जो कुछ लाते थे, सोना चाँदी, रत्न आभूषण अथवा फल फूल इत्यादि, वे सारी वस्तुएँ माँ जरा सा भी भेद-विभेद बिना किये उपस्थित जनता को बाँट देती थीं ।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है, सन् १९१३ में भोलानाथ को अष्टग्राम में एक मनपसन्द नौकरी मिली तथा उसी समय पहली बार अपनी गृहस्थी बसाने के लिये उन्होंने श्री स्त्री माँ को ले आने का सिद्धान्त लिया । इस बीच माँ के पित्रालय व श्वसुरालय में अनेकों परिवर्तन घट चुके

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

थे । माँ के पितामाता खेओड़ा की सम्पत्ति बेचकर छोटे बेटे माखन को लेकर विद्याकूट में अपने आदि निवास को लौट गये थे । तब तक माँ की दोनों बहनों का विवाह सम्पन्न हो चुका था। रेवतीमोहन महाशय कुछ दिनों से बीमार थे, इसलिये भोलानाथ उन्हें चिकित्सा के लिये ढाका में अपने पास ले आये थे । इलाज के बाद कुछ स्वस्थ होकर रेवती मोहनजी आटपाड़ा चले गये तथा चन्द दिन विश्राम के बाद नरुन्दी लौट गये । परन्तु कुछ दिनों के पश्चात् वे पुनः अस्वस्थ हो गये एवं उनका स्वर्गवास हो गया । उनके शोकाकुल परिवार के लोग आटपाड़ा चले आये । वहाँ श्री श्री माँ उनके साथ छः महीने तक ठहरीं और फिर विद्याकूट अपने मायके को चली गयीं । वहाँ वे सालभर थीं । विवाह के पश्चात् पहली बार इसी दौरान भोलानाथ का भी विद्याकूट आना हुआ। तदुपरान्त भोलानाथ स्वयं ही श्री श्री माँ को अष्टग्राम में उनके किराये के मकान में ले आये ।

(क्रमशः)

उत्सव-तालिका

१)	गुरुपूर्णिमा उत्सव	—	२१ जुलाई
२)	स्वामी मुक्तानन्द गिरिजी की तिरोधान तिथि	—	१२ अगस्त
३)	स्वामी मौनानन्द पर्वत भाईजी की तिरोधान तिथि	—	१७ अगस्त
४)	झूलन पूर्णिमा	—	१९ अगस्त
५)	जन्माष्टमी	—	२७ अगस्त
६)	श्रद्धेया गुरुप्रिया दीदी की तिरोधान तिथि	—	१० सितम्बर
७)	श्रीमद् भागवत् जयन्ती (वाराणसी आश्रम में)	—	१० से १७ सितम्बर
८)	स्वामी अखण्डानन्दजी की तिरोधान तिथि	—	२४ सितम्बर
९)	नवरात्र प्रारम्भ	—	४ अक्टूबर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जीवन दर्शन

आचार्य चाणक्य ने कहा है कि निःस्वार्थ सेवा करने वाला व्यक्ति किसी पद का आकांक्षी नहीं होता । लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक मांडले की जेल में छह वर्ष बिता कर पुणे लौटे थे । पुणे में उनकी साठवीं वर्षगांठ पर आयोजित समारोह में कई राष्ट्रीय नेताओं ने भाग लिया था । एक नेता ने हंसते हुए उनसे पूछ लिया, 'तिलकजी, यदि भारत स्वाधीन हो गया तो आप प्रधानमंत्री या गृहमंत्री में से किस पद को स्वीकार करना पसंद करेंगे ?'' तिलक ने उत्तर दिया ''मैं अपने धर्मशास्त्रों से प्रेरित होकर अपनी मातृभूमि को अंग्रेजों से स्वाधीन कराने के उद्देश्य से स्वाधीनता आन्दोलन में शामिल हुआ हूँ । जेल में जब मैंने गीता और भगवान कृष्ण के पावन चरित्र का गंभीर अध्ययन किया तो मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि जीवन का अंतिम लक्ष्य प्रभु भक्ति तथा जन सेवा ही है । राजनीति के पचड़े में पड़कर न प्रभुभक्ति हो सकती है और न निःस्वार्थ सेवा, इसलिए मैं स्वराज मिलते ही अपना सारा समय भगवान की भक्ति में तथा सत्साहित्य सृजन और उसके प्रचार में लगाऊँगा ।'' वहाँ उपस्थित नेता तिलक की धर्म व सेवा भावना को देखकर हतप्रभ रह गए ।

(दैनिक भास्कर से साभार)

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बुद्ध जयन्ती पर विशेष

मानव के चिंतन का महान घोषणापत्र (मगना कार्टा)

—डॉ. प्रेम नारायण सोमानी

एक समय भगवान गौतम बुद्ध कौशल में महान भिक्षु संघ के साथ चारिका करते केसमुत्त नामक कालामों के निगम में गये। केसमुत्त के कालामों ने भगवान से अपनी शंका प्रकट की कि कुछ श्रमण ब्राह्मण केसमुत्त आते हैं। वे अपने ही मत को प्रकाशित करते हैं, उसी की बड़ाई करते हैं। दूसरे के मत की निंदा करते हैं, अनादर करते हैं। तिरस्कार करते हैं। उसे कुचल देते हैं। दूसरे भी ब्राह्मण-श्रवणा केसमुत्त आते हैं। वे भी अपने ही मत को प्रकाशित करते हैं। उसी की बड़ाई करते हैं। दूसरे के मत की निन्दा करते हैं, अनादर करते हैं, तिरस्कार करते हैं, उसे कुचल देते हैं, इसलिये हमारे मन में शक पैदा होता है कि इन श्रमणों में से किसने सत्य कहा, किसने असत्य ?

भगवान बुद्द ने उत्तर दिया "संदेह करना ठीक है। शक करने ही की जगह पर संदेह उत्पन्न होता है।

हे कलामों, आओ तुम किसी बात को केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत है, केवल इसलिए न स्वीकार करो कि वह परंपरागत है। केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह हमारे धर्म ग्रन्थ के अनुकूल है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि यह तर्क सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि वह अनुमान सम्मत है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाले का व्यक्तित्व भव्य (आकर्षक) है, केवल इसलिये मत स्वीकार करो कि कहने वाला श्रमण हमारा पूज्य है। हे कलामों जब तुम स्वानुभव से अपने आप ही यह जानो कि यह बात अकुशल है, यह बातें संदोष है, ये बाते विज्ञ पुरुषों द्वारा निदिंत है, इन बातों पर चलने से अहित होता है, दुःख होता है, तब हे कलामो तुम इन बातों को छोड़ दो।"

यहाँ पर भगवान गौतम बुद्ध ने पहले कहा ही है कि कितनी ही सुदीर्घ परंपरा से कोई बात क्यों न आ रही हो, कितने ही लोग उसके बारे में कहने वाले क्यों न हो, यहाँ तक कि धर्म ग्रंथ में भी यदि वह बात क्यों न हो, तर्क सम्मत, अनुमान सम्मत, परीक्षित, अनुमोदित या आकर्षक व्यक्ति और पूज्य आचार्य द्वारा उपदिष्ट क्यों ना हों, दोषरहित है और अहित करने वाला तथा दुःख लाने वाला नहीं है। तथापि यदि स्वानुभूत न हो तो उसे मत स्वीकारो। आजकल जब धर्माचार्य इस बात पर जोर देते हैं कि वह जो कहते हैं, उसे बिना प्रश्न किये तथा हमारे पुराने शास्त्रों में जो लिखा है उसे भी बिना प्रश्न किये मानना है तो वह अंधअद्धा या अंधभक्ति को प्रश्रय देते हैं।

भगवान बुद्ध का कलामों को दिया गया यह उपदेश विचारों के निबिड़तमाकाश में एक ऐसी विद्युत रेखा है जो सर्वदा प्रकाश देती रहेगी और उनके बुद्धिवादी दृष्टिकोण को स्पष्ट रूप से परिलक्षित करती रहेगी।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

काशी मुक्ति माहात्म्य

—दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती

[गताकं से आगे]

असी-वरणयोर्मध्ये पञ्चक्रोशमहत्तरम् ।
अमरा मृत्युमिच्छन्ति का कथा त्वितरे जनाः ।

—केदार माहात्म्य

असी नदी और वरूणा के बीच में सर्वश्रेष्ठ पञ्चकोश है । इसमें देवतागण भी शरीर छोड़ना चाहते हैं और दूसरे लोग की बात ही क्या है ।

पुण्यवानितरो वाऽपि मम क्षेत्रस्य सेवया ।
मुक्तो भवति देवेशि ! नात्र कार्या विचारणा ॥

—मत्स्य पुराण

हे अन्नपूर्णे ! मेरे इस काशी-क्षेत्र की सेवा से पुण्यवान् हो या पापी, दोनों ही मुक्त हो जाते हैं । इसमें सन्देह नहीं करना चाहिए ।

काश्यां विदेहकैवल्यं भवतीति सुनिश्चितम् ।
काश्यां विदेहकैवल्यं प्राप्तेरुत्तरकर्मणाम् ॥

—छान्दोग्योपनिषद्

काशी में विदेह कैवल्य की प्राप्ति होती है, यह सुनिश्चित हैं मरणोत्तर कर्म होने होने के पश्चात् जीव को विदेह कैवल्य प्राप्त होता है ।

यः काशिकां प्राप्य जनो न मुञ्चति ।
श्रीमन्मामाऽऽज्ञापरिपालकः सः ।
प्रसन्नरूपः खलु वै दिशामि
काश्यां स्थितिर्मरणं पापशून्यम् ॥

—का. रह. २४/४५

जो सज्जन काशी प्राप्त करके भी मुक्त नहीं होते तथा मेरी आज्ञा का पालन करते हुए सर्वसम्पन्न होकर रहते हैं, ऐसे महापुरूषों को पापशून्य करके सदैव काशी में ही वास देताा हूँ ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ततः काशीं पुनः प्राप्य कल्पान्ते मोक्षमाप्नुयात् ।

—का. रह. ११/१६०

इसके बाद पुनः काशी प्राप्त कर कल्पान्तर में मोक्ष को प्राप्त हो जाता है ।

दानं यज्ञं पूजनं कुर्वतां यत्प्राप्यं,
काशी लीलया तत्प्रदद्यात् ।
सत्यादौ यद्दुर्लभं स्वात्मरूपं,
तिष्ये काशी सम्प्रदद्यादपाये ॥

—का. रह. २/३९

दान, यज्ञ तथा पूजन करने वालों को जो पुण्य प्राप्त होता है, वह काशी में अनायास ही प्राप्त हो जाता है सतयुग आदि में जो स्वात्मरूप दुर्लभ ज्ञान था, वह ज्ञान काशी जीवों को मरते समय स्वतः प्रदान करती है ।

तदेव काशिकेत्येतत्प्रोच्यते क्षेत्रमुत्तमम् ।
परं निर्वाणसंख्याने सर्वोपरि विराजितम् ॥
अस्यानन्दवनं नाम पुराकारि पिनाकिना ।
क्षेत्रस्यानन्दहेतुत्वादविमुक्तमनन्तरम् ॥

—रुद्र संहिता २/१/६

इस काशी—क्षेत्र को अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अत्युत्तम कहा गया है तथा यह क्षेत्र पर—निर्वाण (सद्योमुक्ति) प्रदान करने वाला है । भगवान् शङ्कर ने इसको पूर्व में आनन्दवन नाम से अलंकृत किया था; क्योंकि यह क्षेत्र आनन्द का हेतु है और शीघ्र ही मुक्ति को प्रदान करने वाला है ।

काशीविश्वेशयोर्भक्त्या तन्नामजपकारकाः ।
निर्लिप्ताः कर्मभिर्नित्यं कैवल्यपदभागिनः ॥

—शतरुद्रसंहिता ४३/३३

जो प्राणी काशी—नगरी तथा भगवान् विश्वनाथ की भक्ति के सहित भूतभावन शिव का जप करता है एवं कर्मो से निर्लिप्त होकर काशीवास करता है, वह अवश्य ही कैवल्य—पद को प्राप्त कर लेता है ।

काश्यां प्रदीपप्रभया प्रकाशितः
पापान्धकारः खलु नाशमेति ।
विश्वेशदेहोद्भवया सुविद्यया
महात्मनां पुण्यकृतां कृतात्मनाम् ॥

—का. रह. १/१६१

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दीपक के प्रकाश से जिस प्रकार अन्धकार नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार काशी में रहने वाले पुण्यवान् आत्मसंयमी महात्माओं का श्रीविश्वनाथ की कृपा से प्राप्त हुई विद्या के द्वारा अन्धकार नष्ट हो जाता है ।

ददामि वो वरं देवदुर्लभं योगिनामपि ।
दत्तो मोक्षस्तु भवतां पुनरावृत्तिवर्जितः ॥

—का. ख. ३०/१६

शङ्कर जी कहते हैं जो काशी देवताओं और योगियों के लिए दुर्लभ है, उसमें मैं वह वरदान और मोक्ष देता हूँ, जिससे पुनर्जन्म नहीं होता है ।

सर्वे वर्णा आश्रमाश्च बालयौवनवार्द्धकाः ।
अस्यां पुर्या मृताश्चेत्स्युर्मुक्ता एव न संशयः ॥

—मु पु. १८५/५३-५४

इस काशीपुरी में शरीरत्याग करने वाला चाहे वह किसी भी वर्णाश्रम का हो तथा किसी भी अवस्था (बाल, युवा, वृद्ध) का हो, मुक्त हो जाता है । इसमें किसी भी प्रकार का संशय नहीं है ।

काश्यां पापं ये प्रकुर्वन्ति,
नित्यं नानाशास्त्रैर्वेदसङ्घैर्निषिद्धम् ।
तेऽपि ब्रह्म प्राप्नुवन्त्येव शीघ्रं,
ज्ञात्वा देवा विश्वनाथं तमूचुः ॥

—का. ख. १६/६४

अनेक प्रकार के वेदशास्त्र से निषिद्ध पापों को जो काशी में करते है, वे भी यदि शरीरत्याग करते हैं, तो वे परब्रह्म परमात्मा ईश्वर को प्राप्त करते हैं, उनको देवता लोग विश्वनाथ ही कहते हैं ।

काश्यां यथा पापकृतांमहाभयं,
काश्यां तथा पुण्यकृतां महत्सुखम् ।
अतः सुखार्थं प्रयतेत धर्मतो,
जीवज्जनो याति मृतः परं पदम् ॥

—का. ख. १६/६५

काशी में पाप करने वालों को जिस प्रकार महाभय प्राप्त होता है, वैसे ही पुण्य करने वालों को महासुख भी प्राप्त होता है । इसलिए धर्मपूर्वक जीवन-यापन करते सुखस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिए पुण्य करने वाला व्यक्ति मरने के बाद परमपद (मोक्ष) को प्राप्त करता है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कोटिजन्मकृतपुण्यभारभृत्,
काशिकां समनुविश्य निर्मलः ।
जायते विगतभारजीवनः,
शान्तिमाप्य परशान्तिभाजनम् ॥

—का. रह. ६/६६

करोड़ों जन्मों के किये हुए पुण्य-भार को धारण करने वाला काशी में प्रवेश करके निर्मल हो जाता है और उसके भार से मुक्त-जीवन बन जाता है तथा शान्ति प्राप्त करता है, तत्पश्चात् परमशान्ति प्राप्त कर मुक्त हो जाता है ।

काश्यां येषां नाम गृह्णन्ति लोका,
बीजं तेषां जायते मोक्षमार्गे ।
काशीं ये वै संस्मरन्नन्यदेशे,
तानप्यात्मा शङ्करस्तारयेच्च ।

—का. रह. ३/२२

काशी में लोग जिनका नाम लेते हैं, यह समझना चाहिऐ कि उन लोगों के मोक्ष का बीज जम गया है । जो अन्य देश में रहकर काशी का स्मरण करते हैं, उन्हें भी भगवान् शङ्कर तार देते हैं, अर्थात् वे भी मुक्त हो जाते हैं ।

वायुभक्षश्च सततं वाराणस्यां स्थितो नरः ।
यदि पापो यदि शठो यदि वा धार्मिको नरः ॥
वाराणस्यां समासाद्य पुनाति स कुलत्रयम् ॥

—का. ख. ३/८२

कोई आदमी सतत (निरन्तर) वायुभक्षण करके यदि वाराणसी में निवास करता है, तो वह कितना ही महान् पापी अथवा महान् अधार्मिक क्यों न हो, वह समस्त पापों से मुक्त होकर अपने तीन कुल (पीढ़ी) को पवित्र कर देता है ।

ऐसी काशी में अवश्य निवास करना चाहिए । भूतभावन भगवान शङ्कर काशी में—

ततो नैव चरेत्पापं कायेन मनसा गिरा ।
एतद्रहस्यं वेदानां पुराणानां द्विजोत्तमाः ॥
मृतानां वै पुनर्जनम न भूयो भवसागरे ॥

—शिव पुराण

काशीवासी को शरीर, मन, वाणी आदि किसी भी माध्यम से पाप नहीं करना चाहिए । हे द्विजोत्तमगण ! यही वेदों एवं पुराणों का रहस्य है । यहाँ (काशी में) मरने वालों का पुनः जन्म नहीं होता और वे पुनः भवसागर में भी नहीं फँसते ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एकेन जन्मना काश्यां निर्वाणं समवाप्यते ।
अतः परं कः सुगम उपायः साधनैर्विना ॥

—वहीं

मनुष्य काशी में एक जन्म में ही निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है । किसी भी साधन के बिना मोक्ष प्राप्ति के लिए काशी से बढ़कर सरल उपाय और दूसरा क्या हो सकता है ?

रथ्यान्तरे मूत्रपुरीषमध्ये चाण्डालवेश्मन्यथवा श्मशाने ।
कृतप्रयत्नोऽप्यकृतप्रयत्नो देहावसाने लभतेऽत्र मोक्षम् ॥

—वहीं

इस काशीपुरी की गलियों में, मूत्र-पुरीष से दूषित स्थानों में, चाण्डाल के गृह में या श्मशान-भूमि में, कहीं भी विधि से या अविधि से मरने पर जीव-मोक्ष-पद को प्राप्त करता है ।

न सा गतिः कुरुक्षेत्रे गङ्गाद्वारे च पुष्करे ।
या गतिर्विहिता पुंसामविमुक्तनिवासिनाम् ॥

—लिंग पुराण

जो गति इस अविमुक्त (काशी) क्षेत्र में प्राप्त होती है, वह न तो कुरूक्षेत्र में, न ही हरिद्वार में तथा न ही पुष्कर में प्राप्त होती है ।

नीरोग उपविष्टो वा रुग्णो वा विलुण्ठनो भुवि ।
मूर्च्छितो वा त्यजेत् प्राणान् मोक्षभ्रान्तिर्न सर्वथा ॥

—पञ्चदशी

काशी-क्षेत्र में कोई भी प्राणी नीरोग, उपविष्ट (बैठा), रोगी, खाट पर करवट बदलता या मूर्च्छित, किसी भी अवस्था में प्राणत्याग करता है, तो वह मुक्त हो जाता है, इसमें कोई संशय नहीं है ।

विश्वेश्वरस्य देवस्य काशीनाम्ना महापुरी ।
यत्र पापो मृतः सद्यः परं मोक्षं प्रयाति हि ॥

—गर्ग संहिता

भगवान शङ्कर की महापुरी का नाम 'काशी' है, जहाँ पापी भी प्राणत्याग करके तत्काल मोक्ष-प्राप्ति करता है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

अपि पातकिनो ये च कालेन निधनं गताः ।
तेऽपि स्वर्गादिहागत्य काश्यां मोक्षमवाप्नुयुः ॥

—गर्ग संहिता

भगवान शङ्कर की 'काशी' जहाँ पापी भी प्राणत्याग करके मोक्ष–प्राप्ति करता है ।

अपि पातकिनो ये च कालेन निधनं गताः ।
तेऽपि स्वर्गादिहागत्य काश्यां मोक्षमवाप्नुयुः ॥

—गर्ग संहिता

यदि महापापी भी कालवशात् काशी में प्राणत्याग करता है, तो वह मुक्त हो जाता है । इसीलिए यहाँ (काशी में) देवता भी स्वर्ग से आकर मोक्ष को प्राप्त करते हैं ।

भूमौ जलेऽन्तरिक्षे वा यत्र क्वापि मृतो द्विजः ।
ब्रह्मैकत्वं च प्राप्नोति काशीशक्तिरूपाहिता ॥

—तीर्थ सुधानिधि, पृ ४५

हे ब्राह्मण ! काशी में यदि कोई भूमि पर या जल में या अन्तरिक्ष में या जहाँ कहीं भी शरीर-त्याग करता है, तो वह ब्रह्म के साथ एकत्व की प्राप्ति करता है; क्योंकि काशी की शक्ति ही ऐसी है ।

तत्र साक्षान्महादेवो देहान्ते स्वयमीश्वरः ।
व्याचष्टे तारकं ब्रह्म तथैवैकं विमुक्तिदम् ॥

—कूर्म पुराण १/१३/६०

वाराणसी में देहान्त होने पर साक्षात् विश्वनाथ जी मुक्तिप्रद तारक–ब्रह्म का उपदेश देते हैं ।

प्राणेषूत्क्रममाणेषु जन्तोरत्र सदाशिवः ।
व्याचष्टे तारकमिति श्रुतिराह सनातनो ॥

—काशी—केदार माहात्म्य २८/७४/७५

यहाँ पर (काशी में) जन्तुओं के प्राण निकलने के समय सदाशिव जी तारक मन्त्र का उपदेश करते हैं, जिससे प्राणी शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त करता है, ऐसा सनातनी श्रुति ने कहा है ।

काश्यां वसन्ति ये धीरा आपञ्चत्वविनिश्चयाः ।
जीवन्मुक्तास्तु ते ज्ञेया वन्द्याः पूज्यास्त एव हि ॥

—केदार माहात्म्य. २८/७४–७५

जो बुद्धिमान धीरजन काशी में मरणपर्यन्त निश्चय करके निवास करते हैं, उनको तो जीवन्मुक्त ही समझना चाहिए और वे लोग सर्वथा वन्दनीय और पूजनीय होते हैं ।

●

[क्रमशः]

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाणी कुसुमाञ्जलिः

—पं. ब्रह्मादीन अवस्थी

सर्वप्रकार करणीयसुकर्मभावाः
तेषां च पूर्णशुभचिन्तनमेव श्रेष्ठम् ।
पूर्णं च यत्र भवतीह समाधिमाहुः,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः ॥ ४९ ॥

आत्मस्वरुपमिलनस्वधनं च श्रेष्ठं
तस्यैव लाभकरणं यतनं साधना सा ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ५० ॥

लोका यथा प्रकुरुते श्रममेव नित्यम्
लाभेच्छया प्रतिदिनं हरिरेवचिन्त्यः ।
यूयं यथा समभिवाञ्छथ पूर्ण शान्तिं
रात्रिन्दिवं भगवतो हरिनाम जप्यम् ॥ ५१ ॥

विश्वस्वरूपमखिलं परमेशरूपम्
तस्य प्रकाशगमनं सततं विधेयम् ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ५२ ॥

सेवा सदा सनियमं भवता विधेया
सर्वेशपादमपि शीर्ष्णि निधाय सुप्तम् ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ५३ ॥

शान्तिं प्रशान्त मनसा कुरु सर्वकाले
अन्यस्य मौखिककवचः न कदापि श्रुत्वा ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मन्येदयं परजनश्च खलो सदात्मा,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः ॥ ५४ ॥

अग्निर्यथा दहति सर्वपदार्थजातं
सर्वेशनाम निखिलं हरतेऽघराशिम् ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ५५ ॥

विश्वेश्वरस्य परिचिन्तनमेव जन्तोः
पापं विनाश्यति स्वं कुरुते प्रकाशम् ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ५६ ॥

दृष्टुं न पारयसि त्वं भगवत्स्वरूपं
पुत्राः सुताः च भवतो भगवत्स्वरूपाः ।
पाता सदा प्रतिदिनं भगवान् पतिस्ते,
इत्थं स्वभाव सहितः कुरु तस्य सेवाम् ॥ ५७ ॥

परमेश्वरस्य सुकृपा खलु सर्वकाले
प्राप्ता भवेत्तव यथाबलमेव नित्यं ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ५८ ॥

द्वारंविधाय मनुजः नहि मार्गदृष्टा
किमप्युपायमवलम्ब्य करोतु मार्गम् ।
द्रष्टुं च शक्ष्यति तदा निज मार्गमेवं,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञै ॥ ५९ ॥

यूयं । सदा निजसुलक्ष्यबलानुसारं
मार्गे ब्रजन्तु भविता भवतां सहायः ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः,
लोका स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ६० ॥

(क्रमशः)

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन-श्रीकृष्ण प्रश्नोत्तर

(गतांक से आगे)

—श्री महेन्द्र प्रताप सिंह गौर

प्रश्न सात—

भगवान श्री कृष्ण की भगवत्ता का ज्ञान अर्जुन को पहले से था । उनकी शक्तियों तथा उनके स्वरूप के विषय में अर्जुन ने पितामह भीष्म से बहुत बात सुन रखी थी । वे जरासन्ध आदि के वध में उनकी भगवत्ता का आभास स्वयं भी प्राप्त कर चुके थे परन्तु फिर भी भगवान के जिज्ञासु भक्त होने के नाते उनका विचार था कि अपनी भगवत्ता का परिचय भगवान के अतिरिक्त देने में कोई भी समर्थ नहीं है । अतः अवसर पाते ही भगवान के यह कहने पर कि, 'यह ज्ञान मैंने इससे पहले सूर्य को दिया था, अर्जुन उनसे प्रश्न कर बैठे ।

अर्जुन उवाच—

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥

(गीता ४/४९)

अर्थात् अर्जुन बोले—प्रभु आपका जन्म तो अभी का है और सूर्य का जन्म बहुत पुराना है अतः आपने ही सृष्टि के आदि में सूर्य से यह योग कहा था यह बात मैं कैसे समझूं ।

सूर्य का जन्म सृष्टि के प्रारम्भ में ही हो चुका था । भगवान कृष्ण वसुदेव जी के यहाँ बाद में पधारे । फिर ज्ञान कैसे दिया इस बात में अर्जुन का कोई आक्षेप नहीं है वरन् वह भगवान के इस रहस्य को भी वे भगवान के मुँह से ही सुनना चाहते इस कारण उन्होंने यह प्रश्न किया ।

अर्जुन के इस प्रश्न के उत्तर में भी भगवान अपना अवतार रहस्य प्रकट करते हुए अपनी सर्वज्ञता की बात कहते हैं ।

श्री भगवान उवाच—

'बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थं परन्तप ॥

(गीता ४/५)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अर्थात् श्री भगवान बोले—हे परन्तप अर्जुन मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो जुके है उन सबको मैं जानता हूँ पर तू नहीं जानता ।

अब जीव तथा ब्रह्म की जन्म-प्रक्रिया का अन्तर भगवान अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं अर्जुन मैं (ब्रह्म) और तुम (जीव) तो सब कालों में विद्यमान थे । मेरा स्वरूप तो नित्य है ही । मैं ही इससे पूर्व कच्छप, वराह, मत्स्य आदि रूपों में अवतरित हुआ था और मैंने अपनी लीलाएं की थी । मेरे लिये भूत तथा भविष्य कुछ भी नहीं है । सभी क्रियायें एवं स्थितियां वर्तमान है । मैं सभी घटनाओं को अब भी वैसे ही देखने में समर्थ हूँ । इसी आधार पर मैंने कल्प के आदि में नारायण-रूप में सूर्य को यह ज्ञान दिया था । 'तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप' में भगवान ने अपनी सर्वज्ञता तथा जीव की अल्पज्ञता का आभास अर्जुन को कराया है जिसे सुपात्र शिष्य रूप में अर्जुन ने स्वीकार भी कर लिया । इस प्रकार अर्जुन की श्री भगवान कृष्ण की भगवत्ता की निष्ठा धीरे धीरे अत्यन्त दृढ़ होती जा रही है ।

प्रश्न आठ—

चौथे अध्याय में भगवान ने एक स्थान पर तत्वदर्शी महापुरुषों से ज्ञान प्राप्त करने की प्रशंसा की है । इस प्रणाली में कर्म का स्वरूप से त्याग का परमात्म-चिन्तन आवश्यक है । इसी अध्याय में फिर आगे श्री भगवान ने कहा कि उसी तत्वज्ञान को कर्मयोग का साधक स्वयं प्राप्त कर लेता है । उपरोक्त दोनों स्थितियों से स्वयं उनके लिए कौन सा मार्ग उपयुक्त होता यह जानने के लिए अर्जुन श्री भगवान से प्रश्न करते हैं ।

अर्जुन उवाच—

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ।।

(गीता ५/१)

अर्थात् अर्जुन बोले हे कृष्ण आप कर्मों का स्वरूप से त्याग करने की और फिर कर्म योग की प्रशंसा करते हैं अतः इन दोनों साधनों में जो निश्चित रूप से कल्याण कारक हो उसको मेरे लिए कहिये । अर्जुन मूलरूप से सम्बन्धियों से युद्ध करना ही नहीं चाहते अतः उन्होंने युद्ध करने को पाप बताया । युद्ध की तुलना में क्षत्रिय-वृत्ति-निषिद्ध भिक्षावृत्ति को भी उचित कहा तथा अन्त में 'न योत्स्य इति' कह कर युद्ध से इनकार ही कर दिया अर्जुन के इस भाव को देखकर श्री भगवान बार बार कर्मयोग को ही आसान तथा श्रेष्ठ बतलाते हुए कहते हैं 'अर्जुन यह कर्मयोग व्यवहार में भी सांख्य योग से सरल है ।'

अर्जुन मोह के कारण सांख्य मार्ग को अपनाना चाहते थे यद्यपि उनके अन्दर पूर्ण वैराग्य का अभाव था जो कि सांख्य-योग के लिए पहली शर्त है । अर्जुन कौरवों को मारकर राज्य नहीं लेना

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चाहते थे परन्तु यदि बिना लड़े राज्य मिल जाता तो उनको स्वीकार था इस बात को श्री भगवान भी जानते थे इसी कारण उन्होंने अर्जुन से युद्धरत होकर 'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्' कहकर इहलोक और परलोक दोनों की प्राप्ति का संकेत दिया था ।

अब भी भगवान अर्जुन के प्रश्न का उत्तर देते हैं । यहाँ 'संन्यास:' का अर्थ ज्ञानयोग है स्वरूप से कर्मों का त्याग नहीं है । सांख्य योग में साधना विवेक-विचार की प्रधानता रहती है जो बिना पूर्ण वैराग्य के सम्भव नहीं है । राग मिटे बिना संसार की स्वतन्त्र सत्ता का अभाव नहीं हो पाता है अत: सांख्य-साधना कठिन होता है । कर्म योग में भी कर्म में राग निश्चित है परन्तु इस राग को परार्थकार्य करके मिटाया जा सकता है अर्थात् कर्म दूसरे के कल्याणार्थ किया जाय । आगे श्री भगवान ने कर्म योगी को नित्य-संन्यासी कहा है क्योंकि वह सरलता पूर्वक संसार-बन्धन से मुक्त हो जाता है तात्पर्य यह कि सांख्य योग की पूर्णता में सांख्य-योग की आवश्यकता नहीं है । इस कारण दोनों में भगवान कर्म योग को श्रेष्ठ बताते हैं ।

कर्म का कर्तृत्व तथा भोक्तृत्व रूप ही बन्धन में बांधता है । जहाँ सांख्य-योगी अपने तीव्र वैराग्य तथा प्रचण्ड संकल्पशक्ति से कर्तृत्व को मिटाता है वही कर्म-योगी परहित कर्म करके भोक्तृत्व को समाप्त करता है । कर्म योगी चूंकि सब कार्य परिहितार्थ करता है उससे स्वयं फल नहीं चाहता है इस कारण इसका अहं सुगमता से समाप्त हो जाता है । वही ज्ञान योगी का अहं दूर तक साथ रहता है क्योंकि वह अपने हित के लिये साधन करता है । यहां ज्ञान योग में संसार की स्वतन्त्र सत्ता का अभाव रखने का प्रमुख भाव है वही कर्म योग में राग का अभाव प्रमुख है । कर्म योगी परार्थ कर्म करता है उसका फल अपने लिये नहीं चाहता है अत: उसका राग धीरे-धीरे स्वत: समाप्त हो जाता है अथवा यो कहें कि साधन काल का राग अन्त में साध्य में ही विलीन हो जाता है ।

प्रश्न नौ—

श्री भगवान ने अर्जुन को बताया कि सांख्य योग तथा कर्मयोग के द्वारा जिस समता की प्राप्ति होती है ध्यान योग के द्वारा भी उसी की प्राप्ति होती है । हमारा मन मानव जीवन में राजा का रोल अदा करता है । यदि वह हमारा मित्र बनकर परमात्मगामी हो जाय तो हमें मोक्ष दिला सकता है यदि शत्रु बन जाय तो इन्द्रियों तथा बुद्धि को साथ लेकर हमे सांसारिक विषयों में लगाकर हमारा पतन करा देता है । अपने चित्त की स्थिरता में मन की इसी चंचलता का विचार करके अर्जुन कहते हैं ।

अर्जुन उवाच—

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन ।
एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम् ॥

(गीता ६/३३)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'अर्थात् अर्जुन बोले हे मधुसूदन आपने समतापूर्वक जो यह योग कहा है, मन की चंचलता के कारण मैं इस योग की स्थिर स्थिति नहीं देखता हूँ ।'

जब श्री भगवान ने समता की प्राप्ति ध्यानयोग से भी सम्भव बताई तो मन की चंचल वृति के कारण अर्जुन में इसे भी कठिन माना । मन की चंचला को अत्यन्त प्रबल मानते हुए अर्जुन आगे स्पष्ट करते हैं—

'चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥

(गीता ६ ।३४)

अर्थात् हे कृष्ण मन बड़ा ही चंचल है, प्रमथनशील दृढ़ और बलवान है । उसका निग्रह मैं वायु की तरह अत्यन्त कठिन मानता हूँ ।

काम (कामना) के रहने के पाँच स्थान बताये गये है । इन्द्रियां, मन, बुद्धि, विषय तथा स्वयं। वास्तव में काम स्वयं में अर्थात् चिज्जड़ ग्रन्थि में रहता है । इन्द्रियों आदि में इसकी प्रतीति मात्र होती है । तभी तक साधक को प्रमथित भी करता है । शास्त्र के अनुसार मन ही बन्धन तथा मोक्ष का कारण है यथा—

'मन एव मनुष्याणाम् कारणं बन्धमोक्षयोः' अतः जब साधक काम को मन से निकाल देता है तब उसकी चंचलता समाप्त हो जाती है इसी कारण अर्जुन ने इस मन का नियन्त्रण वायु के समान अत्यन्त कठिन बताया है ।

अब आगे अर्जुन के विचार को मानते हुए श्री भगवान मन-निग्रह के उपाय बताते हैं ।

श्री भगवान उवाच—

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥

(गीता ६/३५)

अर्थात् श्री भगवान बोले हे महाबाहो अर्जुन यह मन बड़ा चंचल है । इसका निग्रह करना बड़ा कठिन है यह कहना बिल्कुल ठीक है । परन्तु वैराग्य तता अभ्यास के द्वारा इसका निग्रह सम्भव है ।

उपरोक्त प्रश्न हमारे जीवन में रसा-बसा है । हर व्यक्ति यही कहता है कि घंटों ध्यान में बैठने पर भी मन केन्द्रित नहीं होता है । मन पूजा-पाठ में नहीं लगता है । मन बुरे कार्यों की ओर आकर्षित अधिक होता है आदि । श्री भगवान कहते हैं ''अर्जुन ! मन की इस चंचलता पर तुम वैराग्य तथा अभ्यास के द्वारा नियन्त्रण कर सकते हो । इस लोक तथा परलोक के सभी पदार्थों से जब आसक्ति तथा कामनाओं का पूर्ण नाश हो जाता है तब वह 'वैराग्य' कहलाता है । वैराग्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मनुष्य की विषयाभिमुखी गति को रोकने वाला बाँध है । वैराग्य प्राप्ति हेतु परमात्मा के स्वरूप, आकार लीला का सतत-चिन्तन तथा सांसारिक सुख-भोगों की अनित्यता का भान होना आवश्यक है । मन को किसी लक्ष्य-विषय में समाहित करने हेतु उसे अन्य विषयों से बार-बार खींचकर उस विषय में लगाने के लिये किये हुए प्रयत्न को 'अभ्यास' कहते हैं । अभ्यास चित्तधारा को भगवान की ओर ले जाने का सुन्दर मार्ग है । इसमें परमात्मा के विराटत्व का बार-बार लगातार चिन्तन आवश्यक है । ईश्वर-विरोधी जो भी भावना मन में आवे उसे हटाकर ईश्वर-चिन्तन करना है । एक बात का ध्यान रहे जहाँ मन का पूर्ण विरोध कर यह दोनों बातें कठिनता से सम्भव होंगी वही अन्तर में साक्षी-भाव की सहायता से दोनों की पूर्ण उपलब्धि सम्भव है । वृत्तियों के वैराग्य तथा निष्काम-कर्म के अभ्यास के द्वारा मन का नियंत्रण सम्भव हैं

प्रश्न दस तथा ग्यारह (दो प्रश्न)—

छठवें अध्याय के श्लोक सैतीस, अड़तीस तथा उन्तालिस में अर्जुन श्री भगवान से दो प्रश्न पूछते हैं । वह पहले कहते हैं—

अर्जुन उवाच—

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलतिमानसः ।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ॥

(गीता ६/३७)

अर्थात् अर्जुन बोले जो योग में श्रद्धा रखने वाला है किन्तु संयमी नहीं है इस कारण जिसका मन अन्त में योग से विचलित हो गया है ऐसा साधक योग की सिद्धि को अर्थात् भगवत्साक्षात्कार को प्राप्त न होकर किस गति को प्राप्त होता है । यह पहला प्रश्न है कि जो अन्त में योगभ्रष्ट हो जाता है उसकी क्या गति होती है । उत्तर में श्री भगवान कहते है ।

'प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वती समाः ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभष्टोऽभिजायते ॥

(गीता ६/४१)

'अर्थात् वह योगभ्रष्ट पुण्य कर्मकर्ता के लोकों को प्राप्त होकर और वहां बहुत वर्षों तक रहकर फिर यहाँ शुद्ध श्रीमानों के घर में जन्म लेता है ।'

'प्राप्य पुण्यकृतां लोकान्' का आशय है यज्ञादि पुण्य कर्म करने वाले लोग ही इस लोक में पहुँचते हैं कुकर्मी नहीं । उपरोक्त योगभ्रष्ट भी उस पुण्य लोक में पहुँचता है परन्तु दोनों का पुण्य-भोग-काल पृथक होता है । यज्ञ दानादि करनेवाला सकामी व्यक्ति पुण्य समाप्त होने पर पुनः जन्म लेकर पृथ्वी पर आ जाता है परन्तु योग भ्रष्ट का उद्देश्य भोग भोगना नहीं है प्रत्युत परमात्म-प्राप्ति

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अत: वह अपनी किसी क्षीण वासना के कारण जब स्वर्ग जाता है तो वहाँ उसकी साधन-संपत्ति क्षीण नहीं होती अत: वह स्वर्ग में भी असीम वर्षों तक रहता है ।

यज्ञकर्ताओं का स्वर्गारोहण कर्मज है । उन्होंने यज्ञ-दानादि इसी इच्छा से किये है परन्तु योग भ्रष्ट का इस लोक में जाना उसकी साधन-संपत्ति के कारण हुआ है अत: पहला योगभ्रष्ट फिर उन लोकों से वापस आकर श्रीमानों के घर जन्म लेता है । श्रीमान अर्थात् ऐसे व्यक्ति जो धर्म पूर्वक व्यापार आदि में प्रतिष्ठित होते हैं ।

अब दूसरी प्रकार का योगभ्रष्ट किस गति को प्राप्त होता है यह बताते हुए श्री भगवान कहते है—

'अथवा योगिनामेव कुले भवति-धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ।।

(गीता ६/४२)

अथवा वैराग्यवान योगभ्रष्ट ज्ञानवान योगियों के कुल में जन्म लेता है । इस प्रकार का जन्म संसार में दुर्लभ है ।

●

आनन्द छलिया

—"सरोज"

आनन्द छलिया नाम तिहारो
आनन्द छलिया नाम ।
तीन लोक के स्वामी तुम प्रभु
वृन्दावन शुभ ठाम ।
आनन्द छलिया नाम ।
विश्व विमोहन गोरस दोहन,
माखन चोरी काम ।
मोर मुकुट, बंसी मृदु अधरन,
शोभा सरस ललाम ।
आनन्द छलिया नाम ।
चंचल चितवन चित्त चुरावत
मधुर मधु मुसकान ।
गोपी वल्लभ प्राण गोपाला,
राधा-प्राणाराम
आनन्द छलिया नाम ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ आनन्दमयी आश्रम-भीमपुरा में अनुष्ठित संयम सप्ताह

—अनुराधा जोशी

पूज्य स्वामी श्री भास्करानन्दजी के अध्यक्ष पद एवं उनकी उपस्थिति में दिनांक ३१ जनवरी से ६ फरवरी तक चाँदोद भीमपुरा के माँ आनन्दमयी आश्रम में एक संयम सप्ताह सम्पन्न हुआ । ६० व्रतियों के साथ मैंने भी यह व्रत पूर्ण श्रद्धा से किया । पवित्र नर्मदा नदी के तट पर मनोहारी वातावरण में सप्ताह के यह सात दिन प्रत्येक व्रती के जीवन में अमूल्य और अलभ्य दिन घंटे और प्रतिपल थे । जिसका मूल्य नहीं लगाया जा सकता । ऐसा अमूल्य इसलिए कि यहाँ स्वयं जगज्जननी माँ विराजमान थीं । यह पुण्यभूमि, देवी नर्मदा का सुरम्य तट, माँ जहाँ साक्षात् बैठकर सत्संग हरिनाम, कीर्तन करवाती थीं, वह पौराणिक वट वृक्ष और साथ में निःशब्द निसर्ग । न जाने कितने दिव्य सूक्ष्म आत्माओं का आशीर्वाद साधक व्रतियों के यह सात दिन की साधना में सहायक और प्रेरणादायी बन गये थे । अलभ्य इसलिये कि बहुत से आत्मज्ञानी महात्माओं का सत्संग यहाँ प्रतिदिन मिला और ज्ञानी तत्त्ववेत्ताओं के प्रवचन सुनने और उनके विचारों पर मनन चिन्तन करने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ ।

प्रत्येक जीवन में संयम होना अति आवश्यक है । साधक को अपनी आध्यात्कि प्रगति के लिये संयम महाव्रत साल में एकबार करना बहुत जरूरी है । श्री श्री माँ भी संयम के प्रति उत्साह देती थीं । बाह्य संयम करने से आंतरिक संयम आसानी से हो सकता है । भीमपुरा में श्री माँ के आश्रम में जो संयम महाव्रत सप्ताह होता है, उसकी एक विशेषता और है वह यह कि पूरे दिन का आयोजन जो सराहनीय है । संयम की दिन चर्या में प्रत्येक कार्यक्रम के बीच दस मिनट का विश्राम दिया जाता था । साधकों को विश्राम मिलने पर वह अगले कार्यक्रम में स्फूर्ति के साथ भाग लेते थे ।

प्रतिदिन सुबह के सत्र में साढ़े पाँच से साढ़े ६ बजे तक उषा कीर्तन उसके बाद विश्राम । साढ़े सात से आठ तक वेद पाठ होता था । आठ से नौ बजे तक मौन होता था जिसमें साधक अपनी अपनी इच्छा के अनुसार जप या ध्यान कर सकते थे । नौ बजे के बाद १० मिनट का विश्राम मिलता था । इस दस मिनट में साधक पुनः प्रफुल्लित होकर अगले कार्यक्रम में शामिल होने के लिए पंडाल में आ जाता था । और अधिक स्वस्थता से अगला प्रवचन सुनता था । सवा नौ से दस तक गीतापाठ और उसके बाद १० से १२ तक वेदान्त पर प्रवचन होते थे । वेदान्त का विषय था छांदोग्य उपनिषद्, चांदोद के पूज्यपाद स्वामीजी श्री नागेशपुरी जी इस गंभीर विषय को लेकर प्रवचन करते थे । वैसे तो वेदान्त विचार गहन और गंभीर विषय है परन्तु स्वामीजी अपनी सरल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust, Funding by MoE-IKS

और लाक्षणिक भाषा में उदाहरणों के साथ छांदोग्य उपनिषद् के छठे अध्याय पर अपना विचार-प्रकाश डालते थे । बड़ी आसानी से वेदान्त विषय के मर्म को ऐसे समझाते थे जैसे हम साधकों को कोई प्राचीन गुरुकुल में बैठकर पढ़ा रहे हो । दूसरे दिन अगले प्रवचन में हमसे प्रश्न पूछकर समझाते थे यानि हम श्रोताओं की याददाश्त शक्ति की परीक्षा भी हो जाती थी । जिसकी यह मान्यता है कि वेदान्त अति कठिन विषय है और सामान्य मानव को समझना कठिन है ये बात पूज्य स्वामी जी का प्रवचन सुनकर गलत साबित हुआ । इस अध्याय में गुरु उद्दालक अपने शिष्य को समझाते हैं वैसे ही बड़ी धीरज के साथ स्वामीजी ने हम साधकों को समझाया । सात दिन में इस अध्याय को उन्होंने हमें सरलता से समझाकर पूरा किया । मुझे पूरा विश्वास है कि जो साधक भक्त पूरी तन्मयता के साथ सुनता और समझता था उनको इस विषय का मर्म पूरी तरह जीवन भर याद रहेगा ।

वेदान्त प्रवचन के बाद विष्णु सहस्रनाम का पाठ पठन और चंडीपाठ होता था । साढ़े ग्यारह के पश्चात् सुबह का सत्र समाप्त होता था । १२ बजे भोजन और दो बजे तक विश्राम होता था ।

दोपहर का सत्र मौन के साथ २ बजे शुरू हो जाता था । प्रत्येक साधक अपने-अपने आसन ग्रहणकर पंडाल में शांति से मौन-जप-ध्यान में बैठ जाते ते । ३ बजे तक कीर्तन होता था । तीन बजने में दो मिनट रहने पर पंडाल में शंखनाद किया जाता था । दूसरा शंखनाद ठीक तीन बजे घोषित होता था । इस दौरान अपना आसन ग्रहण करना होता था । उसके बाद पंडाल का दरवाजा बंद होने पर यदि कोई साधक देरी से आये तो वह पंडाल के बाहर शिव मन्दिर में बैठकर मौन करता था । ये नियम बहुत ही अच्छा था, यदि कोई कारणवशात्, देर से आये तो भी पंडाल में किसी को निषेध नहीं होता । चार बाजे मौन का समय समाप्त होने पर फिर से साधक को १० मिनट का विश्राम मिलता था । ठीक सवा चार बजे ही पुराण तत्वचिंतन होता था । वक्ता था, पूना के विद्वान पंडित श्री अशोक कुलकर्णी आजतक हम सब भागवत सप्ताह में सिर्फ भगवान की कथाओं को सुनते आये हैं । उन कथाओं को सुनकर हमारा मन भक्ति से भावुक हो जाता था, लेकिन भाव के साथ ज्ञान पाने प्रत्येक भगवत् कथा की मार्मिक समझ का होना भी अत्यन्त आवश्यक है । भगवान की भक्ति, भगवान के स्वरूप एवम् भगवान की लीलाओं की समझ मार्मिक ज्ञान के साथ होनी चाहिए । भगवत गीता में भगवान श्री कृष्ण स्वयं कहते हैं कि, उनको ज्ञानीभक्त प्राणप्रिय हैं । अशोक कुलकर्णी जी ने हम भक्तों को पुराण कथाओं के माध्यम से भाव के साथ-साथ ज्ञान दृष्टि भी दी । जिस कारण भगवान की अप्रतिम लीलाएँ अपने योग्य स्वरूप में समझ में आये । अशोक जी ने भगवत् कथा के मूलतत्व को वैसे ही सुरक्षित रखकर अपनी सुमधुर और अलंकृत शिष्ट भाषा से बहुत ही आसानी से भागवत जी के प्रत्येक स्कन्ध के प्रमुख प्रसंग को लेकर हमें समझाया । उन्होंने संयम सप्ताह के पूरे सात दिन में भगवान की मुख्य लीलाएं जैसे कि माखन-चोरी, चीरहरण प्रसंग, वेणुगीत, प्रह्लाद चरित्र, ध्रुव-चरित्र, सुदामचरित्र और अन्त में भागवत जी का ग्यारहवा स्कंध, जिसमें साधक जीवन के उपयोगी उपदेश हैं उन्हें सरल और भावपूर्ण भाषा में समझाया । साथ में स्वयं श्री श्री आनन्दमयी माँ के बहुत पुराने भक्त-शिष्य होने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के कारण अवसर आने पर श्री माँ के पुराण ग्रंथ के प्रति जो विचार थे वे भी प्रदर्शित किये । भघवत् कथा के अंशों का मर्म समझना आसान नहीं हैं । फिर भी श्री श्री माँ की कृपा से हम सब साधक भगवान की लीलाओं की कथा के तात्विक एवं मार्मिक रस में मानो डूब गये । मानों भगवान के क्षीर सागर का रसास्वादन हमें भी मिला । ये कथामृत का रसास्वादन आज भी उतना ही ताजा है । ये एक घंटा हाथों से ऐसे निकल जाता था मानो समय स्तंभित हो गया हो । काल भी कालातीत परमेश्वर में जैसे समाधि लगा लेता था ।

पुराण प्रवचन के बाद आधा घंटा शिव-महिम्न-स्तोत्र और नर्मदाष्टक का सामूहिक पाठ किया जाता है । सामूहिक पठन की ध्वनि नर्मदा जी के शांत जल की लहरों जैसे प्रतीत होती थी । पंडाल भी इस तरह से बांधा गया था कि, प्रत्येक साधक को नर्मदा जी का दर्शन अपने आसन पर बैठकर भी होता था । भगवान की मनोहारी कथाएँ सुनते-सुनते साधकों के साथ देवी नर्मदा जी का जल भी अपनी धाराओं में शांत रूप से प्रवाहित होता था । मातृपट के चारों ओर निःशब्दता और अलौकिक वातावरण से प्रतीत होता था कि सूक्ष्म में कई दिव्य महात्माओं सूक्ष्म शरीर से भगवान की कथा का दिव्यामृत पान कर रहे थे । श्री श्री माँ जैसे हमेशा जागृत में भी समाधिपूर्ण अवस्था में रहती थीं, वैसे प्रकृति भी चैतन्य होकर भी भाव समाधि में डूब गयी हो । श्री मां मातृवट के बीचों बीच स्वयं चित्र रूप में विराजित थीं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता था जैसे माँ फिर से देह धारण करके हमारे लिए हम सबको संयम महाव्रत सिखाने आई हो । श्री श्री माँ का आर्शीवाद और उनका पवित्र एवं दिव्य सूक्ष्म सानिध्य संयम महाव्रतियों को प्रतिक्षण मिलता रहता था । ये अनुभव का विषय है । सिर्फ सुनने या पढ़ने से नहीं होता । अपने-आप को गुरु चरणों में समर्पित करने पर उनकी अनुभूति अवश्य होती है । जिन्होंने ये संयम महाव्रत में हिस्सा लिया उन सभी को किसी भी प्रकार से 'माँ' की उपस्थिति का अनुभव जरूर हुआ होगा । भीमपुरा आश्रम की पुण्यभूमि ही इतनी पवित्र और मंगलमयी है कि जो साक्षात् जगदंबा का दर्शन करवाने में सक्षम है ।

इस तरह स्तोत्र-पाठ के साथ दोपहर का सत्र समाप्त होता था । सायंकाल सत्र साढ़े सात बजे से शुरू होता था । शाम को साढ़े सात बजे तक कीर्तन होता था । उसके बाद तुरन्त ही भगवत् गीता दर्शन का प्रवचन होता था । ये प्रवचन बालासिनीर के प्रसिद्ध शास्त्री जी श्री हरिप्रसाद जी अपनी विद्वत्तापूर्ण वाणी से करते थे । उन्होंने गीता जी में से स्थित प्रज्ञ के लक्षण एवं साधक जीवन के उपयोगी सभी श्लोकों का विश्लेषण अपनी अलग रसमय शैली से किया । अपनी रसपूर्ण शैली में अनेक उदाहरण से श्रोताओं को गीताजी के चुने हुए श्लोकों का गूढ़ार्थ समझाया । सप्ताह के अन्तिम दो दिन कारणवशात् उनकी अनुपस्थिति में श्री अशोक कुलकर्णी जी ने ये स्थान ग्रहण किया श्री श्री माँ के उपदेशों को लेकर के गीता जी के कुछ श्लोकों की परिभाषा की । रात को नौ बजे तक गीतादर्शन होने के पश्चात् जिसकी हरेक साधक बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा करता था वह प्रवचन "मातृ प्रसंग" शुरू होता था । मातृ प्रसंग में इन्दौर के स्वामी श्री केदारनाथ जी बाबा मातृवाणी के अंश अपनी मधुर वाणी से प्राणवन्त करते थे । केदारनाथ जी बाबा की पहले ही दिन की अनुपस्थिति में श्री अशोक जी ने यह स्थान संभाला था और श्री माँ के वह प्रसंग जो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किताबों में अभी तक लिपिबद्ध नहीं हैं उस पर प्रकाश डालते थे । श्री केदार बाबा ने मातृवाणी के प्रसंग सुनाते थे । तब एक घंटा मानो एक पल में समाप्त हो जाता था । माँ हम सबके बीच हमारे साथ ही थीं, ऐसा प्रतीत होता था । संयम महाव्रत के तीसरे दिन से लेकर, अन्तिम दिन तक श्री केदार बाबा ने मातृ-प्रसंग अपनी शांत और प्रखर शैली में सुनाया । इन्होंने स्वयं श्री श्री माँ की उद्घोषित वाणी सुनाई । श्री केदारनाथ बाबा ने—"श्री श्री माता आनन्दमयी वचनामृत" (श्री श्री आनन्दमयी माँ के साथ सत्संग एवं प्रश्नोत्तर) पुस्तक में से साधक भक्तों एवं माँ के शिष्यों को मातृ प्रसंग सुनाया । यह पुस्तक श्री केदारनाथ जी बाबा ने चार भागों में लिखा हैं । इन चार पुस्तकों की श्रेणी का विमोचन स्वामी जी श्री परम पुण्य भास्करानन्द जी के शुभ करकमलों से हुआ इन चारों पुस्तकों का प्रत्येक पन्ना साधक जीवन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं । जिसमें स्वयं श्री श्री माँ ने मुमुक्षुओं के प्रश्नों के प्रति उत्तर दिया है, जैसे श्री कृष्ण भगवान के श्री मुख से भगवत् गीता उद्घोषित हुई हैं । इसी तरह साक्षात् जगदंबा के श्री मुख से ये वाणी प्रगट हुई हैं । साधक को साधना पथ की सभी शंकाओं एवं प्रश्नों का समाधान रूप से प्रत्युत्तर इस श्रृंखला में से मिल जाता हैं । इस अमूल्य वाणी को लिपिबद्ध करके श्री केदार बाबा ने आनेवाली पीढ़ीओं पर बड़ा ही उपकार किया है । जो माँ से नहीं मिले हैं, उनके लिए स्वयं माँ के ये शब्द ब्रह्मस्वरूप हैं । इसे एकबार जरूर पढ़ना चाहिए ।

(क्रमशः)

कृष्ण कन्हैया कारे

राधा वर रसवारे, कृष्ण कन्हैया कारे ।
खोज फिरत कुंज गलियन में
कहुँ नहिं नयन निहारे ।
बैठे हते लुके, उर भीतर
दै कै कपट किवारे ।
आकुल व्याकुल थकित आन
जब खोले उर के द्वारे ।
लखी मन्द मुसकान, मगन मन
मनहर श्याम छटारे ।
ज्यों धन घूम घिरें धरती पै है सनेह मतवारे ।
तैसेई सदा 'सरोज' शीश पै रहियो बाँह पसारे ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ग़ज़ल

—श्री रमेश चन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

अर्थ की आराधना, हम से न होगी ।
हर किसी की अर्चना, हम से न होगी ।
रूठते हैं रूठ जायँ चाँद तारे
तमस् की अभ्यर्थना, हम से न होगी ।
प्रार्थनायें याचनायें बन गयी हैं ।
याचना की प्रार्थना, हमसे न होगी
रात में कुछ और दिन में कुछ और,
इन मौसमों की वन्दना, हमसे न होगी ।
पुण्य हो या पाप, दोनों बाँधते हैं
बन्धनों की चिन्तना, हम से न होगी ।
जो हमें प्यारा लगे, हम त्याग देते
त्याग की भी कामना, हमसे न होगी
कल्पना जो समाये, क्षुद्र हम से
क्षुद्र की फिर कल्पना, हम से न होगी ।
जो बदलता है, असत् है और मिथ्या
तब असत् की चाहना, हम से न होगी
मात्र वह है, और वह अद्वैत भी है
दूसरे की साधना, हम से न होगी ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"जस की तस धर दीन्ही चदरिया"

—श्री विवेक चौरसिया

भारतीय संत परम्परा के अग्रणी संत माने जाने वाले स्वामी श्रीरामसुखदास जी महाराज ३ जुलाई को तड़के ऋषिकेश में ब्रह्मलीन हो गए । जीवनभर भगवत् गीता और रामनाम के संकीर्तन के प्रचार को समर्पित स्वामीजी रामस्नेही संप्रदाय से जुड़े थे लेकिन संप्रदायों, संस्थाओं से परे उन्होंने अपना एकमात्र लक्ष्य रखा मनुष्य मात्र का धर्म के जरिए परिमार्जन और परिष्कार । सहज सरल भाषा में धर्म के जटिल और गूढ़ अर्थों को समझाने वाली उनकी सौ से ज्यादा पुस्तकों की डेढ़ करोड़ से अधिक प्रतियां बिकीं जो अपने आप में किसी लेखक की पुस्तकों की रिकार्ड बिक्री मानी जाती है । पूरे १०३ बरस स्वामी जी इस धरती पर रहे और धर्म के बढ़ते-बनते बाजार के बीच अपनी एकदम अलग एकदम अनूठी छवि के कारण देशभर में भक्तों के वंदनीय रहे । जीवन भर उन्होंने न कभी एक पुष्प स्वीकार किया न कभी शिष्य बनाए, न दान लिया न फोटो खिचवाए, न प्रचार प्रसार पर जोर दिया । उनके लिए प्रचार का मतलब था गीता के श्लोकों में छुपे गूढ़ अर्थो का उद्घाटन और जन-जन तक उनका विस्तार । यही वजह है कि ३ जुलाई को तड़के जब उन्होंने ऋषिकेश में अपनी पार्थिव देह त्यागी तो चिता पर भी फूल नहीं चढ़ाए गए । श्रद्धा में डूबें जो भक्त उनकी अंतिम यात्रा के साक्षी बने, उन्होंने उनकी पार्थिव देह पर तुलसी की सूखी शाखाएं ही अर्पित की ।

स्वामी रामसुखदासजी महाराज कब, कहाँ जन्मे यह उनके लाखों भक्तों में से किसी को पता नहीं । भूले से यदि किसी ने पूछने की जिज्ञासा भी जताई तो स्वामीजी ने बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़ लिए । उनका पता गीता प्रेस गोरखपुर ही था । उन्हें कहीं प्रवचन सत्संग के लिए आमंत्रित किया जाता तो आयोजक इसी पते पर संपर्क करते थे । करीब ९० बरस पहले सनातन धर्म के साहित्य को आम लोगों तक सस्ती दरों पर पहुंचाने के उद्देश्य से जब गीता प्रेस की स्थापना हुई, उसके कुछ वर्षों बाद से ही स्वामीजी प्रेस के नियमित लेखक बन गए थे । ८० बरस तक स्वामीजी ने प्रेस के लिए १०० से ज्यादा ग्रंथ लिखे और सनातन धर्म में छुपे जीवन के संदेशों को जनता तक पहुंचाया । भगवत्गीता पर उनका लिखा ७०० पृष्ठों का भाष्य "साधक संजीवनी" उनकी कीर्ति का आधार बना । एक ऐसी किताब जिसने भगवतगीता की हजार साल में लिखी हुई एक हजार से ज्यादा टीकाओं के मुकाबले सीधी-सरल भाषा में इतनी सहज व्याख्या दी कि गीता के बड़े तत्व-ज्ञानी और छोटे से छोटे जिज्ञासु चमत्कृत तो हुए ही, तृप्त भी हो गए । १०० से ज्यादा अन्य ग्रंथों में स्वामी जी के प्रवचन और जीवन तथा भगवत अनुभवों का विश्लेषण आज सनातन धर्म के साधकों

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की निधि है । अपने संतत्व की नौ दशक की यात्रा में स्वामीजी रामायण गीता, रामनाम के महायज्ञ, गोरक्षा के आंदोलन , सात्विक जीवन की वकालत और व्यसन त्यागने की गुहार लगाते रहे । संभवतः वे देश के एकमात्र संत है, जिन्होंने गर्भपात को रोकने के लिए एक करोड़ से ज्यादा परचे छपवाए और लोगों को बांटकर निवेदन किया इसे रोकिए, यह पाप है, यह अपराध है ।

स्वामीजी यदि सिर्फ भगवा वस्त्रधारी संत भर होते तो खास बात नहीं थी लेकिन वे संत से ऊपर देवत्व की सीमा तक पहुँच चुके थे । अपनी सादगी अपनी विनम्रता जीवन की क्षणभंगुरता और समाज के प्रति संत की वचनबद्धता ने उन्हें संतो की परंपरा में एकदम अलग स्थान दिया हैं । कोलकाता के ईडन गार्डन में जब गीता पर उनके प्रवचन होते तो एक लाख भक्तों की भीड़ पिनड्रोप साइलेंस की मुद्रा में सुनती रहती । पिछले चार साल से वे ऋषिकेश के गंगा तट स्थित गीता भवन में ही ठहर गये थे । २९ जून को भवन में ही उन्होंने अंतिम प्रवचन दिया था । यह स्वामी जी की कीर्ति ही थी कि ३ जुलाई को जब उन्होंने देह त्यागी तब शिष्यों-श्रद्धालुओं का कोई नेटवर्क न होने के बावजूद गंगा तट पर हुए अग्नि संस्कार में लगभग चार हजार लोग जमा हो गए । सबकी आंखे नम थीं और व्यक्तित्व समग्र रूप से स्वामीजी के प्रति नत-मस्तक । भारत माता मन्दिर के संस्थापक स्वामी श्री सत्यमित्रानन्दजी गिरि ने उनके बारे में जो कहा वही स्वामी रामसुखदास जी के व्यक्तित्व-कृतित्व का निचोड़ है । सत्यमित्रानंद जी ने कहा— सनातन धर्म के जगत का आकाश सूर्यविहीन हो गया है । रामकृष्ण परमहंस के बाद भारत की संत परम्परा के सबसे बड़े संत थे । स्वामी रामसुखदास जी महाराज ऐसे संत जिन्होंने अपनी चदरिया ज्यों की त्यों धर दी ।

(दैनिक भास्कर से साभार)

विशेषः— श्री श्री आनन्दमयी माँ की पूज्यस्वामीजी के साथ कईबार भेंट हुई है । उनके साथ माँ का मधुर पारमार्थिक सम्बन्ध था ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आश्रम-संवाद

(१) कनखल :—

श्री श्री आनन्दमयी संघ के प्रधान केन्द्र कनखल में श्री श्री माँ का ११० वाँ जन्मोत्सव सन् २००५ का ३ मई से २६ मई पर्यन्त सबके प्रयास से सुष्ठु रूप से सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर यथारीति शतचण्डी पाठ, पूजा होम का अनुष्ठान भी यथावत् हुआ ।

११ मई को अक्षयतृतीया में सब मन्दिरों में पूजा जलपूर्ण घटदान, साधु भंडारा, तथा १३ ता. को शंकराचार्य की जयन्ती अनुष्ठित हुई । १६ मई वैशाखी शुक्ला अष्टमी को बाबा भोलानाथ की तिरोधान तिथि में विशेष पूजा, साधु भोजन इत्यादि संम्पन्न हुआ स्थानीय सभी मन्दिरों में पूजा हुई। २३ मई को महात्माओं का प्रवचन हुआ । जिनमें कैलाशपीठाधीश्वर महामण्डलेश्वर स्वामी विद्यानन्दजी तथा भोलागिरि आश्रम के महामण्डलेश्वर स्वामी देवानन्दजी तथा गीतामन्दिर के मण्डलेश्वर स्वामी मंगलानन्दजी का नाम उल्लेखनीय है । २३ मई को १०८ कुमारी भोजन एवं वटुकभोजन सम्पन्न हुआ । दरिद्रनारायण सेवा, तथा अस्पतालों में रोगियों के लिए प्रसाद वितरण किया गया । अन्य सब धार्मिक तथा सांस्कृतिक अनुष्ठानों के साथ-साथ रासलीला सम्पन्न हुई। २६ मई को रात्रि के शुभ ब्राह्म मुहूर्त में श्री श्री माँ की तिथि पूजा समाधि मन्दिर में हुई । इस बार भंडारे में विशिष्ट महात्माओं ने भी भाग लिया था ।

(२) वाराणसी :—

यहाँ वाराणसी आश्रम में सन् २००५ का श्री श्री माँ का जन्मोत्सव ३ मई प्रातःकाल श्री चण्डी के कलश स्थापन द्वारा प्रारम्भ हुआ । रात को जन्मदिन की पूजा हुई । ३ मई से २६ मई पर्यन्त उदयास्त अखण्ड जप, श्री श्री माँ की आरती पूजा, समवेत गीता चण्डी पाठ एवं रामायण स्तवपाठ, प्रतिदिन सायं आरती के पश्चात् मातृ चालीसा पाठ आदि निरन्तर नियमित रूप से हुआ ।

११ मई को अक्षयतृतीया के पावन तिथि में सब मन्दिरों में षोडशोपचार से पूजा, घटदान, भोग आदि मध्याह्न में २४ साधुओं को वस्त्र, दक्षिणाा देकर भोजन कराया गया । १६ ता. को बाबा भोलानाथ की तिरोधान तिथि को पूजा, भोग आदि कें पश्चात् साधु भोजन कराया गया ।

२६ मई को मध्याह्न में चण्डी कलश की पूर्णाहुति होम के द्वारा समाप्त हुई । इसी दिन सायं कीर्तन के अनन्तर विशिष्ट विशिष्ट कीर्तन गायकों ने श्री श्री माँ के सम्मुख उच्च स्वर से पवित्र महानाम संकीर्तन के द्वारा दिशाओं को झंकृत किया ।

इसके पश्चात् आनन्दज्योतिर्मन्दिर के हॉल को फूलों बन्दनवारों, तथा झालरों से सजाया गया केले के स्तंभो से तोरणद्वार सजाया गया । मन्दिर के अन्दर भी बंदनवार तथा बेला की लरियो से चारों ओर सजाया गया । श्वेत वेदी पर स्थित श्री श्री माँ की तीन मूर्त्तियों को नवीन वस्त्र धारण

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करा कर मालाओं से सुसज्जित की गयी । बीच में माँ की प्रतीक चिह्न में इसबार नीली रेशम के कपड़े से आवृत कर उसको श्वेत बेला की लरियों से सुसज्जित किया गया । तोरणद्वार के सम्मुख फूलों के अल्पना से सजाकर बीच में १०८ प्रदीप स्थापित की गई तदनन्तर यथा समय शंख घंटा वाद्यों के निनाद से, धूप धूनाओं से आमोदित पवित्र भावगंभीर वातावरण में यथासमय पूजा प्रारम्भ हुई । वेदपाठ के उपरान्त ३.१५मिनट से ३.४५ मिनट पर्यन्त मौन उसके पश्चात् कीर्तन प्रारम्भ हुआ । अन्त में १०८ प्रदीप प्रज्वलित कर माँ को १०८ कमलों की माला पहनाई गई । पूजा का भाव अतुलनीय था । कुमारी पूजा के अनन्तर श्री श्री माँ की आरती हुई । पूजा समाप्त होते भोर (सबेरा) हो गया । इधर उषा कीर्तन की धुन (भजो माँ आनन्दमयी) सुनाई पड़ने लगी । सब लोग पुष्पाञ्जलि देने के पश्चात् प्रसाद पाने लगे ।

दूसरे दिन थोड़ी देर बाद ही मन्दिर में फल मिठाईयाँ सजाना प्रारम्भ हुआ । रसोई घर में विविध प्रकार के भोग बनने लगे । मध्याह्न में नाना प्रकार के अन्न-व्यञ्जन, फल-मिठाईयों से मां को भोग लगाया गया आरती के समय पुनः १०८ प्रदीप प्रज्वलित कर श्री श्री माँ की आरती की गई । आरती के पश्चात् ''त्वं स्वाहा'' की स्तुति के पश्चात् सब लोग ''मैया तेरा बना रहे दरबार'' गाने लगे । प्रसाद वितरण के साथ-साथ उत्सव की समाप्ति हुई ।

आगामी २१ जुलाई को गुरुपूर्णिमा का उत्सव अनुष्ठित होगा ।

(३) आगरतला :—

आगरतला में श्री श्री माँ के आश्रम में श्री श्री मां का शुभ आर्विभाव महोत्सव सुसम्पन्न हुआ । ३ मई को श्री श्री माँ के शुभ जन्म दिन में प्रातः काल श्री श्री माँ की विशेष पूजा एवं सायं काल श्री श्री माँ के आश्रम के हॉल में विशेष सत्संग का कार्यक्रम अनुष्ठित हुआ ।

२७ मई के प्रातःकाल निर्मला शिशुभवन में शिशुओं को फल-मिठाई बाँटी गई । सायंकाल संध्या आरती के माध्यम से श्री श्री माँ का आवाहन किया गया । सायं ७ बजे से ८ बजे तक ''माँ आन्दमयी विद्यापीठ'' की छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया । रात बारह बजे से आश्रम के हॉल में भक्ति परक संगीत का अनुष्ठान चलता रहा । इसके उपरान्त ३ बजे से श्री श्री माँ की तिथि पूजा प्रारम्भ हुई । पूजा के पश्चात् प्रभाती अनुष्ठान शुरू हुआ। दूसरे दिन २७ मई को प्रातः ५ बजे से सायं ७ बजे तक उदयास्त नाम कीर्तन हुआ । सबेरे ५ बजे कुमारी पूजा हुई । मध्याह्न में मातृ-पूजा एवं भोग आरती के पश्चात् महाप्रसाद वितरण किया गया ।

(४) अल्मोड़ा :—

नगाधिराज हिमालय की उत्तुंग शिखर पर अवस्थित, मनोरम प्राकृतिक सुषमा से मंडित अल्मोड़ा नगरी ग्रीष्मकाल में आवास के लिए प्रधान केन्द्र के रूप में विख्यात है । इस अल्मोड़ा नगरी के गम्भीर मौन परिवेश मे प्राकृतिक शोभाओं से मंडित श्री श्री माँ का आश्रम अवस्थित है । मातृ भक्तो में अग्रगण्य मातृ साक्षात्कार के कारण स्वरूप अध्यात्म मार्ग के पथ प्रदर्शक श्रद्धेय ज्योतिष चंद्र राय (भाई जी) की समाधि इसी अल्मोड़ा आश्रम में अवस्थित है । श्री श्री माँ की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रेरणा से कन्यापीठ एवं विद्यापीठ की स्थापना का श्रेय भाई जी को ही प्राप्त है । उन्हीं के अथक प्रयास से कन्यापीठ एवं विद्यापीठ की प्रतिष्ठा हुई ।

इस बार ग्रीष्मावकाश में श्रद्धेय पानु दा के साथ माँ आनन्दमयी कन्यापीठ से १५ छात्राओं एवं ३ अध्यापिका अल्मोडा आश्रम में गईं । वहाँ आश्रम में उन लोगो ने कीर्तन, वेद पाठ, सत्संग आदि नियमित रूप से किया ।

(५) खेओड़ा (बांग्लादेश) :—

श्री श्री माँ की जन्मभूमि परम पावन उदय तीर्थ खेओड़ा में इस बार श्री श्री माँ का ११० वाँ जन्मोत्सव विशेष रूप से मनाया गया । चित् शक्ति पराम्बा भगवती माँ जहाँ स्वयं प्रगट हुई उसकी महत्ता तो सर्वजनविदित है ।

इस पावन पर्व में श्रद्धेय पानुदा एवं कोलकाता के स्वपन गांगुली के नेतृत्व में दिल्ली तथा कोलकाता से अनेक भक्त एकत्रित हुए थे ।

जन्मोत्सव के पूर्व दिवस २ मई को श्री श्री माँ के नाम से स्थापित 'माँ आनन्दमयी उच्च विद्यालय' के छात्र-छात्राओं को केला, इमरती मुड़ी का लड्डू, दरबेश (लड्डू) वितरण किया गया। ३ मई को प्रातः काल से एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया । दूर-दूर से पंक्तिओं में लोग आ रहे थे। अनन्त जनस्रोत मानों अन्त विहीन अपार जनसमूह आ रहे हैं । सब राही कह रहे हैं कि हम आनन्दमयी माँ के उत्सव में जा रहे हैं । सबके हाथ में ही कुछ न कुछ वस्तुएं हैं, किसी के हांथ में केला किसी के हाथ में तरबूज, कटहल, अन्य कोई सब्जी, मोमबत्ती का पैकेट अगरबत्ती श्रद्धा के साथ सब श्री श्री माँ को समर्पित करने के लिए ला रहे थे तरबूज का मानो अंबार लग गया। प्रसाद फल, बतासा सबको बाँटा गया । आश्रम के सामने ही पंडाल में नाम कीर्तन की व्यवस्था की गई थी । सब वहीं पर अखण्ड कीर्तन में योगदान दे रहे थे । ५ मन खिचड़ी पकायी गयी । जो आ रहे थे वही महाप्रसाद पाकर आनन्दित हो रहे थे । सब लोग खूब आनन्द मग्न हो रहे थे आनन्दमयी माँ के उत्सव में मानों चारों ओर आनन्द की लहरें उठ रही है ।

रात को ब्राह्मण बाडिया के मातृभक्त श्री पिनाकी दा के ज्येष्ठ पुत्र श्रीमान् पलाश ने उपवास रखकर श्री श्री माँ का भोग हलुआ पूड़ी और भाँजी तैयार किया ।

रात के तीन बजे श्री श्री माँ के जन्मस्थान पर श्री मानिक महाराज ने पूजा सम्पन्न की । सुमधुर कीर्तन ध्वनि से दिशायें गूँज उठी पूजा के समय करीब ३०० भक्त उपस्थित थे । उनमें कुछ मुसलमान भक्त भी थे जो फाटक के बाहर इन्तजार कर रहे थे । पूजा समाप्त होते-होते भोर हो गयी । पूजा के उपरान्त, सबको प्लास्टिक के तश्तरी में गुलाब जामुन, आम, केला आदि दिया गया । १० किलो मूँग का दाल भिगोया गया था उसमें चीनी नारियल मिलाकर तथा धान का लावा दही प्रसाद रूप में दिया गया ।

चार मई को खेओड़ा से सब लोग सिद्धेश्वरी की ओर रवाना हुए । सिद्धेश्वरी मन्दिर के सामने विशाल मंच बना । श्री श्री माँ के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में एक भव्य सभा का आयोजन किया गया

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

था । इस सभा में ढाका के न्यायाधीश ने सभापति पद को अलङ्कृत किया । इस उत्सव की मधुर स्मृति लेकर सब अपने-अपने गन्तव्य की ओर रवाना हुये ।

इस बार सिद्धेश्वरी आश्रम को विशाल रूप में रूपान्तरित करने का विचार किया गया ।

(६) उत्तरकाशी :—

इस आश्रम में २६ एवं २७ मई को श्री श्री माँ का जन्मोत्सव का अनुष्ठान अनुष्ठित हुआ । २७ ता. को सायंकाल भजन कीर्तन प्रारम्भ हुआ । रात तीन बजे जन्म तिथि पूजा प्रारम्भ हुई । भोर होने पर होम हुआ । २६ मई को प्रातःकाल साधु भंडारा एवं कुमारी भोजन हुआ । ११ बजे से सबको प्रसाद वितरण किया गया ।

(५) जमशेदपुर :—

जमशेदपुर आश्रम में अक्षयतृतीया की पुण्य तिथि में मूर्तिप्रतिष्ठा के अवसर पर श्री श्री माँ की विशेष पूजा एवं भोग आरती के पश्चात् प्रसाद वितरण हुआ ।

१३ अप्रैल को स्वामी मुक्तानन्दगिरि जी के संन्यास उत्सव के अवसर पर संध्या कीर्तन आरती सभी भक्तों के द्वारा सुसम्पन्न हुआ । १६ मई को बाबा भोलानाथ की तिरोधान तिथि की पूजा भी अच्छी तरह सम्पन्न हुई । २७ मई को माँ की शुभ जयन्ती के अवसर पर सायंकाल से कीर्तन अधिवास, आरती तथा रात के तीन बजे से जन्म तिथि की पूजा प्रारम्भ हुई । २७ मई को अखण्ड कीर्तन सूर्यास्त तक हुआ । प्रातः ९ बजे माँ की पूजा, होम पुष्पाञ्जलि, फल-मिठाई वितरण एवं दरिद्रनारायण भोजन एवं प्रसाद वितरण हुआ । सायं ६ बजे अखण्ड कीर्तन का समापन, श्री श्री माँ का सायंकालीन कीर्तन आरती एवं प्रणाम मन्त्र के द्वारा अनुष्ठान का समापन हुआ ।

(८) पूना :—

श्री श्री माँ के पूना आश्रम में २६ मई को श्री श्री माँ के जन्मोत्सव के अवसर पर प्रातः ५ बजे से रात्रि तीन बजे तक अखण्ड जप स्थानीय प्रमुख मन्दिरों में विशेष पूजा, रात ९ बजे से रात के ३ बजे तक कीर्तन, श्री श्री माँ की जन्मतिथि पूजा, कुमारी पूजा, होम एव पुष्पाञ्जली हुई । २7 मई प्रातः १० बजे से कीर्तन एवं प्रवचन हुआ । मध्याह्न में भोग एवं आरती के उपरान्त महाप्रसाद का वितरण किया गया ।

(९) भीमपुरा :—

१८ अप्रैल रामनवमी के पावन अवसर पर बहुत सुन्दर अनुष्ठान हुआ । २४ अप्रैल को हनुमान जयन्ती १3 मई को शंकर जयन्ती मनायी गयी । २७ मई को रात के तीन बजे श्री श्री माँ की विशेष पूजा एवं अन्य कार्यक्रम, १०८ चण्डीपाठ, १०८ श्रीसूक्त अभिषेक, साधु भोजन, कुमारी भोजन, दरिद्रनारायण भोजन आदि हुआ ।

(१०) राजगीर :—

विगत ८ मार्च को सन् २००५ को श्री श्री माँ के राजगीर आश्रम में महाशिवरात्रि व्रत भली भाँति सम्पन्न हुआ । इस दिन रात को चार प्रहर शिवजी का अभिषेक एवं पूजन सम्पन्न हुआ ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पटना के मातृभक्तगण भी इस उत्सव में सम्मिलित होकर रात को प्रहर प्रहर में शिवजी की विधिवत् पूजा की । दूसरे दिन करीब तीन सौ भक्त एवं राजगीर के अनेक जाने-माने व्यक्तिगण भी प्रसाद पाकर धन्य हुए ।

(११) राँची :—

श्री श्री माँ के राँची आश्रम में माँ के शुभ जन्मदिन में रात के ३ बजे श्री श्री माँ की विशेष पूजा हुई । २६ मई को प्रातः ५ बजे से रात के ३ बजे तक अखण्ड जप एवं चण्डी पाठ एवं स्थानीय सब मन्दिरो में विशेष, पूजा एवं स्थानीय अस्पतालों में रोगियों के लिए प्रसाद वितरण किया गया रात के ९ बजे से रात के ३ बजे तक भजन-कीर्तन तथा रात के ३ बजे से श्री श्री माँ की विशेष तिथि पूजा, कुमारी पूजा होम पुष्पाञ्जलि आदि हुई ।

२७ मई को प्रातः १० बजे से १ बजे तक गीतापाठ, सत्संग, प्रवचन एवं कीर्तन हुआ तथा दोपहर को प्रसाद वितरण एवं दरिद्रनारायण की सेवा हुई ।

(१२) आगरपाड़ा :—

श्री श्री माँ की कृपा से कोलकाता के पब्लिसर्स एण्ड बुक्सेलर्स गिल्ड द्वारा संचालित ३० वें पुस्तक मेले में सन् २००५ में इस बार आगरपाडा आश्रम ने पहली बार भाग लिया । इसमें अनेक विदेशी राष्ट्रों के भाग लेने के कारण इस मेले ने एक अन्तर्राष्ट्रीय मेला का रूप ले लिया था । २६ जनवरी से ६ फरवरी सन् २००५ तक अर्थात् १२ दिन तक १००० बुक स्टाल के माध्यम से लगाया गया इस मेले के विशाल अभिनव रूप की कल्पना की जा सकती है ।

सभी सम्प्रदाय के असंख्य क्रेतागण श्री श्री माँ की जीवन चरित लीलाओं से सम्बन्धित पुस्तकें खरीदीं । श्री श्री माँ आध्यात्मिकता की पूर्ण विग्रह स्वरूपा हैं । इसी रूप से वे श्री श्री माँ को जानने की चेष्टा करते हैं । इस धरातल पर सन् १९८२ तक श्री श्री माँ ने जो अनन्त आदर्शपूर्ण मानवीय तथा अलौकिक लीलायें की, तथा भक्तवाञ्छा कल्पतरु के रूप में सब प्राणियों के तृषित आत्मा को शान्ति का स्रोत दिखाया । ऐसी ज्योतिस्वरूपा श्री श्री माँ के विषय में अनेक ईश्वर प्रेमियों का विस्मय एवं जिज्ञासा है । इसका उत्तर हम मातृविषयक एकमात्र पत्रिका "अमृतवार्ता" के माध्यम से ही सम्पूर्ण भारत एवं विदेश में मातृभक्तों के पास पहुँचा सकते हैं ।

भूतपूर्व केन्द्रीय मन्त्री डॉ प्रतापचन्द्र, प्राक्तन राज्यपाल माननीय श्री विष्णुकान्त शास्त्री, मातृस्नेह धन्य डॉ गोविन्द गोपाल मुखोपाध्याय आदि, प्रतिष्ठित लेखक, साहित्यकार कवि उपन्यासकार, संगीतशिल्पी, आवृत्तिकार, सभी ने आकर स्टॉल में श्री श्री माँ को भक्तिविनम्र होकर प्रणाम निवेदन किया । कोलकाता दूरदर्शन में प्रसार भारती से विभिन्न चैनलों मे श्री श्री माँ को करीब-करीब प्रतिदिन दिखाया गया ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोक-संवाद

(१) श्रीमती लतिका गुप्त (लतुदी)—

श्री श्री माँ के प्राचीन भक्त श्री हरेन्द्रनाथ गुप्त की धर्मपत्नी श्रीमती लतिका देवी विगत १७ फरवरी सन् २००५ को श्री श्री माँ के चरणों में लीन हुईं । सन् १९४२ में दिल्ली में लतुदी ने श्री श्री माँ का दर्शन १४ वर्ष की उम्र में प्राप्त किया । सन् १९५३ में स्वामी मुक्तानन्दगिरि जी के पास काशी में उन्हें एवं उनके पति को एक साथ दीक्षा प्राप्त हुई । लतु दी ने सपरिवार अनेक बार काशी में एवं विभिन्न स्थानों में आकर श्री श्री माँ को दर्शन किया एवं आश्रम के विभिन्न उत्सव में योगदान देने का उन्हें सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

श्री श्री माँ की कृपा से उनको श्री श्री माँ ने अपने बहुत दिनों से व्यवहृत सोने से मढ़ा हुआ लोहा उनके हाथ में पहना दिया था । लतु दी भी श्री श्री माँ के प्रति सर्वदा समर्पित थीं । जीवन के अन्तिम दिनों में वे सर्वदा जप-ध्यान में निमग्न रहती थीं । उनके प्रयाण के पश्चात् एक रात को उनके पुत्र श्री हिरण्मय ने स्वप्न में देखा श्री श्री माँ पानुदा के घर के सामने गंगा की ओर मुख करके बैठी हुई हैं । श्री श्री माँ के सामने अनेक लोग गीता पाठ कर रहे हैं । वहाँ सबके साथ उनकी माँ भी बैठी हैं । २७ फरवरी रविवार को उनका श्राद्ध आदि पारलौकिक क्रिया की गई । उस दिन श्री श्री माँ के बहुत सारे भक्तगण एवं उनके रिश्तेदार लोग आये हुए थे । उनमें से अनेकों ने गीता पाठ में योगदान किया एवं पाठ करके उन्हें अपार शान्ति की प्राप्ति हुई ।

हम श्री श्री माँ के चरणों में उन दिवंगत आत्मा की चिर शान्ति एवं परिवार वर्गों के लिए सान्त्वना की प्रार्थना करते हैं ।

(२) डॉ. सुमंगल सेनः —

श्री श्री माँ के विशेष भक्त आगरतला निवासी डॉ. सुमंगल सेन ने कोलकाता नर्सिंग होम में विगत १४ मई को दिन के करीब ११ बजे ७६ वर्ष की उम्र में अन्तिम श्वास त्याग दिया । पिता स्वामी कृष्णानन्द गिरि एवं बहन स्वामी भजनानन्द जी (पुष्पदी) के भाई के रूप में आप आश्रम में आए ।

आप आगरतला के आर्टस् कॉलेज के भूतपूर्व प्रिंसिपल थे । सुमंगलदा यशस्वी, चित्रशिल्पी, सुलेखक, सुगायक सुवक्ता एवं ज्योतिष विद्या में भी कुशल थे । आगरतला के प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं विभिन्न प्रतिष्ठानों के साथ सम्बन्ध रखते हुए आप सबके द्वारा सम्मानित तथा श्री श्री माँ के आश्रम के साथ विशेष रूप से जुड़े हुए थे । श्री श्री माँ से मिलने के पश्चात् आप अनेक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बार श्री श्री माँ के पास आये । बांग्लादेश स्वाधीन होने के पश्चात् पहली बार हाईकमिशनर श्री सुविमल दत्त के साथ आपने श्री श्री माँ के जन्मस्थान का दर्शन किया एवं उसकी सुरक्षा एवं उन्नति के कार्य में अंश ग्रहण किया । त्रिपुरा में जन्मशताब्दी के संचालन का भार आपके ऊपर ही था। इसमें उन्होंने योग्यता के साथ दायित्व का पालन किया । आगरतला में नियमित सत्संग का दायित्व भी आप संभालते थे । परलोकगमन के कुछ दिन पहले तक भी आप नियमित सत्संग चलाते थे। श्रीमद्भागवत की भी आप सुललित व्याख्या करते थे अचानक हृदय रोग से पीड़ित होने के कारण आपको कोलकाता के नर्सिंग होम में भर्त्ती होना पड़ा एवं वहीं पर आप श्री श्री माँ के चरणों में लीन हो गए । उनके प्रयाण से आगरतला आश्रम को अपूरणीय क्षति पहुंची ।

हम उन अमर आत्मा की चिरशान्ति एवं परिवार वर्गों की सान्त्वना की कामना श्री श्री माँ के चरणों में करते हैं ।

(३) श्री विमल कुमार गांगुली :— (शम्भु)

आश्रमवासिनी पारुलदी अपने साढ़े चार साल उम्र के बालक को गोद में लेकर श्री श्री माँ के आश्रम में आयी थीं । इस बालक का नाम ही था विमल कुमार गांगुली, बुलाने का नाम शंभु। पारुल दी ने अपनी दो लड़की बेला और कमला को मातृ निर्देश से कन्यापीठ में एवं कुछ बड़ा होने पर शंभु को विद्यापीठ में ही भर्त्ती कर दिया । विद्यापीठ में ही शंभु ने शिक्षा प्राप्त की बड़े होकर शंभु को राँची में रेल में नौकरी मिली । बहुत दिनों तक शंभु ने राँची में श्री माँ काली की पूजा की । बाद में उन्होंने विवाह भी किया किन्तु उन्हें सन्तानादि प्राप्त नहीं हुआ । आप राँची आश्रम के सेवक सेवा करना ही उनका कार्य था । जीवन के अन्तिम दिन तक शंभु आश्रम से जुड़े हुए थे । अचानक हृदयरोग से पीड़ित होकर वे श्री श्री माँ के चरणों में समा गए । आपके आकस्मिक निधन से सब मर्माहित हुए ।

श्री श्री माँ के चरणों में दिवंगत आत्मा की चिरशान्ति की प्रार्थना करते हैं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ आनन्दमयी आश्रम, राँची

स्वर्ण-जयन्ती महोत्सव के अन्तर्गत विशेष कार्यक्रम

२४ अक्टुबर, २,००५, सप्तमी तिथि

प्रात:- ८.३० के पश्चात श्री चण्डी देवी का कलश स्थापन, पूजन एवं दुर्गा सप्तशति व रूद्रचण्डी का पाठ प्रारम्भ ।

२५ अक्टुबर से २९ अक्टुबर, २००५

नित्य प्रात : दुर्गा सप्तशति व रूद्रचण्डी पाठ ।

३० अक्टुबर, २००५, त्रयोदशी तिथि

प्रात :- दुर्गा सप्तशति के ५१ पाठ की समाप्ति व हवन । तत्पश्चात १२ ब्राह्मण भोजन एवं ५१ साधु भोजन (वस्त्रादि के साथ)

३१ अक्टुबर, २००५, चतुर्दशी तिथि

प्रात :- ५१ कुमारी तथा ५ वटुक पूजा एवं भोजन

१ नवम्बर, २००५, अमावस्या तिथि

प्रात :- रूद्रचण्डी पाठ की समाप्ति तथा होम ।

रात्रि :- श्री श्री काली माता तथा महाकाल की विशेष पूजा व भोग ।

२ नवम्बर, २००५, प्रतिपदा तिथि

मध्याह्न :- विशेष पूजा एवं अन्नकूट महोत्सव ।

रात्रि:- नाम यज्ञ का अधिवास ।

३ नवम्बर, २००५, द्वितीया तिथि

मध्याह्न :- ५१ दरिद्रनारायण भोजन (वस्त्रादि सहित) ।

सायंकाल :- नाम यज्ञ का समाप्ति ।

विशेष :

१. बाहर से आने वाले भक्तगणों के लिये दिनांक ३० अक्टुबर से ३ नवम्बर तक आवास तथा भोजनादि की व्यवस्था समुचित रूपसे करने की चेष्टा की जायेगी ।

२. भक्तों के आगमन की सूचना १५ अक्टूबर के भीतर निम्नलिखित पते पर प्राप्त होना विशेष आवश्यक है :—

सचिव
श्री श्री माँ आनन्दमयी आश्रम
मेन रोड, राँची - 834001

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"हरि कथा ही कथा, और सब वृथा व्यथा"

—श्री श्री माँ आनन्दमयी

अमेरिका के पेन्सीलवेनिया राज्य में स्थायी रूप से पंजीकृत संस्था **माँ आनन्दमयी सेवा समिति (MASS, Inc.)** के स्वयं सेवकों की ओर से परमाराध्या श्री श्री माँ के सभी भक्तजनों को सप्रेम "**जय माँ**"।

इस संस्था का उद्देश्य श्री श्री माँ की जीवन लीला रहस्य की सेवा, धार्मिक कार्य, सत्संग एवं जनसेवा सहित सनातन धर्म तथा श्रीमद् भागवत्धर्मयुक्त प्रक्रिया है ।

अमेरिका सरकार द्वारा इस समिति के लिये सम्पूर्ण कर मुक्ति (Tax - exemption) प्राप्त है, जिसका नम्बर है 23-2967597 जो IRS Code 501 (C) (3) के अनुसार कार्यों के लिये हैं ।

अमेरिका एवं आस-पास के देशों में स्थायी रूप से निवास करने वाले मातृभक्तों से विनती है कि "**माँ आनन्दमयी अमृतवार्ता**" (त्रैमासिक पत्रिका) जो चार भाषाओं (हिन्दी, बंगला, गुजराती एवं अंग्रेजी) में श्री श्री माँ की दिव्य जीवन लीला सम्बन्धी गाथा एवं अमूल्य वाणी के संकलन के रूप में प्रकाशित होती है MASS, Inc. से प्राप्त कर सकते हैं ।

पत्रिका का वार्षिक चन्दा $ 12/- बारह डॉलर मात्र है ।

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये निम्नलिखित पते पर कृपया सम्पर्क करें :-

Mahadev R. Patel
Secretary, Ma Anandamayee Seva Samiti (MASS) Inc.
212, Moore Road, Wallingford, PA 19086-6843
Tel : 610-876-6862 Mobile : 484-410-4844
Email : matriseva@yahoo.com

जय माँ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments From :

ॐ माँ

"Endeavour to go through life leaving your burdens in His hands."

—Ma Anandamayee

Service with Smile

UE

Since - 1974

UNIQUE ELECTRONICS (Regd.)

16, Central Market,
Lajpat Nagar
New Delhi—110024
Phone : 29839349, 29834559

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

"The pilgrimage to the goal of human existence is the only path to Supreme happiness."

—Sri Ma

M/s. Sugam Parivahan Ltd.
43, Lekh Ram Road
Daryaganj, New Delhi-110002

Ph. 23257581/2326849 Fax : 3267462

With best compliments from :

"Abandaon yourself to God in all matters without exception."

—Sri Ma

M/s Anandamayee Forgings (Pvt) Ltd.
A-5, Site-IV, Industrial Area
Sahibabad, Ghaziabad-201010

Ph. : 2770064 - Fax : 770427

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Complements From :—

"None can foretell at what particular moment circumstances will co-operate to bring about the Great Moment for you."

—Ma Anandamayee

UNIQUE ENTERPRISES

Authorised dealer of all products of Sony, Samsang, LG., Whirlpool, Aiwa, National Panasonic, Philips, IFB, Electrolax.

D-79, Malviya Nagar,
New Delhi-110017
Phone : 26671210, 51831110-1062

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"मैं तो सब समय तुमलोगों के साथ साथ ही हूँ, तुम लोग देखना नहीं चाहते हो तो मैं क्या करूँ।"

— श्री श्री माँ

● जय माँ श्री माँ जय जय माँ ●

DIAMOND SPRAYERS for plant Protection

SPRAYERS
DIAMOND
TM

Gupta Agro Company

Manufacturers & Suppliers of :

AGRICULTURAL SPRAY PUMPS & SPARE PARTS FOR PLANT PROTECTION

Office : P-31, Alipur Road, Narela, Delhi-110040

ESTD - 1984

(O) 011 - 27280187
(R) 011 23693348
(M) 9811236809

BHARAT BHUSHAN GUPTA

RAJ PACKAGING COMPANY

• Manufacturers of Corrugated boxes •

Rajesh Gupta

(O) 011 25631628
Ph. (R) 011 23691814
(M) 98107-15320

A-109, Bhagawati Vihar, Uttam Nagar, New Delhi- 110059

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

● जयजयमाँ   ॐ माँ   जयजयमाँ ●

"हरि कथा ही कथा और सब बृथा व्यथा ।"

—श्री श्री माँ

श्री श्री माँ के श्री चरणों में गुप्ता परिवार की तरफ से बार बार प्रणाम ।

श्री चन्द्रभान गुप्ता

स्वर्गीय श्रीमति शकुन्तला गुप्ता

भारत भूषण गुप्ता
साधना गुप्ता
चेतन गुप्ता
हर्ष गुप्ता

राजेश गुप्ता
अनिता गुप्ता
नितिन गुप्ता
कार्तिक गुप्ता

125, विवेकानन्दपुरी, सरायरोहिला, दिल्ली - 110007

Res. 011 - 23693348,
Off. 011 - 27280187,

Res. 011 - 23691814
Off. 011 - 25631628

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from

RAM PANJWANI & COMPANY

Timber Merchants & Financiers
1—Birla Road
Hardwar—249401

☎ 2427266, 2428672, Fax. 01334-2426001

Suppliers of :
Best Quality Himalayan Pine Timbers

Branches :

Jammu (J & K) **Yamuna Nagar (Haryana)**
Parwanoo (H.P.)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ Branch Ashrams ❁

14. NEW DELHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kalkaji, New Delhi-110019 (Tel : 011-26826813)

15. PUNE : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ganesh Khind Road, Pune-411007, (Tel : 020-25537835)

16. PURI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Swargadwar, Puri-752001, Orissa. (Tel : 06752-223258)

17. RAJGIR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O.Rajgir, Nalanda-803116, Bihar (Tel : 06112-255362)

18. RANCHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Main Road,P.O. Ranchi- 834001 (Tel : 0651-2312082)

19. TARAPEETH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Chandipur-Tarapeeth, Birbhum-731233,

20. UTTARKASHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kali Mandir, P.O. Uttarkashi-249193,

21. VARANASI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhadaini, Varanasi-221001, U.P. (Tel : 0542-2310054+2311794)

22. VINDHYACHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ashtabhuja Hill, P.O. Vindhyachal, Mirzapur-231307, (Tel : 05442-242343)

23. VRINDABAN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Vrindaban, Mathura-281121 U.P. (Tel: 0565-2442024)

*

IN BANGLADESH :

1. DHAKA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, 14, Siddheshwari Lane, Dhaka- 17 (Tel _ 0880-9356594)

2. KHEORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Kheora, Via-Kasba, Brahmanbaria.

*

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF NEWSPAPERS
FOR INDIA AS NO. 65432/97

श्री श्री आनन्दमयी संघ

ॐ माँ

मातृ शरणं

रत्ना ऑफसेट्स लिमिटेड कमच्छा, वाराणसी, फोन- २३९२८२०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ आनन्दमयी

अमृत वार्ता

CC-0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

SHREE SHREE ANANDAMAYEE SANGHA

❁ Branch Ashrams ❁

1. AGARPARA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram.
P.O. Kamarhati Calcutta-700058 (Tel : 25531208)
2. AGARTALA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram.
Palace Compound P.O. Agartala- 799001.
West Tripura (Tel : 0381-2208618)
3. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Patal Devi. P.O. Almora-263602,
(Tel : 05962-233120)
4. ALMORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O.Dhaul-China. Almora-263881,
(Tel : 05962-262013)
5. BHIMPURA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Bhimpura. P.O. Chandod, Baroda- 391105,
(Tel : 02663-233208+ 233782)
6. BHOPAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Bairagarh. Bhopal-462030, M.P.
(Tel : 0755-2641227)
7. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kishenpur.P.O. Rajpur, Dehradun-248009
(Phone : 0135-2734271)
8. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Kalyanvan, 176, Rajpur Road, P.O. Rajpur,
Dehradun-248009, (Phone : 0135-2734471)
9. DEHRADUN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Raipur Ordnance Factory, Dehradun-248010
10. JAMSHEDPUR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Near Bhatia Park, Kadma, Jamshedpur-831005
11. KANKHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
P.O. Kankhal.Hardwar-249408,
(Tel : 01334-246575)
12. KEDARNATH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Near Himlok. P.O. Kedarnath, Chamoli-246445,
13. NAIMISHARANYA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram,
Puran Mandir.P.O. Naimisharanya,
Sitapur-261402, U.P. (Tel : 05865-251369)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ आनन्दमयी

अमृतवार्ता

श्री श्री माँ आनन्दमयी के दिव्यजीवन
तथा
दिव्यवाणी की वाहिका त्रैमासिक पत्रिका

वर्ष-९ अक्टुबर २००५ सं. ४

सम्पादक मण्डली

✤ डा. बीथिका मुखर्जी
✤ डा. श्रीनारायण मिश्र
✤ डा. गायत्री शर्मा
✤ ब्रह्मचारिणी गीता बनर्जी
✤ ब्रह्मचारिणी गुणीता

✤

कार्यकारी सम्पादक
श्री पानु ब्रह्मचारी

✤

वार्षिक चंदा (डाकव्यय सहित)
भारत में — ६० रुपये
विदेशों में — १२ डॉलर/या ४५० रुपये
एक प्रति — २० रुपये

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

साधारण नियम

यह त्रैमासिक पत्रिका चार पृथक भाषा–हिन्दी, बंगला, गुजराती तथा अंग्रेजी में जनवरी अप्रैल जुलाई तथा अक्टूबर में प्रकाशित होती है । वर्ष का प्रारम्भ जनवरी से होता है ।

पत्रिका में मुख्यतया श्री श्री माँ पर आधारित लेखों को ही प्रधानता दी जाती है । इनके अतिरिक्त आध्यात्म पर आधारित हृदयस्पर्शी लेख, किसी भी देश तथा किसी भी सम्प्रदाय या धर्म के महापुरुषों की उपदेशात्मक शिक्षावलियों का भी पत्रिका में स्वागत है ।

जो भक्तगण माँ के सम्पर्क में आये हैं वे एकान्त व्यक्तिगत अनुभवों को छोड़कर ऐसे अनुभवों को आकलित कर सकते है जो कि श्री श्री माँ के लौकिक व्यवहार के प्रति आलोकपात करने वाले हों ।

सभी लेख फुलस्केप कागज के एक पृष्ठ पर टंकित या स्पष्ट लिखित होने चाहिये । लेखों की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें । मनोनीत न होने पर लेखों को वापस भेजना कार्यालय के लिए असुविधाजनक है । सभी लेख सम्पादक के नाम भेजें ।

अग्रिम वार्षिक चंदा मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम के "Shree Shree Anandamayee Sangha—Publication A/C".नाम पर भेजें ।

पत्रिका सम्बन्धी सभी प्रकार के पत्रादि व्यवहार तथा वार्षिक चंदा भेजने का पता :

कार्यकारी सम्पादक, "माँ आनन्दमयी - अमृतवार्ता"
माता आनन्दमयी आश्रम
भदैनी, वाराणसी -२२१००१

पत्रिका में विज्ञापन देने का नियम :–

सम्पूर्ण पृष्ठ – २०००/- पूरे वर्ष के लिये
आधा पृष्ठ – १०००/- पूरे वर्ष के लिये

अग्रिम शुल्क के साथ विज्ञापन का विषय (Matter) उपर लिखित पते पर भेजें ।

स्वामी श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री पानु ब्रह्मचारी द्वारा श्री श्री आनन्दमयी संघ, भदैनी, वाराणसी–२२१००१ (उ. प्र.) से प्रकाशित तथा रत्ना प्रिंटिंग वर्क्स, बी. २१/४२ कमच्छा, वाराणसी-१० (उ. प्र.) से मुद्रित । सम्पादक–श्री पानु ब्रह्मचारी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विषय-सूची

1. मातृ-वाणी 1
2. श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग
   — *श्री अमूल्य कुमार दत्तगुप्त* 3
3. दुर्गतिनाशिनी दुर्गा
   — *स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज* 8
4. सर्वत्र एक चैतन्य शक्ति ही विद्यमान
   — *स्वामी नारायणानन्द तीर्थ* 9
5. सबसे आश्चर्यजनक बात
   — *डॉ. प्रेम नारायण सोमानी* 12
6. काशी मुक्ति माहात्म्य
   — *दण्डी स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती* 14
7. दीवार (कविता)
   — *श्री जगन्नाथ 'विश्व'* 18
8. वाणी कुसुमाञ्जलिः
   — *पं. ब्रह्मादीन अवस्थी* 19
9. जीवन दर्शन 21
10. करुणा सागर माँ
    — *श्री गोवर्धन सिंह* 22
11. श्रद्धाञ्जलि
    (श्री विरजानन्दजी महाराज) 23
12. श्रद्धा सुमन 30
13. आश्रम-संवाद 33

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"हरि कथा ही कथा और सब वृथा व्याथा"

— श्री श्री माँ आनन्दमयी

अमेरिका के पेन्सीलवेनिया राज्य में स्थायी रूप से पंजीकृत संस्था माँ आनन्दमयी सेवा समिति (MASS, Inc.) के स्वयं सेवकों की ओर से परमाराध्या श्री श्री माँ के सभी भक्तजनों को सप्रेम "**जय माँ**" ।

इस संस्था का उद्देश्य श्री श्री माँ की जीवन लीला रहस्य की सेवा, धार्मिक कार्य, सत्संग एवं जनसेवा सहित सनातन धर्म तथा श्रीमद् भागवत्धर्मयुक्त प्रक्रिया है ।

अमेरिका सरकार द्वारा इस समिति के लिये सम्पूर्ण कर मुक्ति (Tax - exemption.) प्राप्त है, जिसका नम्बर है 23-2967597 जो IRS Code 501(C) (3) के अनुसार कार्यों के लिये हैं । अमेरिका एवं आस-पास के देशों में स्थायी रूप से निवास करने वाले मातृभक्तों से विनती है कि "**माँ आनन्दमयी अमृतवार्ता**"(त्रैमासिक पत्रिका) जो चार भाषाओं (हिन्दी, बंगला, गुजराती एवं अंग्रेजी) में श्री श्री माँ की दिव्य जीवन लीला सम्बन्धी गाथा एवं अमूल्य वाणी के संकलन के रूप में प्रकाशित होती है MASS, Inc. से प्राप्त कर सकते हैं ।

पत्रिका का वार्षिक चन्दा $ 12/- बारह डॉलर मात्र है ।

अन्य विस्तृत जानकारी के लिये निम्नलिखित पते पर कृपया सम्पर्क करें :—

Mahadev R. Patel
Director, Ma Anandamayee Seva Samiti (MASS) Inc.
212, Moore Road, Wallingford, PA 19086-6843
Tel : 610-876-6862 Mobile : 484-410-4844
Email : matriseva@yahoo.com

जय माँ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मातृ-वाणी

ध्यान जम जायेगा, हृदय को जो मिलना है मिल जायेगा । यहाँ अपना भर जायेगा तो आगे चलेगा, यहाँ का काम हो जाये तो जरूर अपने आप चला जायेगा, उन का रास्ता रहा है । श्वास (साँस) का स्पन्दन जहाँ रहे ।

*　　　　*　　　　*

वृक्ष-की जड़ मिट्टी में है । ऊपर निश्वास श्वास चलता है फिर माँ के साथ मिल जाते हैं । वृक्ष का बीज देकर अपना तत्त्व प्रकट करके अन्त हो जाता है । नि:श्वास प्रश्वास अन्तिम ।

*　　　　*　　　　*

जन में जनार्दन, स्वयं भगवान, कर्म क्रिया, अन्तर क्रिया, वही स्पर्श होने के लिए जिस को जो प्रिय उसी को लेकर जप करता है । कृष्ण मन्त्र, राम मन्त्र, शिव मन्त्र जप हो रहा, जप होते-होते नाम रूप के अतीत जाने के लिये जो स्थिति आ जाती है, एक स्थिति आ जाती है खुद ही देखता है बाह्य नाम रूप वही ।

*　　　　*　　　　*

सिर्फ अक्षर द्वारा मैं कौन हूँ प्रकट होने की स्थिति आ जाती है । अक्षर मन्त्र, नारायण मन्त्र, कृष्ण आकर्षण, परम शिव, दुर्गा, कृष्ण पूर्ण लक्ष्य वही है । आकार में निराकार वही है एक मात्र दुर्ज्ञेय, दुर्गम, मन को इससे सहारा मिलता है । शिव परम शिव यह मन्त्र लेकर अक्षर रूप से शुरु कर के और क्षरित नहीं होता उन में, इसलिये सहारा लेते हैं नित्य जो जिसको प्रिय है । गुरुतत्त्व को कौन समझ सकता है पर द्वार हटा देता है । (पर्दा हटा देते हैं ।)

*　　　　*　　　　*

यह जो पूजा की गयी, परिणाम क्या है, न तुम तो पूर्ण, परिणाम सब समय समर्थन, संग हैं प्रथम प्रणाम, और सर्व शेष, यह जो सब तुमको अर्पण, सर्वस्व तुम को अर्पण तुम ही कराओ ।

*　　　　*　　　　*

यह जो प्रणाम, पूजा मानसिक, प्रणाम मानसिक और क्या । शब्द द्वारा, अक्षर द्वारा अक्षर ब्रह्म भाव युक्त होकर प्रार्थना हुई । मेरे भीतर जो है मैं चाहता हूँ प्रार्थना रूप-मुझे ज्ञान दो श्रद्धा दो, तुम को पाने के लिये उनको पा कर फिर पाना बाकी नहीं रहता ।

*　　　　*　　　　*

भगवान के पास सदा प्रार्थना करना जैसे यज्ञ में आहुति देते हैं, तुम्हारी कृपा शक्ति भगवत् प्राप्ति के लिए आत्म प्रकाश क्रिया करना । अपने को आहुति देना । अपने जप ध्यान सत संग-कृपा कहाँ है ।

*　　　　*　　　　*

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सेवा अगर हो तो चित्त शुद्धि-चित्त शुद्धि होने से मन भगवान की तरफ लगेगा । जरुर आशा है, एक बात असली सेवा जो है - असली सेवा से चित्त शुद्ध होता है । अगर प्रशंसा प्रतिष्ठा सेवा के नाम से करो तो वह अपनी प्रतिष्ठा होती है । अपने को प्रतिष्ठित करने से जो होता है समझ ही लेना है । ठोकर खाना । अगर भगवद् बुद्धि से तत् बुद्धि से सेवा हो तो चित्त शुद्ध । चित्त शुद्ध होने से भगवान् को पाने के लिए रास्ता खुलेगा ।

* * *

अंत नहीं है । उनके गोद में ही है । उनसे ही प्रकाश, उनमें ही है । प्रश्न होना ही अज्ञान आवरण पर्दा । इस आवरण के हट जाने से ही तुम जहाँ हो वहाँ ।

* * *

दु:ख किसका है — उनकी करुणा उनकी कृपा हर समय है । जो यात्रा करते हैं वे अनुभव कर सकते हैं । अज्ञानी का प्रश्न नहीं होता । लिखाई-पढ़ाई नहीं किया । लिखाई-पढ़ाई कर लिया तो प्रश्न नहीं । भगवान की करुणा सब समय है । उनकी मौज ।

* * *

उनकी लीला उन्हीं का खेल । अपने को लेकर खेल रहा, इसलिए मुक्ति का जो पथ । भगवान् हँसते हैं । गर्भ में शिशु जब रहता है जब भूमिष्ठ होता है । सब मैल मुँह से चाट कर खा लेता है । भगवान ही सब खा लेते हैं । बदन पर कितनी मैल रहती है, सब वह भोग करके भोजन कर लेते हैं । करुणामय भगवान् स्वयं सन्तान है, उनसे प्रकाशित अमृत की सन्तान । सर्व दु:ख से कल्याण करते हैं ।

* * *

सन्तान पायेगा माँ के लिये या पिता के लिये, यह जो लक्ष्य कर रखा । माँ की जो स्थिति माँ जो कर रही है अतएव वह फल पायेगी । जो सहज सत्यभाव से जितना ही करे उसका फल उसे मिलेगा ।

* * *

महात्मा जन वृक्ष - वृक्ष के तले अपने को दे देते हैं । अपने को देने से अपने को पाना । वृक्ष के तले (नीचे) में बैठना । सारा सब समझ आ जायगा । एक समझ आने से दूसरा समझ । समझ असमझ के पार जाना चाहिये ।

* * *

प्रश्न—मैं अच्छा होना चाहता हूँ पर हो नहीं पा रहा हूँ ।

माँ— चाहना आने पर पाना होता है । अति सत्य बात है । जिस चाह में वह पाना होता है वह चाह आयी नहीं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री श्री माँ आनन्दमयी प्रसंग

— स्व. अमूल्य कुमार दत्तगुप्त

जगन्नाथ देव का मन्दिर व विग्रह—

(२४-७-५०) ८ श्रावण, सोमवार

आज दिन के १० बजे माताजी हॉल में आयीं, कुछ स्थानीय लोग उनसे मिलने आये थे । विविध प्रसंगों पर चर्चा होने लगी, किस प्रकार जगन्नाथ देव के मन्दिर एवं विग्रह की स्थापना हुई थी, साथ ही किस प्रकार नव कलेवर किया जाता है, इस सम्बन्ध में माताजी कहने लगीं । यह सब किंवदन्ती के अन्तर्गत आते हैं । माताजी कहने लगीं— मैंने यह सब बातें पण्डों की ज़बानी व स्थानीय लोगों से सुना है । तुमने भी भगवान् श्री कृष्ण के अप्रकट होने की कथा सुनी है । अप्रकट होने के पहले भगवान् श्री कृष्ण एक नीम के पेड़ के नीचे बैठे थे, उनके चरण कमलों को देख एक बहेलिया ने पक्षी के भ्रम से बाण मारा, वह बाण श्री कृष्ण के अँगूठे में लगा और उसी को निमित्त बनाकर उन्होंने देह त्याग किया । श्री कृष्ण के अप्रकट होने पर उनके वक्षस्थल का क़ौस्तुभ मणि नीम के पेड़ में प्रवेश कर गया । कुछ लोगों का मानना है कि श्रीकृष्ण के शरीर को समुद्र में प्रवाहित कर दिया गया था । कुछ कहते हैं कि अग्निसंस्कार के उपरान्त भस्मी को सुरक्षित रखा गया है । ऐसा भी सुना जाता है कि जिस उँगली में बाण लगा था उसे भी सुरक्षित रखा गया । जो भी हो, जिस नीम के पेड़ के नीचे श्रीकृष्ण अप्रकट हुए थे उस वृक्ष को शबर जाति के लोगों ने काटकर तीन टुकड़े कर दिये । पेड़ को काटने पर उसके तीनों टुकड़ों से ज्योति निकलते देखी गयी, इतना ही नहीं हाथों से छूने पर हाथ भी ज्योतिर्मय हो जाते थे । शबरों (भील) ने इसे भूतहा पेड़ मान कर इसकी पूजा प्रारम्भ कर दी । इन तीन टुकड़ों को ही "दारु ब्रह्म" कहा जाता है और इसी से ही बलभद्र, सुभद्रा और जगन्नाथ की मूर्ति बनायी गयी है । यह है जगन्नाथ देव की मूर्ति की कथा ।

अब पुरी के मन्दिर की कथा कह रही हूँ । एक राजा के मन में अभिलाषा जागी कि वह एक मन्दिर बनवाकर उसमें विग्रह की स्थापना करें । उन्होंने पत्थरों से एक विराट् मन्दिर का निर्माण करवाया । उन दिनों बड़े मन्दिरों का निर्माण अनायास नहीं होता था; आजकल की तरह यन्त्रादि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

की व्यवस्था न रहने के कारण बड़े-बड़े पत्थरों को ऊपर तक ले जाना टेढ़ी खीर था । बड़े मन्दिर या बड़े मकान बनाते समय मिट्टी की दीवाल उतनी ऊँचाई तक बनाते थे जहाँ तक हाथ पहुँचे । फिर इन पर रेत डाल देते थे और इन पर खड़े होकर आगे की ऊँचाई तैयार करते थे । इस तरह बड़े-बड़े मकान बनाये जाते थे । इस राजा का मन्दिर भी इसी तरह बना था । जब तक मन्दिर तैयार हुआ तब तक उसका सारा अंश ही रेत से दब चुका था । इधर मन्दिर में कौन से विग्रह की स्थापना की जाय इसकी सलाह-मशविरा करने राजा ब्रह्मलोक गये । ब्रह्माजी ने उनसे कहा कि मन्दिर में कौन से विग्रह की स्थापना होगी यह वे स्वप्न में जान जायेंगे । यह सुनकर राजा पृथ्वी पर लौट आये । इतने में उनके राज्य की शक्ल-सूरत बदल चुकी थी । कारण ब्रह्मलोक की समय सीमा और पृथ्वी की समय सीमा में अन्तर है । कहा जाता है ब्रह्माजी का एक क्षण दुनिया का हजार वर्ष । अतः जहाँ पर उन्होंने मन्दिर बनाया था उस जगह को ढूँढ़ना उनके लिये कठिन हो गया ।

एक दिन राजा को स्वप्नादेश हुआ कि शबर लोग जिस विग्रह की पूजा कर रहे हैं वे उन्हीं को लाकर अपने मन्दिर में स्थापित करें । उक्त आदेश को पाते ही राजा ने चारों ओर लोगों को भेजा । इन सब व्यक्तियों में विद्यापति नामक एक ब्राह्मण भी थे । वे घूमते-घूमते समुद्रतट पर शबरों के (भीलों के) देश में जा पहुँचे । वहाँ उन्हें पूजा के बाजे बजने की आवाज सुनायी पड़ी । उस आवाज की तरफ उन्होंने चलना शुरू किया । उनको आते देख शबरों ने उन्हें बन्दी बना लिया, पूजा के स्थान पर वे पहुँच नहीं पाये । उक्त विग्रह के जो प्रमुख पुजारी थे उन्हीं के घर पर विद्यापति को रखा गया । पुजारी की एक छोटी कन्या थी, वही कन्या विद्यापति को नियमित समय पर भोजन आदि दिया करती थी । इस कन्या के अलावा और किसी से विद्यापति की मुलाकात नहीं होती थी । इस तरह कुछ समय व्यतीत होने पर पुजारी कन्या विद्यापति के प्रति आसक्त हो गई । पुजारी ने यह देख कन्या का विवाह विद्यापति से करा दिया । यद्यपि विद्यापति अब शबरों के ही हो गये थे तथापि उन्हें विग्रह (मूर्ति) के पास जाने नहीं दिया गया । पूजा कहाँ होती है, किस विग्रह की होती है इस बारे में विद्यापति को कुछ पता नहीं चला । एक दिन उन्होंने अपने ससुर जी से कहा कि उन्हें विग्रह दर्शन की बड़ी इच्छा है । पुजारी जी इस शर्त पर उन्हें विग्रह दर्शन कराने पर राजी हुए कि जब विद्यापति को विग्रह दर्शन करवाने ले जाया जायगा तब उनकी आँखों पर कपड़ा बाँध दिया जायगा । विद्यापति उसी पर राजी हो गये । उन्होंने अपनी पत्नी को सारी बात बताते हुए दुःखी भाव से कहा— यद्यपि विग्रह का दर्शन तो होगा पर वह विग्रह कहाँ है इसका उन्हें पता नहीं लगेगा । । उनकी पत्नी ने सलाह दी— जब वह विग्रह दर्शन को जायें तब राह चलते वे सरसों के दाने डालते हुए चलें, ऐसा करने पर थोड़े दिनों के बाद सरसों के पौधे निकल आयेंगे और वे उन्हें देखकर विग्रह के स्थान पर पहुँच जायेंगे । ऐसा ही किया गया । जिस दिन विद्यापति अपने ससुरजी के साथ विग्रह दर्शन को गये तो अपनी पत्नी की सलाह मुताबिक

CC0: In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सरसों के दाने डालते हुए चले । विग्रह के सामने पहुँच कर उनकी आँखों का बन्धन खोल दिया गया । विग्रह को देखते ही विद्यापति समझ गये कि राजा ने स्वप्न में जिस विग्रह को देखा है वे यही हैं । उन्होंने सुविधानुसार अपने विश्वासपात्र व्यक्ति से राजा को चिट्ठी भिजवा दी । चिट्ठी पाते ही राजा अपनी सेना के साथ शबरों के देश में आये एवं उन्हें पराजित कर विद्यापति की सहायता से विग्रह को ढूँढ़ निकाला और लकड़ी के उन तीन खण्डों को ले जाकर पुरी के चक्रतीर्थ में रख दिया ।

इधर रेत के पहाड़ के नीचे राजा का मन्दिर ढँक चुका था । एक दिन एक दूसरे देश का राजा घोड़े पर सवार होकर वहाँ से जा रहा था । घोड़े के पैर सख्त जगह पर पड़ने पर जैसी आवाज होती है अचानक वैसी आवाज सुनकर राजा घोड़े पर से उतरे और उन्हें रेत के नीचे मन्दिर का शिखर दिखायी पड़ा । उन्होंने लोगों के द्वारा रेत को हटाना शुरू किया । सम्पूर्ण मन्दिर रेत के नीचे से निकल आया । पुरी के राजा को सूचना दी गयी । राजा मन्दिर को देखते ही पहचान गये कि यह उन्हीं का बनाया मन्दिर है । तब उन्होंने चक्रतीर्थ पे विग्रह को लाकर इस मन्दिर में स्थापित किया । पहले ही कहा जा चुका है कि विद्यापति ब्राह्मण थे । उनकी ब्राह्मण पत्नी के गर्भ से जिन सन्तानों का जन्म हुआ था वे ही उक्त विग्रह की पूजा एवं भोग रन्धनादि करने लगे एवं शबर पत्नी की गर्भोत्पन्न सन्तानें विग्रह की अन्यान्य सेवाकार्य करने लगीं । आज भी वही परम्परा चली आ रही है । विद्यापति के ब्राह्मण वंशज जगन्नाथ जी का भोग बनाते एवं पूजा करते हैं एवं शबर वंशज दूसरी सेवायें, जैसे विग्रह का श्रृंगार, उन्हें रथ पर चढ़ाना, रथ को खींचना आदि कार्य करते हैं । यह हुई जगन्नाथजी के मन्दिर एवं विग्रह प्रतिष्ठा की कथा । "इसके उपरान्त नव यौवन एवं नवकलेवर की बात कह रही हूँ । रथयात्रा के पन्द्रह दिन पहले स्नान-यात्रा होती है । इस समय जगन्नाथजी को कुएँ के जल से नहलाया जाता है । ठंडे पानी से नहा कर जगन्नाथजी को बुखार आ जाता है, (ऐसी मान्यता है) । यह बुखार पन्द्रह दिनों तक रहता है । इन दिनों जगन्नाथजी को "पाचन" (रोगियों का पथ्य) औषधि इत्यादि खिलाई जाती है । पन्द्रह दिन के उपरान्त वे अच्छे हो जाते हैं और रथयात्रा के पहले दिन नवयौवन लेकर वे सबको दर्शन देते हैं । स्नान-यात्रा के पन्द्रह दिन तक जगन्नाथजी का दर्शन नहीं हो पाता । इसका कारण शायद यह होगा कि विग्रह के अंग पर जो रंग किया जाता है वह शायद कच्चा रहता है । स्नान-यात्रा के समय यह रंग पानी से धुल जाता है अतः नये सिरे से रंग लगाना पड़ता है । उसमें कुछ समय लगता है । अतः स्नान-यात्रा के बाद ठाकुरजी को बुखार हुआ है कहकर लोगों को पन्द्रह दिनों तक विग्रह को देखने नहीं दिया जाता था । रथयात्रा के पहले दिन जगन्नाथजी नये वेश में सबको दर्शन देते हैं । यह है जगन्नाथजी का नवयौवन ।

जिस बार नव कलेवर होता है उस बार स्नान यात्रा के डेढ़ महीने तक किसी को भी विग्रह का दर्शन नहीं कराया जाता । इस स्नान के बाद जो बुखार होता है उससे जगन्नाथ जी का आरोग्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नहीं होता । इस बुखार से उनका देहत्याग हो जाता है । देहत्याग होने पर वे पुनः नयी देह धारण करते हैं । यही उनका नवकलेवर है । इसी डेढ़ महीने के भीतर उनकी नयी मूर्ति बनकर तैयार की जाती है । इस प्रकार रथयात्रा के पहले दिन जगन्नाथजी नवकलेवर में सबको दर्शन देते हैं । यह नवकलेवर कब होगा यह निश्चित नहीं रहता । साधारणतः आषाढ़ के महीने में जब अधिक मास (पुरुषोत्तम) लगता है और कुछ ग्रह नक्षत्रों की विशेषस्थिति होती है तब नवकलेवर का समय होता है, ऐसा माना जाता है । केवल अधिक मास और ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति ही सब कुछ नहीं है । इस सम्बन्ध में जगन्नाथजी का आदेश पान की भी आवश्यकता है । अतः आषाढ़ के महीने में अधिक मास आने एवं ग्रह नक्षत्रों की अनुकूल स्थिति होने पर पण्डे लोग जगन्नाथजी के सामने स्याही, दवात, लेखनी, ताड़ के पत्ते रखकर प्रार्थना करते हैं, हे प्रभो, आपका श्रीविग्रह रुपी देह बड़ा ही शीर्ण (पुराना) हो गया है, अब आप इस पुराने देह (शरीर) को त्याग कर नव कलेवर (नया शरीर) ग्रहण करें ।'' जगन्नाथजी यदि नवकलेवर का आदेश दें तभी नवकलेवर का आयोजन किया जाता है । ऐसा न होने पर कुछ नहीं किया जाता । जितने बार इस प्रकार का मलमास आदि आता है उतनी बार ऐसी प्रार्थना चलती रहती है । ऐसा करते-करते जिस बार आदेश मिलता है उसी बार नवकलेवर किया जाता है । इसलिए कितने वर्षों के बाद नवकलेवर होगा यह कहना कठिन है । जो भी हो, जगन्नाथ जी का आदेश पाते ही पण्डे मंगला देवी के पास जाकर कहाँ विग्रह (मूर्ति) तैयार किया जायगा, स्थान निर्देश के लिये प्रार्थना करते हैं । देवी के हांथ में जो खड्ग है उसके गिरते ही पण्डे समझ जाते हैं, किस दिशा में वह वृक्ष पाया जायगा । खड्ग का ऊपरी भाग जिस दिशा की ओर गिरता है उस दिशा में जाकर ढूँढ़ने पर यह वृक्ष पाये जाते हैं । वृक्ष भी ऐसे होने चाहिये जिन पर कभी भी चिड़ियों ने घोंसला नहीं बनाया । उसके कोटर में साँप और नीचे वल्मीक का ढेर होना चाहिये । बलराम, सुभद्रा, और जगन्नाथ जी के वृक्ष पृथक्-पृथक् लक्षणों से युक्त होते हैं । सेवकगण जब इन वृक्षों को ढूँढ़ कर निकालते हैं तो इनके नीचे पूजा तथा हवन करते हैं । प्रमुख सेवक सोने की कुल्हाड़ी से सर्वप्रथम वृक्ष पर वार करता है । उसके बाद साधारण कुल्हाड़ियों से उन्हें काटा जाता है । तीन विग्रहों के लिये तीन वृक्षों की लकड़ी को लेकर डाली पत्तों के बचे हुए अंश को जमीन में गाड़ दिया जाता है । लकड़ियों को ढककर ठेले पर लाद कर शहर लाया जाता है । रास्ते में आते-आते इन लकड़ियों की यथावत् पूजा भी की जाती है । कौन इन पेड़ों को ढूँढेंगे, कौन उनको ढोकर लायेंगे, कौन उनसे मूर्ति बनायेंगे और कौन मूर्तियों पर रंग करेंगे यह सब निदिष्ट हैं एवं वंशपरम्परा से यह सब काम होता आ रहा है ।

मन्दिर में लकड़ियों के आने पर मन्दिर का दरवाजा बन्द करके मूर्तियों का निर्माण प्रारम्भ होता है । जो लोग मूर्ति बनाते हैं उनकी आँखें और हाथ कपड़े से लपेटे हुए रहते हैं ताकि वे आँखों से मूर्ति को देख न पायें और चर्महस्त (हाथों की चमड़ी) से उसे छू न सकें । वंशानुक्रम से वे इस काम को करते आ रहे हैं अतः उनके लिये इस प्रकार मूर्ति बनाना सम्भव है । जब मूर्ति

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बनायी जाती है तब खूब जोर-शोर से मन्दिर में बाजे बजाये जाते हैं । ताकि बाहर से मूर्ति बनाने की आवाज न सुनाई पड़े, एवं बनाने वालों को भी अपनी हथौड़ी की आवाज कानों में न पड़े । इस समय पुरी के महाराज भी तलवार हाथ में लेकर मन्दिर के दरवाजे पर पहारा देते हैं ताकि बाहर से किसी का मन्दिर में प्रवेश न हो । इस प्रकार बहुत दिनों तक राजा को भी प्रतिदिन दो घन्टे तक पहरा देना पड़ता है । कहा जाता है कि जब-जब जगन्नाथजी का नवकलेवर होता है तब-तब नवकलेवर के बाद राजा की भी मृत्यु हो जाती है । आजकल राजा खुद पहरा नहीं देते वे एक वृद्ध ब्राह्मण को दस हजार रुपये पर अपना प्रतिनिधि नियुक्त करते हैं । यह वृद्ध पण्डा राजा के प्रतिनिधि के रूप में तलवार हाथ में लेकर पहरा देते हैं और नवकलेवर के उपरान्त उसकी मृत्यु हो जाती है । कितने दिनों में मृत्यु होगी यह कहा नहीं जा सकता । कभी-कभी शीघ्र भी हो जाती है तो कभी दो-तीन महीनों के बाद भी होती है । इस वर्ष राजा के प्रतिनिधि के तौर पर जो पण्डा थे उनकी मृत्यु हो चुकी है । नयी लकड़ी से मूर्ति तैयार हो जाने पर पुराने विग्रह के से वक्षस्थल "ब्रह्म" या "प्राण" निकाल कर नये विग्रह के वक्षस्थल में रखा जाता है, साथ ही मौसम के फूल तुलसी और चन्दन भी रखा जाता है । आश्चर्य इस बात का है कि फूल, तुलसी, चन्दन पुनः नवकलेवर न होने तक अविकृत अवस्था में भगवान् के वक्षस्थल में रहते हैं । पुराने विग्रह के वक्षस्थल से यह फूल, तुलसी, चन्दन निकाल कर एक छोटी सी थाली में रखकर राजा को दिया जाता है । विग्रह के वृक्षस्थल में ब्रह्म स्थापन हो जाने पर मूर्ति का तेल व धूप से लेपन किया जाता है एवं रेशमी थान (वस्त्र) से लपेट दिया जाता है । पुनः इस कपड़े के ऊपर रेशमी धागा लपेटा जाता हैं एवं एक विशेष प्रकार की लेवी (गोंद) लगा कर पतले रेशमी वस्त्र से उसे भली भाँति लपेट दिया जाता है । इस रेशमी वस्त्र के ऊपर रंग लगाकर मूर्ति को चित्रित किया जाता है, इन सब भिन्न-भिन्न कार्यों के लिए भिन्न-भिन्न लोग हैं । यह सब काम भी तिथि मुहूर्त देख विधि अनुसार किया जाता है । जिन वस्तुओं से विग्रह तैयार किया जाता है वही है विग्रह की अस्थि मेद इत्यादि, अर्थात् लकड़ी है अस्थि एवं मज्जा, तेल, धूप और वस्त्र हुए शरीर का चर्म । सुना जाता है जिन लक्षण युक्त वृक्ष से जगन्नाथजी की मूर्ति बनती थी वह मंगला देवी के निर्देशानुसार स्वतः ही पाये जाते थे । अब उनमें कृत्रिमता देखी जाती है । अब लोग उनके ही पेड़ों से जगन्नाथ जी की मूर्ति बने इस आशय से उन सब लक्षणों से युक्त वृक्ष तैयार करते हैं । यह भी ध्यान देने की बात है, वह किसकी प्रेरणा से इस प्रकार के लक्षण युक्त वृक्ष तैयार करते हैं ।"

इस प्रकार बात-चीत करते-करते दिन के साढ़े ग्यारह बज गये । माताजी उठ पड़ीं ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दुर्गतिनाशिनी दुर्गा

— स्वामी ब्रह्मानन्द महाराज

देवी कैसे प्रसन्न होती है ? धूप-दीप, नैवेद्य इत्यादि पूजन-उपकरणों से नहीं । यद्यपि प्राथमिक पर्याय में वस्तुतः इन्हीं पूजन-सामग्रियों की आवश्यकता होती है । फिर भी, उसकी प्रसन्नता के निमित्त होता है- - हमलोगों का उसे मौलिक रूप से चाहना, जननी से सम्यक प्रेम रखना । सब जगह, सभी चीजों में दुर्गा-बोध को प्रस्फुटित रखना । यही अविरत दुर्गा विलोकन अथवा ब्रह्मदर्शन ही हुआ हम लोगों की मुक्ति । वास्तविक आनन्द और शान्ति ।

इसी मुक्ति के लिए ही हम लोगों की साधना प्रयोजन है । प्रयोजन है दुर्गा-पूजा की । वर्ष भर, जिसे साधना का धन कहा गया है, अवाङ्मनसोऽगोचर है, शरत्कालिक इस विशेष आविर्भाव में उसी को अनुभव करते हैं दुर्गामूर्ति के विमोहक रूपों में । जैविक संस्कार के चलते असीम को देखने, रूप में अरूप को देखने, प्रतिमा में दुर्गा को देखने का प्रयत्न, वर्ष के अन्य दिनों में जो सफल नहीं हो पाता, वह शरत्कालीन इस दिवसत्रय की शुभ पूजा में हमलोगों के मन के बहुत-सारे मेघ यूँ ही टूट जाते हैं । बहुत सारे संशय एवं अविश्वास स्वयं दूर हो जाते हैं । विशेष अवतरण की इस शुभबेला में, मातृ करुणा से अनुभव होता है प्रतिमा में दुर्गा की । चित्तद्वार के खुल जाने से अनुभव होने लगता है दुर्गा केवल मूर्ति के मध्य ही सीमित नहीं है, वे विद्यमान हैं, वे ओतप्रोत हैं सभी स्थानों में, सब कुछ के भीतर-जल, स्थल, अन्तरिक्ष, अनल-अनिल, गिरि-नदी बन लताओं में नर-नारी में, पशु इत्यादि में और नभोमंडल की नीलिमाओं में । वैविध्य बोलकर कहीं कुछ नहीं है । 'नेह नानास्ति किञ्चन ।' इतने दिनों तक माँ को नहीं देख कर, ब्रह्म को नहीं देख कर वैविध्य को देखने से मरण से मरणान्तर की दिशा में ही चलायमान होता रहा, मृत्यु के मुख में ही गिरता चला गया । परन्तु, आज देखता हूँ, आज अनुभव करता हूँ उस वैविध्य की छटा में भी माँ ही रहती हैं, दुर्गा ही रहती हैं, ब्रह्म ही रहता है । मुक्त हो गया हूँ वैविध्य-दर्शन के बंधन से । मुक्त हो गया हूँ उस एक को देखकर । इसीलिए, अनेक साधनाओं की धारा की तरह दुर्गा-पूजा भी लाती है, हमलोगों के जीवन में मुक्ति । लाती है आनन्द और शान्ति ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्वत्र एक चैतन्य शक्ति ही विद्यमान

—स्वामी नारायणानन्द तीर्थ

जो लोग विधिपूर्वक अर्थात् शास्त्रीय नियमानुसार परमहंस संन्यास ग्रहण करते हैं, वे शिखा, सूत्र त्याग कर, जातरूप होकर, परिधेय वस्त्रादि त्याग कर, दो हाथ ऊपर करके महाभारत के निम्नलिखित श्लोक का पाठ करते हुए सर्वभूत को अर्थात् प्राणिमात्र को अभय प्रदान करते हैं—

अभयं सर्वभूतेस्यो दत्वा यश्चरते मुनिः
न तस्य सर्वभूतेम्यो भयमुत्पद्यते क्वचित् ।

ये प्रतिज्ञा करते हैं कि उनके द्वारा किसी भी प्राणी को किसी प्रकार का शारीरिक या मानसिक कष्ट या दुःख प्राप्ति नहीं होगा । कारण संन्यासी देखते हैं उनकी अपनी आत्मा ही सर्वभूत में परिव्याप्त होकर है । सर्वभूतात्मभूतात्म शंकरावतार परमज्ञानवान् जगदगुरु श्रीमतशंकराचार्य ने भी इसकी व्याख्या करते हुए कहा है'' सर्वेषां ब्रह्मादीनां स्तम्बपर्यन्तानां भूतानामात्मभूतात्मा प्रत्यक् चेतनः'' अर्थात जिसकी अन्तरात्मा ब्रह्मा से स्तम्ब या तृण तक सम्पूर्ण भूतगत की आत्मा हो गयी है, वही यथार्थ ज्ञानी है, उनकी ही सर्वभूत में अर्थात् सर्व प्राणियों में ब्रह्मदृष्टि हुई है, वही सच्चा संन्यासी है । सच्चे संन्यासी को पेड़ काटना, डाली या फूल पत्ता तक नहीं तोड़ना चाहिए । इसीलिए लगता है श्री श्री माँ के दिव्य शरीर को लेकर जब साधना का खेल चल रहा था तब पेड़ के नीचे जो फल गिरा रहता वही माँ लेती थीं । पेड़ से कोई फल तोड़ने नहीं देती थीं । इस सम्बन्ध में परम करुणामयी श्री श्री माँ आनन्दमयी की कृपा एवं उनकी अव्यर्थ इच्छाशक्ति के फलस्वरूप या ख्याल से मेरे जीवन में एक क्षुद्र प्रमाण मिला है । यहाँ उसका उलेलख करने की कोशिश कर रहा हूँ । इससे मेरी कोई बड़ाई नहीं है, यह मैं निःसंकोच और दृढ़ता से कह सकता हूँ ।

१९५९ में गुरुपूर्णिमा के दिन से श्री श्री माँ के आदेश से देहरादून के किशनपुर आश्रम में रहते हुए चातुर्मास्य व्रत कर रहा हूँ । यह भी संन्यासियों का ही आवश्यक करणीय व्रत है । कुछ दिन पहले श्री श्री माँ के किशनपुर आश्रम के आंगन में शिवमंदिर के सामने आम के पेड़ के नीचे एक. नयी पाकशाला बनी है । उसके पीछे अर्थात् रसोईघर के पीछे हाथ मुंह धोने के लिए पानी का एक नल है । पानी के नल के नीचे का स्थान ईट सीमेन्ट देकर पक्का किया जा रहा था । एक दिन दोपहर को टहलते टहलते वहाँ जाकर देखा कि एक राजमिस्त्री और एक मज़दूर काम कर रहे हैं ।

ईंट द्वारा जिस स्थान को पक्का किया जा रहा था, उसके बीच में एक लीची का पेड़ था । लीची के पेड़ की एक डाली पानी के नल के पास आई है । इस लटकती डाली के लिए राजमिस्त्री को काम करने में असुविधा हो रही है, देख मैंने मज़दूर से कहा कि एक डोरी से इस डाली को

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कस कर पेड़ से बांध दो, ऐसा होने पर मिस्त्री को काम करने में असुविधा नहीं होगी एवं नल पर हांथ मुंह धोने पर डाली किसी के मुंह पर नहीं आयेगी तथा कुछ दिन कस कर बंधी रहने से डाली स्वत: ही सीधी हो जायेगी । मेरे निर्देश से उस नज़दूर ने उस डाली को बहुत कस कर बाँध दिया । वह ठीक से बाँध नहीं पा रहा था, यह देख कर मैंने भी बांधने में उसकी सहायता की । मूक वृक्ष को निष्ठुरता से बाँध कर चला आया ।

दूसरे दिन प्रात: नींद से उठ कर मैंने देखा कि मेरे दाहिने कंधे के सन्धि स्थान पर ऐसी तीव्र पीड़ा हुई कि मैं अपना दाहिना हाथ ऊपर नहीं उठा पा रहा था । रात में भी दर्द के मारे अच्छी नींद टूट जाती थी । मैंने सोचा कि पहाड़ी ठंडी बारिश की हवा लग कर दर्द हो रहा है । इस दर्द में ही मैंने दिन के कार्य पूरे किये । प्राय: चौबीस घन्टे बाद दोपहर को पानी रुकने के बाद मैं टहलते टहलते जब बाहर आया तो लीची के पेड़ पर दृष्टि पड़ते ही अचानक याद आया - कल इस पेड़ की शाखा को इस प्रकार जोर से बांधने पर अवश्य उसे भी मेरी तरह कष्ट हुआ होगा । शाखा भी तो पेड़ के हाथ की तरह ही है । एक ही परमात्मा का बनाया पेड़ जैसा है मैं भी वैसा ही हूँ । परमांत्मा की एक ही चैतन्य शक्ति इस वृक्ष में अवस्थान कर रही है । श्री चण्डी में तो यही बात देवताओं ने चैतन्य रूपी महामाया का स्तव करते हुए कहा ''या देवी सर्व भूतेषु चेतनेत्यभिधीयते नमस्तस्यै, नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नम:'' जो देवी सर्वभूतों में चेतनारूप से प्रसिद्ध हैं, उनको नमस्कार है ।

इस प्रकार विचार करके मैंने जाकर पेड़ की गांठ खोल दी । साथ ही साथ मेरे हाथ का दर्द भी कम होने लगा । जैसे-जैसे बन्धन शिथिल होता गया मेरा दर्द कम होता गया । रस्सी को काट कर फेंकने के साथ-साथ मेरे हाथ का दर्द बिल्कुल कम हो गया और मैं अनुभव करने लगा कि मैं और यह वृक्ष अभिन्न हूँ । जो चैतन्य शक्ति लीची के पेड़ में है वही चैतन्य शक्ति मुझमें भी है । श्री मद्भगवद्गीता में श्री भगवान इसीलिए अर्जुन से कहते हैं':—

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन ।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥

सब भूतों में ही जो समत्व दर्शन करते हैं अर्थात मुझे जैसा सुख मिलता है उसी प्रकार सभी प्राणियों को भी सुख चाहिए एवं मुझे जैसा दु:ख प्रतिकूल है वैसे ही सभी के लिए दु:ख प्रतिकूल है, इस प्रकार सभी भूतों में अनुकूल व प्रतिकूल सुख और दु:ख को जो समभाव से देखता है वही सभी योगियों में श्रेष्ठ योगी है ।

दूसरे दिन राज मिस्त्री ने काम पर आकर देखा कि पेड़ की डाल खुली है । उसने बांध कर काम करना शुरु किया । दोपहर को वहाँ जाकर जब मैंने पेड़ को बंधा देखा तब मैंने पूछा कि किसने बांधा तो पूछने पर पता चला उसी मिस्त्री ने ही काम की सुविधा के लिए डाली को बांधा था । मेरे अनुभव को सुनकर उसने वृक्ष के बन्धन को खोल दिया ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मेरे वहां से आने पर मिस्त्री ने इस घटना को आश्रम के ब्रह्मचारी श्रीमान् सदानन्द से कहा । इस घटना को सुनकर उसने कहा— यह सब कुछ नहीं है । यह मानसिक दुर्बलता का परिचय है । मैं शाम को आकर एक कटारी लाकर पेड़ की डाल काट दूंगा, देखूं मेरा क्या होता है । यह कह सदानन्द गाय का भूसा लाने कल्याणवन में चला गया । भूसा काटते समय गड़ासे की चोट से उसके बायें हाथ की ऊंगली कट गयी । अपना घाव बांधने के लिए वह डेटाल लगाने मेरे पास आया । मैंने उसका कटा स्थान बाँध दिया । उसका घाव ठीक होने में करीब दो महीने लगे । श्रीमान् सदानन्द लीची का पेड़ न काट सका ।

इसके बाद सन् १९५९ शारदीय श्री श्री दुर्गापूजा के समय माँ काशी लौट आयीं । माँ के आदेश से मैं भी उस समय चातुर्मास्य के बाद देहरादून से काशी लौटा । एक दिन अवसर पाकर मैंने माँ को अपना अनुभव सुनाया । एक दिन वाराणसी आश्रम में श्री अन्नूपूर्णा मां के मंदिर के सामने के बरामदे में दोपहर को सत्संग के समय मां ने मुझे पेड़ की घटना सुनाने को कहा । माँ के आदेशानुसार मैंने उस घटना को सबको सुनाया । तब माँ ने कहा— इस बार जब नारायण को किशनपुर रख कर चली आई तब इस शरीर का ख्याल हुआ था कि नारायण को थोड़ी अनुभूति हो । यह कहकर माँ ने मुझसे कहा— "नारायण अब तुम और कह नहीं सकोगे कि इतने दिन जप तप करके कुछ नहीं हुआ" । माँ श्रीमुख से इस बात को सुनकर सब हँस पड़े । मैंने मां को नम्रता से प्रणाम करके कहा— माँ यह जप तप का फल नहीं, यह तुम्हारे अमोघ ख्याल के फल से हुआ था ।

मैं निश्चित रूप से समझ गया, उस दिन का अनुभव केवल अवचेतन मन की क्रिया नहीं थी, यह परमकरुणामयी माँ की कृपा से ही सम्भव हुआ था । वह महाशक्ति का ही स्पर्श था । महामनीषी महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ जी कहते हैं— योगीगण जिसको इच्छाशक्ति के रूप में ग्रहण करते हैं वही सृष्टिकी मूल शक्ति है । कारण कि उसी शक्ति के प्रभाव से ही सृष्टि का प्रथम आविर्भाव हुआ है । साधारण मनुष्य में इच्छाशक्ति तो दूर की बात है किसी भी शक्ति का विकास नहीं होता । इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति । मां का ख्याल या इच्छाशक्ति एवं सृष्टि के मूल में जो इच्छाशक्ति है वह पृथक् दो नहीं एक ही शक्ति है । मां 'इच्छा' शब्द का व्यवहार न करके 'ख्याल' शब्द का व्यवहार करती हैं ।

करीब दो वर्ष बाद विजयनगर की राजमाता श्रीमती ललिता देवी ने देहरादून से काशी लौट कर मुझे सूचित किया कि उस लीची के पेड़ की डाल उसी तरह झूल रही है । वृद्धा महिला अत्यन्त धर्मपरायण थीं । श्री श्री माँ को वे इष्ट देवी के रूप में पूजा करती थीं । उन्होंने मुझसे कहा, वे इस वृक्ष मूल में प्रवास करके आयी हैं । न जाने वृक्ष रूप में कौन महात्मा वहां विराज रहे हैं ।

कुछ दिन बाद मेरे एक शिक्षित विज्ञानी मित्र ने इस घटना को सुनकर कहा यह सब कुछ नहीं है । हाथ का दर्द auto suggestion का परिणाम है या अपनी कल्पित भावना का फल है । वैज्ञानिक जो भी कहें पर इस घटना ने मेरे हृदय में एक ऐसी अमिट छाप छोड़ी कि वह किसी प्रकार मिट नहीं सकती ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सबसे आश्चर्यजनक बात

—डा. प्रेम नारायण सोमानी

छोटा बच्चा है, वह तो आग से खेलना चाहता है. वह तो साँप से भी खेलना चाहता है। रोको तो रोता है, नाराज भी होता है । उसको इस अबोध अवस्था में उसे जो प्रिय लगता है वही करना चाहता है । वह प्रिय है भी कहाँ ? आग से खेलेगा तो जलेगा, साँप से खेलेगा तो मरेगा। वह प्रीतकर भी नही हैं । अबोध अवस्था में वह निर्णय कैसे करें । जितना रोका जाता है उतना ही आकर्षण प्रबल होता है । बच्चे को लगता हैं जरूर कुछ होगा वहाँ, अन्यथा सारे लोग रोकने के पीछे क्यों पड़े हैं?

ऐसी ही मनुष्य की दशा है । हजारों वर्षों से जाग्रत पुरुषों ने बार-बार कहा है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णा में मत जाओ । वहाँ कुछ भी नहीं है । उनके निरन्तर कहने का परिणाम यह हुआ कि हमारा मन कहता है कि समस्त जागृत पुरुष जब कहते हैं कि यहाँ मत जाओ, जरूर इसमें कुछ होगा । इतने लोग रोकते हैं तो कुछ होना ही चाहिए । इनमें जाने के लिए ये जाने हम कितने बहाने ढूँढ़ने लगते हैं । तो हम काम में जाते हैं, क्रोध में जाते हैं; लोभ में जाते हैं, मोह में जाते हैं, और तृष्णाओं के जाल बुनते रहते हैं और इनको प्रिय कहते हैं ।

और मजा यह है कि छोटा बच्चा यदि आग से जल जाये तो एक ही अनुभव काफी होगा, दुबारा फिर आग की तरफ नहीं जायेगा । परन्तु वयस्क अपनी मुर्छा में ही रहता है । कितनी बार क्रोध किया है । और कितनी बार क्रोध की आग में जले हैं । फिर भी जब होगा तो करने का कोई कारण ढूढँ लेंगे क्यांकि ऐसा करना प्रिय लगता है । लोभ कितनी-कितनी बार किया है। और लोभ से क्या पाया है ? नीद खो दी, नीद हराम हुई । लोभ से पाया क्या है? यहाँ पाने को क्या है जो लोभ से कोई पायेगा । फिर जब लोभ जागेगा तो प्रिय मालूम होगा । और आश्चर्य तो यह है कि आदमी अनुभव के बाद अनुभव करता है फिर भी कुछ सीखता नही है ।

महाभारत की एक प्रसिद्ध कथा है: पांडव वनवास के दिनों में एक जंगल में भटक रहे थे—प्यासे । और एक भाई पानी खोजने और लेने गया । एक झील पर पहुँच गया । स्फटिक मणि जैसा स्वच्छ उस झील का जल है । वह तो बड़ा प्रसन्न हुआ । सब भाई प्रतीक्षा करते होंगे, वह जल्दी से पानी भरने की तैयारी करने लगा । जैसे ही पानी भरने को झुका झील में—एक वृक्ष के पास से आवाज आई-"रुक, पहले मेरी बात का जबाव दे दे । अगर बिना जबाव दिये पानी भरने की कोशिश की तो जीवित न लौट सकेगा । और जवाब न दे सका तो भी जीवित न लौट सकेगा ।"

कोई दिखाई नहीं पड़ता हैं । कथा कहती है कि एक यक्ष, एक आत्मा, उस वृक्ष पर रहती है और वह आत्मा तभी मुक्त होगी जब उसे उसके प्रश्नों का उत्तर मिल जाये । इसलिए उस झील पर जो भी आता है वह आत्मा इस तरह के प्रश्न पूछती है जिसके उत्तर जान लेने से वह मुक्त हो जाये ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसने जो प्रश्न पूछे, वे बड़े कठिन मालुम पड़े । उत्तर नही दिये जा सके । तो एक पाण्डव बेहोश गिर पड़ा । फिर दूसरा खोजता हुआ आया-अपने भाई को खोजने और पानी को खोजने । उसके साथ भी वही हुआ । बारी-बारी से चार भाईयों की लाशें झील के किनारे गिर गयी । और तब युधिष्ठिर का आगमन हुआ । युधिष्ठिर से भी उसने प्रश्न पूछे । यक्ष के प्रश्न बड़े प्यारे हैं, बड़े महत्वपूर्ण हैं । उनमें से एक प्रश्न जो सबके काम का है, वह प्रश्न यह है कि मनुष्य के संबंध में सबसे अजूबी बात कौन सी है? मनुष्य की सबसे अविश्वसनीय बात कौन सी है? तो युधिष्ठिर ने कहा, यही कि वह अनुभव से सीखता नहीं । यह सबसे आश्चर्यजनक बात है । यक्ष ने उत्तर स्वीकार कर लिया और उसके बंधन खुल गये । ठीक उत्तर मिल जाये तो बंधन खुल जाते हैं । हम सब भी ऐसी ही आत्मा हैं जो प्रश्नों के सही उत्तर की तलाश में भटक रहे हैं । हम सब भी यक्ष हैं । हमारे प्रश्नों का उत्तर कहाँ मिला है? उत्तर मिल जाये तो मुक्त हो जायें । कथा बड़ी प्यारी है । यक्ष कैद है, वृक्ष पर उसकी आत्मा बंदी है । वह किसी प्रश्न के उत्तर की तलाश कर रहा है । यही अभिशाप है उसका, जब तक उत्तर न पा लेगा तब तक मुक्त न हो सकेगा । यक्ष की भाँति यदि हमें भी ठीक उत्तर मिल जाये तो हम भी बन्धन मुक्त हो जायें ।

सबसे अजूबी बात मनुष्य के विषय में यही है कि वह अनुभव से सीखता नहीं । तुम अपने सम्बन्ध में सोचो, तुम अपने जीवन का जरा विश्लेषण करो । कितनी बार क्रोध किया, और हर बार क्रोध के पश्चात पछताये । निरपवाद पश्चाताप हुआ । और हर बार निर्णय किया कि अब नहीं करूँगा क्रोध । इसमें कुछ सार नहीं कितनी बार काम वासना में उतरे हो, हर बार विषाद ने घेरा है । हर बार थके मादे, पराजित । विचार में पड़ गये कि क्या पाया ? क्या मिला ? कितनी आतुरता से गये थे । कितनी कामना थी, कितने सपने सजाये थे, सब धूल धूसरित पड़ गये हैं । अब नहीं बहुत बार निर्णय किया । और घण्टा भी नहीं बीत पाता, दिनों की बात तो दूर रही, और फिर वासना प्रबल हो जाती है । तो तुम सोचते हो ? नहीं, सबसे आश्चर्यजनक बात यही है कि आदमी अनुभव से सीखता नहीं ।

अनुभव से सीखने के लिए मन को वश में करना जरूरी है । मन को वश में करने के लिये, चित्त को किसी सम्यक आलम्बन पर स्थिर करना पड़ता है ताकि वह तीक्ष्ण और सूक्ष्म हो जाये । तीक्ष्ण और सूक्ष्म चित्त विकारों से शरीर पर उत्पन्न होने वाली वेदना महसूस कर सकता है और तभी उसके प्रति तटस्थ रह सकता है । जागरूकता और तटस्थता (समता) यही मन को वश में करने के मूल मंत्र भगवान बुद्ध ने बताये हैं । विपश्यना के मार्ग का पथिक इन्ही को सीख कर शनैः शनैः अपने विकारों से मुक्त होता है । अपने बंधन खोल लेता है । मूर्छित अवस्था से जाग्रत की ओर बढ़ता है ।

सब जानते हुए भी जैसा संत तुलसीदास ने कहा-मूरख हृदय न चेत, जो गुरुमिलहि विच सम । इसलिए यह सबसे आश्चर्यजनक एवं अविश्वसनीय बात है कि मनुष्य अनुभव से सीखता नहीं । तो फिर श्रुतज्ञान की क्या बिसात । कथा, वार्ता, पुस्तकों का ज्ञान तो एक कान से सुना और दूसरे से निकाला । जैसे जहाज का पक्षी मुक्त होने को उड़ता है और फिर जहाज पर ही लौट आता है । ऐसा ही मनुष्य है, अनुभव से सीखता नहीं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

काशी मुक्ति माहात्म्य

—दण्डी स्वामी शिवानन्द सरस्वती

[गतांक से आगे]

अविमुक्तं महाक्षेत्रं सर्वदा जननी यथा ।
पुत्रस्य जननी लोके सर्वदा हितकारिणी ।।
हितकृत्सर्वजन्तूनां काशीहाऽमुत्र सिद्धिदा ।।

का. रह. ११/२१-२२

यह अविमुक्त महाक्षेत्र सदा माता के समान है । लोक में जिस प्रकार माता पुत्र के लिए सदैव हितकारी है, उसी प्रकार जीवों की हितकारी यह काशी प्राणियों को इहलोक तथा परलोक में सिद्धि प्रदान करती है, अर्थात् मोक्ष प्रदान करती है ।

यत्तत्परतरं तत्त्वमविमुक्तमिति स्मृतम् ।
एकेन जन्मना देवि वाराणस्यां तदाप्नुयात् ।।

—कू. पु. १/६२

जहाँ पर सर्वश्रेष्ठ तत्त्व 'अविमुक्त' नामक कहा गया है, उस वाराणसी में हे देवि! मनुष्य एक ही जन्म में मुक्ति को प्राप्त करता है ।

कृमिकीटपतङ्गा वा ब्राह्मणो वा बहुश्रुतः ।
मृतश्चतुर्विधो जन्तुस्त्रिनेत्रत्वमुपैति हि ।।

—उ. अ. पुराण

कृमि-कीट-पतंग या बहुत श्रेष्ठ विद्वान ब्राह्मण, सभी चतुर्विध प्राणी काशी में शरीरत्याग करके त्रिनेत्रधारी विश्वनाथ स्वरूप हो जाते हैं ।

सप्तजन्मकृतात्पापान्मुच्यते नात्र संशयः ।
काश्यां मृतस्तु सालोक्य साक्षात्प्राप्नोति सत्तमः ।।

—पद्म पुराण

काशी में सात जन्मों के किये हुए पापों से निःसन्देह मुक्ति प्राप्त होती है । काशी में मात्र प्राणत्याग करने वाले व्यक्ति भी साक्षात् सालोक्य मुक्ति प्राप्त करते हैं ।

एतद्रहस्यं परमं लब्ध्वा सूतान्मुनीश्वराः ।
काश्यामेव समासीना मुक्ताः शिवपदं ययुः ।।

—कै. सं. २३/३२

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सूत जी शौनकादि ऋषियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे ऋषियों! जो व्यक्ति इस (काशी के) परम रहस्य को जान लेता है, वह काशी में वास करते हुए अन्त में मुक्त होकर शिवपद को प्राप्त करता हैं । शौनकादि ऋषियों ने इस परम रहस्य को जानकर काशी में निवास किया और अन्त में शिवपद को प्राप्त किया ।

येनैकजन्मा मुक्तिर्युष्मत्करतले स्थिता ।
अनेकजन्मसंसारबन्धनिर्मोक्षकारिणी ॥

—वायवीय सं. ३/५२

काशीवासियों के लिए मुक्ति करतलामलकवत् होती है, अर्थात् उन्हें एक ही जन्म में मुक्ति प्राप्त हो जाती है एवं काशी अनेक जन्मों को देने वाले संसाररूपी बन्धन का नाश करने वाली है ।

कुत्रचिच्च शुभं वर्धेत कुत्रचित्पापसंक्षयः ।
सर्वेषां कर्मणां नाशो नास्ति काशीपुरीं विना ॥

—ज्ञान सं. ५१/७२

किन्हीं तीर्थों के सेवन से पुण्यों की वृद्धि होती है, तो कहीं पर पापों का नाश होता है; किन्तु काशीपुरी का सेवन किये बिना सम्पूर्ण कर्मों का नाश नहीं होता, अर्थात् काशीवास सम्पूर्ण शुभाशुभ कर्मों को नष्ट कर मुक्ति प्रदान कर देता है ।

क्षेत्रे ऋणत्रयात् काशी मोचयेत् सर्वदेहिनः ।
आधारभूता जीवानामाद्या प्रकृतिरव्यया ॥

—काशी मूल रहस्य

यह काशी समस्त प्राणियों को तीनों ऋणों (पितृऋण, देवऋण एवं ऋषिऋण) से मुक्ति प्रदान कराती है । यह (काशी) जीवों की आधारभूत आद्या नाशहीन प्रकृति है ।

सर्वपापविनिर्मुक्तो गच्छेच्च परमां गतिम् ।
न तस्य पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि ॥

—लिंग पुराण

काशी सभी प्राणियों को सभी पापों से मुक्त करके परमगति (मोक्ष) प्रदान करती है । करोड़ों जन्मों में भी पुनः संसार में नहीं आना पड़ता ।

अपि पातकिनो ये च कालेन निधनं गताः ।
तेऽपि स्वर्गादिहागत्य काश्यां मोक्षमवाप्नुयुः ॥

—जाबालोपनिषद्

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यदि महापापी भी कालवशात् काशी में प्राण-त्याग करता है, तो वह निश्चित ही मुक्त हो जाता है । इसीलिए यहाँ देवता भी स्वर्ग से आकर मोक्ष को प्राप्त करते हैं ।

अपि पातकिनो ये च कालेन निधनं गताः ।
तेऽपि स्वर्गादिहागत्य काश्यां मोक्षमवाप्नुयुः ।।

—शिवरहस्य

यदि महापापी भी कालवशात् काशी में प्राण-त्याग करता है, तो वह निश्चित ही मुक्त हो जाता है । इसीलिए यहाँ देवता भी स्वर्ग से आकर मोक्ष को प्राप्त करते हैं ।

शशकैर्मशकैः काश्यां यत्पदं हेलयाऽऽप्यते ।
तत्पदं नाप्यतेऽन्यत्र योगमुक्त्याऽपि योगिभिः ॥

—काशीखण्ड

इस काशीपुरी में खरगोश और मच्छर भी अनायास जिस पद को प्राप्त करते हैं, उस पद को योगी-जन अन्यत्र योग-मुक्ति से भी नहीं प्राप्त कर सकते ।

जले स्थलेऽन्तरिक्षे वा यत्र कुत्रापि वा मृताः ।
तारकं ज्ञानमासाद्य कैवल्यपदभागिनः ।।

—काशी खण्ड

काशी में पृथ्वी, जल, आकाश आदि किसी जगह भी यदि मृत्यु हो, तो वह प्राणी भगवान् शिव जी के तारक मन्त्रोपदेश द्वारा मोक्ष-पद का भागी होता है ।

सर्वत्र शुभजन्मिन्यां काश्यां मुक्तिः पदे-पदे ।
सर्वपापविनिर्मुक्तो गच्छेच्च परमां गतिम् ॥

—लिंग पुराण

सभी जगह शुभ-योनियों में जन्म लेने वालों को काशी में पद-पद पर मुक्ति मिलती है । तत्पश्चात् सभी पापों से मुक्त होकर परम-गति मोक्ष को प्राप्त करता है ।

यत्र विश्वेश्वरो देवः सर्वेषामेव देहिनाम् ।
ददाति तारकं ज्ञानं संसारात्मोचकं परम् ॥

—त्रिस्थली सेतु पृ. ३०२

भगवान् सूर्य कहते है कि काशी में ही भगवान् श्रीविश्वनाथ जी सम्पूर्ण देहधारी, प्राणियों को संसार से मुक्त करने वाले तारक मन्त्र का ज्ञान देते हैं, उसी ज्ञान से प्राणी मुक्त हो जाते हैं ।

पुण्यानि पापान्यखिलान्यशेषं सार्थं सबीजं तु शरीरमार्ये ।
इहैव संहृत्य ददामि बोधं यतः शिवानन्दमवाप्नुवन्ति ॥

—तीर्थ सुधानिधि ४५

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्वनाथ जी कहते हैं कि हे देवि ! काशी में रहने वालों के सम्पूर्ण पुण्यों एवं पापों को बीज(मूल) के साथ तथा शरीर के साथ यहीं पर नष्ट करके ज्ञान का उपदेश करता हूँ, जिससे काशी में मृत प्राणी को शिवानन्द की प्राप्ति होती है ।

मुमुक्षवः सुखेन स्युः काशीवासे शिवाज्ञया ।
न काशीसदृशं किञ्चित्साधनं विद्यतेऽन्यथा ॥

—कूर्म पुराण

विष्णु भगवान् कहते हैं कि हे पुण्यात्माओं, शिव जी की आज्ञा से काशीवास करने वाले मुमुक्षजन सदा सुखपूर्वक काशीवास करें । काशी के समान मोक्ष का कोई अन्य साधन नहीं है ।

वाराणस्यां स्थितो यो वै पातकेषु रतः सदा ।
योनिं प्रविश्य पैशाची वर्षाणामयुतत्रयम् ॥
पुनरेव च तत्रैव ज्ञानमुत्पद्यते ततः ।
मोक्षं गमिष्यते सोऽपि गूह्यमेतत् खगाधिप ॥

—गरुढ़ पुराण

विष्णु भगवान् कहते हैं कि गरुड़ जी ! वाराणसी में रहकर जो सदा पाप में रत रहते हैं, वे पिशाच योनि में तीस हजार वर्ष तक निवास करते हैं, पुनः ज्ञान प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करते हैं । यह अत्यन्त गोपनीय तथ्य है ।

यथा शुक्तौ पयोवाहात् पतिता जलबिन्दवः ।
मुक्ता स्युस्तथा काश्यां स्थिताः सर्वेऽपि जन्तवः ॥

—लिंग पुराण

जिस प्रकार सीप में आकाश से जल गिरने पर मोती बन जाता है, उसी प्रकार काशीवास करने वाले सभी नर–नारी शिवरूप हो जाते हैं, अर्थात् शिवस्वरूप को प्राप्त कर मुक्त हो जाते हैं ।

पुण्यानि पापान्यखिलान्यशेषं सार्थं सबीजं च शरीरमार्ये ।
इहैव संहृत्य ददामि बोधं यतः शिवानन्दमवाप्नुवन्ति ॥

—सनत्कुमार संहिता

विश्वनाथ जी कहते हैं कि देवि ! काशीवास करने वालों के सम्पूर्ण पुण्य एवं पापों को बीज (मूल) के साथ सशरीर यहीं पर नष्ट करके ज्ञान का उपदेश करता हूँ, जिससे काशी में मृतक प्राणी को शिवानन्द की प्राप्ति होती है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सर्वभोगसमायुक्ता नित्यास्तत्र स्थिता जनाः ।
सारूप्य-सामीप्य-सार्ष्टिमुक्तिं कालादवाप्नुयुः ॥
—केदार माहात्म्य

समस्त भौतिक सुखों से लिप्त प्राणी भी यदि काशीवास करते हैं, तो उसे भी सारूप्य, सामीप्य तथा सायुज्य-मुक्ति यथाकाल प्राप्त होती है ।

[क्रमशः]

दीवार

—जगन्नाथ 'विश्व'

देश की आजादी के लिए
राम प्रसाद और अशफाकउल्ला
एक साथ शहीद हुए थे
तब उनकी एक जमात थी
उनकी जात शहीदों की जात थी
आजाद उनका धर्म था
कुर्बानी उनका कर्म था
दोनों वन्देमातरम् गाते थे
जय हिन्द का नारा लगाते थे
दोनों त्याग एकता की कहानी थे
जब तक जिये देशभक्त हिन्दुस्तानी थे
लेकिन उनके मरने पर
हमने एक दीवार खड़ी करवा दी
एक के लिए समाधि
दूसरे के लिए मजार बनवादी
जब से कोई हिन्दू कोई मुसलमान हो गया
और देखते ही देखते
सारा हिन्दुस्तान लहूलुहान हो गया ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाणी कुसुमाञ्जलिः

—पं. ब्रह्मादीन अवस्थी

देहोस्तिभगवत्परिपूजनार्थं
पूजाचते सकलमानस शुद्धि हेतुः ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ६१ ॥

यत् यत् करिष्यसिसदाचलभक्तिनिष्ठः
व्यर्थम् न भविष्यति सदा तव कर्मतन्त्रम् ।
प्राप्तुं च तस्य सुकृपां भवभावपूर्णः,
अन्तर्गतं नहिवर्हिगतमेवनूनम् ॥ ६२ ॥

सर्वोत्तमं गुरुपदं मनसा विचिन्त्यम्
सर्वत्रपश्य गुरुदेवमयंयथार्थम् ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ६३ ॥

सत्सङ्गरेव मनुजस्य परं सुलाभः
सत्सङ्गमेव मनुजैः करणीयमेवम् ।
मातुः मुखाप्ब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः
लोकाः स्मरन्तु सततं भवताप हारम् ॥ ६४ ॥

यूयं विलोकयथ मां निज बालिकावत्
सैवास्म्यहं तव सदा नयने तथैवम् ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः
लोकाः स्मरन्तु सततं भवताप हारम् ॥ ६५ ॥

आत्मस्वरूप निजरूपमयं विलोक्य
दृष्टुं सदा भजनसाधनयोः प्रयोगाः ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः
लोकाः स्मरन्तु सततं भवतापहारम् ॥ ६६ ॥

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यत्ने कृते सदाकुरु यतनं सदा त्वं
कालः कदा समुपगच्छति नैवजाने ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः ॥
लोकाः स्मरन्तु सततं भवताप हारम् ॥ ६७ ॥

सर्वेशचिन्तनपरो भवसत्य रुपः
कार्यं भविष्यति सदा खलुचिन्त्यनीयम् ।
कार्यं च नैव भवतीति न शोचनीयम्,
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः ॥ ६८ ॥

यूयं विचिन्त्यथ सर्वजगतसुमित्रं
आत्मस्वरुपमसि भेदासुबुद्धिहीनः ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः,
लोकाः स्मरन्तुसततं भवताप हारम् ॥ ६९ ॥

सर्वेश्वरस्य भवनं गमनं वरेण्यं
क्षेत्रत्वादीयमसि नैव निजं ग्रहंते ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं सुधीभिः,
लोकाः स्मरन्तु सततं भवनाप हारम् ॥ ७० ॥

नैवं भयं तव कदापि करोतु कार्यम्
यत्नं करोतु नहि तस्य भवेद्कार्यम् ।
मातुः मुखाब्ज कथनं कथितं गुणज्ञैः
लोकाः स्मरन्तु सततं भवताप हारम् ॥ ७१ ॥

(क्रमशः)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जीवन दर्शन

उड़ीसा में भयंकर बाढ़ आ गयी थी, हजारों गाँवों के लाखों लोग बर्बाद हो गये थे । सैकड़ों जानें चली गई थीं, करोड़ों की फसलें नष्ट हो गई थीं, हजारों कच्चे मकान धराशायी हो चुके थे । न केवल उस साल बल्कि पिछले कई दशकों की भी यही करुण गाथा थी । उड़ीसा की बाढ़ के दर्दनाक किस्से जब गांधीजी ने सुने तो उन्होंने विख्यात इंजीनियर डॉ. विश्वेश्वरैया को पत्र लिखा, 'उड़ीसा जाइए और वहाँ बाढ़ रोकने की योजना बना कर सरकार को दीजिए ।' गाँधीजी का पत्र मिलते ही डॉ. विश्वेश्वरैया उड़ीसा गए । उस प्रदेश के बाढ़ क्षेत्रों का उन्होंने बारीकी से निरीक्षण किया। फिर नियंत्रण की एक योजना बना कर तत्कालीन उड़ीसा सरकार को पेश कर मैसूर आ गए । कुछ माह बाद विश्वेश्वरैया को उड़ीसा सरकार की ओर से पारिश्रमिक का एक चेक मिला, पर उन्होंने वह चेक वापस कर दिया, यह लिखकर कि 'मैं गांधीजी के आदेश से बाढ़ नियंत्रण योजना बनाने उड़ीसा गया था, न कि उड़ीसा सरकार के बुलावे पर । इसलिए मैं सरकार से पारिश्रमिक लेने का हकदार नहीं हूँ । सरकार चाहे तो इस राशि का उपयोग बाढ़ नियन्त्रण में कर सकती है ।''

(दैनिक भास्कर से साभार)

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करुणा सागर माँ

—श्री गोवर्धन सिंह

श्री श्री माँ की करुणा अपार और अनन्त है । स्मृति पटल पर जब भी उसकी झाँकी उभर आती है, मन द्रवित होता है और बरबस अश्रु प्रस्फुटित होते हैं । ऐसा ही एक प्रसंग मैं लिखने जा रहा हूँ ।

सन् 1972 की बात है, मैं लखनऊ से भोपाल कार द्वारा, अपनी पत्नी और एक लड़के के साथ जा रहा था । रास्ते में कानपुर पड़ा । मुझे यह मालुम था कि माँ कानपुर में ही विराज रही हैं । ज्यों ही कानपुर आया, मेरा मन माँ के दर्शन के लिए लालायित हो उठा । पर भोपाल का मार्ग बहुत बिहड़ था । अन्धेरा होने पर डाकुओं द्वारा पकड़े जाने का डर था । कार मैं ही चला रहा था और मेरा लड़का भी अस्वस्थ था, इसलिए मैं चुप ही रहा । पर करुणामयी माँ की करुणा से मेरी पत्नी ने कहा कि दो मिनट उनके भाई श्री प्रभात चन्द्र भटनागर Dy. Chief Controller of Exports and Imports से मिलते चलो, और हमलोग उनके घर पहुँचे ।

रविवार का दिन था सो भटनागर साहब घर पर ही थे और अचानक हमलोगों को देख कर बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने और उनकी धर्मपत्नी ने हमको दोपहर की चाय तक रुकने पर विवश कर दिया । मौका पाकर मैं अपने लड़के को लेकर माँ के दर्शन के लिए चल पड़ा ।

श्री श्री मां J.K. Temple के प्रांगण के एक विशाल कमरे में बिराज रही थी और ४००-५०० स्त्री पुरुष वहाँ पर एकत्रित थे । हम दोनों ने दूर से ही माँ को प्रणाम किया । इतने में किसी ने एक टोकरा सन्तरों का लाकर भेंट किया और मां ने तुरन्त लुटाना शुरु कर दिया । यकायक मेरे मन में यह विचार आया कि करुणामयी से आज बीमार बच्चे को आशीर्वाद अवश्य दिलवा दूँ और इस विचार के साथ ही मैं उपस्थित जन समुदाय में घुस पड़ा । उसी समय माँ चौकी से उठकर चली गईं, सब लोग उठ खड़े हुए और विशाल कमरे के दरवाजों से बाहर जाने लगे । मैं भी अपने लड़के का हाथ पकड़ कर किसी तरह एक दरवाजे से निकल कर बाहर आया और भीड़ से बचने के लिए सीधे एक पेड़ की तरफ चल पड़ा । पर क्या देखता हूँ कि साक्षात् माँ वहां अकेली खड़ी हुई हैं । मैंने लड़के को प्रणाम करने को कहा और माँ से प्रार्थना की कि इस बच्चे को आशीर्वाद दे दो माँ । माँ ने अपना कर कमल बच्चे के सिर पर रखा और भीड़ में विलीन हो गईं । हम दोनों भटनागर साहब के घर लौटे और सकुशल रात के बारह बजे भोपाल अपने निवास स्थान पर पहुँच गये ।

कुछ ही दिनों बाद मेरा बीमार लड़का बहुत बीमार पड़ा और लगा कि अब वह नहीं बचेगा पर श्री श्री मां की अपार करुणा से वह बिलकुल स्वस्थ हो कर जीवन में अग्रसर हुआ । करुणामयी के चरणों में मेरा बारम्बार भावभरा प्रणाम ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रद्धाञ्जलि
श्रद्धेय विरजानन्द जी की स्मृति में

—ब्रह्मचारिणी चन्दन

"बाबा विश्वनाथ तुम्हारे चरणों में अपने एकमात्र प्राणप्रिय पुत्र को इस मुहूर्त में निःस्वार्थ रूप से निवेदन कर रही हूँ ।" एक धर्मशीला माता की हार्दिक प्रार्थना थी बाबा विश्वनाथ जी के चरणों में, शुद्धप्राणा गर्भधारिणी माता की प्रार्थना साक्षात् भाग्यदेवता की वाणी जैसे ही अमोघ (अव्यर्थ) । इसीलिए तो कहा जाता है "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।" यहीं से विरजानन्दजी के जीवन का पट परिवर्तन होता है ।

विरजानन्दजी बहुत प्रतिभावान् पुरुष थे । उनका आध्यात्मिक जीवन जैसा गौरवमय तथा सर्वत्र विजयी था वैसे ही उनका कर्मक्षेत्र भी देदीप्यमान थां । आश्रमसंचालन के कार्य में उनकी दक्षता तथा निपुणता सराहनीय थी । अब उनके महाजीवन की एक विहंगम परिक्रमा करने की चेष्टा की जा रहा है । मातृ कृपा ही सहारा है ।

विरजानन्दजी श्री श्री आनन्दमयी संघ के साधु प्रमुख थे । उनका जीवनस्रोत संघ की प्रेरणा तथा आदर्शस्वरूप था ।

उनके जीवन के पर्यवेक्षण में हम पहले ही पाते हैं कि देदीप्यमान हैं ये महद् गुण—श्री श्री माँ के प्रति भक्ति, विश्वास, श्रद्धा तथा पूर्ण निर्भरता । श्री श्री माँ के आदर्श के अनुरूप ही उनके जीवन की गति प्रवाहमान थी । आप मातृपरिवार में श्री श्री माँ के एक घनिष्ट पार्षद के रूप में गिने जाते हैं ।

उनका जीवन वेदान्तनिष्ठ था । वेदान्तविचार से ही श्री श्री माँ को आप समझने की कोशिश करते थे । तथापि कभी-कभी उनके भीतर का भक्ति-भाव बाहर प्रकट हो जाता था । श्री श्री मां के प्रति एकान्त शरणागति का भी प्रकाश देखा जाता था । वेदान्त साधना में अपने को परिपक्व करने की इच्छा से वह पहाड़-पर्वत तथा एकान्त निर्जन स्थान में चले जाते थे । आप महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराजजी के पास भी कुछ समय तक शास्त्राध्ययन में निमग्न रहे । फलस्वरूप गुह्यगति गुह्य वेदान्त तत्त्वों का जैसे प्राञ्जलीकरण उनमें देखा जाता है वैसे ही श्री श्री माँ की सूत्रबद्ध वाणी का भी स्पष्टीकरण उनमें पूर्णमात्रा में दृष्टिगोचर होता है ।

जीवन के प्रारम्भ में ही उन्हें माँ का दर्शन प्राप्त हुआ था । उनके मामा श्री अटल बिहारी भट्टाचार्य राजशाही कॉलेज के प्रोफेसर थे तथा श्री श्री माँ के विशेष भक्त थे । उनके साथ ही आप सर्वप्रथम माँ के पास आये । आपका कॉलेज जीवन राजशाही में ही व्यतीत हुआ । इसीलिए आपका मां के पास आना-जाना लगा ही रहता था ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री विरजानन्दजी का आदि निवास विक्रमपुर जिले के मेदी मण्डल गांव में था । उनके पिता मैमनसिंह जिले के जमींदार के नायब थे । पिता श्री कालीप्रसन्न भट्टाचार्य धार्मिक तथा सत्यनिष्ठ थे । विरजानन्दजी के मुख से सुना कि उनके पिताजी कवि कालिदास के शब्दों में "शालप्रांशुर्महाभुजः" थे । अर्थात् सुदृढ़ शरीर, दीर्घबाहु तथा सौम्याकृति वाले पुरुष थे । आप का शैशव आराम में ही बीता ।

उनकी माँ कुछ समय तक श्री श्री माँ के पास वाराणसी आश्रम में रहीं । काशीधाम में श्री श्री मां के सान्निध्य में जप करते-करते उनकी मां मातृचरणों में सदा के लिए विलीन हो गईं ।

१९३६ ई. में श्री श्री माँ के अज्ञातवास के समय विरजानन्दजी माँ के साथ कुछ दिन रहे । बाद में माँ ने उनको कोलकाता भेज दिया ।

१९४२ ई. में अपनी माँ, पत्नी, दो कन्या तथा एक पुत्र को मामा के घर रख कर वे माँ के पास चले आये ।

कुछ दिन बाद उनकी माँ भी उन्हें वापस बुलाने के लिए माँ के पास चली आयीं । जिस कमरे में वह रहती थीं वहाँ कई चूहे थे । एक दिन चूहे को भगाने की चेष्टा में उनके हाथ के झाडू से एक चूहे का बच्चा मारा गया । वह बहुत दुःखी हो गईं और सोचने लगीं कि विश्वनाथ धाम में उनके सृष्ट जीव की हत्या से मेरे पुत्र का अकल्याण न हो । एक दिन उन्होंने श्री श्री माँ के पास अपना दुःख प्रकट किया । श्री श्री माँ ने उनसे कहा, "तुम अपने पुत्र के साथ बाबा विश्वनाथ जी का दर्शन करो ।" श्री श्री मां के निर्देश से वह अपने पुत्र सहित विश्वनाथ जी के मन्दिर गयीं । दर्शन पूजन के बाद उन्होंने अपने पुत्र को बाबा विश्वनाथ जी के चरणों में समर्पण कर दिया और उन्होंने प्रार्थना की "बाबा विश्वनाथ ! आप अपने बेटे की रक्षा करना" जो होने का था वही हुआ । श्री विरजानन्दजी का भाव परिवर्तित हो गया । वे सोचने लगे कि विश्वनाथजी के चरणों में मेरा जीवन समर्पित हो चुका है - अब यहीं रहना है । जीवन का लक्ष्य ही है श्रेय ग्रहण । उनकी माँ के बहुत समझाने पर भी आप मन्दिर से नहीं लौटे, वे अपने संकल्प में अडिग रहे । उनकी माँ दुःखी हो कर अकेले ही आश्रम लौट आयीं । उन्होंने श्री श्री माँ से अपनी दुःख भरी कथा सुनाई । श्री श्री माँ ने उन्हें सान्त्वना दी । अब वह आश्रम में ही रहने लगीं । श्री श्री मां ने आश्रम के ब्रह्मचारी जोगेशदा के द्वारा विरजानन्दजी को आश्रम में आने को कहा । माँ के निर्देश से विरजानन्दजी आश्रम लौट आये ।

चूहा को संस्कृत में मूषिक कहा जाता है । "मुष्णाति, अपहरति इति मूषिकः" सिद्धिदाता गणेशजी के वाहन चूहा के निमित्त ही उनके जीवन का पट परिवर्तन हुआ ।

इस घटना को पढ़ कर अनेक लोगों के मन में यह प्रश्न हो सकता है कि अपनी माँ, पत्नी तथा छोटे तीन बच्चों को असहाय अवस्था में छोड़ कर साधु जीवन का वरण करना यह कैसा धर्म है ? पर यहाँ यह देखने में आता है कि विश्वनाथजी के चरणों में समर्पित जीवन तथा अपनी माँ का आशीर्वाद ही उनके महाजीवन का सूत्रपात है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

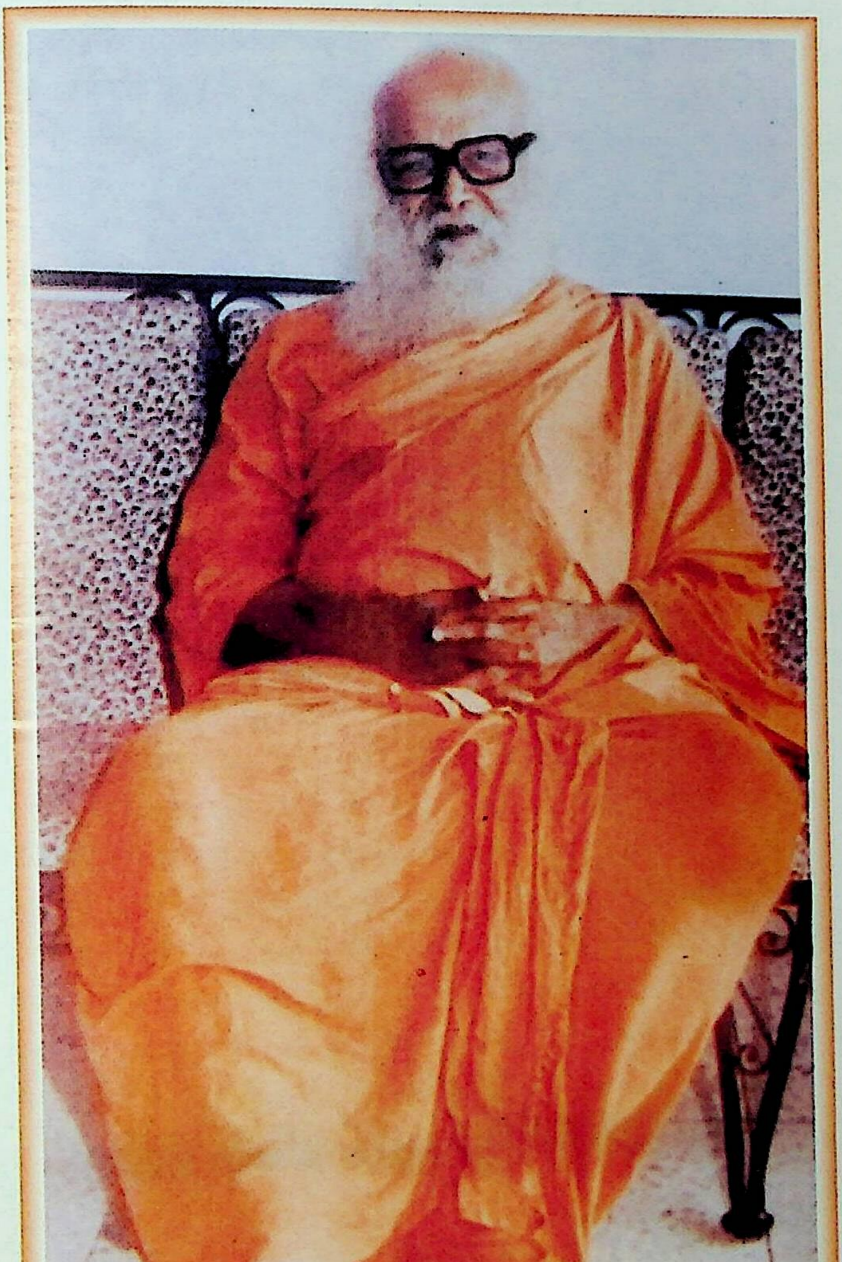

Sri Virajanandaji Maharaj

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारतीय आदर्श यही है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र ने स्वयं पितृ सत्य पालन के लिए वनगमन किया । आज सम्पूर्ण पृथ्वी में आधुनिक भोगवादी कलुषतामय जीवन में यह दृष्टान्त पावन स्वरूप है । आपने तो मातृसत्य पालन के लिए समस्त वैभव ऊँचे पद की नौकरी तथा आनन्द एवं शांन्त से भरें हुएं गृहस्थाश्रम को त्याग कर ब्रह्मर्षि का जीवन वरण किया । 'मातृ देवो भव' इस महावाक्य की भी सार्थकता आप में देखी जाती है ।

श्री श्री माँ की अव्यक्तलीला के बाद किसी ब्रह्मचारी ने आप से कहा था, "विरजानन्दजी, जो सोच कर आश्रम में आना हुआ था, वह तो आजकल मिलता नहीं--मन में आता है, घर ही चली जाऊँ ।" विरजानन्दजी ने तुरन्त कहा—"ना-ना जाना नहीं, फिर श्री श्री माँ को तुम्हें लाने के लिए जाना पड़ेगा" ऐसा कह कर विरजानन्दजी ने उनके साथ माँ की जो मधुर लीला हुई थी, उसे सुनाया ।

एकबार श्री माँ के ऊपर अभिमान के कारण बिना कुछ कहे ही विरजानन्दजी मध्यप्रदेश के पंचमढ़ी चले गये । वहां गुफा में बैठ कर साधना में मगन हो गये । एक दिन एक सज्जन नें उनसे कहा, —"कोई महिला आपकी प्रतीक्षा में खड़ी है ।" विरजानन्दजी ने कहा "यहां कौन कहाँ से आ पहुँची ?" उस सज्जन ने पुनः कहा, "वह बाहर खड़ी है । आप बाहर आकर देखिए कौन है" विरजानन्दजी भीतर ही गुफा के दरवाजे के पास आकर देखा श्री श्री माँ की सेविका उदास दीर्दा खड़ी हैं । उन्होंने तुरन्त आश्चर्य चकित होकर उदास जी से कहा-"अरे उदास तुम्हारे साथ कौन है ? अकेला कैसे यहाँ पहुँच गयी ?" उदासजी ने जबाब में कहा, "आप बाहर तो आइये । सब बात समझ में आ जायेगी । तब विरजानन्दजीने बाहर आते ही देखा-स्वयं श्री श्री माँ उनकी प्रतीक्षा में खड़ी हैं । विरजानन्द जी ने मां को प्रणाम किया तथां आश्चर्य के साथ एकटक माँ को देखने लगे । श्री माँ ने उनका हाथ पकड़ कर कहा-"चलो मेरे साथ" विरजानन्दजी बिना कुछ कहे यन्त्रवत् माँ के साथ चल पड़े । यह अद्भुत आदेश पालन था ।

जागतिक दृष्टि से स्वतः ही मन में प्रश्न उठता है कि श्री श्री माँ वहाँ कैसे पहुँच गयीं ? पुनः अपने आप ही जवाब मिलता है— "यः सर्वज्ञः सर्वविद् यस्यैष महिमा भुवि" उपनिषद् कहती है जो सर्वज्ञ है उनकी कृपा करुणा स्थान काल की अपेक्षा नहीं रखती है । स्वभावतः ही उनकी महिमा सर्वत्र प्रकाशित हो जाती है । श्री श्री माँ भी कहती हैं "जो जहाँ भी रहे यह शरीर उनके पास ।" अतः श्री श्री माँ के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है ।

(क्रमशः)

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री विरजानन्द जी महाराज की स्मृति में

—श्री सोमेश चन्द्र बैनर्जी

श्री श्री आनन्दमयी संघ के वयोवृद्ध साधु प्रमुख स्वामी विरजानन्द जी महाराज दिनांक 1 अगस्त 2005 को सायं 6 बजकर 25 मिनट पर श्री श्री माँ के कनखल आश्रम में सज्ञान ब्रह्मलीन हो गये । उस समय उनकी उम्र लगभग एक सौ दो वर्ष थी ।

विरजानन्द जी महाराज का पूर्वाश्रम का नाम श्री कमल भट्टाचार्य था । वे बांगलादेश में स्थित ढाका विक्रमपुर के निवासी थे । पूर्व में वह टाटा में इंजीनियर थे । सन् 1925 में उन्होंने सर्वप्रथम श्री श्री माँ का दर्शन ढाका में किया था, तभी से वह बराबर माँ के सम्पर्क में बने रहे । सन् 1942 में वह गृहस्थी छोड़कर माँ के आश्रम में आ गये । उन्हें वापस ले जाने के लिये उनकी अपनी माताजी श्री श्री माँ के पास बनारस आयीं । माँ ने उन्हें अपने पुत्र को ले जाने की अनुमति तों दे दी, परन्तु विरजानन्द जी ने श्री श्री माँ से आन्तरिक प्रार्थना की, जिससे उन्हें वापस जाना न पड़े । संयोग से एक दिन उनकी सरल प्राणा वृद्ध माताजी के द्वारा झाडू लगाते समय एकाएक एक बच्चा चूहा झाडू के चोट से मारा गया । उनकी माताजी इस घटना से अत्यधिक विचलित हो गयीं । भविष्य में जिससे उन्हें इस प्रकार पुत्र वियोग का दुःख न सहना पड़े, इस उद्देश्य से प्रायश्चित करने के लिये वह पुत्र कमल को लेकर काशी विश्वनाथ मंदिर में गयीं और उन्हें बाबा विश्वनाथ के चरणों में सदा के लिये समर्पण कर आयीं । इस प्रकार विरजानन्द जी महाराज को गृहस्थी में वापस लौटना न पड़ा एवं वह आश्रम में ही रह गये । श्री श्री माँ ने उनकी वृद्ध माताजी को आश्रम में ही रोक लिया । कुछ वर्ष बाद काशी आश्रम में ही उनका देहावसान हो गया ।

विरजानन्द जी की अपार कार्यक्षमता को देखते हुए सन् 1950 में श्री श्री आनन्दमयी संघ की स्थापना के उपरान्त उन्हें संघ के परिचालन से संबन्धित विशेष कार्यभार सौंपा गया । बनारस आश्रम में गायत्री महायज्ञ एवं श्री श्री माँ के हीरक जयन्ती उत्सवों की सफलता के पीछे उनका सहयोग उल्लेखनीय रहा । लम्बी अवधि तक आश्रम के कार्यों के लिये अथक परिश्रम करने के उपरान्त उन्होंने श्री श्री माँ से आश्रम के कार्यभार से मुक्त करने के लिये निवेदन किया । माँ ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया एवं आगे उनके ज्ञानार्जन तथा तपस्यादि करने के लिये पर्याप्त सुविधाओं की भी व्यवस्था कर दी । उन्होंने राजगीर तथा गुजरात में नर्मदा नदी के तट पर अवस्थित कई तपःस्थलियों में दीर्घकाल तक तपस्या की ।

एक बार नर्मदा नदीं के तट का किनारा पकड़कर अकेले ही सागर संगम की ओर बढ़ रहे थे । एक सुनसान स्थान पर एकाएक एक स्त्री शरीर ने उन्हें दूर से नदी के किनारे चोर बालू (रेतीले दलदल) का स्थान इशारे से दिखा कर दूर रहने को कह दिया । इस प्रकार वह चोर बालू

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में जान गँवाने से बच गये । बाद में श्री श्री माँ को इस विषय में अवगत कराने पर माँ ने कहा था कि नर्मदा माँ ने उस रूप में आकर उनकी रक्षा की ।

राजगीर में रहते समय वह लगभग प्रतिदिन पहाड़ के ऊपर गौतम बुद्ध के तपःस्थली में तपस्या करने जाते थे । एक दिन विलम्ब से वापस आते समय शाम हो चुकी थी । पहाड़ी रास्ते के किसी मोड़ पर अकस्मात् एक बहुत बड़ा बाघ सामने आ गया । वह झट रुक गये एवं श्री श्री माँ का स्मरण करने लगे । वह बाघ आक्रमण करने ही वाला था कि ठीक उसी समय वहाँ एक ट्रक हेड लाइट जलाता हुआ आ गया । उसी ट्रक पर जल्दी से चढ़कर उन्होंने इस विपत्ति से अपनी रक्षा की । लगभग एक वर्ष के बाद श्री श्री माँ जब राजगीर आयीं उस समय एक दिन विरजानन्द जी को लेकर मोटर गाड़ी से यात्रा करते समय गाड़ी जब उपरोक्त पहाड़ के मोड़ पर आयी तब माँ ने गाड़ी रुकवाकर उनसे पूछा कि क्या यह वही स्थान है जहाँ उन्हें बाघ का सामना करना पड़ा था । विरजानन्द जी को समझ में आ गया कि श्री श्री माँ की विश्वव्यापी दृष्टि में कुछ भी अनजान नहीं रहता है । उन्हें यह भी समझ में आया कि उस दिन वह श्री श्री माँ की विशेष कृपा से ही बाघ के आक्रमण से बच पाये थे । ऐसी और भी घटनाओं का अनुभव उनको अपने जीवन में हुआ था ।

श्री श्री माँ के आश्रम में आने के उपरान्त वे माँ के श्रीमुख से निर्गत अमूल्य वाणी को अपने डायरी में उतार लिया करते थे । इस प्रकार वह दीर्घकाल तक माँ की वाणी का संग्रह करते रहे । एक बार प्रसंगवश इन डायरियों में से एक डायरी परमज्ञानी महामहोपाध्याय श्री गोपीनाथ कविराज जी को पढ़ने के लिये दी थी । श्री श्री माँ की वाणी में असामान्य महत्त्व दर्शन कर कविराज जी आकृष्ट हो गये । उन्होंने इन वाणिओं को प्रकाशित करने का आग्रह किया एवं स्वतः लगकर साधारणजन के लिये समझ से परे वाणी के अंशों की व्याख्या स्वयम् लिख दिया । इन वाणिओं को कविराज जी के व्याख्या सहित श्री श्री आनन्दमयी संघ के द्वारा तत्कालीन प्रकाशित किये जा रहे त्रैमासिक पत्रिका 'आनन्दवार्ता' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जाता रहा । बाद में विरजानन्द जी महाराज इन प्रकाशित वाणिओं को माननीय कविराज जी की व्याख्या सहित संकलित कर 'अमर वाणी' पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जिसका सर्वत्र विशेष समादर हुआ ।

परवर्तीकाल में श्री श्री माँ के अनुप्रेरणा से उन्होंने 'स्वक्रीय स्वरसामृत' ग्रन्थ को छः भागों में प्रकाशित किया । यह परम पवित्र ग्रन्थमाला श्री श्री माँ के ख्याल से प्रकाशित हुई एवं इसका नामकरण माँ ने 'परम भागवत्' किया । इस ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय की विषय वस्तु श्री श्री माँ के मुख से निःसृत है । यह माँ के ही स्वसृष्ट, स्वरूप भाषा तथा स्वप्रवाह में लिखा हुआ है । विरजानन्द जी महाराज को यह बताने पर कि इस ग्रन्थ में श्री श्री माँ की वाणी की भाषा साधारणजनों के लिये समझना कठिन है, उन्होंने कहा कि इस ग्रन्थ में लिखी हुई भाषा समझना साधक की साधना सापेक्ष है । साधना द्वारा जो जितना उन्नत हो सकेगा उसे इन वाणियों के अन्तर्निहित आध्यात्मिक अर्थ उतना ही अधिक प्रकाशित होता रहेगा । इस ग्रन्थ में श्री श्री माँ ने अनेक आध्यात्मिक गूढ़ तत्व प्रकाशित किये हैं जो कि अन्य शास्त्रों में नही पाये जाते हैं या आभास मात्र उपलब्ध हैं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह ग्रन्थ लिखते समय विरजानन्द जी महाराज को दीर्घकाल तक श्री श्री माँ का एकान्त में सानिध्य लाभ करने का मौका मिला था । उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक जगत के महामूल एकमात्र स्वयं श्री श्री माँ ही हैं । अनादिकाल से जो सब धर्म सृष्ट हुए थे तथा वर्तमान में जो-जो धर्म प्रचलित हैं एवं भविष्य में जो सब धर्म प्रवर्तित होंगे वे सभी श्री श्री माँ की साधना लीला के समय पूर्णरूप से उनकी अनुभूति के रूप में प्रकाशित हुए थे । इस प्रकार की साधन लीला पहले कभी सुनाई नहीं पड़ी । विरजानन्द जी महाराज 'स्वक्रीय स्वरसामृत' ग्रन्थ के प्रत्येक भाग का यथावत् अंग्रेजी अनुवाद स्वयं भी कर गये । षष्ठ भाग का अंग्रेजी अनुवाद उनके जीवन की शेष कृति रही ।

अत्यधिक निष्ठावान विरजानन्द जी महाराज स्वपाकाहारी थे । केवल अन्तिम दो वर्ष में लगभग दृष्टिहीन हो जाने के कारण वह यह नियम रख नहीं सके । उस समय वह सदा ही मातृ सानिध्य बोध में रहा करते थे । ऐसे परमज्ञानी एवं अनुभूत महात्मा के देहावसान से भक्त एवं साधु समाज को विशेष रूप से क्षति पहुंची । आज विरजानन्द जी महाराज हमारे बीच में नही रहे परन्तु वह 'अमर वाणी' एवं 'स्वक्रीय स्वरसामृत' ग्रन्थों के माध्यम से भक्तों के हृदय में चिरकाल तक विराजित रहेंगे ।

जय माँ ।

विशेष सूचना

सभी भक्तों कों सूचित किया जा रहा है कि मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी ७ दिसम्बर से शुक्ल चतुर्दशी १४ दिसम्बर, २००५ तक श्री श्री माता आनन्दमयी आश्रम, राजगीर में श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन किया जा रहा है ।

वृन्दावनधाम के प्रख्यात भागवत कथा वाचक मधुर भाषा में प्रतिदिन सुबह शाम श्रीमद्भागवत व्याख्या करेंगे ।

जो भी भक्त बाहर से आकर इस भागवत कथा का रसास्वादन करना चाहते हैं वह अवश्य ही १५ नवम्बर तक नीचे लिखे पते पर सूचना भेंजे—

सेक्रेटरी
माता आनन्दमयी आश्रम
पो. राजगीर, नालन्दा-803116
(Phone : 06112-255362)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मातृवाणी के पूजक की स्मृति में
(श्रद्धेय विराजानन्दजी)

— ब्रह्मचारिणी गीता बनर्जी

१९४६ ई. की बात है । गौर वर्ण, सौम्यदर्शन, सुपुरुष श्री कमल ब्रह्मचारी वाराणसी आश्रम में सर्वत्र कार्यरत देखे जा रहे थे । वर्षों पूर्व माँ के पुरातन भक्त, ढाका राजशाही कालेज के प्रोफेसर श्रीयुत् अटल बिहारी भट्टाचार्य के भान्जे के रूप में आप माँ के सान्निध्य में आये थे । मामाजी के साथ ही आप को प्रथम मातृ दर्शन हुआ था ।

श्री कमल ब्रह्मचारी की कर्मक्षमता को देखते हुए दीदी गुरुप्रिया नूतन काशी आश्रम के संचालन का कार्यभार आप को समर्पण कर पूर्णरूप से निश्चिन्त थीं । वाराणसी आश्रम में १९४७ ई. से १९५० ई. पर्यन्त होने वाले "अखण्ड सावित्रीमहायज्ञ" के समय आय-व्यय के हिसाब इत्यादि तथा सम्पूर्ण आश्रम संचालन का कार्य आपने अतिशय निपुणता से सम्पन्न किया । जनवरी, १९५० ई. में "श्री श्री आनन्दमयी संघ की स्थापना के बाद से संघ संचालन के सम्पूर्ण कार्य भी गुरुप्रिया दीदी के निर्देश से आपने दक्षता के साथ पूर्ण किया । जून, १९५८ ई. तक आप ही संघ के संचालक थे । १९५८ ई. के जून महीने में सम्पूर्ण कार्यभार से मुक्त होकर शेष जीवन साधना में व्यतीत करने की इच्छा से माँ के चरणों में आपने प्रार्थना की । कालान्तर में आप मातृभक्त समाज में श्रद्धेय विरजानन्दजी के नाम से ही प्रसिद्ध हुए ।

श्रद्धेय विरजानन्दजी अधिकतर समय कनखल में ही रहे । जीवन के अन्तिम दिन तक आप कनखल में ही रहे । "स्वक्रिय स्वरसामृत" ग्रन्थ का आपने सम्पादन किया । विभिन्न समय में श्री श्री माँ के चरण तल में बैठ कर मूल भाईजी के ग्रन्थ पर माँ के साथ प्रश्नोत्तर में जो अमूल्यवाणी प्राप्त हुई थी, उसे ही संकलित कर आपने "स्वक्रिय स्वरसामृत" ग्रन्थ के रूप में सम्पादित किया ।

श्रद्धेय विरजानन्दजी उस समय के इलेक्ट्रिकल इंजीनियर थे । संघ की स्थापना के बाद प्रथम दिन से ही आप ने सब सुव्यवस्थित ढंग से संचालित किया । प्रायः दो वर्षों से आप अस्वस्थ थे । इसके पूर्व वर्षों तक आप स्वपाकाहारी थे । श्री श्री माँ की अव्यक्त लीला के बाद आप अधिकतर समय पूना, भीमपुरा, वृन्दावन, दिल्ली तथा कनखल इन्हीं पाँच स्थानों में रहे । प्रायः वे माँ की जीवनी तथा माँ की वाणी का सम्पादन तथा प्रकाशन में ही लगे रहते थे ।

विगत १ अगस्त, २००५ को कनखल में श्रद्धेय विरजानन्द जी ब्रह्मलीन हुए एवं २ अगस्त को नीलधारा में आप को जलसमाधि दी गई । १७ अगस्त को षोडश तथा साधु भण्डारा सम्पन्न हुआ । "अमरवाणी" तथा "स्वक्रिय स्वरसामृत" ग्रन्थ के लिए आप चिरकाल तक अमर रहेंगे । श्रद्धेय विरजानन्द जी को हम श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हैं ।

●

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रद्धा सुमन

—गुणीता

श्री श्री माँ के खुले दरबार में, माँ के ही श्री चरणों में, अपनी पूरी जिन्दगी न्योछावर करके माँ के परम दिव्य धाम में सम्प्रति प्रवेश करने वाली दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पण करने की अदम्य लालसा से लेखनी मुखरित होने को बाध्य हो रही है ।

१. आदरणीय श्री विरजानन्दजी महाराज—

पचास के दशक का उत्तरार्द्ध प्रारम्भ हो चुका था । तीन वर्षव्यापी अखण्ड सावित्री महायज्ञ की पूर्णाहुति १४ जनवरी १९५० को हो चुकी थी । श्री श्री आनन्दमयी संघ की स्थापना हो चुकी थी । संघ एक कार्यकारी संस्था के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका जिसके अन्तर्गत विभिन्न प्रदेशों में अवस्थित माँ के अन्यान्य आश्रम, कन्यापीठ, विद्यापीठ, आनन्दमयी अस्पताल का पूर्व रूप आनन्दमयी करुणा तथा प्रकाशन विभाग इत्यादि थे । गुरुप्रियादीदी एवं परमानन्द स्वामी की देख रेख में संघ कार्यरत था । संघ के जनरल सेक्रेटरी के पद पर आश्रम वासी कमल भट्टाचार्य नियुक्त हुए । उज्जवल गौरवर्ण का गठा हुआ शरीर दीर्घ केश श्रमश्रु संघ प्रमुख के अनुरूप आकृति । माँ के श्रीमुख से निकलता "कमल को बुलाओं" दीदी गुरुप्रिया स्नेह से कार्यसंचालन में परामर्श करतीं तो कर्मचारी गण "कमल दादा" के नाम से पुकारते कभी प्यार से तो कभी अपनी गुरु गंभीर हुंकार से सबको सम्भालते देखा जाता था पीले वस्त्र एवं खड़ाऊँ पहने इन मातृ सेवक को ।

कितनी भी व्यस्तता क्यों न हो, प्रातः तीन बजे उठकर स्वाध्याय एवं रात्रि में श्री श्री माँ के प्रश्नोत्तर के सत्संग में अनिवार्य रूप से बैठना आपका जीवन लक्ष्य था जो जीवन के अन्तिम क्षण तक रहा । शताधिक वय होने पर शरीर यद्यपि वश में नहीं रहता था पर माँ की वाणी एवं माँ की स्मृति अटूट बनी रही, जो कि शत-शत नमन योग्य है ।

कर्म व्यस्तता से छूटने पर नर्मदा की परिक्रमा की । माँ के ही निर्देश से एक बार नहीं तीन बार, पथभ्रष्ट होने तथा विपत्ति के संकेत आने से पूर्व कभी बालिका तो कभी युवती; तो कभी कल्याणमयी माता के रूप में आकर नर्मदा मैया ने यात्रा पूरी करवायी ।

मातृ वाणी के अमृत सागर में डुबकी लगाना आपका जीवन लक्ष्य बना । कुछ समय माँ के साथ रह कर कुछ दिनों के लिए मातृ श्रीमुख से संगृहीत वाणी का एकान्त में रसास्वादन करने के लिए एकान्तवास में चले जाते थे । कालान्तर में आप कमल दा से विरजानन्द जी महाराज के रूप में परिवर्तित हुए । पीत वस्त्र से गैरिक वस्त्र से सुशोभित हुए । माँ की दिव्य अमृतवाणी के पूजक ऋषितुल्य महानुभाव महात्मा के प्रति कोटिशः श्रद्धा सुमन अर्पण के साथ पुनः-पुनः नमन ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

२. ब्रह्मचारी श्री स्वरूपजी —

काशी आकर अध्ययन करने की चाह ने मातृविहीन इस स्वल्पभाषी महाराष्ट्री नवयुवक को सुदूर महाराष्ट्र से वाराणसी के गंगातट पर पहुँचाया था । उन दिनों आनन्दमयी आश्रम वाराणसी में अखण्ड सावित्री महायज्ञ चल रहा था । चौदह करोड़ आहुति सम्पूर्ण करनी थी, १४ जनवरी १९५० को पूर्णाहुति होना था, ब्राह्मणों की आवश्यकता तो थी ही ।

श्री श्री माँ के असीम वात्सल्यमय छवि से मातृवियोगी नवयुवक का आकृष्ट होना स्वाभाविक ही था । माँ के निर्देश से आप होताओं में सम्मिलित हुए । यज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त आप श्री श्री माँ आनन्दमयी विद्यापीठ में अन्तेवासी संस्कृत अध्यापक एवं देखभाल के लिये नियुक्त किये गये और यही उनका जीवन परिचय बन गया । उन दिनों विद्यापीठ अलमोड़े में था । विद्यापीठ के बाल ब्रह्मचारियों के आप अत्यन्त प्रिय थे क्योंकि आप का सर्वश्रेष्ठ गुण आपका मधुर स्वभाव था । शायद ही किसी ने आपको क्रोध करते देखा हो ।

साधक जीवन के सम्बन्ध में किसी सन्त ने कहा है, "साधक की यह भावना होनी चाहिये मैं भगवान् का हूँ, भगवान् मेरे हैं । मैं ब्राह्मण हूँ, मैं साधु हूँ, इस प्रकार की भावना साधना में बाधक होती है ।" स्वरूपजी के जीवन में यह बात चरितार्थ होती देखी गयी है । सदा सर्वदा चुपचाप पीछे हाथ बाँधकर अकेले में टहलना यही उनकी पहचान थी । स्वाध्याय उनका स्वभाव था । प्रवचन देना उनके स्वभाव के विरुद्ध था । अनेक वर्षों से संयम सप्ताह एवं श्री श्री माँ के जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम का संचालन आप शान्त भाव से मुस्कुराते हुए करते थे ।

श्री श्री माँ की उपस्थिति में विद्यापीठ का अलमोड़े से वृन्दावन में स्थानान्तरण होने के उपरान्त वे अन्ततक वृन्दावन में ही रहे । वृन्दावन के कोने-कोने में रहने वाले वैष्णवों का संग करना आप का स्वभाव था । आप एक संतोषी सन्त के रूप में सामने आये हैं । संतोष ही महात्माओं का धन है जो कि उनमें कूट-कूट कर भरा था । अपनी अस्वस्थता में भी किसी प्रकार की बौखलाहट आप में कभी देखी नहीं गयी । श्री श्री माँ के आश्रय में न जाने कितने-कितने महापुरुषों ने अपना जीवन चुपचाप व्यतीत किया जिसकी बाहरी पहचान की आवश्यकता न पड़ी ।

वृन्दावनधाम में अपने जीवन को पूर्ण समर्पित करने वाले इन महापुरुष की स्मृति में हमारा मस्तक स्वतः पुनः-पुनः श्रद्धावनत होता है ।

जय माँ

३. ब्रह्मचारिणी चित्रा दीदी—

भारत को स्वाधीन हुए अभी कुछ ही वर्ष हुए थे । १९५०-५१ की बात है, कलकत्ता के सुविख्यात विश्वविद्यालय से बोटनी में सर्वोत्कृष्ट अंक प्राप्त कर सर्वश्रेष्ठ ईशान छात्रवृत्ति से अलंकृत होकर उच्चशिक्षा के लिये अमेरिका जाने के लिए तैयार सुश्री चित्राघोष श्री श्री माँ आनन्दमयी से आशीर्वाद लेने आयीं । श्री श्री माँ ने अपने सहज स्वाभाविक अन्दाज में कहा "दोस्तजी कैसी हो? आँखों का मिलन हुआ नवागता पाश्चात्य भावापन्ना छात्रा अभिभूत हो गयी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह कैसी दोस्ती । पहली मुलाकात क्षणभर में सब कुछ हो गया । अमेरिका जाने की लालसा फीकी पड़ गयी । पुनः इस नये दोस्त से कब मिलना होगा, इस दोस्ती से छुटकारा मिलना तो सम्भव नहीं, डोर जो बँधी सो बँध गयी और जीवन नैया सही खेवैये के हाथ पड़ गयी ।

माता-पिता की आज्ञानुसार अमेरिका तो गई पर अब कोई चाह नहीं रही, कब अध्ययन पूरा करके अपने परमप्रियबन्धु के पास पहुँचा जाय यही छटपटाहट थी । अध्ययन पूरा होते ही वापस आकर माता-पिता से निवेदन किया मैं तो इनके पास ही रहूँगी ''माता-पिता की ज्येष्ठ कन्या, वे भी क्या करते, लाडली कन्या के लिये उन्हें स्वीकार करना पड़ा और कुमारी चित्राघोष ब्रह्मचारिणी चित्रा के रूप में श्री श्री माँ की चरणसेविका के पद पर अभिषिक्त हुईं ।

श्री श्री माँ के आश्रम में आने वाले सभी बाहरी भक्तजन चित्रादीदी से निकट का सम्बन्ध रखते थे । कारण उनकी सुख दुःख की बातें चित्रा दीदी श्री श्री माँ के पास सुविधानुसार पहुँचा देती थीं । उन्हें माँ से एकान्त में मिलने का अवसर मिलता था, इससे बढ़कर प्रियकर बात और क्या हो सकती है, अतः वे सब की प्रिय थीं । बड़े से बड़े राजामहाराजा कोई भी आवें उनके आतिथ्य सत्कार में चित्रादी को भेजा जाता था । विदेशी भक्तों की भी आप अतिप्रिय थीं । श्री श्री माँ के साथ रहते हुए दिन प्रति की घटनाओं को लिपिबद्ध करना आपका नियम था । गुरुप्रिया दीदी की अनुपस्थिति में माँ की दिनचर्या को लिपिबद्ध करना एवं उन्हें दीदी को भेजना, माँ को लिखे गये भक्तों के पत्र का जवाब देना आदि आपके मुख्य कार्य थे । श्री माँ की शारीरिक अनुपस्थिति के उपरारन्त भी भक्तों के सुख-दुःख का हाल चाल जानना एवं उन्हें यथासाध्य सुविधा देने का वह पूरा प्रयास करती थीं ।

कुछ समय से अस्वस्थ रहने पर भी मातृचर्चा ही उनका एक मात्र लक्ष्य था । माँ की बातें सुनने के लिए नवागत भक्तगण आपके पास आते थे । आज माँ की चर्चा करते हुए माँ की बन्धु चित्रा सदा सदा के लिए माँ के दिव्यधाम में पहुँच गयीं । इन मातृप्राणा के प्रति हार्दिक श्रद्धा सुमन समर्पित है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(1) Shri Shri Ma Anandamayee Primary Health Centre, Dedadra, Distt. Surendranagar, Gujarat

(2, 3, 4) Inauguration of Primary Health Centre by Sw. Bhaskaranandji & Hon. Min. I.K. Jadeja (Health)

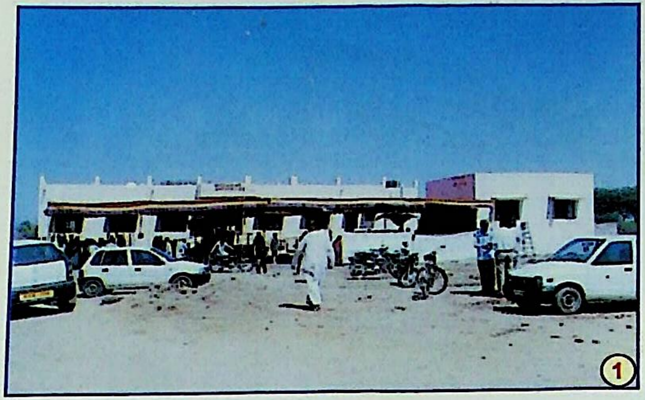

1

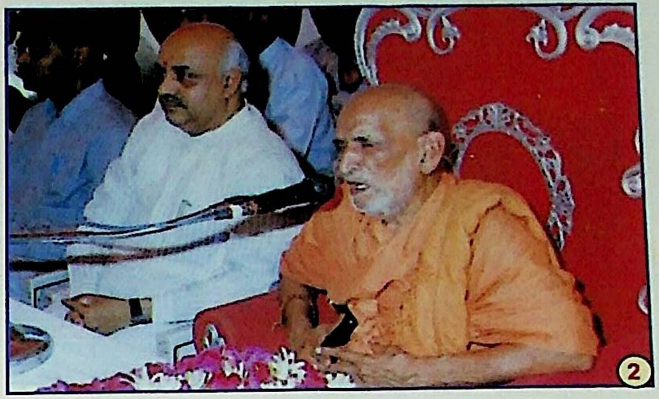

2

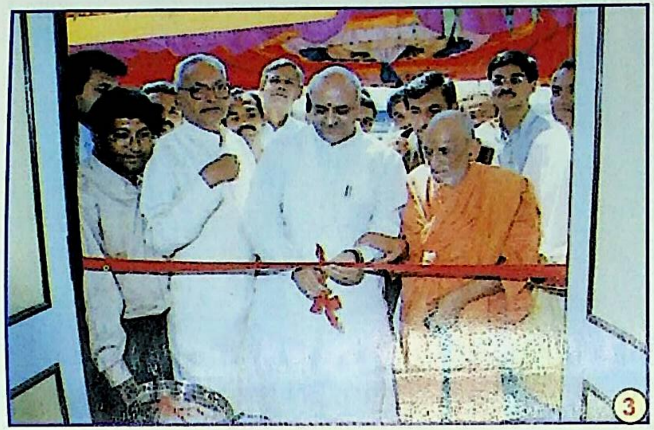

3

4

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

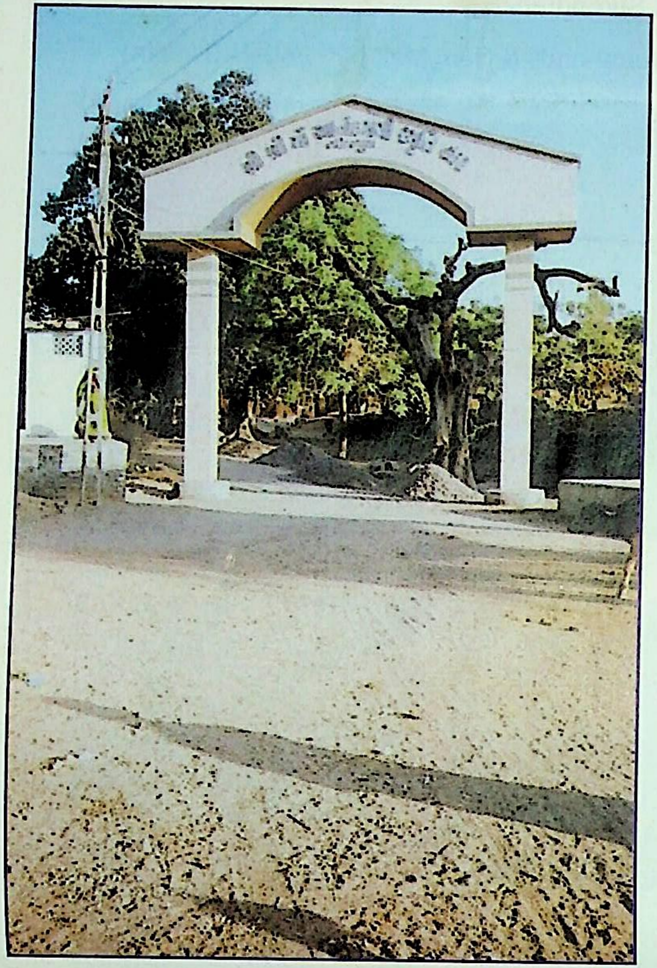

New Memorial Gate, Bhimpura Ashram

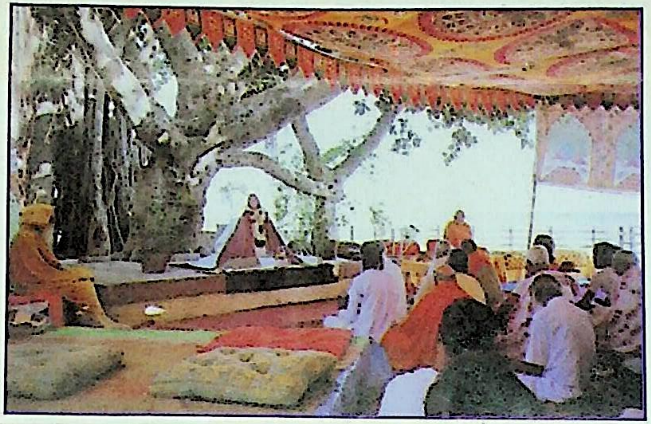

6th Samyam Saptaha, Bhimpura Ashram

Sadhana Kutir, Bhimpura Ashram

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आश्रम-संवाद

(१) कनखल :—

कनखल श्री श्री माँ के आश्रम में विगत २१ जुलाई २००५ के बृहस्पतिवार को गुरुपूर्णिमा का उत्सव श्री नटवरलाल पटेल परिवार की ओर से एवं अन्य भक्तों की सहायता से सुसंपन्न हुआ । १२ अगस्त को स्वामी मुक्तानन्द गिरिजी की विशेष पूजा एवं साधु भंडारा हुआ । १७ अगस्त को भाईजी की तिरोधान तिथि की पूजा संपन्न हुई । १९ अगस्त को जन्माष्टमी के पर्व पर विशेष पूजन अनुष्ठित किया गया ।

श्री श्री आनन्दमयी संघ के विशिष्ट साधु पूज्य श्री विरजानन्दजी का पहली अगस्त को महाप्रयाण हो गया । २ अगस्त को उनके पार्थिव शरीर को नीलधारा में जलसमाधि दी गई एवं १७ अगस्त को धूम धाम से उनके निमित्त षोडश तथा १०८ साधु भंडारा संपन्न हुआ ।

८ अक्टूबर से १२ अक्टूबर तक आश्रम में शारदीय नवरात्र पर श्री श्री दुर्गापूजा का आयोजन किया जाएगा ।

(२) वाराणसी :—

वाराणसी में श्री श्री माँ के आश्रम में २१ जुलाई २००५, बृहस्पतिवार को श्री गुरुपूर्णिमा की पवित्र तिथि में श्री श्री माँ की एवं गिरिजी की षोडशोपचार पूजा एवं साधु भंडारा भी हुआ । १२ अगस्त को स्वामी मुक्तानन्द गिरिजी की तिरोधान तिथि पर विशेष पूजन एवं साधु भंडारा तथा १७ अगस्त को भाईजी की विशेष पूजा हुई ।

१५ अगस्त को स्वतन्त्रता-दिवस पर कन्यापीठ के हॉल में 'वन्दे मातरम्' के राष्ट्रगान के साथ-साथ झंडा फहराया गया । इस अवसर पर देशगान, कवितापाठ, भाषण आदि का कार्यक्रम छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया । उसी दिन सायंकाल एकादशी तिथि के लग जाने के कारण कन्यापीठ के ठाकुरघर में सब विग्रहों को झूले पर बैठाकर झुलाया गया । गोपाल मंदिर में गोपालजी को भी झुलायां गया । उसके साथ-साथ भजन कीर्त्तन भी हुआ । १९ अगस्त को झूलन पूर्णिमा के दिन गोपालजी की विशेष पूजा हई । श्री श्री माँ की स्वतः दीक्षा के उपलक्ष में रात को ११ बजे से १२ बजे तक ध्यान कीर्तन आदि अनुष्ठित हुए ।

२७ अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी के दिन ठाकुरघर को पुष्प मालाओं से, वंदनवारो से, वस्त्र तथा थर्माकल से सुन्दर सजाया गया । कन्यापीठ के हॉल में भी मिट्टी के खिलौने से झाकियाँ सजायी गई थी । गोपाल मंदिर में रात १२ बजे से गोपालजी का अभिषेक प्रारंभ हुआ । तदुपरान्त गोपालजी को पीताम्बर धारण कराकर पुष्पालंकारों तथा स्वर्णालंकारों का श्रृंगार करने पर सब ठाकुरजी के रूप माधुरी को देखते ही रह गये । भक्तों ने फोटो भी खींचा । अभयदा का अमरगान 'आमार कृष्ण गोपाल रे, आमार कृष्ण गोपाल रे, 'आमार सोना गोपाल, ।.मानिक गोपाल जीवन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गोपाल रे' को गाकर सब भावविभोर हो रहे थे । कन्यापीठ में कन्याओं के द्वारा पकाये गए तालखीर, ताल का बड़ा, पंजरी, खीर का लड्डू, मालपोआ, गुलाबजामुन आदि मिठाइयों को सजाकर गोपालजी की पूजा सुसंपन्न हुई । दूसरे दिन कन्यापीठ की छोटी-छोटी कन्याओं ने गोप बालक के समान सजकर माथे पर दही की हाँड़ी रखकर नृत्य करते-करते दही का भांड तोड़कर नन्दोत्सव की लीला की । जन्माष्टमी के उत्सव को देखने के लिए कलकत्ते से अनेक भक्तों का आगमन हुआ था ।

काशी के गौरव महामहोपाध्याय पद्मविभूषण पंडित गोपीनाथ कविराज का ११९ वाँ शुभ जन्मोत्सव ८ सितम्बर को सुष्ठु रूप से संपन्न हुआ । इस सम्मेलन में काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के कुलपति प्रो. पंजाब सिंह जी मुख्य अतिथि एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अशोक कुमार कालिया जी की अध्यक्षता में कार्यक्रम संपन्न हुआ । कविराज जी का यह जन्मोत्सव श्री श्री माँ आनन्दमयी कन्यापीठ के संस्कृत दिवस के रूप में प्रति वर्ष मनाया जाता है । अतएव इस अवसर पर कन्यापीठ की कन्याओं द्वारा संस्कृत में कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया । काशी के अनेक प्रख्यात विद्वानों ने इस अनुष्टान में भाग लेकर मनीषी के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित की ।

१० सितम्बर से १६ सितम्बर तक श्रीमद्भागवत सप्ताह अनुष्ठित हुआ । काशी आश्रम की एवं कन्यापीठ की मूल संस्थापिका परमश्रद्धेया गुरुप्रिया दीदा का इस बार तिरोधान तिथि का २५ वाँ वर्ष पूर्ण हुआ । अतः उनके श्रीचरणों में श्रद्धाञ्जलि अर्पण करने के लिए उनकी तिरोधान तिथि ललिता सप्तमी से भागवत जयन्ती प्रारंभ हुई । श्री श्री माँ आनन्दमयी कन्यापीठ की प्राक्तन छात्रा एवं वर्तमान में प्रधानाचार्या ब्रह्मचारिणी डॉ. गीता बेनर्जी ने भागवत की सुललित व्याख्या की । १० सितम्बर को गुरुप्रिया दीदी की षोडशोपचार पूजा एवं साधु भंडारा हुआ ।

माता आनन्दमयी चिकित्सालय:—

माता आनन्दमयी चिकित्सालय में १५ अगस्त को स्वंतन्त्रता दिवस के अवसर पर एक भव्य सभा का आयोजन किया गया । इसमें सबसे प्रथम अस्पताल के प्रांगण में तिरंगा झंडा फहराया गया । इस सभा के मुख्य अतिथि थे माननीय विधायक एवं उत्तर प्रदेश के पूर्ववित्तमन्त्री श्री हरीशचन्द्र श्रीवास्तवजी एवं माननीय विधायक पूर्वमन्त्री श्री श्यामदेव राय चौधरी विशिष्ट अतिथि पद पर समासीन थे । श्री हरीश जी ने कहा—"आज इस शुभ दिन में सर्वत्र आनन्दोत्सव देखकर हम खुश होते हैं । सभी लोग आनन्दित होकर गौरव के साथ झंडे फहरा रहे हैं । परन्तु ऐसा भी एकदिन था जब भारत में एकबार मात्र 'वन्दे मातरम्' उच्चारण करना अथवा झंडा हाथ में लेना पाप समझा जाता था, एवं ब्रिटिश शासित भारत में अनेक अत्याचारों को सहन करना पड़ता था । ब्रिटिश गाँव के गाँव जला देते । जब भय संत्रस्त होकर जनता भागती, तब सैनिक उन्हें जबरदस्ती पकड़कर आग में झोंक देते एवं नृशंसता के उल्लास में उल्लसित होते थे । उनके पाशविक अट्टहास से जनता स्तब्ध हो जाती थी । इन बातों को कहते-कहते श्री हरीश जी का कंठ रुद्ध हो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आया । उन्होंने और भी कहा "आज हमारा प्रधान कर्तव्य है इस तिरंगे झंडे के सम्मान की रक्षा करना । भारत के गौरव को विश्व में प्रतिष्ठित करने से ही मातृभूमि के प्रति बलिदान करने वाले शहीदों के प्रति श्रेष्ठ श्रद्धाञ्जलि होगी ।

विख्यात स्वतन्त्रता संग्रामी एवं श्री श्री माँ के एकनिष्ठ भक्त स्वर्गीय कालाचाँद ब्रह्मचारी जी की पुण्य स्मृति में अस्पताल के समस्त रोगियों को फल, मिठाई बाँटी गई एवं ५१ दरिद्र निर्धनों को गरम चादर एवं भोजन दिया गया, साथ में भोजन दक्षिणा भी दी गई ।

(३) तारापीठ :—

तारापीठ में श्री श्री माँ के आश्रम में २१ जुलाई को गुरुपूर्णिमा की तिथि में श्री श्री मां की षोडशोपचार की पूजा हुई । २० जुलाई को सायंकाल श्री श्री माँ का अधिवास एवं आरती (सत्संग एवं भक्ति गीति) के बाद प्रसाद वितरण हुआ । २१ जुलाई को प्रातः काल श्री श्री तारा माँ के मंदिर में एवं श्री श्री वामदेव के मंदिर में विशेष पूजा अनुष्ठित हुई । इसके पश्चात् नगर भ्रमण, एवं कीर्तन, श्री श्री माँ की विशेष पूजा, कुमारी पूजा, चंडीपूजा, शिव मंदिर में पूजा, गीता चण्डीपाठ भोग, आरति यज्ञ तथा ब्राह्मण भोजन आदि अनुष्ठित हुए । मध्याह्न में प्रसाद वितरण एवं सायंकाल आरति कीर्तन, सत्संग एवं मौन के पश्चात् उत्सव की समाप्ति हुई ।

(४) देहरादून :—

देहरादून में किशनपुर आश्रम में १९ जुलाई से २१ जुलाई तक श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव अनुष्ठित हुआ । इस अवसर पर श्रीमती मालती भार्गव, योगेश शर्मा, भसीन जी, एवं उनके सहयोगियों ने संगीतमय रामायण का पाठ किया । प्रातःकाल श्री श्री माँ की पूजा के पश्चात् भंडारे का आयोजन किया गया ।

(५) पूना :—

पूना के श्री श्री माँ के आश्रम में गुरुपूर्णिमा महोत्सव' श्री मयूर आनन्दमयी ट्रस्ट मोर्वी एवं भक्तवृन्दों की सहायता से संपन्न हुआ । पूजन, कीर्त्तन, पुष्पाञ्जलि, भोग, आरति एवं होम एवं महाप्रसाद का वितरण किया गया । विगत २२ अगस्त से ३० अगस्त तक श्रीमद्भागवत सप्ताह, ज्ञानभक्ति महायज्ञ का आयोजन किया गया । श्रीमद् माधव गौरेश्वर संप्रदाय के आचार्य भागवत भूषण, श्री राजेश किशोर गोस्वामी ने भागवत की मार्मिक व्याख्या की ।

(६) पुरी :—

पुरी में स्वर्गद्वार के श्री श्री माँ के आश्रम में झूलन उत्सव के उपलक्ष्य में "मातृ स्मरण उत्सव" का एक अनुष्ठान अनुष्ठित हुआ । दो दिन के इस अनुष्ठान में विगत १८ अगस्त को सायं काल एक सभा का आयोजन किया गया । पुरी नरेश गणपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव जी ने इस सभा की अध्यक्षता की । मुख्य अतिथि का पद उड़ीसा के राज्यपाल श्री रामेश्वर ठाकुर जी ने अलंकृत किया । माँ आनन्दमयी कन्यापीठ की ब्रह्मचारिणियों ने वैदिक मंगला चरण के द्वारा सभा का उद्बोधन किया । श्री राज्यपाल जी, पुरी नरेश एवं अन्य अभ्यागतों ने मंच पर सुसज्जित श्री श्री

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माँ के चित्रपट पर माल्यार्पण किया । इसके पश्चात् श्री श्री आनन्दमयी संघ की ओर से ब्रह्मचारी श्री पानुदा ने महामहिम राज्यपाल एवं विशिष्ट अतिथियों को माल्य एवं कतान सिल्क के चद्दर प्रदान करके सबकी अभ्यर्थना की । तदुपरान्त पुरी आश्रम के प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष एवं पश्चिम बंग सरकार के प्राक्तन वरिष्ठ मन्त्री श्री वीरेन्द्र कुमार मैत्र ने स्वागत भाषण दिया । इसके बाद ब्रह्मचारिणी गीता बनर्जी ने पुरी आश्रम एवं 'मातृ स्मरण उत्सव के बारे में भाषण दिया । इसके पश्चात् उड़ीसा की प्रख्यात् संगीत कलाकार श्रीमती भुवनेश्वरी मिश्र ने संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया ।

पुरी नरेश ने अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री श्री माँ के साथ उनके परिवार का सुदीर्घ कालीन परिचय के बारे में विस्तृत रूप से सब को अवगत कराया । जगन्नाथ धाम की महिमा को कहते हुए उन्होंने स्कन्द पुराण का उल्लेख करते हुए कहा, "जगन्नाथ क्षेत्र के माहात्म्य में वर्णन है कि प्राचीन काल में भगवान यहाँ नील माधव के रूप में विराजित थे । उन्हीं के नाम से इस स्थान का नाम नीलाचल पड़ा । वर्तमान में जगन्नाथ जी का मन्दिर ८ सौ वर्ष पूर्व में निर्मित हुआ था । इस पुण्य तीर्थ में श्री श्री माँ अनेक बार यहाँ आयीं । जिस पवित्र भूमि में श्री श्री माँ का इतनी बार आगमन हुआ, उस भूमि की एवं स्वर्ग द्वार में अवस्थित श्री श्री माँ के आश्रम की पवित्रता की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है । इसके लिए जिस सहायता की आवश्यकता हो उसके लिए हम अवश्य कोशिश करेंगे ।

इसके पश्चात् पुरी आश्रम के एडवाइजरी कमेटी के चेयरमैन स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने अपना संक्षिप्त भाषण रखा । अन्त में महामहिम राज्यपाल जी ने अपने भाषण में श्री श्री माँ के सम्बन्ध में तथा पुरी आश्रम के साथ श्री श्री माँ के सम्बन्ध के बारे में उल्लेख करते हुए इस आश्रम के प्रति अपने कर्तव्य के बारे में बताया ।

अन्त में धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् दूसरे दिन के कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण देते हुए श्री शंकराचार्य के जगन्नाथाष्टकम् के गान "जगन्नाथ स्वामी नयन पथ गामी भवतु में" इत्यादि के द्वारा सभा की समाप्ति हुई । अनेक बाधा विघ्नों की वारिश आदि के होते हुए भी जगन्नाथ देव की कृपा से उत्सव साफल्य मण्डित हुआ । इसी दिन रात को उदयास्त संकीर्त्तन का अधिवास आश्रम के सामने प्रांगण में पंडाल बनाकर हुआ था । गीतश्री छवि बन्द्योपाध्याय (छवि दी) ने कीर्त्तन का प्रारम्भ करते हुए सम्पूर्ण अधिवास का गायन किया । अधिवास के पश्चात् कीर्त्तन का विराम हुआ । दूसरे दिन प्रातः काल से ही मंगल आरती के पश्चात् महानाम संकीर्त्तन प्रारम्भ हुआ । प्रतिदिन सायंकाल माँ के कमरे में झूले में झूलन सजाकर छवि दीदी के राधा गोविन्द जी एवं माँ को झूले पर बैठाकर झुलाया जाता था एवं आरती कीर्त्तन आदि भी होते थे । प्रातःकाल प्रतिदिन माँ के कमरे में मंगल आरती कीर्त्तन आदि होता था ।

१९ अगस्त को राखी पूर्णिमा के दिन, दिन भर अखण्ड नाम संकीर्त्तन हुआ । रात में छवि दी ने कीर्त्तन का समापन किया । इस अवसर पर दोपहर में महाप्रभु का भोग एवं माल्सा भोग भी हुआ । रात को माँ के कमरे में राधा-गोविन्द जी का षोडशोपचार से पूजा हुई । रात को ११ बजें से १२ बजे तक श्री श्री माँ की स्वयं दीक्षा के उपलक्ष्य में कीर्त्तन, ध्यान आदि हुआ । इसी के साथ मातृ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्मरण उत्सव समाप्त हुआ । उत्सव का संचालन वीरेन मैत्र, श्री स्वपन गांगुली एवं अन्य मातृ भक्तों ने किया । गोलोकानन्द जी ने भी चारों ओर ध्यान रखा ।

श्रद्धेय पानुदा के निर्देश से उत्सव सुष्ठु रूप से सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर बनारस से कन्यापीठ की ब्रह्मचारिणियों ने एवं कलकत्ते से अनेक भक्तों ने उत्सव में भाग लिया । सब लोग जगन्नाथ जी का दर्शन करके एवं महाप्रसाद ग्रहण करके आनन्दित होकर अपने गन्तव्य की ओर लौटे ।

(७) वृन्दावन :—

वृन्दावन में श्री श्री माँ के आश्रम में ८ अगस्त से १९ अगस्त तक श्री श्री राधाकृष्ण छलियाजी का झूलनोत्सव एवं २७ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आयोजन हुआ । इस शुभ अवसर पर ८ अगस्त से १८ अगस्त तक प्रतिदिन प्रसिद्ध रास मण्डली द्वारा रासलीला, एवं १५ अगस्त से १९ अगस्त तक प्रतिदिन सायंकाल में श्री राधाकृष्णजी की झूलन की पूजा होती थी । १९ अगस्त को रक्षाबन्धन के दिन प्रातः वेदपाठ, विष्णु सहस्त्रनाम पाठ, भजन, कीर्तन एवं सायंकाल राधाकृष्णजी की पूजा हुई । अखंड हरिनाम संकीर्त्तन दूसरे दिन प्रातः काल में समाप्त हुआ । २७ अगस्त को श्रीकृष्णजन्माष्टमी की पूजा यथाविहित की गई ।

(८) राँची :—

२१ जुलाई को श्री श्री माँ राँची आश्रम में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पूजन, भजन-कीर्त्तन, सत्संग के बाद मध्याह्न में भोग आरति के उपरान्त सबने प्रसाद पाया ।

श्री श्री माँ के राँची आश्रम में आगामी कार्तिक अमावस्या पहली नवम्बर को श्री श्री महाकाली प्रतिष्ठा की स्वर्णजयन्ती मनायी जाएगी । यह महोत्सव एक सप्ताह २८ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक मनाया जाएगा । धार्मिक अनुष्ठान के अन्तर्गत दुर्गासप्तशती एवं रुद्रचण्डी पाठ, होम, श्री श्री महाकाली का अंगराग, विशेष अभिषेक, एवं षोडशोपचार से श्री श्री माँ काली की पूजा, ५१ कुमारी पूजा, ५१ साधु भोजन, अन्नकूट, अखंड नाम संकीर्त्तन आदि अनेक कार्यक्रम होंगे । इसके अतिरिक्त एक स्मारिका ग्रन्थ का भी विमोचन किया जाएगा ।

(९) राजगीर :—

श्री श्री माँ के राजगीर आश्रम में २१ जुलाई को 'गुरुपूर्णिमा महोत्सव' अनुष्ठित हुआ । इस अवसर पर श्री श्री माँ की विशेष पूजा हुई । शिव मंदिर में भी शिवपूजा हुई ।

(१०) रायपुर :—

श्री श्री माँ के रायपुर आश्रम में श्री माँ की असीम अनुकम्पा से जनता जनार्दन की सेवा के लिये मंगलवार ४ अक्टूबर, २००५ प्रातः ११ बजे एक सार्वजनिक निःशुल्क होमियोपैथिक औषधालय की व्यवस्था की गई । माननीय श्री हीरा सिंह बिष्ट, कैबिनेट मंत्री, परिवहन, श्रम एवं तकनीकी शिक्षा, उत्तरांचल शासन ने विशेष आग्रह के साथ उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की । समारोह का कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोक-संवाद

(१) कुमारी चित्रा घोष

श्री श्री माँ की ''चित्राबन्धु'' हम सब की आदरणीया चित्रादी विगत १ सितम्बर, २००५ बृहस्पतिवार को सुबह प्राय: साढ़े ९ बजे श्री श्री माँ के चरणों में विलीन हुई हैं ।

१९५२ ई. की बात है । वैशाख का महीना था । श्री श्री माँ कोलकाता में डॉ. गोपाल दाशगुप्त के घर विराजमान थीं । चित्रादी को इसी समय यहाँ माँ का प्रथम दर्शन प्राप्त हुआ । चित्रादी एकटक माँ को देख रही थीं । अनजाने में ही उनके मुख से ये शब्द निकलें "She is not of this world" मां जगदातीत हैं । श्री श्री मां ने उनसे कहा, ''इस शरीर के साथ तुम्हारा आत्मिक सम्बन्ध बहुत पहले से ही है । जब तुम ९ वर्ष की थी, तभी तुम्हें देखा । वायीं ओर मांग करती थी । तुम्हारी फ्रॉक के हाथ फूले हुए थे ।'' चित्रादी ने माँ से कहा कि वे Ph. D. करने के लिए अमेरिका जा रही हैं । माँ ने उनसे कहा, ''तुम्हारा इस वर्ष जाना नहीं होगा'' यथार्थ में ही अगले वर्ष १९५३ ई. में चित्रादो अमेरिका गईं । चित्रादी अत्यन्त मेधावी छात्रा थीं । आप ने कोलकाता विश्वविद्यालय से 'वोटानिक' में एम. एससी. में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया था । आपने प्रख्यात ''ईषाण'' स्कालरशिप प्राप्त किया । अमेरिका जाने के पहले चित्रादी कोलकाता में ''एक डालिया'' रोड पर स्थित माँ के आश्रम में कई बार श्री श्री माँ से मिलीं । माँ की चरण पादुका माँ से माँग कर ले गई थीं । अमेरिका में रक्षाकवच की भाँति माँ की यह चरणपादुका चित्रादी सदा अपने handbag में रखती थीं । विदेश में जाने से पहले माँ ने उनका हाथ पकड़ कर तीन बार कहा था, 'जैसे जा रही हो ठीक वैसे ही लौट आना ।' विवाह नहीं करने का भी माँ ने निर्देश दिया था । १९५४ ई. में उन्हें माँ का पत्र मिला — ''शुद्ध पवित्र फूल भगवान के चरणों में अन्जलि देने के लिए सदा पवित्र भाव की रक्षा करने की चेष्टा करना । क्या अकेली ? अकेली कहाँ ? दोस्त क्या दोस्तजी को छोड़ कर रह सकता है ?'' १९५५ ई. में चित्रादी को मां का पत्र प्राप्त हुआ — ''माँ ने कहा सम्भव होने पर तुम एकबार आकर माँ से मिलो ।'' १९५५ ई. के जून महीने में चित्रादी भारत लौटीं । इसके बाद दुबारा उनका अमेरिका जाना नहीं हुआ । माँ के पत्र की एक वाणी— ''भगवत् कर्म साधन स्वरूप यह मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है'' उनके विद्यार्थी जीवन की परिसमाप्ति में कारण बनी । चित्रादी भारत आकर माँ के पास सोलन गईं ।

इसके कुछ दिन बाद ही चित्रादी सब कुछ छोड़ कर मां के चरणों में आश्रम चली आईं । सुदीर्घ २७ वर्ष तक आप आश्रम में ही रहीं । यथासम्भव माँ की सेवा तथा भक्तों की देख-रेख में ही आप लगी रहती थीं । आप के सरल उदार मन तथा सहृदयता सभी के हृदय को स्पर्श करती

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

थी । मधुर व्यवहार तथा मीठी बोली के कारण आप सब की प्रिय थीं । भक्तों को मां के चरणों तक ले जाना, गरीबों की सहायता आदि उनके उदार मन का ही परिचायक है ।

नैमिषारण्य में एकबार माँ ने परमानन्द स्वामीजी से कहा था, "परमानन्द, चित्रा की जैसी एक भी लड़की नहीं है ।"

अस्वस्थता के कारण इधर कुछ वर्षों से आप कोलकाता में अपने बड़े भाई के पास थीं । वहीं आप का देहावसान हुआ ।

आज हम चित्रादी को श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हैं । सभी के हृदय में चित्रादी चिर अमर रहेंगीं ।

२. ब्रह्मचारी श्री स्वरूपजी—

आश्रम के वरिष्ठ ब्रह्मचारी श्रद्धेय श्री स्वरूपजी वृन्दावन में विगत २६ सितम्बर, २००५ को मातृ चरणों में विलीन हुए ।

कनखल में संयम सप्ताह के समय उद्घाटन दिवस से संयम सप्ताह के अन्तिम दिवस तक कार्यक्रम के संचालक ब्रह्मचारी स्वरूपजी बड़े ही शान्त स्वर में विद्वद्वरेण्यों का परिचय देते हुए कार्यक्रम का संचालन करते देखे जाते थे । संयम सप्ताह के पूरे समय आपको माईक के सामने उपस्थित देखा जाता था । अवसर के समय दोनों हाथ पीछे रखे धीरे-धीरे शान्त मुद्रा में टहलते रहते थे अथवा मन्दिर प्रांगण में वेदिका पर चुपचाप बैठे हुए चारों ओर की गतिविधियों को देखते रहते थे । दीर्घ श्मश्रु तथा केश लम्बासा गैरिक चोला तथा अधोवस्त्र ढीली चाल । सब में रहते हुए भी एक अलग पहचान । किसी के गुरुजी तो किसी के पंडितजी एवं स्वरूपजी, बंगला बाहुल्य क्षेत्र में कभी तो बंगला एवं अधिकतर हिन्दी में बातचीत करते थे ।

इधर कई वर्षों से अस्वस्थ होने के कारण आप संयम में अनुपस्थित रहते थे एवं अधिकतर वृन्दावनस्थित माँ के आश्रम में ही रहते थे ।

श्री स्वरूपजी वाराणसी आश्रम में "अखण्ड सावित्री महायज्ञ" के पूर्व माँ के चरणों में आये । उस समय वे एक अपरिचित युवकमात्र थे । कोल्हापुर कें कुरुद्वार गाँव में ७ जुलाई, १९२६ ई. में आप का जन्म हुआ था । महाराष्ट्री होने का आप में गर्व था । आप इस जीवन को किसी महद् उद्देश्य में समर्पित करना चाहते थे । इण्टर के बाद आगे अध्ययन तथा काशी दर्शन की इच्छा से आप ३० जनवरी १९४४ ई. में रवाना हुए । काशी में अध्ययन करते हुए आपने माँ का दर्शन किया और सदा-सदा के लिए माँ के हो गए । श्री श्री माँ के निर्देश से वाराणसी आश्रम में १९४७-१९५० ई. तक चलने वाले "अखण्ड सावित्री महायज्ञ" में एक होता के रूप में आपने अंशग्रहण किया । यज्ञ की समाप्ति के बाद आप माँ आनन्दमयी विद्यापीठ के अध्यापक के रूप में अल्मोड़ा में अनेक वर्षों तक रहे । श्री स्वरूपजी सदा अध्ययन तथा अध्यापन में ही लगे रहते थे । कभी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रीमद्भागवत सप्ताह में मूलपाठ तो कभी संयम सप्ताह आदि कार्यक्रमों का संचालन भी निपुणता से करते थे ।

ब्रह्मचारी श्री स्वरूपजी श्री श्री माँ के प्रति अपनी निष्ठा तथा सेवाकार्य में दक्षता के कारण चिरकाल तक अमर रहेंगे । हम उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हैं ।

३. श्री कृष्णकुमार दीक्षित—

श्री श्री माँ के पुरातन भक्त उन्नाव निवासी श्री कृष्णकुमार दीक्षितजी का स्वर्गवास दिनांक १० अप्रैल २००५ को हो गया । उनकी आयु ८२ वर्ष की हुई थी । वे एक साल से गले के कैंसर से पीड़ित थे । आप अदम्य साहस के प्रतीक थे । आप के घर श्री माँ का पदार्पण भी हुआ था । माँ के प्रति आपकी सहज भक्ति का ही यह परिचायक है । अन्त तक आप ने कर्मठ जीवन व्यतीत किया । आप अपने पीछे एक भरा पूरा परिवार छोड़ गये, हम उनकी आत्मा की शान्ति के लिये मातृ चरणों में प्रार्थना करते हैं ।

उत्सव - तालिका

१.	श्री लक्ष्मी पूजा	......	१६ अक्टूबर
२.	श्री श्री काली पूजा (दीपावली)	......	१ नवम्बर
३.	अन्नकूट उत्सव	......	२ नवम्बर
४.	संयम सप्ताह	......	८-१५ नवम्बर
५.	श्री गीता जयन्ती	......	११ दिसम्बर
६.	परम श्रद्धेय बिपिन विहारी भट्टाचार्य (श्री श्री माँ के पिताजी) की तिरोधान तिथि	......	१४ दिसम्बर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments From :

ॐ माँ

"Endeavour to go through life leaving your burdens in His hands."

—Ma Anandamayee

Service with Smile

UE

Since - 1974

UNIQUE ELECTRONICS (Regd.)

16, Central Market,
Lajpat Nagar
New Delhi—110024
Phone : 29839349, 29834559

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS.

With best compliments from :

"The pilgrimage to the goal of human existence is the only path to Supreme happiness."

—Sri Ma

M/s. Sugam Parivahan Ltd.
43, Lekh Ram Road
Daryaganj, New Delhi-110002

Ph. 23257581/2326849 Fax : 3267462

With best compliments from :

"Abandaon yourself to God in all matters without exception."

—Sri Ma

M/s Anandamayee Forgings (Pvt) Ltd.
A-5, Site-IV, Industrial Area
Sahibabad, Ghaziabad-201010

Ph. : 2770064 - Fax : 770427

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Complements From :—

"None can foretell at what particular moment circumstances will co-operate to bring about the Great Moment for you."

—Ma Anandamayee

UNIQUE ENTERPRISES

Authorised dealer of all products of Sony, Samsang, LG., Whirlpool, Aiwa, National Panasonic, Philips, IFB, Electrolax.

D-79, Malviya Nagar,
New Delhi-110017
Phone : 26671210, 51831110-1062

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"मैं तो सब समय तुमलोगों के साथ साथ ही हूँ, तुम लोग देखना नहीं चाहते हो तो मैं क्या करूँ।"

— श्री श्री माँ

● जय माँ श्री माँ जय जय माँ ●

DIAMOND SPRAYERS for plant Protection

SPRAYERS DIAMOND TM

Gupta Agro Company

Manufacturers & Suppliers of :

AGRICULTURAL SPRAY PUMPS & SPARE PARTS FOR PLANT PROTECTION

Office : P-31, Alipur Road, Narela, Delhi-110040

ESTD - 1984

(O) 011 - 27280187
(R) 011 23693348
(M) 9811236809

BHARAT BHUSHAN GUPTA

RAJ PACKAGING COMPANY

• Manufacturers of Corrugated boxes •

Rajesh Gupta

(O) 011 25631628
Ph. (R) 011 23691814
(M) 98107-15320

A-109, Bhagawati Vihar, Uttam Nagar, New Delhi- 110059

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

● जयजयमाँ ॐ माँ जयजयमाँ ●

"हरि कथा ही कथा और सब बृथा व्यथा ।"

—श्री श्री माँ

ॐ

श्री श्री माँ के श्री चरणों में गुप्ता परिवार की तरफ से बार बार प्रणाम ।

श्री चन्द्रभान गुप्ता
स्वर्गीय श्रीमति शकुन्तला गुप्ता

भारत भूषण गुप्ता	राजेश गुप्ता
साधना गुप्ता	अनिता गुप्ता
चेतन गुप्ता	नितिन गुप्ता
हर्ष गुप्ता	कार्तिक गुप्ता

125, विवेकानन्दपुरी, सरायरोहिला, दिल्ली - 110007

Res. 011 - 23693348, Res. 011 - 23691814
Off. 011 - 27280187, Off. 011 - 25631628

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from

RAM PANJWANI & COMPANY

Timber Merchants & Financiers
1—Birla Road
Hardwar—249401

☎ 2427266, 2428672. Fax. 01334-2426001

Suppliers of :
Best Quality Himalayan Pine Timbers

Branches :

Jammu (J & K) **Yamuna Nagar (Haryana)**
Parwanoo (H.P.)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ Branch Ashrams ❁

14. NEW DELHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kalkaji, New Delhi-110019 (Tel : 011-26826813)

15. PUNE : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ganesh Khind Road, Pune-411007, (Tel : 020-25537835 & 25538903)

16. PURI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Swargadwar, Puri-752001, Orissa. (Tel : 06752-223258)

17. RAJGIR : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O.Rajgir, Nalanda-803116, Bihar (Tel : 06112-255362)

18. RANCHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Main Road,P.O. Ranchi- 834001 (Tel : 0651-2331181)

19. TARAPEETH : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Chandipur-Tarapeeth, Birbhum-731233,

20. UTTARKASHI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Kali Mandir, P.O. Uttarkashi-249193,

21. VARANASI : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Bhadaini, Varanasi-221001, U.P. (Tel : 0542-2310054+2311794)

22. VINDHYACHAL : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, Ashtabhuja Hill, P.O. Vindhyachal, Mirzapur-231307, (Tel : 05442-242343)

23. VRINDABAN : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Vrindaban, Mathura-281121 U.P. (Tel: 0565-2442024)

*

IN BANGLADESH :

1. DHAKA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, 14, Siddheshwari Lane, Dhaka- 17 (Tel _ 0880-9356594)

2. KHEORA : Shree Shree Ma Anandamayee Ashram, P.O. Kheora, Via-Kasba, Brahmanbaria.

*

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF NEWSPAPERS
FOR INDIA AS NO. 65432/97

श्री श्री आनन्दमयी संघ

ॐ माँ

मातृ शरणं

रत्ना ऑफसेट्स लिमिटेड, कमच्छा, वाराणसी,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi